माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-४८

जैन शिलालेख संग्रह

[भाग चार]

संग्राहक-संपादक
डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर,
एम० ए०, पीएच० डी०

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति] वीर निर्वाण संवत् २४९१ [मूल्य ७ रुपये

४ ग्रन्थमाला सम्पादक

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम आवृत्ति १००० प्रति

मूल्य सात रुपये

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानवको निर्मितियोंके भग्नावशेषो अर्थात् गुफाओ, चैत्यो, स्तूपो, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनो व मूर्तियो जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओ व अन्य धनिकोंके दानको तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डो व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते है। ऐसे प्राचीनतम लेखोकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बडे परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अढाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढने और समझनेका अभी प्रयास हो चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नही हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढे गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओ व पत्रिकाओमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलोलके १४४ शिलालेखोका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान गेरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-बेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वाञ्छनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गेरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (ग्रं० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुरकरने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोका परिचय करानेवाला चौथा सग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसंघ, राजवंश आदि दृष्टियोंसे जो विश्लेषण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ है। हमें दुख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नही रहे ! कितना हर्ष होता उन्हे इस नये लेख सग्रहको देखकर !

शिलालेख-सग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके संशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नही। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते है—

१. लेखोका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नही किया जा सकता। कन्नड लेखोको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानो-द्वारा पाठ व अर्थ-सशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए संशोधकोको मूलस्रोतो का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२ इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमे नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोमें भी हुए है और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोकी भी खोज करना चाहिए।

३ इन प्रकाशित शिलालेखोंसे यह अपेक्षा नही करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नही बनाया जा सकता। ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नही समझना चाहिए।

४ कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए। उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दश अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

यथार्थत ये लेख-सग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त है। किन्तु विशेष सशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते है।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री शान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता प० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बडी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

— ही ला जैन
— आ ने उपाध्ये
(प्रधान सम्पादक)

प्राक्कथन

प्रस्तुत सग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। उसमें श्रवणबेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख सकलित हुए थे। इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा सकलित हुआ। इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा सपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये है। डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी। अत इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके है। इन ८५० लेखोंमें-से १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके है तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके है अत. इनकी सूचना-भर दी गयी है — शेप ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है। इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है।

सन् १९५७ में इस सग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके सपादनके लिए प्रेरित किया। तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया। इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्—कार्यालयमें भी अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका सग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोमे पहले प्रकाशित हो चुके है तथापि साधारण अभ्यासकके लिए वे सुलभ नही हैं — उनका संपादन अंगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है। अत इस संग्रहमें उनका पुन प्रकाशन उपयोगी होगा

प्रस्तावना

१. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख संगृहीत हैं। इन्हें समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमें सनपूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सनपूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सनपूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवी सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवीं सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवीं सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवी सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवीं सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६,) तेरहवीं सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवीं सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवी सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवी सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवी सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवी सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवी सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६०।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यत चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं —८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमे जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमे मन्दिरों तथा मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमे (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एव एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक कुरूढिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे — पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राजवंशों आदिके विषयमें।

२. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गंग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)[1]। इसमें 'यावनिक' संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है[2] (क्र० ७०, १३१, ६११ एव ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवी सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरॆण्यापकम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

---

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ९वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख (क्र० १३१) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख (क्र० ६११ तथा ६१२) अनिश्चित समयके निषिधि लेख हैं। इनमें पहला लेख इस गणके शान्तवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है (क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७)। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूलि नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४५ मे इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख (क्र० २५९) सन् ११६५ का है। इसमे इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है — मुनिचन्द्र — विजयकीर्ति — कुमारकीर्ति त्रैविद्य — विजयकीर्ति (द्वितीय)। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एक्कसम्बुगे नगरमे एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति (द्वितीय) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें (क्र० १६८) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है — यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६०७) मे भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नही होगा।[1]

यापनीय सघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमे है (क्र० २०७, ३६८, ३८६) इनमें पहला लेख १२वी सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

---

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं (क्र० १२४, २५०)।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एवं माघनन्दि इन चार आचार्यों-का वर्णन है – इनमें परस्पर सम्बन्ध बतलाया नहीं है। दूसरे लेखमें १३वीं सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।[1]

इसी संघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरि ये इस गणके आचार्य थे।[2]

पाँच लेखोंमें यापनीय संघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३,२९८–३००,३८४)। इनमें पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति – नागचन्द्र – कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं सदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं सदीमें श्रेकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय संघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमें मूलसंघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

---

१ पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् ९८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७७ तथा १२वीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १३०,१८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय संघके तीन और गणोंका उल्लेख है – कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमडुव गण-(तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७–२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।[1] इनका अब क्रमश. विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनसंघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक कर्कराज सुवर्णवर्षने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।[2]

सेनगणके तीन उपभेद थे – पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एवं चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसंघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य रानी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।[3]

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

---

१. पहले संग्रहमें उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० ९०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।

२. पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।

३. पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के आये हैं। (क्र० १८६,२१७,१८६,५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार काचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हें कुछ दान दिया गया था। इन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमें निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।[1]

एक लेख (क्र० १४७) में चन्द्रिकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ में उल्लेख है। इसमें मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख (क्र० ४१५) में है। उसमें ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ में हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोंमें सन् १५९७ में सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) में समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। सन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ में दीवालीका त्योहार मनानेके ढंगमें कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।[2]

१ पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट अन्वयका कोई वर्णन नहीं है।

२ भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवी सदी तक प्रमाणित होता है।[1]

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमे देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्य-संघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे (अथवा हनसोगे) बलि था। इसका पहला उल्लेख (क्र० ७४) दसवी सदीके प्रारम्भका है[2] तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। इस बलिका दूसरा लेख (क्र० २७२) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है। इस शाखाके चार लेख और है (क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८) जो बारहवीसे चौदहवी सदी तकके है। इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था। इसका उल्लेख सात लेखोमें (क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२) मिला है। ये सब लेख १२वी – १३वी सदीके है। तथा इनमें हरि-चन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

---

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंजा (विदर्भ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है। पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है।

२. यही इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है। पहले संग्रहमे देशीगणके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से मिले हैं तथा पन-सोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० (क्र० २२२) से प्राप्त हुए हैं।

इन आचार्योंके उल्लेख मिलते है।[1]

प्रस्तुत सग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख विना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमे मिलते है। इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमे सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है। इस प्रकारके अन्य लेख १७ है (क्र० १७१, १७७–८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८–९, ३६१-६, ४९०, ५६१)। ये लेख १६वी सदी तकके है। इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नही चलता[2]।

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) में मिला है। यह लेख दसवी सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है। विशेष यह है कि यह लेख उडीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके है।[3]

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है। इसमें प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वी सदीके पूर्वार्धमे एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है।[4]

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वी सदीमे मिला है (क्र० ३७२)।[5]

---

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८२ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७२) तकके हैं।

२ पहले सग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१३ (क्र० ७१३) तक के हैं।

३, ४ पहले सग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नही है।

५. पहले सग्रहमें इस अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद वाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४७८) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है।

किसी उपभेदके विना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले है। इनमे दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ मे गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमे देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलसघ – देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बारहवी सदीके है। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नही है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के है और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्यको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्राय कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमे प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवी-बारहवी सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ मे कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगेगूरु गण-के कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्ध-मानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टत कोण्डकुन्दे स्थान-का सूचक है।[1]

(आ ४) सूरस्थ गण – प्रस्तुत सग्रहमे इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र – कल्नेलेदेव-रविचन्द्र-

---

1. पहले सग्रहमे कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) विना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मल-गेगूरु गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४५, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गंग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।[१]

सूरस्थ गणके दो उपभेदोका पता चला है — कौरूर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।[२] कौरूर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख है। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समाधिलेख सन् १०७७-७८ के है (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी — वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके है। इस प्रकार कोई १४ लेखोसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवी सदीसे बारहवी सदी तक प्रमाणित होता है।[३]

(आ ५) बलगार-(बलात्कार)-गण — इस गणका पहला उल्लेख

---

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले सग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।

२. पहले सग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्रकूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)

३ कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विचरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है (क्र० १५४)।[1] इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका बलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है — वर्धमान-महावादी विद्यानन्द—उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र—गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि।[2] अगले लेख (क्र० १५५) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम हैं—अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २—त्रिभुवनचन्द्र। इन लेखोंमे गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है। लेख १५७ में सन् १०७४ मे पुन. त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है। इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख (क्र० ३४२, ३७६) तेरहवी सदीके हैं। इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परामे १९ आचार्योंके नाम दिये है किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नही होता।

चौदहवी सदीमे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है। इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे। इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० ३९३) इसी परम्पराके तीन लेख और है। इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोंका उल्लेख है। ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के है (क्र० ४०२,

---

1 इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है। अत. डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है। बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ९५० के लगभग मिला है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २९, ३०)।

२ इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है। हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे।

४०४, ४३४)।[1]

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४४८, ४६०,४६८)।[2] इनमें सन् १५०० में रत्नकीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है।

(आ ६) क्राणूर गण – इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है (क्र० ९६)।[3] इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेखके बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता। इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं – तिन्त्रिणी गच्छ, मेषपाषाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ। तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं (क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९)। पहले दो लेख बाहरवीं सदीके हैं[4] तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

---

१ इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं (क्र० ६१७, ७०२)। क्र० ६१७ में इसे मल्सारद गच्छ पढा गया है, यह 'श्रीमद्शारद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है। उत्तर भारतमें बलात्कारगणकी दस शाखाएँ १४वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थीं। इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का (क्र० २०७) है।

४ पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का (क्र० २०९) है।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख (क्र० ४७६) मे सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेषपाषाणगच्छके दो लेख है (क्र० २१४, ६०३)। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्र के शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक बसदिके बारेमें है।[1]

पुस्तक गच्छका एक लेख (क्र० २४०) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अत. इसका तात्पर्य स्पष्ट नही है।[2]

बारहवी-तेरहवी सदीके चार लेखोंमें (क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवी सदीसे सोलहवी सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसंघ-निगमान्वयका एक लेख (क्र० ३६०) सन् १३१० का है। इसमे कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।[3]

उपर्युक्त विवरणसे मूलसघके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये विना मूलसघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११२, १४५, २०४) दसवी-

---

१. पहले सग्रहमें मेषपाषाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है (क्र० २१६)

२ पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है (देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है।)

३. पहले सग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके हैं। इस तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मिलाकर मूलसंघके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड संघ—इस संघका एक लेख (क्र० ८८) मिला है। इसमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।[1]

(ई) द्राविड संघ—इस संघके नन्दिगण-अरुगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफी विस्तारसे दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नही है। चौदहवी सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड संघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुगल अन्वयका उल्लेख नही है। ये लेख सन् ११५९, १२९५ तथा १४वी सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमश गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अस्तित्व ११वी सदीसे १४वी सदी तक प्रमाणित होता है।[2]

---

१ गौडसंघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इसे कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्रविड संघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)

(ढ) माथुर संघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस संघके महामुनि गुणभद्र-द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[1]

(ऊ) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए वटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशर्माने सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।[2]

(ऋ) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठीं-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यणन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रणन्दने कुछ दान दिया था।

(ॠ) सिंहवूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।[3]

(ऌ) जैन संघके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न संघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

---

१. माथुर संघ बादमें काष्ठासंघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलाटीकाके कर्ता वीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवला-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिंहवूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिसे कोई खास भेद नही था। इन सभी संघोके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, बगीचे, गाँव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजसभाओमें वादविवाद करते थे, प्रसगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रसाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन संघका प्रभाव बढानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलभूत उद्देश-वीतराग भावकी साधनाके कहाँतक अनुकूल है यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नही मिला है।[1]

यह तो नही कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोमें ही मग्न रहते थे – साधुसघका एक वर्ग अवश्य ही प्राचीन शास्त्रोक्तमार्गका नि स्पृह भावसे अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंसे दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओका शिलालेखो आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

२ राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवश—प्रस्तुत सग्रहमें जैन सघका सम्मान करनेवाले जिन राजवशोका उल्लेख है उनमें कलिंगके राजा खारवेलका वश प्रथम व प्रमुख है। सनपूर्व पहली सदीमें इस वशके तीन राजपुरुषो-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयी। खारवेलकी पटरानी, महाराज कुदेपश्री तथा कुमार वडुख ये वे तीन राजपुरुष है (ले० ३–५)। यहींके एक लेख (क्र० ९) मे नगरके न्यायाधीश

१ श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें प० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासी और वनवासी' (जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय सस्करण) देखने योग्य है।

भूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है।[1]

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत संग्रहमें है। यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है।[2]

हस्तिकुण्डी (राजस्थान) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है। आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंसे कुछ करोंकी आय भी अर्पित की थी। यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था। विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानको पुनः सम्मति दी। मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है। धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था।[3]

उडीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय — दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस संग्रहमें हैं। इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका वर्णन है।

---

1. पहले संग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र० २) आ चुका है। उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों (जैनों) की देशमालका भी उल्लेख हुआ है।
2. पहले संग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख (क्र० ९१-९३) आये हैं। उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख भी हैं।
3. पहले संग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है। वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है। इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले संग्रह-में आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि)।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका – रणारुवीं नदी (पूर्वाधं) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।[1] इसमें सामन्त यशोवर्मा-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानकी वसतिकाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय – बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दि-संघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।[2]

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोल्हणदेवके समय – बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[3]

राजस्थानके चाहमान वंशके पाँच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।[4] पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१ इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी बाँस-वाड़ा व चन्द्रावती शाखाके लेख यहाँ आये हैं। (क्र० ३०४, ४७१, ४७२)।

२ चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।

३ इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं हैं।

४. पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३४७–४८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवंशके कोई ३० पीढियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।[1]

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होने-का वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का – औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।[2]

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गंग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यापनिक संघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवीं सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोंगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनों-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवीं सदीके अन्तमें राजा श्रीपुरुष तथा नवीं सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

1. पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।
2. पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोके दानका वर्णन है। चौथे लेखमे (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवी सदीमे एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवी सदीके प्रारम्भके एक लेखमे (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) मे राजा बूतुगकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ मे राजा मारसिंह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमे इस राजाने मुजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ मे इस राजाके समय शखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमे (क्र० ८८) मे है। दसवी सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) मे राजा रक्कसगग तथा नन्नियगगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) मे बूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमे गगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमे बनवाया गया था। एक अन्य लेखमे (क्र० २०७) पुन रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गगवशके राज्यकालमें जैनसघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।[1]

(आ २) कदम्ब वश — इस वशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस सग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्माके समय-का है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।[2] राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमे कदम्बवशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोके कोई १५ लेख मिले है। सन् ८९० के एक

---

१ पहले सग्रहमे गग वशके कई लेख हैं, जिनमे सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले सग्रहमे इस वंशके दस लेख है जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है (क्र० ६०)। सन् १०४५ के एक लेखमें कोकण प्रदेशमें महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है (क्र० १३१) तथा एक मन्दिरको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलनेका तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है (क्र० १६३-४)। सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवव्वरसिने एक मन्दिर बनवाया था (क्र० १६९)। सन् ११२३ और ११३० के दो दानलेखोंमें (क्र० २०२ व २१४) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूरवर्माके शासनका उल्लेख है। तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के दो दानलेखोंमें भी है (क्र० २३६-२३८)। सन् १२०७ के एक दानलेखमें कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है क्र० ३२३ व ३२५)। सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मप्परसने चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे (क्र० ४५५)। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६१४) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है।

(आ २) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराजके सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है (क्र० २२) जो छठी-सातवीं सदीका है। इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था।[1] राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं।[2] इनमें पहला

---

1. देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है। सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — (क्र० १०४,१०६,१०९)।
2. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १२४) सन् ८०२ का है।

लेख सन् ८०८ का है (क्र० ५४)। इसमें सम्राट् [illegible] राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक [illegible] द्वारा [illegible] एक गांवके दानका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ५५) में सन् ८१२ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है। कर्कराजने अपराजितगुरुको एक गांव दान दिया था। सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था (क्र० ५६)। सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधि[illegible] लिखा गया था (क्र० ५७)। नवीं-दसवीं सदीके एक लेखमें [illegible] है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट [illegible] (क्र० [illegible])। सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ [illegible] तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ [illegible] का उल्लेख है (क्र० ७७, ७८)। कृष्ण ३ की रानी [illegible] ने सन् ९[illegible] में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था (क्र० ७९)। सन् ९७० के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षका [illegible] तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है (क्र० ८३, ८५)। इन्द्र ४ [illegible] जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था (क्र० ८९)। सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है (क्र० ९३)।

बारहवीं सदीके एक लेख (क्र० २१७) में कलचुरि राजा [illegible]के अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त [illegible]देवका उल्लेख है।

(आ ४) पाण्ड्य वंश — इस वंशके पांच लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[1] इनमें पहला (क्र० २३) सातवीं सदीके राजा [illegible]के समयका दानलेख है। आठवीं सदीके एक लेखमें (क्र० ५०) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनकी करमुक्ति [illegible] वर्णन है। सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है।

था (क्र० ५८)। सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवीं सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था (क्र० ६२)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० ३५६) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है।

(आ ५) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है। इनमें पहला लेख (क्र० २०) छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णु-की माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ३९) में सातवीं-आठवीं सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारक-के पादानुध्यात कहा है। तीसरा लेख (क्र० ५३७) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुंजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है।[1]

(आ ६) चालुक्य वंश—बदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें है।[2] पहला (क्र० ४६) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुंकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। दूसरे लेख (क्र० ४६) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमे है।[3] पहला (क्र० ४४) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २ के राज्यका—आठवीं सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० ४९) आठवीं सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकय्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है। तीसरे (क्र० १००)

---

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है (क्र० ११५)।

२ इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमे हैं (क्र० १०६-८ तथा १११, ११३,११४)।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १४३-१४४, २१०)।

में दसवी सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामें सर्वाधिक—५८ हैं। लेखों-की अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योंसे साक्षात् सम्बन्ध आया था — जिन-में सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही। इस वंशके लेखोंमें पहला (क्र० ११७) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है। सन् १०२७ के एक लेखमें (क्र० १२४) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिर-को कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है। सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० १२६)। इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था। जगदेकमल्लकी बहुन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गोणदवेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था (क्र० १३४)। सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है। (क्र० १४१)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० २०४) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है।[1]

(आ ७) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है।[2] इनमें पहला (क्र० ८२) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है। सन् ९९९ के एक लेखमें

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १६६) सन् ९४० के आसपासका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख (क्र० १६७, १७१, १७४) हैं।

(क्र०९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवी सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मुडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणो तथा जैनोको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोमें (क्र० १२१,१२९) ग्यारहवी सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके है (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुग १ के शासनके पाँच लेख है (क्र० १६७,१७३,१९४,१९५,१९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के है (क्र० २१५,२१९) कुलोत्तुग २ के राज्यकालके तीन लेख है जिनमे एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४,२२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के है। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुग ३ के समयके दो लेख है (क्र० ३२४,३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते है कि चोल राजाओके प्राय सब लेख राजपुरुषो-से साक्षात् सम्बन्ध नही रखते।

युद्धके दिनोमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोका विध्वस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वशके कोई ३० लेख प्रस्तुत सग्रहमे हैं।[१] इनमे सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नही कर सके थे अत राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था (क्र० १५२) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें (क्र० १७५) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने बारहवी सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० १८३)। बारहवी सदी – प्रथम चरणके दो लेखोंमे राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोको दान देनेका वर्णन है (क्र० १८८-८९)। इस समयके चार लेखोंमें (क्र० २००, २०१, २१२, २१३) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों– गंगराज, उसका पुत्र बोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्यों का – मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था (क्र० २५२) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एव माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे (क्र० २३३, २४६)। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें (क्र० २७१, २८२) राजा वीरबल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देने-का वर्णन है तथा सन् ११७३ एव ११९० के लेखोमे इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोका उल्लेख है (क्र० २६८, २८१)। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं (क्र० २८५, २८६, ३२३) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के है तथा दो समाधिलेख हैं (क्र० ३२०-३२२)। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था (क्र० ३४२) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे (क्र० ३३५, ३४५, ३५१)। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है (क्र० ३६०) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरबल्लाल ३ के समय सन्

१३११में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है (क्र० ३९१)।

(आ ९) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है।[1] इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमे किसी सेनापति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० २५१)। यह लेख राजा बिज्जलके समयका है। इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है (क्र० २५६, २६०-२६२)। ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के है तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है। इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७९ के है (क्र० २६७, २७०) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है।

(आ १०) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रहके १५ लेखोंमें है।[2] इनमे पहला लेख (क्र० ३२६) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है। इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें (क्र० ३२८, ३२९, ३३०) तीन महाप्रधानों – प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है। ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के है। राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं (क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९)। ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके है इनमे तीन दानलेख है तथा एक समाधिलेख है। राजा महादेवके समयके तीन लेख है (क्र० ३४०, ३४१, ३४४), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के है तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक है। राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं (क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९), ये सन्

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० ४०८, ४२५, ४२६)।
२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला (क्र० ३१७) सन् ११४२ का है।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

(आ ११) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमे हैं।[1] इनमें पहला (क्र० ३९३) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं (क्र० ३९४, ३९६), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति बैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें बैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है (क्र० ४०४)। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं (क्र० ४०६, ४१५) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं (क्र० ४२५, ४३४) – पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वराग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोंका वर्णन एक लेखमें है (क्र० ४४०)। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें (क्र० ४५६)

[1] पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५२ का है (क्र० ५५८)।

मन्दिरोकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराग ग्रामकी मन्दिरको जमीनको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० मे एक जिनमूर्तिको पूजाके लिए कुछ करोकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ मे एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवंश—अब हम उन राजवंशोंके उल्लेखोका विवरण देखेंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वंशोमें नोलम्बवंश प्रथम है जिसके चार लेख मिले है (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।[1]

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके है। एकमे राजा-द्वारा सन् ८७८ मे एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ मे आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलब घटेयककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र०१२३)। नोलब ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वंशके चार लेख मिले है (क्र० १३७,२५८,४२२-

---

१ पहले संग्रहमे नोलम्बवाडिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।[1] इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवके जैन सेनापति गोग्गिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा बरागके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।[2] इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द वर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ मे सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० मे सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें है (क्र० १७६, १८६, २५९, ३१७, ३१८, ३१९)।[3] इनमे पहला लेख ११वी सदीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एक्कसम्बुगेके जिनमन्दिरके

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख है जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ९५० के आसपासका है।

२ पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं है।

३ पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख है जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के हैं। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।[1] इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।[2] इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।[3]

कोंगाल्व वंशके शासक वीरकोंगाल्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।[4]

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२४-५२५)। इनका

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२.३. पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४ पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८६)।

समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है ।[1]

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार – उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन संघको प्रायः सभी राजवंशोंके समय–विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय–अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है। इस सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-से अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था – वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे।[2] तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन संघके विषयमें उनकी नीति सहानुभूतिपूर्ण रही है।[3]

४ जैन संघकी दुरवस्था – बारहवीं सदीमें दक्षिण भारतमें वीरशैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुख-का परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा। इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें हैं।[4] इस संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है – ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये हैं। स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

---

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाओंके कई लेख हैं।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाओंकी संख्या सीमित ही है – कलिंगके खारवेल, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं-ग्यारवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं। आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे।

३ यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं।

४. लेख क्र० ४३५-३६ ।

विष्णु या शिवके मन्दिरोंमें ले जाये गये हैं। इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहांके कुछ स्तम्भोपर पार्श्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मोजूद है (क्र० २२२)। आन्ध्र प्रदेशमें अन्मकोण्ड पहाडी-पर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोंके अधिकारमें चला गया (क्र० १९७)। इस तरहके अन्य उदाहरण भी हैं।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोंका महत्त्व सर्वमान्य है। अबतक इस संग्रहके लेखोंसे प्राप्त तथ्योंका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी। इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओंकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है। साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनों साधनों-के समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है।

इस संग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं। पहले परिशिष्टमें इस संग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूची दी है। दूसरे परिशिष्टमें उन जैनेतर लेखोंकी संक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंसे संबद्ध कुछ उल्लेख हैं। तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका संग्रह है। यह संग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका। इस पुस्तकमें प्रस्तुत संग्रहको अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी हैं। हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंसे प्रस्तुत संग्रह अभ्यासकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

जैन शिलालेख संग्रह

[मूल लेख तथा साराश]

लिपि सनपूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थी।]

[रि० मा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९]

३

खण्डगिरि (ओरिसा)— (मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

१ अरहतपसादाय कालिंगा (न) (मम) नान लेण कारितं राजिनो लालाक (स)

२ हथिसाहस-पपोतस धु (तु) ना कलिंगच (कवतिनो सिरिखा)-रवेलस

३ अगमहिसि (ना) कारि (त)

[अरहतोकी कृपासे कलिंग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी]

[ए० इं० १३ पृ० १५९]

४

खण्डगिरि—(मचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी सनपूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा (मेघ) वाह (नस) कुदेपसिरिनो लेण

[कलिंगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी।]

[ए० इ० १३ पृ० १६०]

५

खण्डगिरि—(मचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

कुमारो वडुखस लेण

[यह गुहा कुमार वडुखने बनवायी ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६१]

६

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[चूलकम्म (क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म) का कक्ष ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

७

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

१ कमस हलखि-

२ णय च पसादो

[कर्म तथा हलखिण (सल्लक्षण) का बनवाया प्रासाद ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

८

खण्डगिरि (हरिदास गुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

[यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

९

खण्डगिरि (वाघ गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखदम
२ सभूतिनो लेण

[नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६३]

१०

खण्डगिरि (जम्बेश्वर गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास बारियाय नाकियस लेण

[महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६३]

११

खण्डगिरि (छोटा हाथीगुफा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिस""स लेण

[अगिस""की गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१२

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेण कि '

[पदमूलिकके कुसुमकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१३

खण्डगिरि (अनन्तगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला सदी

डोहद समणन लेणं

[दोहदके श्रमणोकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१४

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

ब्राह्मी, पहली सदी

१ · ·ख ·

२ · ·ण त थ द ध न····

३ ···ण त थ द ध न ·श प म ··

४ · ण त थ द ध न प फ ब श प स ह ··

५ ···त थ द ध न प फ ब ·श प स ह ···

६ ·थ ··

[यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवतः किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है।]

[ए० इं० १३ पृ० १६५]

१५

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्राकृत–ब्राह्मी, वर्ष ८४ (दूसरी सदी)

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमित्रस्य धितु ओस-

२ रिकाये कुटुंबिणिये दताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो ' 'सत्यसेनस्य घरवृधिस्य नि ···

[वर्ष ८४ में वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दता (दत्ता) ने यह मूर्ति स्थापित की। कोट्टिय गणके सत्यसेन····धरवृद्धि ।] [यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा।]

[ए० इ० १९ पृ० ६७]

१६
मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, पहली-२ री सदी (खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर)

(शा) खातो वाच (कस्य) आर्य ऋ (षि) दासस्य निर्वर्तना रकस्य भट्टिदामस्य''

[शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी ।' 'रक भट्टिदामकी ']

[रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७]

१७–१८
मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, २री सदी

[यह लेख २री सदीकी लिपिमें है। अरहन्तके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाधकके पुत्रका इसमें उल्लेख है। एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२८–२९ पृ० ७७]

१९
पहाड़पुर ताम्रपत्र (जि० राजशाही, बंगाल)

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

१ स्वस्ति पुण्ड्र (वर्ध) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाश्चाधिष्ठा
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-

२ माण्डलिकपलाशाट्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-
त्तक-गोपाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-

३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिन कुशलमनुव-
र्ण्यानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-

४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-
नारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयबाह्या-

५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदर्हथानेनैव क्रमेणावयो
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसंगृह्यावयो• स्वपुण्याप्या-

६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक-पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ-
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे

७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्त च
अ (त) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-

८ म्बूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टय गोपाटपुंजाद्
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-

९ प्रावेश्यानित्यगोहालीत• अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-
कुल्यवापमक्षयनीव्या दातुमि (त्यत्र) यतः प्रथम-

१० पुस्तपालदिवाकरनंदि-पुस्तपालधृतिविष्णु - विरोचनरामदास-हरि-
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु ...... मवधारण-

११ यावधृतमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यकुल्यवापेन
शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमु (दयबा) ह्याप्रतिकर-

१२ (खिल) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ-

पिछला भाग

१३ ...... कपस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्या-
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध (धूपा) द्युपयोगाय

१४ (तलवा) टकनिमित्तं च नगेर वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-
मध्यर्धं क्षेत्र अस्यैवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तक द्रोणवापचतुष्टयं

१५ गोषाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टय मूलनागिरट्टप्रावेश्यनित्वगोहालीतो
द्रोणवापद्वयमाढवा (पद्व) याक्रमित्येवम-

१६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवाप प्रार्थयतेऽत्र न कश्चिद् विरोध' गुणस्तु यत्
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-

१७ न च भवति तदेवं क्रियतामि यनेनाव धारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-
णनाथशर्मत एतद्भार्याराभियाश्च दीनारत्र-

१८ यमायीकृत्यैताभ्या विज्ञापितकक्रमापयोगायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-
हालीषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्र

१९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्त. कु १ द्रो ४ तद् युष्माभिः
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्कनडैरप-

२० विंछ्य दातव्याक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-
पालयितव्य इति स १०० (+) ५० (+) ९

२१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्ता परदत्तां वा यो
हरेत वसुन्धरां ।

२२ स विष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्टिवर्षसह-
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिद ।

२३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ॥ राजभिर्बहुभिर्दत्ता
दीयते च पुन. पुन. । यस्य यस्य

२४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । मही महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ।। विन्ध्याटवीष्वनम्भःसु शुष्ककोटर-
वासिनः । कृष्णाहिनो हि जायन्ते देवदायं हरन्ति ये ।।

[यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था । ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की । इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गांवमें, ४ द्रो० गोषाटपुंजक गांवमें, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी । काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ श्रमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार वट-गोहालीमें था । वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी । इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है । ये सम्भवतः गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे । पहाडपुरके समीपका गोआलभिटा गांव ही सम्भवतः प्राचीन वटगोहाली है । यहांके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेप मिले हैं ।]

[ए० इ० २० पृ० ५९]

२०

होसकोटे (मैसूर)

५वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्न-
वेयकुलामलव्यो-

२ मावभासनभास्करस्य स्वभुजजवजयजनितसुजनजनपदस्य
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कोंगणिवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५ विद्याविहितविनयस्य　सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६ विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-
शास्त्रस्य वक्तृप्र-
७ योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्मम-
८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-
युद्धावाप्त-
९ चतुरुदधिसलिलास्वादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-
त्पन्नतेजसो धनुर-
१० भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्हरिवर्ममहाधिराजस्य
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र　पिछला भाग

११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-
गोपमहाधि-
१२ राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमांगस्य
व्यायामोद्वृत्तपीन-
१३ कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-
ब्रह्मदे-
१४ यबहुसहस्रविसर्गोद्धरणकारिणः क्षुत्क्षामोपपिहितादानप्रीतिकर-
निशितधा-
१५ रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

१६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-खंडित-
१७ रिपुनृपतिमंडलेनाखंडलविलंबितत्रिभवविक्रमेण करितुरगवरारोहणसौष्ट-
१८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरभितसमंतदिगत-राभिग-
१९ तबुधमधुकरसमुदयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षांगेन प्रजापरिरक्ष-
२० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

२१ धार्मिकेण श्रीमता कोंगण्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये द्वादशे मवत्स-
२२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शासनाधिकृतस्य सकलमंत्रतंत्रांतर्गं-
२३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धेः सिंहविष्णुपल्लवाधि-राजस्य
२४ जनन्या भर्तृकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-
२५ वतायतनाय यावनिकसंघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिऊर् नाम ग्रामं

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

२६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्यागे श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-वापमात्रं
२७ क्षेत्रं मध्यमागे पंचकण्डुकावापमात्र क्षेत्रं इक्षुनिष्पादनक्षममे-
२८ कन्तोद्दक्षेत्रं ग्रामं दक्षिणेन कण्डुकावापमात्रं पद्दं उत्तरेण च द्वा-

२९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्र च देवतायतनसन्निकृष्टमेक वेश्म च

३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीत पानीयपातपुरस्सर दत्तं योऽस्य
चतुर्थपत्र पिछला भाग

३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पचमहापातकसयुक्तो भवति अपि चास्मिन्न-

३२ र्थे मनुगीता(न्) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्

३३-३८ (नित्यके शापात्मक श्लोक)

३९ कुवलालत्रष्टकारस्य इदम्पट्टुवस्य पुत्रेण पेरेरन्नामलिखिताऽपट्टिका ॥
शिवमस्तु

[यह ताम्रपत्र गगवशीय राजा माधव (द्वितीय) के पुत्र कोंगण्य-धिराज (अविनीत) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया गया था। इसमें यावनिक सघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन (जिन-मन्दिर) के लिए पुल्लिकर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-का उल्लेख है। यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण किया गया था। ताम्रपत्रको इदम्पट्टुवके पुत्र पेरेरने लिखा था।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८०]

२१

कोरमंग (मैसूर)

६वीं सदी, सस्कृत

प्रथम पत्र

१ सूर्यांशुद्युतिपरिपिक्तपकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-पद्मम्।

सिद्धम्
२ देवानां मकुटमणिप्रभाभिषिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-
लोकनाथ. (॥१)
३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीन्नराधिप (।) काकुस्थतुल्य काकु-
स्थो यथायास्तस्य भूपति (॥२)
४ तस्याभूत् तनयः श्रीमान् शान्तिवर्मा महीपति (।) मृगेशस्तस्य
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)
५ कदम्बामलवंशाद्रे. मौलिनामागतो रवि. (।) उदयाद्रिमकुटाटोप
(टाटोप) दीप्तांशुरिवांशुमान् (॥४)
६ नृपश्छलनर्का विष्णुर्दैत्यजिष्णुश्च स्वयं (।) हिरण्मयचलन्मालं
त्यक्त्वा चक्रं विभावित (॥५)
७ साम्राज्ये नन्दमानापि न माद्यति परंतप (।) श्रीरपा मद्यत्य-
न्यानतिपातेव वारुणी (॥६)
द्वितीय पत्र
८ नर्मद् स मही प्रीत्या यमाश्रित्याभिनन्दति (।) कौस्तुभाभारुण-
च्छाय वक्षो लक्ष्मीर्हरेरिव (॥७)
९ रवावधि जयन्तीव सुरेन्द्रनगरी श्रिया (।) वैजयन्तो चलच्चित्रं
वैजयन्ती विराजते (॥८)
१० रवेर्भुजंगदासीव चन्दनप्रीतमानसा (।) तथा श्रीर्नाभवत् प्रीता
मुरारेरपि वक्षसि (॥९)
११ विश्वा वसुमती नाथन्नायते नयकोविदम् (।) द्यौरिवेन्द्र ज्वलद्व-
ज्रदीप्तिकोरकिताङ्गदम् (॥१०)
१२ यस्य मूर्ध्नि स्वयं लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतै· (।) राज्याभिषेकम-
करोदम्भोजशबलैर्जलै (॥११)
१३ रघुणालम्बितामालां (मालां) कुण्डो गिरिरधारयत् (।) रवेराज्ञा
वहत्यद्य मालामिव महीश्वर (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोय विज्ञापितो नृपः (।) स्मितज्योत्स्नाभिषि-
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)

द्वितीय पत्र · दूसरा भाग

१५ चतुर्स्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (।) मधुर्मासस्तिथि
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥१४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंग्रामपराजितः (।) सिद्धायतनपूजार्थं
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमगाश्रितां महीम् (।) अधिकान्निवर्त-
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दम. (॥१६)

१८ आनन्दी दक्षिणस्याथ सेतो. केदारमाश्रितम् (।) राजमानेन
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (।) तच्चापि राजमानेन
वेटिकोटेत्रिनिवर्तनम् (॥१८)

२० उच्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (।) दत्तवांश्श्रीमहाराज-
स्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशाल तद्भगकारणमितस्य च
दोपवत्ताम्

तीसरा पत्र ·

२२ · 'श्रमस्खलितसयमनेकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतय.
प्रमाण (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि. (।) यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्त सद्भिश्च परिपालितम् (।) एतानि न निवर्त-
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्तां परदत्ता वा यो हरेत वसुंधरां (।) षष्टिर्वर्षसहस्राणि
नरके पच्यते तु सः (॥२३)

[यह ताम्रपत्र कदम्बवंशीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था। हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा संघकी वृद्धिके लिए कोरमंग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश है। दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है।]

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९]

२२

गोकाक ताम्रपत्र (जि० बेलगाँव, मैसूर)

६–७वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधेः । शासनं नाशित-
२ रिपोर्भासुरं मोहशासनं ॥ (१) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्थं-
३ कराणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मतेः श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
४ नायां तीर्थसन्ततावागुप्तायिकानां राज्ञामष्टसु वर्षशते-
५ षु पंचचत्वारिंशदग्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीन्द्रे-

दूसरा पत्र : पहला भाग

६ ज्जमहाराजस्याभिमत श्रीसेन्द्रकामलकुलांबरोदितदी-
७ प्तदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मजः श्रीमानिन्द्रणन्दाधि-
८ राजः स्ववङ्क्यानामात्मनश्च धर्मवृद्धये कुप्माण्डीविषये
९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारग्रामे जम्बूखण्डगणस्याय ज्ञान-
१० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यणन्द्याचार्याय भगवदर्ह-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

११ र्प्रतिमानचरनपूजार्थं भिक्षकम्लानवृन्दाना च तपस्विनां वैं-
१२ याबृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरत पूर्वाणग्रामसिरयमीमक ड-
१३ क्षिणेन सुब्जनलमार्गपर्यन्त अपरत पुन्नार्वास्नूम-
१४ हितचरमोक तस्मादुत्तरत पुष्करणा गनश्च यावत पूर्वसिरय-
१५ क राजमानेन पचाग.ननर्तनप्रमाणक्षत्रन्द-

तीसरा पत्र

१६ त्तवानेतद् यो हरति स पचमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च
१७-२० बहुभिर्वसुधा भुक्ता-(निरथक शापात्मक श्लोक)

[यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यणन्दिको दिया गया था । अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी । राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था । इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओंका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है । किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नही क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है ।]

[ए० इं० २१ पृ० २८९]

२३

चितरल (केरल)

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्चाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[इस लेखमें अरिट्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरत्तिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है । यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है ।]

[इं० म० त्रिवाकुर २]

२४

कुलगाण (मैसूर)

संस्कृत—कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

१ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय ...

२ श्रमणाचार्यसाधित. स्वखड्गैक ...

३ राक्रमैकयशसः दारुणारिगणविदार ...

४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोंगणिवर्मध ...

दूसरा पत्र

५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्म-
गोपमहाधिराजस्य धने-

६ कचतुर्दन्तयुद्धावासचतुरुदधिमलिलास्वादितयशसः पुत्रस्य श्री-
मन्माधवमहाधिराज-

७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्-
कोंगणिवृद्धराजस्या-

८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुन्ना-
टाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र (ब)

९ मत्कोंगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-
पारगस्य सूनोः श्रीम-

१० त्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-
विद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-

११ योगनिपुणतरस्य श्रीविक्रमोपार्जितानेकजनपदस्य प्रतापोपनत-
सकलसामन्तस्य

१२ घनविनीतस्यात्मजे 'श्रीमत्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-
राजस्य मकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुञ्जपिंजरितांगुष्ठे वरयुवतिमनोनयनसुभगे रिपुनृपतिगजाश्व-
रथनरोरुवन-

१४ लोकसमदद्विरदतुरगारोहणोपमीममाननिरतिशयनिजशरीरश्री-
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतौ मनोविनीतस्य भ्राता शिव-
कुमार. श्रीमत्पृथिवी-

१६ कोंगणिवृद्धराज स्थिरविनीत. अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-
न्नाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पति पृथिवीं परिपालयति कोङ्गुण्नाडा केल्लिपुनूरा चेटिभकं
कर्गुलचोल सट्टुवल्लु-

१८ वेरेठ वसदिगालुमेरड्डु कलनिड तोट्टमुं मनेत्तानम् पृथिवीकोंगणि
मुत्तरसरनुमतडो-

१९ ल पल्लवेकारमर् पोयूदार् कोकन्दियु मयिलूरगयुं मेल्पालु
जादिगालु कोलिगकंक्कालु ओन्डुतोट्टमुमा-

२० ह कलनिड पृथिवीकोंगणि मुत्तरसरनुमतडोल गजेनादर् कणमनू
पोयूदार् चन्त (क्र) संनाचा-

चौथा पत्र

२१ यंर् कर्तारराग अडकें साक्षि केविलपुसूर् पश्चिवंर अयसामन्तर
नाकत्ताणिड इद्दा-

२२ नल्दिोन् पंचमहापातगनप्पोन् श्री बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि-
स्सक (ग)-

२३ रादिभि- यस्य यस्य यदा भूमि (·) तस्य तस्य तदा फलं ॥
देवस्वं तु विषं घो-

२४ रं न विषं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (ब)

२५ यो हरेति वसुन्धरा षष्ठिं वर्षसहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ।
नारगो-

२६ ट्टेररोन्दु नोट्टं पयिर्दार् देवरा पसु गोट्टोन्दु तोट्टं कोण्डतु गजे-
न्ाडर्

२७ कण्णम्मन् कोडुगूर्नाडाल श्चोरंक्लवायगरं र्गाम्मालवायगरभिर्वरं
तुप्पूरालअरसरान्-

२८ तुमनप्पविक्षि पोयुडतु तुल् टिल् काल् किलिप्पुसूर् चेडियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पंक्तियाँ १२ से १६ तक के समान है ।

३३ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतिः पृथिवीं परिपालयति कंडुगूर्-
विषये

३४ केल्लिपुसूर् नान ग्रामे जिनालयाय बसदिकालुं जानिकालुं
नेल्नालुं कोलि-

३५ गनूकेरेक्कालु कांगुलडापोल तट्टुवल्लुवेरेतं पलुक्कलनिडं नालु-
तोट्सु म—

३६ नेच्चानमुं चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टरडके नाडी कोट्टरवं
कारेअरक्कं

[इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गंग वंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है — कोंगणिवर्मा माधव — विष्णुवर्मगोप — माधव — अविनीत कोंगणिवृद्धराज — दुर्विनीत — मुष्कर कोंगणिवृद्धराज — श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज — श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज। श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमें यह लेख लिखा गया था। पल्लवेल अरगने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इस लेखमें निर्देश है। इसी समय गजेनाड निवासी कण्णम्मनृने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये। माल्गोट्टेग्र्ने एक बगीचा तथा ओरकल्वायगर् और सीम्पाल्वायगर्ने कुछ खेत दान दिये। राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे। इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९०]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

७वीं सदी, कन्नड

[ये तीन लेख रंगाणिद्दुलगुट्ट नामक पहाडीपर पाषाणोपर खुदे हैं। इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण है —

१ सिंगनन्दिवन्दितन्

२ श्रीठरिगपम्मिण्डि

३ श्रीसूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६]

२८

रत्नगिरि (कटक, उडीसा)

संस्कृत, ७वीं सदी

[इस लेखमे ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७]

२९

पेनिकेलपाडु (कडप्पा, आन्ध्र)

संस्कृत–तेलुगु, ७वीं सदी

[इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है। उन्हें भव्यरूपी फसलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ कहा है। इस स्थानको अब सन्यासिगुण्डु कहा जाता है। लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२०]

३०

कोंगरपुलियंगुलम् (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वी सदी

(एक जैनमूर्तिके नीचे –) श्रीअज्जणन्दि

[यहाँसे ३८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४]

३१

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[(जैनमूर्तिके नीचे –) यह मूर्ति वेण्बुनाडुके कुरण्डि अट्टउपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगळ्-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१]

३२

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यह मूर्ति कुरण्डि अष्टोपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२]

३३-३८

कीलक्कुडि (मद्रास)

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं – कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार (२) ।
अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।
गुणसेनदेवके शिष्य अन्तवन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपाल्न् ।
गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेण्बुनाडुके तिरु कुरण्टिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरंयगाविदि, पल्लिके प्रमुख ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३–६९]

२६

नलजनम्पाडु (आन्ध्र)

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

१ स्वस्ति म–	२ गवदर्हत (प)–
३ म्ममट्टारकस्य पा–	४ दानुध्यात परममा–
५ हेश्वर पर(मे) श्वर प–	६ ल्लवादित्य ओवादि–
७ राजुल अन्दु पल्ले–	८ यरि कोडुकु वादि (रा)–
९ जेन्वानूरु राजमा (न)–	१० नु मूनूरु वुट्टु आर्क–
११ पट्टु क्षेत्रंबु प(रि)–	१२ म्नि पल्लेयारि (ग्र)–
१३ यनंबुनाकु इच्चे	१४ ढोनि रक्षिंचिनवानि (कि)

पिछला भाग

१५ अश्वमे–	१६ गश्वमेधंबुना
१७ पलंबगु	१८ द्रोनि लञ्चिन–
१९ वानिकि एकलु	२० श्रीपर्वतबु
२१ लञ्चिन पाप–	२२ बगु वाच्चो–
२३ लाल कोडुकु	२४ पल्लवाचा–
२५ र्य्यस्य लिकि–	२६ तम् (॥)

[इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है। वादिराजुलको अर्हतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है। लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है।]

[ए० इं० २७ पृ० २०३]

४०-४३

सातानिकोट (कुर्नूल, आन्ध्र)

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[यहाँ एक खेतमें पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं —

१ श्री कोपा (शि) की निसिधि

२ संसारभीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,
३३७, ३३९ पृ० ४१-४२]

४४

माचेर्ल (कृष्णा, आन्ध्र)

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ (द्वितीय) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था। दयावसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इस दानकी रक्षा कांठूरके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१]

४५

शिग्गांव (धारवाड, मैसूर)

शक ६३० = सन् ७०८

संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था। किसुवोललके राजस्कन्धावारसे राजाने पुरिगेरे नगरमें कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

१ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)श्रय २ श्रीपृथु(वीवल्लभ) महाराजा

३ धिराज परमेश्वर भटारर ४ राज्य ओन्दुत्तरमभिवृद्धि स–

५ के आरनेया वर्ष प्रव– ६ र्तमानमागे जे–

७ बुलगेरिगे कलि– ८ यम्म गामुण्डुगेय्दो

९ चेदियमानूमाडिसिदोद् १० इदर मुन्दे कोण्ड–

११ शुलरकुण्न कीर्तिवर्म– १२ गोसासिय निरिसिद

१३ कीर्तन। दीशापालस्य लि– १४ खित। प्रभुनामन्।

[यह लेख वदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है। इसमें जेबुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलियम्य-द्वारा एक चेदिय अर्थात् जिनमन्दिर वनवाये जानेका निर्देश है।]

[ए० इ० २१ पृ० २०४]

४७

कुडलूर (मैसूर)

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्म तोरेय तडिय तोण्टटोळ् तम्म भागम देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प राउणर पक्कद्तोण्टम कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागद तोण्टमं मूडण-बसदिगे कोट्टर् रणपाकरसर् आळे काण्डु तोट्टर् ॥

[इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वीयवसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लिपि ८वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४]

४८

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, ८वीं–९वीं सदी

[यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था। इस राजाके 'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके ना ार्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए म ्लवल्लि ग्राम दान दिया था। इसी प्रकार कोंगिक वंशके मणलि मनेओडेयोनूने कुछ भूमि दान थी। इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें निन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी ग्रामके दानका भी उल्लेख है। तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके मामा विजयशक्ति अरस-द्वारा ६ खडुगभूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२० पृ० २७]

४९

मुनुगोड्डु (गुण्टूर, आन्ध्र)

तेलुगु ८वीं सदी

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष २७ का है। इस समय महासामन्त कलेश्वर गोंकय्यने मुनुगोड्डुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहींके एक अन्य लेखमें गोंकके सेवक चांगट्ट-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अणगांलि-द्वारा मुनिसुव्रतके तीर्थमें किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६]

५०

तिरुगोकर्णम् (मद्रास)

तमिल, ८वीं सदी

[यह लेख अहंगागरै नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोनेरिमैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके ?वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेनविगाडुके निवासियोंसे कहा गया था कि कल्लालनमल्लिके पेरुङ्किलि चोलमेन्सपलिय आळ्वारके पूजादि-के लिए स्थानीय पल्लि (जिनमन्दिर) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित जमीनोंको करमुक्त किया गया।]

[इ० पु० क्र० ७३० पृ० ८७]

५१-५२

ब्रिटिश म्यूजियम (लन्दन)

८वीं-९वीं सदी, संस्कृत–नागरी

१ अनन्तवीर्य   २ सुलोचना   ३ धृति

[ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोंपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

यक्षिणियोंकी है और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं। अक्षरोंकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वीं-९वीं सदीके हैं।]

[Medieval Indian Sculpture in the British Museum P 41-42]

५४
चदनगुप्पे (मैसूर)
संस्कृत–कन्नड, शक ७३० = सन् ८०८

[इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमें-से पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान है जिनमें राष्ट्रकूट राजाओंका वंशवर्णन गोविन्दराज३ तक किया गया है।]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

५१ धारावर्षश्रीवल्लभमहाराजाधिराजस्य पुत्र· शौचाचारप्रगुणं-गणप्रण-

५२ मितसमस्तलोक परोपकारकरुणापरः परमेश्वरचरणारविन्दवन्द-नाभिनन्दन र-

५३ णावलोकश्रीकम्भराज. पुग्राह एडेनाड्विषये चदनोगुप्पे नाम ग्राम तकल-

५४ ननगर अधिवसति विजयस्कन्धावारे। त्रिंशदुत्तरेष्वतीतेषु शक-वर्षेषु कार्त्तिक-

५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोण्डकुन्देयान्वय सिमंकगे-

५६ गूल्लाण कुमारणन्दिभट्टारकस्य शिष्य एळवाचार्यगुरु· तस्य शिष्यो वर्धमा-

५७ नगुरु (।) सर्वप्राणिहितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्भवः (।) शान्त· सर्वज्ञकस्येव नयोक-

५८ तद्गुणाक्षत. (॥) तस्मै तं ग्रामं अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगणण विज्ञापनेन श्रीकरमेव श्रीविनय-

५९ वमतये तलवननगरे प्रतिष्ठितायै । तस्य सीमान्तराणि वडगण दिशे पोल्पुं-

चतुर्थ पत्र : दूसरी ओर

६० लि वडगण पडुवण कोनेड्डु पोमत्तिगल्लु पडुवणसीमे कल्ल-गेरेय पेर्वं-

६१ ग पडुवण तेंकण कोनेड्डु पोंगुलवल्लिय तेंकोलवे तेंकण सीमे बेलक्काल तंलो-

६२ ल्वे तेंकण मूडण कोनेड्डु मुडुवल्लि कोरलु मूडणसीमे कल्लि-वेट्टिन मूडण पारे-

६३ ये मूरु वेट्टु ओलगु मूडण वडगण कोन्नेडु वडनिलिय वडगण ओल्वे

६४ अस्य दानस्य साक्षिण षण्णवतिसहस्रविषय प्रकृतय.

६५ योस्यापहर्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन च स पचभिर्महद्भि. पातकै (·) संयुक्ता

६६ भवति यो रक्षति स पुण्यभाग् भवति अपि चात्र मनुगीता ( ) श्लोका (.) स्वदत्ता परदत्तां

६७ वा यो हरेत वसुन्धरां (।) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि. (॥) स्व दानु

६८ सुमहच्छक्यं दु खं अन्यस्य पालनं (।) दान वा पालनं वेत दानाच्छ्रेयोनुपा-

पाँचवाँ पत्र : पहली ओर

६९ लनं (॥) बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि. (।) यस्य यस्य यदा भूमि (·) तस्य

७० तस्य तद्वा फल (॥) देवस्व तु विप घोर न विप विपमुच्यते (।) विषमेकाकिन हन्ति

७१ देवस्व पुत्रपौत्रिक (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखित (॥)

[यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट समाट् गोविन्दराज (तृतीय) के राज्यकालमें सम्राट् (ध्रुव निरुपम) धारावर्पके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था। कोण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलगेगूर गणके कुमारणदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्पे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२]

५५

सूरत ताम्रपत्र (गुजरात)

शक ७४३ = सन् ८२१, संस्कृत—नागरी

१ ओं । श्रियः पद नित्यमशेपगोचर नयप्रमाण प्रमिपिद्धकुप्पथ । जनस्य सम्यक्त्वसमाहितात्मना जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासन ॥ (१) स वो-

२ व्याद् वेधसा धाम यन्नाभिकमल कृत । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलकृत ॥ (२) आसीद् द्विषत्तिमिरमुद्यतमण्डलाग्रो ध्वस्तिमय-

३ नभिमुखो रणशर्वरीपु । भूपश्शुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-गोविन्दराज इति राजसु राजसिह ॥ (३) दृष्ट्वा चमूमभि-

४ मुखीं सुभटाट्टहासामुन्नामित सपदि येन रणेपु नित्य । दष्टाधरेण दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्ग कुल च हृद(य)-

५ च निज च सत्त्व ॥ (४) खड्ग कराग्रान्मुखतश्च शोभां मानो मनस्तस्समेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्त्र-

६ यं रिपूणां विगलत्यकाण्डे ॥ (५) तस्यात्मजो जगति विश्रुत-
दीर्घकीर्त्तिरार्त्तार्त्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-
७ स्त्रिविष्टपनृपानुकृति कृतज्ञ. श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिर्बभूव ॥
(६) तस्य प्रभिन्नकरटच्युतदानद-
८ न्तिदन्तप्रहाररुचिरोल्लिखितांसपीठ । क्ष्माप क्षितौ क्षपितशत्रु-
रभूत्तनूज सद्राष्ट्रकूटकनकाद्रिरिवेन्द्रराजः ॥ (७) तस्योपा-
९ र्जितमहसस्तनयश्चतुरुदधिवलयमालिन्या । भोक्ता भुवश्शत-
क्रतुसदृश श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत ॥ (८) काञ्चीशकेर-
१० लनराधिपचोलपाण्ड्यश्रीहर्षवज्रटविभेदविधानदक्षं । कर्णाटकं
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यैः कियद्भिर-
११ पि यस्सहसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभङ्गमगृहीतनिशातशस्त्र-
मश्रान्तमप्रतिहताज्ञमपेतयत्न । यो वल्लभ सपदि दण्ड-
१२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) आसेतो-
र्विपुलोपलावलिलसल्लोलोर्मिमालाजलादाप्रालेयक-
१३ लंकितामलशिलाजालात्तुषाराचलात् पूर्वापरवारिराशिपुलिन-
प्रान्तप्रसिद्धावधेयेनेद जगती स्वविक्रमबलेनैका-
१४ तपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिव प्रयाते वल्लभराजे क्षतप्रजा-
बाध । श्रीकर्कराजसूनुर्महीपति कृष्णराजोभूत ॥ (१२) यस्य
स्वभुजप-
१५ राक्रमनिश्शेषोत्सादितारिदिक्चक्र । कृष्णस्येवा(कृष्ण) चरितं
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१३) शुभतुङ्गतुङ्गतुरगप्रवृद्धरेणूद्धरुद्धरवि-
किरणं । ग्रीष्मेपि नभो निखिलं
१६ प्रावृट्कालायते स्पष्ट ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं
समीहितमजस्र । तत्क्षणमकालवर्षं वर्षति सर्वार्थिनिर्व(प)ण ॥
(१५) राहप्पमा-

१७ स्मभुग्नजातबलावलेपमाजौ विजित्य निशितासिलताप्रहारैः । पालिध्वजावलिशुभामचिरेण यो हि राजाधिराजपरमेश्वरता
१८ मतान ॥ (१६) क्रोधादुत्खातखड्ग प्रसृतरिपुमयं भीममान समन्ताद्राजादुद्वृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपसंक्षोभदक्ष । शौर्यं त्यक्त्वारि-

दूसरा पत्र पहला भाग

१९ वर्गो भयचकितवपु क्वापि दृष्ट्वैव सद्यो दर्पोध्मातारिचक्रक्षय-करमगमद्यस्य दोर्दण्डरूप ।। (१७) पाता यश्चतुरम्बुराशिरसनाऊ-कारभाजो भु-
२० वस्त्रय्याश्चापि कृतद्विजामरगुरुप्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृद-ग्रणीर्गुणवतां योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तु स्वर्गफलानि भूरितपसा
२१ स्थान जगामामरं ॥ (१८) येन श्वेतातपत्रप्रहतरविकरव्रात-तापात्सलील जग्मे नासीरधूलीधवलितवपुषा वल्लभाख्यस्स-दाजौ । श्रीमद्गोविन्दराजो जि-
२२ तजगदहितस्त्रैणवैधव्यहेतुस्तस्यासीत् सूनुरेक लिताशाति(म) त्तेभकुम्भ. ॥ (१९) तस्यानुज श्रीध्रुवराजनामा महानुभाव प्रथितप्रताप ।
२३ प्रसाधिताशेषनरेन्द्रच(क्र.) क्रमेण बालार्कवपुर्बभूव ॥ (२०) जाते यत्र च राष्ट्रकूटतिलके सद्भूतचूडामणौ गुर्वी तुष्टिरथाखिलस्य जगत सुस्वामिनि प्रत्यह । (सत्य) सत्यमिति प्रशा-
२४ सति सति क्षामासमुद्रान्तिकामासीद् धर्मपर गुणामृतनिधौ सत्यव्रताधिष्ठितं । (२१) शशधरकिरणनिकरनिभ यस्य यश. सुरनगाग्रसानुस्थै । परिगी-
२५ यतेनुरक्तैर्विद्याधरसुन्दरीनिवहै ॥ (२२) दृष्ट्वान्वह योधिजनाय नित्य सर्वस्वमानन्दितबन्धुवर्ग प्रादात् प्रहृष्टो हरति स्मवेगात् प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

२६ वीर्यः ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्भोधिमंयुत । राज्यं धर्मेण लोकानां कृता हृष्टि॰ परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित-(म्समुन्नत) सारदुर्गो गांगौघसन्तंतितनिरोध-

२७ विवृद्धकीर्ति । आत्मीकृतोन्नतवृषाकविभूतिरुच्चैर्यन्क ततान परमेश्वरतामिहैक ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु-कीर्तिर्गोविन्दराज इ-

२८ ति गोत्रललाममूत् त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रताप सन्तापिताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च प्रथितं यस्या-

२९ परं ज(ग)ति नाम । यश्चतुरुदधिसीमामेको वसुधां वशे चक्रे ॥ (२७) एकोप्यनेकरूपो यो दहशे भेदवादिभिरिवात्मा । परबल-जलधिमपारं

३० तरन् स्वदोर्भ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निर्हंतिरहं गृहीतशस्त्रा मे परे बहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्त स्वप्नेपि किमुताजौ ॥ (२९) राज्याभिषेकलशैरभि-

३१ षिच्य दत्ता राजाधिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति-भिर्बहुभिस्समेत्य स्तम्भादिभिर्भुजवलादवलुप्यमानां ॥ (३०) एकोनेकनरेन्द्रवृन्द्रसहिता-

३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(ता)सिलताप्रहारविधुरा वध्वा महाम्युगे । लक्ष्मी(म)प्यचला चकार विलसत्सच्चामरग्राहिणीं संसीदद्गुरुविप्रसज्जनसुहृद्ब-

३३ धूपभोग्यां भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुप्रजे । श्रीमहाराजशर्वाख्य स्यातो राजाभवद् गुणै ॥ (३२) अर्थिषु यथार्थतां यस्समभिष्टफलाप्तिलब्धतो-

३४ षेषु । वृद्धिन्निनाय परमाममोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

मृत ततपितृव्यो रिपुमवयिमर्याद्भूत्यभावे कांतुलैः मीयानिन्द्रराजो गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी । रागादन्यान व्युदस्य प्रकटितविनया य नृप सेव्यमाना राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४) निर्व्वाणाद्यासिवालासदितत्निजनो –

३६ पास्यमाना सुवृत्त वृत्त जिग्यान्यराज्ञां चरितमुदयवान सर्व्वतो हिमकेश्य । एकाकी द्रसवैरिस्वजनकृतिमहत्प्रान्तिराज्येनगनु- कोटीय गण्डल

३७ धम्मपन इव निजस्वामिदत्त ररक्ष ॥ (३५) यस्यागमात्रजयिनः प्रियसाहसस्य क्ष्मापालवेपफलमेव यमृ(त्र) मैन्यं । मुक्त्वा च सर्व्वभुवनेश्वरमादिदे –

दूसरा पत्र दूसरा भाग

३८ व नावन्दतान्यसमरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति रक्षितराज्यभारस्सार. कुलस्य ननयो नयशालिशौर्यः । तस्या –

३९ भवद् विस(व)नन्दितबन्धुसार्थ. पार्थः सदैव धनुषि प्रथम- शश्रुचीना ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया या शौर्येण वीर्येण च कोपि भूप । एतेन साम्यास्ति

४० न वेति कीर्त्तिस्सर्व्वानुका भ्राम्यति ञ·य लोके ॥ (३८) स्वेच्छा- गृहीतविषया(न्)दृढसघसमाज प्रोद्वृत्तदसगरमौक्तिकराष्ट्रकूटान । उत्खातसद्गनिज –

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात स्वपदे व्यधत्त ॥ (३९) तेनेदमनिलविद्युच्चलमालोक्य जीवितमसार । क्षितिदानपरम- पुण्य. प्रवर्तितो ध –

४२ र्मदायोयम् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

धिराति सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेव. कुशली सर्वानेव यथासंबध्य-
मानान् राष्ट्रपति –

४३ विषयपतिग्रामकूटयुक्तनियुक्ताधिकारिकमहत्तरादि-
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वः संविदितं यथा मया श्रीवड्डिकाम्द –

४४ स्थावासितविजयस्कन्धावारगस्थितेन मातापित्रोरात्मनश्चैहिका-
मुष्मिकपुण्ययशोभिवृद्धये श्रीनागसारिकास्वनगरस्यैव विद्यार्हच्चैत्या-
ल(या)यतनानि(वद्ध) –

४५ सत्सुरान्यसपिण्डनवमानिकायाः खण्डस्फुटितनवकर्मचरुबलिदान-
पूजार्थं तया तथानिवस्यमानचातुर्वर्ण्यमूलसंघान्वयसेन –

४६ सेनसंघनलवाटिगुरोःशिष्यश्रीमुनिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीअप-
पराजितगुरो श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध अम्बानाटकग्रामस्य
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगाभिधानं वापुवापी यस्याघाटनानि पूर्वतः श्रीधर-
वापिका दक्षिणतो वहः अपरत: पूर्णा महानदी उत्तरत-
स्सन्वपुर –

४८ वापिका । एवमियं चतुराघाटोपलक्षिता सधान्यहिरण्यादेया
सचाटभटप्रवेश्यस्सर्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीय आच –

४९ न्द्रार्कार्णवक्षितिसरित्पर्वतसमकालीन. शिष्यप्रशिष्यान्वयभोगयोप-
भोग्यः शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद –

५० धिकेष्वतीतेषु वैशाखपौर्णमास्यां स्नात्वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-
तोऽस्योचितया ब्रह्मदायस्थित्या भुंजतो भोजयतः कर्षतः कर्षयतः
प्रतिदि –

५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना कर्णीया ॥ तथागामिनृपति-
भिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोला-
न्यनित्यान्यैश्व –

५२ यांणि तृणाग्रलग्नजलबिन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-
पटलावृत –

५३ मतिराच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानकं वानुमोदेत स प(च)भिर्महापात-
कैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यादित्युक्तं च भग(व)ता वेदव्यासेन
व्यासेन ॥

५४-५८ [नित्यके शापात्मक श्लोक – षष्टिं वर्षसहस्राणि आदि]

५९ यथा चैतदेव तथा शासनदाता लिपिज्ञस्स्वहस्तेन स्वमतमारोप-
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि –

६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखितं चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि
शासनं जि –

६१ नशासनं । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)
जयति जिनोक्तो धर्मष्षड्जीवनिकायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-
रिव लो(के)

६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[यह ताम्रपत्र शक ७४३ मे वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था। इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोंकी वंशावली अमोघवर्ष (प्रथम) तक दी गयी है। तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-का उल्लेख है जो गुजरातमें शासन कर रहा था। अमोघवर्षके राज्यारोहण-के बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमें कर्क-राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी। कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलसंघ-सेनसंघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था।]

[ए इ २१ पृ १३३]

५६

राणिवेण्णूर (धारवाड, मैसूर)

शक ७८१ = सन् ८६०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष (प्रथम) के समयका है। नागुल पोल्लब्बे द्वारा स्थापित नागुलबसदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान सिहवूरगणके नागनन्द्याचार्यको दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २०९]

५७

बेंदूर (मैसूर)

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण संवत्सरमें लिखा गया था। चिकण्ण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है। व्रतोंका पालन और सन्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है। अत यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित) [सा० इं० इं० ११ पृ० ६]

५८

पेवरमलै (मदुरा, मद्रास)

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डु एलु-नूर्त्तोण्णूर्रिरण्डु
२ पोन्डणवरगुणर्कु याण्डु एट्टु गुणवीरक्कु-
३ रवडिगल् माणाक्क(र्)कालत्तु शान्तिवीरक्-
४ कुरवर् तिरुत्तयिरं पोरिश्श (पार्श्व)प(भ)टारंरैयुमिय-
५ क्कि अब्बैगलैयु पुट्टुक्कि इरण्डुक्कुमुद्-

६ टाचवियुमोरढिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-
७ ण् पैन्नूरैन्दु काणम् ॥

[यह लेख पाण्डय राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है। इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था। इनके लिए उन्हें ५०२ काणम् (सुवर्णमुद्रा)दान मिला था।]

[ए० इ० ३२ पृ० ३३७]

५९

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेम मारियम्मन देवालयके आगे पड़े हुए स्तम्भपर

[इस लेखमे पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है। इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि सवत्सर था।]

[इ० म० सालेम ८१]

६०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन सवत्सर ऐसी है। इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित बसदिके लिए कुछ दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१]

६१

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया। इसमे निवियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसंघ, सेनान्वय, पोगरियगणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० सालेम ७४]

६२

सित्तन्नवासल (पुदुकोट्टै, मद्रास)

९वी सदी, तमिल

[यह लेख पाण्डय राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है। इलंगौतमन् (इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था) द्वारा अन्तर्मण्डपका जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमे उल्लेख है। इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् (अर्हन्मन्दिर) कहा गया है। इस गुहामन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वी सदीकी है।]

[रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९]

६३

हेब्बलगुप्पे (मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसींगेरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वमदिगे अरगण्डुगव्वेदे मण् कोट्टर्

३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओट्टिपा-

४ डियुं गोयियन्दम्मगलकण्डुग बेट्टेल् मण्कोट्टर्

५ इदानलित्तु केडिसिदोनोक्कल् केडुग पंचम-

६ हापातकनक्कचन् मक्कलु माग-

७ वसडियानूकेय्द्दोन् नारायण पे-

८ रुन्तचन्

[यह लेख ९वी सदीकी लिपिमें है। नरसींगेरे अप्पोर् दुग्गमार (जो गंगवंशका राजपुत्र था) द्वारा एक जिनमन्दिर (कोयिल्वसदि) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इतनी ही भूमि अरमण्डमेगलु, अगोकेमोगे, ओट्टिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी। श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस बसदिका निर्माणकार्य किया था।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४०]

६४

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

९वी सदी, कन्नड

[यह लेख ९ वी सदीकी लिपिमें है। इसमे किसी बसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके मेनबोव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९]

६५

कलकत्ता (नाहर म्युझियम)

९वीं सदी, कन्नड

१ श्री जिनवल्लभन सज्जन

२ भागियथेय माडिसिद

३ प्रतिमे

[यह लेख पीतलकी चौवीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठपर है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह मूर्ति जिनवल्लभकी स्वजन (पत्नी) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

६६-६७
तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)
९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुगोण्डैके किलैप्पल्लि (जैन मन्दिर) का चतुर्मुगत्तिरुक्कोयिल् (चतुर्मुख वसति) तथा पूर्वका सभामण्डप चलक्कुडि निवासी विरैयनल्लूलान् कुमरन् देवनूने बनवाया था। लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है। यहींके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६]

६८-६९
तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)
९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी शिगणार् पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियों (मन्दिरों) के लिए १० पोण् (मुद्राएँ) दान दिये जानेका निर्देश है। यहींके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र (नाम लुप्त) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६]

७०

कीरप्पाक्कम् (चिंगलपेट, मद्रास)

९वी सदी, तमिल

[इस लेखमे कीरैपाक्कम्के उत्तरमे देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १०]

७१

बेगूर (बंगलोर, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधिलेखमे मोन भट्टारकके शिष्य 'न्दिभटारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वी सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६]

७२

बेलगाँव (मैसूर)

९वीं-१०वी सदी, कन्नड

[यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ (नेमिचन्द्र ?) द्वारा की गयी थी।]

[रि० अ० स० १९२८-२९ पृ० १२५]

७३

अलगरमले (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु लिपि—९वी-१०वीं सदी

[यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है]

(मूल-) १ श्री अच्चण – २ न्दि शेयल्

[आर्यनन्दि आचार्यका यह नामोल्लेख है। लिपि ९वी-१०वी सदी-की है।

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२]

७४-७५

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी–प्रारम्भ, कन्नड

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-देसिगण–पनसोगे शाखाके श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख १०वी सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मन्दिरमें लगा है।

यहींके एक अन्य निसिधिलेखमें नागकुमारकी पत्नी जक्कियब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है। समय १०वी सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७६

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी–प्रारम्भ, कन्नड

१ पुरेय समु-
२ द्रवेष्टितधरात-
३ लम प्रतिपालिसु
४ तुमित्तेंरग म-
५ हारिमण्डलिक-
६ रिं बेसकेय्ये विला-
७ सयेल्गेय मे-
८ रेवकरूरनेन्डे-
९ निसल आलिपोरी
१० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे-
११ रग समन्तु क-
१२ हनेलेयदेवर
१३ पादपयोरुहं-
१४ गलोल् ॥ स्थावरज-
१५ गमतीर्थं मावि-
१६ सि पेल्दागलोरद गो-
१७ म्मटदेवर् स्थावर-
१८ तीर्थं कल्नेलेदेव-
१९ र् भूवलयदोलगे
२० जगमतीर्थं ॥

२१ वेलदेव बरेदं २२ इल्वेडे मल्लाचा-
२३ रि ॥

[इस लेखमें (गग राजा) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्नेलेदेव-द्वारा उनकी निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्नेलेदेवको जगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशसा की है। लेख १०वी सदीके प्रारम्भका है।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७७
वन्दलिके (मैसूर)
शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है। महासामन्त बकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेर्गडे बिट्टय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दणिकेमें एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। लोकटेयरसने इस बसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम बिट्टय्यको दान दिया था।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८]

७८
असुण्डि (मैसूर)
शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द (चतुर्थ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव सवत्सरमे लिखा गया था। इसमे नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है। यह दान बकापुरके धोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भटारके शासनकालमें दिया गया था।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित) [सा० इ० इ० ११ पृ० २०]

७९

हलहरवि (वेल्लारी, मैसूर)

शक ८५४ = सन् ९३२, कन्नड

[यह लेख शक ८५४ पार्थिव सवत्सर (यह वर्षनाम गलत है) का है। इसमे राजा नित्यवर्षके राज्यकालमे कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन वसदिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोंका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२]

८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशसासे शुरू होता है। तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नही।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७]

८१

विजापुर (उदयपुरके समीप, राजस्थान)

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा सवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत-नागरी

१ जवस्तव.। परिशाम्यनु ना परा(संख्या)पना जिना.॥१
ते व. पांतु(जिना)त्रिनामस्तम(ये यत्पा)दपद्मोन्मुखप्रेखासंख्य-
मयूख(शे)खरनखश्रेणीषु विम्बोदयात्। प्रार्थंकादशभिर्गुण दश-
शती शक्रस्य शुभदृदृशां कस्य स्याद् गुणकारको न यदि वा
स्वच्छात्मनां सगम.।.२

२ नासत्करांका(प)शोभित । मुखें(रव) कौ मूर्ध्नि रूढां मही-
भृता ॥३ अभिषिञ्चद् रचि काना माविर्श्रा चतुरानन । हरिवर्मा
बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिक ॥(४) सकललोकविलोकनपंकजस्फुर-
दनकुलबालदिवाकरः । रिपुवधूवदनेन्दुहतद्युति
३ समुदपादि विदग्धनृप(स्तत) ॥(५)स्वाचार्यैर्या रुचिरवच(नैर्वा)-
सुदेवाभिधानैर्बोध नाता दिनकरकरनीरजन्माकरां व । पूर्वं जैनं
निजमिव यशो (कारयद् ह-)स्तिकुण्ड्या रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरे
श्शृङ्गश्शृङ्गारहारि ॥६ दानेन तुलितबलिना तुलादिदानस्य येन
देवाय । भाग(द्वय)व्यतायंत भागश्चा –
४ (चार्यंव)र्याय ॥(७) तस्मादभू(च्छुद्ध)सत्त्वो ममटाख्यो महीपतिः।
समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारि महर्मिक' ॥८ तस्मादमम. मम-
जनि (समस्त)जनजनितलोचनानदः । ध(व)लो वसुधाव्यापी
चन्द्रादिव चन्द्रिकानिकर ॥(९) मक्त्वाघाट घटामि प्रकटमिव मदं
मेदपाटे भटाना जन्यं राजन्य –
५ जन्यं जनयति जनताज रण मुञ्जराजे । (श्री) माणे (प्र)णष्टे हरिण
इव भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्याना शरण्यो हरिरिव शरणे यः
सुराणा बभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैर्भुंजत्यमगा
भुव दण्डैर्मण्डनशोणचण्डसुभटैस्तस्याभिभूत विभु. । यो दैत्यै-
रिव तारक –
६ प्रभृतिभि. श्रीमान् महेन्द्र पुरा सेनानीरिव नीतिपौरुषपरोनैषीत्
परा निर्वृतिं ॥(११) य मूलादुदमूलयद् गुरुबल श्रीमूलराजो
नृपो दर्पान्धो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादप । आयात भुवि
कांदिशीकमभिको यस्त शरण्यो दधौ दष्ट्रायामिव रूढमूढमहिमा
कोलो महीमण्डल ॥१२
७ इत्थ पृथ्वीभर्तृभिर्नायमानं सा सुस्थिततरास्थितो यः । पार्थानाथो
वा विपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षे रक्षणे बद्धकक्षः ।।(१३) द्विवा-

कस्येव कं कठोर· करालिना नृपकस्यकस्य । अभिप्रियतापहृतो-
स्नाप यमुन्नत पादपङ्कजनोधाः ॥(१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-
मभ्यम्यना जगा –

८ स जलधेर्गुणो (गु)रुस्तुत्य पार पर । समीयुरपि नमुरना सुमुग
नार्गणाना गणा मना चग्गिनगुन मकरन्नेव लोकोत्तर ॥(१५)
यात्रासु यस्य त्रिपदार्णविगुर्विर्शपान यल्लासुरमल्गुरग्यानल्हीरजास्मि।
तेजोभिरुर्जितमनेन धिनिर्जितस्माद् मास्यान् निलजित इवातिनरा
निगंभूत ॥१६

९ न कामना मनो धीमान् अ लना दधा । अनन्योद्धार्यसत्कार्य-
मारधुर्योर्थनोनि य ॥(१७) यम्मेजोभिरहस्कर कस्णया शीद्धो-
दनि शुद्धया भीष्मो वचनयचितेन वचसा धर्मेण धर्मात्मज ।
प्राणेन प्रलयानिलो बलभिदो मन्त्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवन ॥(१८) सुनयतनय राज्ये वाक्प्रसाद-
मतिष्टिपन परिणतवया नि सगो या बभूव सुधी स्वय कृतयुग-
कृर्तं कृत्वा कृत्य कृतात्मचमत्कृतौरकृत सुकृती नो कालुष्य
करोति कलिः मना ॥(१९) काले कलावपि किलामलसंततर्वाय
लोका विलोक्य कलनातिगत गुणौ –

११ घ । (पार्थो)ऽपिपाथिव(गुणा)न् गणयनु सन्यानेक स्वभाद् गुण-
निधि यमितीव वेधाः ॥ २० गोचरगति न वाचो नश्चगि चन्द्र-
चंद्रिकारचिर । वाचस्पतेर्वचस्यो को वान्यो वर्णयेत पूर्ण ॥(२१)
राजधानी भुवो भर्तुस्तस्यास्ते हस्तिकुण्डिका । अलका धनदस्येव
धनाढ्यजनसंश्रिता ॥ (२२) नीहारहारहरहास(हि)—

१२ (मा) शुहारि (श्रा) त्का(र) वारि (शु)चि राजविनिर्मराणा ।
वास्तव्यभव्यजनचित्तसम (म)भनान् मतास्तपङ्कपहारपर परेषा ॥
(२३) यौनकलधौतकलशाभिरामरामास्तना इव न यस्या ।

सत्यपरंध्यपहारा सदा सदाचारजनताया ॥ (२४) समदमदना लीलालापा प—

१३ नाकुला कुवलयदला सदृश्यते दृशान्तरला पर । मलिनितमुग्धा यत्रोद्वृत्ताः पर कठिना कुचा निविडरचना नी(वी) बंधा पर कुटिला कचा॰ ॥ (२५) गाढांगुगानि मावं शुचिकुचकलशे कामिनीना मनोज्ञविस्तीर्णानि प्रकाय सह घनजवनैर्देवतामंदिराणि । भ्राजते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिशयसुभग नेत्रपात्रैः पवित्र सत्र चित्राणि भात्रीजनहृनहृदयै॰ विभ्रमैर्यत्र सत्र ॥ (२६) मधुरा घनपर्वाणो हृद्यरूपा रमाधिका॰ । यत्रेक्षुवाटा लोकस्यां नालिकरवाद् मिंडलिमा ॥ (२७) अस्या सूरि॰ सुराणा गुरुरिव गु(रु)मिरोरवार्ही गुणौघैर्भूपाना त्रिलोकीवलयविल—

१५ सितानतरानमर्कीर्ति । नाम्ना श्रीशातिभद्रोमवदभिमवितु भास-(या)वाममाना काम काम सम(र्थ) जनितजनमन नमदा यस्य मूर्तिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनींद्रेण (म)नोभू रूपनिर्जित । स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगस्तातिलज्जित ॥ (२९) प्रोद्यत्पद्माकरस्य प्रकटितविकटाशेपमाव—

१६ स्ना सूरः सूर्यश्चंचामृतांशु स्फुरितशुभरुचि वासुदेवाभिधस्य । अभ्यासीन पदव्या यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोकालोकावलोक सकलमचकलत् केवल सभगीति ॥ (३०) धर्माम्यासरतस्यास्य सगतो गुणसंग्रह । अभग्नमार्गणेच्छस्य चित्रं निर्वाणवाछना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगत जन विधिरय विदधाति न दुर्विध । इति कलकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृताखिलसद्गुण ॥ (३२) तदीयवचनान्निज धनकलत्रपुत्रादिक विलोक्य सकल चल दल-

मिवानिलान्दो(लि)तं । गरिष्ठगुणगोष्ठ्यद मसुदडीधरद् धीर वीरु-
दारसनिसुन्दरं प्रथम—

१८ तीर्थकृन्मंदिरं ॥ (३३) (रक्तं) वा रम्यगमाणां मणितारा-
वराजितं । इह मुखमिवाभाति भाममानवरालकं ॥ (३४)
चतुरस्त्र (पट्टज) नवा(इ)निक शुभशुक्तिकरोटकयुक्तमिद बहु-
भाजनराजि जिनायतनं प्रविराजति भोजनधामसम ॥ (३५)
विदग्धनृपकारितं जिनगृहं—

१९ निर्जीर्णं पुन ममं कृतमसुदृद्धताविह भवांबुधिराम्मन । प्रति-
ष्ठिपत सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकीर्तिमिव मूर्ततामुपगतां
मितांशुद्युतिं ॥ (३६) शांत्याचार्यैस्त्रिपञ्चाशे सहस्रे शरदामिय
माघशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठै प्रतिष्ठिता ॥ (३७) विदग्धनृपति-
पुरा यदतुलं तुलादे—

२० र्ददौ सुदानमवदानधीरिहमपीपलक्षान्नुतं । यतो धवलभूपति-
र्जिनपतं स्वय सात्म (जो) रवट्टमय पिप्पलोपप (दकू) पर्क
प्रादिशन् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमेकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-
सत्पातालानुलमडपामलतुलामालवते भूतल । तावत्ना—

२१ रवामिरामरमणा(गं)धवंधारावनिर्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिकधिय -
(म)दृष्वूपवेलाद्वि(धौ) ॥ (३९) सालकारा समधिकरसा साधु-
संधानबधा श्लाघ्यश्लेषा ललितविलसत्तद्धिताख्यातनामा । सद्-
वृत्ताख्या रुचिरविरतिर्धुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचि रमणीवा—

२२ ति(रम्या) प्रशस्तिः ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीऋषभनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-
श्चारोपितः ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिंडजसगपपूरभट्टनागपोचि-
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरात्मीयकर्मक्षयार्थं स्वसंतानभवाब्धितर—

२३ (णार्थं) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥छ॥ परवादिदर्पमथनं

हेतुलयसहस्रसंगकाकीर्णं । भव्यजनदुरितशमनं जिनेन्द्रवरशासनं जयति ॥ (१) आसीद् धाधनमभतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापो-ज्ज्वलं विस्पष्टप्रतिम प्रभाकरकिलो भूपालसमागार्चित. । योषित्पी—

२४ नपयोधरांतरसुगमाभिरम्यगर्भकालितो य. श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-मणि सद्दशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो भूपप्रमूतमुकुटार्चितपादपीठ । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-मान् विदग्धनृपति. प्रकटप्रताप ॥ (३) तस्माद् भूप—

२५ गणा '' वमा (कीर्त॰) पर माजन लमूत सुगनु सुनीतिमतिमान् श्रीममटो विश्रुत॰ । येनास्मिन् निजराजवक्षगगने चन्द्रायित चारुणा तेनेद पितृशासन ममधिक कृत्वा पुनः पाल्यत ॥ (४) श्रीबलभद्राचार्यं विदग्धनृपपूजित ममभ्यर्च्यं । आचद्रार्कं यावद्-दत्त भवते मया—

२६ ॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृह जनमनोहर भक्त्या । श्रीमद्बलभद्रगुरोर्यद्व्याहित श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान् समाहूय नानादेशसमाग(ता)न् । आचद्रार्कस्थितिर्नि यावच्छासन दत्तमक्षय ॥ (७) (रू)पक एकां देया वहतामिह विंशतेः प्रवह-णानां । धर्मे—

२७ '' क्रयविक्रये च स्या ॥ (८) सभृतगन्या देयस्तथा वद्दस्याश्च रूपक श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः क्रमेण परिपाट्या ॥ (९) श्री(भट्ट)लोकटत्ता पत्राणां चोरिल्का त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-मेतद् द्यूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देय पलाशपाटकमर्यादा-वर्तिक—

२८ ''' । प्रत्यरघ(ट) धान्याढक तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेट्टा च पचपलिका धर्मस्य विंशोपकस्तथा भारं । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन मदत्तं ॥ (१२) (कर्पा)सकाम्यकुंकुमा(पुग)माजिष्टादिसर्व-
भाडस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक—

२९ ॥ (१३) आदानादेतस्मात् भागद्वयमर्हत कृतं गुरुणा ।
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहित ॥ (१४) राज्ञा
तत्पुत्रपौत्रैश्च गोष्ठया पुरजनेन च । गुरुदेवधन रक्ष्य नोपे(क्ष्य
हितमीप्सुभि) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनात्
फल । (भक्षितो)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिक ॥ (१६) गोधूमसुद्गयवलवणराल(का)देस्तु मेयजा-
तस्य । द्रोणं प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्य ॥ (१७) बहु-
भिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि । यस्य यस्य यदा भूमि-
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनदकलिते विक्रमकाले
गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रीम)द्बलभद्रगुरोर्विदग्धराजेन दत्तमिदं ॥ (१९) नवसु शतेषु
गतेषु तु षण्णवतीन्समधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्यामिह सम-
र्थित मम्मटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिभानुभरत भागीरथी
भारती भान्व(दमा)नि भुजगराजभव(नं) भ्राजद्भवाम्भोधय ।
ति(ष्ठ)—

३२ न्त्यत्र सुरासुरेन्द्रमहित (जै)न च मच्छासनं श्रीमत्केशवसूरि-
सततिकृते तावत् प्रभूयादिद ॥ (२१) इद चाक्षयधर्मसाधन
शासन श्रीविदग्धराज्ञा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीमम्मट(राज्ञा
समर्थि)तं सवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णेय
प्रशस्तिरिति ।

[इस वृहत् शिलालेखके दो भाग है । दूसरा भाग जो २३वी
पक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमे राष्ट्रकूट
कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कई करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानकी तिथि आषाढ, संवत् ९७३ थी। विदग्धराजका पुत्र मम्मट हुआ। इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, संवत् ९९६को पुन सम्मति दी। मम्मटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटको नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामें धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया। इसके समय संवत् १०५३ मे वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी (व्यापारियोंके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये हैं। लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशस्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमे केशवसूरिका उल्लेख है]

[ए० इ० १० पृ० १७]

८२

विलप्पक्कम (जि उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन् (परान्तक १) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्पानमलैके आचार्य अरिष्टनेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुआँ बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१६]

८३

नरेगल (मैसूर)

शक ८७२ = सन् ९५०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव (तृतीय) के सामन्त गगवंशीय बूतय्य पेर्माडिके समयका है। इसकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिंघय्यने एक तालाब अर्पित किया था। यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको सौंपा गया था। दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, शक ८७२ साधारणसवत्सर ऐसी दी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २३]

८४

वेमुलवाड (करीमनगर, आन्ध्र)

१० वीं सदी—उत्तरार्ध (लगभग सन् ९६०)

संस्कृत–कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा वद्देग-द्वारा गौडसघके आचार्य सोमदेव-सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८]

८५

धारवाड (मैसूर)

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र गग राजा मारसिंह (द्वितीय) के समय पौष कृष्ण ९ मगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण सक्रान्तिके दिन दिया गया था। इसमें राजा-द्वारा मेलपाडिके स्कन्धावारसे कोगल देशमें

स्थित कादलूरु ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लब्बे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामे निम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्नेलेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७]

८६

कुडलूर (मैसूर)

शक ८८४ = सन् ९६२, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमे गंग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम वादिघरट्ट भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुधिरोद्गारि संवत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमे पुनाडु प्रदेशका बागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर—स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था।]

[ए० रि० मैं० १९२१ पृ० १८]

८७

कोकिवाड (धारवाड, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग तथा उनके सामन्त गंगवंशीय सत्यवाक्य कोंगुणिवर्म धर्म-महाराजका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५]

८८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[यह लेख बहुत घिस गया है। गंग राजा मारसिंघदेवके समय

कार्तिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति संवत्सरके दिन शंखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३]

८९

दानवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी (लगभग सन् ९७२), संस्कृत—कन्नड

भग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष (इन्द्र ४)-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है ।]

[इ० म० कडप्पा १४८]

९०

विंडिगनवले (मैसूर)

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ भद्रमस्तु जि–	२ नशासना–	३ य श्रीमत्
४ सकवर्ष ८–	५, ९७य यु–	६ वसंवत्सर–
७ द आषाढ–	८ मासद शु–	९ द्ध दशमियु
१० सोमवार	११ वुं स्वातिन–	

दूसरी ओर

१२ क्षत्रमुमा	१३ गे अमृत्त–	१४ व्वे कन्तिय
१५ रुरद्दु नोन्तु	१६ सनाधि	१७ यिं (मुडिपि)
१८ दरवर म–	१९ क्कलनिमि–	२० सपरोप–
२१ कारिगल् प–	२२ ग्रनन्दिभट्टा–	

तीसरी ओर

२३ रकरवगों २४ नेय २५ ····

२६ निळिसिदर्

[यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओंपर खुदा है। इसमें अमृतब्बे-कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि आषाढ शु० १०, सोम-वार, शक ८९७, युवसंवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९२१ पृ० १९२]

९१

बेल्लट्टि (धारवाड, मैसूर)

(शक) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[जोगीवण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है। अज्जरय्यके पेर्गडे आयतवर्मा-द्वारा निर्मित बसदिका इसमें उल्लेख है। वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०४ पृ० ३८]

९२

वेडल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९९९, तमिल

भाण्डार् मडम् नामक पहाडीकी एक गुहाके आगे

[यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है। इसमें गुणकीर्तिभटारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमंगलम्का उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ७४४]

९३

खण्डगिरि—ललतेंदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसंवत् ५

२ श्री कुमारपर्वतस्थाने जिर्णवापि जिर्ण इसण
३ उद्योतित तस्मिन थाने चतुर्विन्सति तीर्थंकर
४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ले ह (रि) ओप जसनदिक
५ ·· · · श्रीपारस्यनाथस्य कर्मखय

[यह लेख राजा उद्योतकेसरीके ५वें वर्षका है। कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरोंका जीर्णोद्धार करके चौवीस तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंकी स्थापना-का इसमें उल्लेख है। कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है। अन्तिम भागमें जसनदि (यशोनन्दि)का उल्लेख हुआ है।]

[ए० इ० १३ पृ० १६६]

९४
खण्डगिरि—नवमुनि गुहा
१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्रीमदुद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत १८
२ श्रीआर्यसंघप्रतिबद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
३ भट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[इसका साराश जै० शि० स० भाग २मे क्रमाक २४५में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नही हुआ था। इसमे राजा उद्योतकेसरी-के १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है।] [ए० इ० १३ पृ० १६५]

९५
खण्डगिरि—नवमुनि गुहा
१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ ओं श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
२ शिष्य खल्लशुभचन्द्रस्य
३ छात्र विजो

[इस लेखमें आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है ।] [ए० इ० १३ पृ० १९६]

९६

ईचवाडि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ भूतुग पेर्माडि तदपत्यण् एरेयप तत्सुत वीर

२ ' राचमल्लनहितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरेयगनातन मग

३ नातन पुत्र सैगोट्ट ' राचमल्ल

४ ' मिह्नकदिरलेडव कथ्योल् मत्तमातगमन पिडिदु निलिसिद ।

५ " कनाणूर्गणद आचार्यावतारमेन्तेन्डोडे । दक्षिणदेशनिवासि । गगमहीमण्डलिक' '

६ नन्दिभट्टारकरु बालचन्द्रभट्टारकरु मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवरं

७ ' पेम्प तलेद गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलक सिंहासनम '

८ ' 'मत्तमातगरु बौद्धत्रादितिमिरपतगरं सांख्यवादिकुलाद्रिवज्रधररुं नैयायिका

९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनसुधाकररु । सकलसाहित्यप्रवीणरुं । मनोमदमयरहितरु '

१० श्रीमत्तु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दिसिद्धान्त

११ अवर शिष्यरु । चतुरास्य चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीश गुणव्यापकस्थितिय विष्णु सुबुद्धि वि—

१२ सिद्धान्तविभूषणनेनिसिद श्रीमत्प्रभाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु । श्रुतसिद्धान्त—

१३ मप्रतिमं तानेने पेम्पुवेत्तु मुदितोदात्तर् जगद्वन्द्यर् ऊर्जितरु-
घोतित—

१४ मनोभवविशालहरनिटिलाक्षं वादिमदरदनिनिवृदुवं मेदिपमृग-
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुधं ।‥

१५ वादिराजं दलेनिसिद ' योलु । अवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि
सम्यसधारि क्राणूर्गणा ‥

१६ गिप्परु । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणांकं ' ' वादिमद ' निरुतं
तानेनलेसेदं—

१७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुवुदु पेम्पुवेत्त ' नतिमेत्तो दलागेसेवुदु
सद्गुण…

१८ नीडि पिरिदुं निस्तेजमैदिर्द नोडदे…प्रभुतेयं वाल्दिर्प '
करं…

१९ नुडिगलु सत्यसुवर्णभूषणगण ' सुरलंगल करण्डक तनुतप ‥

२० येनुव्रतिरूपमं तलेदुदो मूजातवी धरयोलु तापस

२१ मुनिपं ‥ रत्नाकरं । इन्तेनिसि नेगल्दाचार्य ' तिलकरुं जिन-
सद्म ' '

२२ वारिविशांतरोचि ‥ स्तुत्यं जिनपदाब्जद्वयभृगं भुजबलगंगं '

२३ तम्म गंगान्वयदवर् पडिसलिसुत्तु 'मरवेम नागि माडिसि

२४ दत्ति तट्टिकेरे भर्वबाधापरिहारा केरेय केलगे तलवृत्ति' ‥

२५ मारसिंगननुज 'सन्द नन्नियगंगक्षितिपालक तदनुज '

२६ वल्लि येम्बूर्लम सम्पदि मूदलुगद्दे '

२७ गुरु नन्नियगंगदेव पुम्बूरुमं ' आगदेर्यि तं '

२८ सिद्धान्तदेवर गुरुं रक्कसगंगं नन्नियगंग सीमेर्यि तक

२९ मूडणदेम्बे नद कल्लुगलु

३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुरु । भुजबलदिं शत्रुमहीभुज

(३१ से ३६ तक पंक्तियाँ घिस गयी हैं)

३७ तल्प्रहारदोळे ' नृ गुटदिन्दं मोण्डुव कचुगु

३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर । कोलालपुरवरेश्वरं । नन्दगिरिनाथ मदगजेन्द्र…

३९ मण्डलिकदेवेन्द्र दर्पोद्धताराति वनजवनवेदण्ड ‥

४० देव माडिसिद ' तोर्थद वसदिय '

४१ ' चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुख्यवागि बिट्ट दत्ति '

४२ नन्नियगंगदेवनु पट्टमहादेवि

४३ कार्णिकेय नाडूरगालोलु पणव कोट्टरा

[इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पंक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पंक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे हैं। गंगवंशके राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय यह लेख लिखा गया था। इसके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामको कुछ भूमि ' चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी। लेखमें क्राणूर्गणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्म, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र (द्वितीय), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये हैं)। अन्तमें मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्यका उल्लेख है। राजा नन्नियगंगकी वंशावलीमें बूतुग पेर्माडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४]

९७

दानवुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

पहला भाग

१ पतिय बेसदिंद—

२ महितरनतिकोप—

३ दिग्निविक्कि गेल्दु परिपा—

४ लि(सि)द । चतुरुदधि—

५ वलयमेल्लमन– ६ तिरयनी डण्ड(ना)य–
७ कं श्रीविजय ॥(१) ८ तुरगधलगल–
९ नोड्डिद् करिघटे– १० यं पिरियनेर–
११ (वि)यं बल्लणिय । १२ धुरदेडे(योलि)रि–
१३ दु गेल्गु करद(म्) १४ करमरिदु रण–
१५ दोलनुपमकविय ॥(२) १६ कुपितवति श्रीवि–
१७ जये बलिकुलति– १८ लकं नरेन्द्रदण्डाधि–
१९ पतौ । गिरिरगि(रि)र्वन– २० मवन जलमज–
२१ ल रिपुस(मू)हब– २२ लमवल ॥(३)

दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल– २४ गिल्देण्टु (दे)सेगल
२५ कुमुकुलमनेय्दि २६ माणदे मत्त । (विस)–
२७ रुहगर्भाण्डक्क प– २८ सरिसिदुदु (की)र्ति ने–
२९ रनलुपमकविय ॥(४) ३० आश्रितजनकल्पत–
३१ रुविश्रुतरि(पु)नृप– ३२ तितृणदवानलमूर्ति ।
३३ श्रीवनितास्मरपाश· ३४ पातुस्तव वाहु मे–
३५ दिनीं श्रीविजय ॥(५) ३६ चतुरुद्धिवलय–
३७ वलयितवसुन्ध– ३८ रामिन्द्रशासनात् सं–
३९ रक्ष(न्) । श्रीविजय ४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधर्मनि– ४२ रतमनस्क ॥(६)
४३ मगल माहाश्री ॥

तीसरा भाग

४४ भद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥
४५ अष्टविधकर्ममेल्लमनट्टु– ४६ वरिगोण्डु कोंडिपे(नें)तुडे वगेयि ।

४७ (पु)ट्टिदनुदात्तसत्व नेट्टने विवु ४८ धेन्कवन्द्यनरिर्विगोजस् ॥(७)
४९ वानरिदु तो(र)दु नेट्टने मानि- ५० सवालायुर्देदु संन्यासनदोळ्।
५१ मानसिकें गिडदे कोण्डो(न)नून- ५२ सुखास्पदमनळूतियोळ्
श्रीविजय ॥(८)
५३ निर्गतमय नीनर(स)मर्ग- ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेम्पि त्रिसु-
५५ वं । सर्गंद संगमनुण्डपन- ५६ गंक्कडिथिट्टोनरिट्टोननुप-
५७ मकविर्य ॥(९)दण्डिन साम ५८ ग्रिगे परमण्डलमल्लाळे
५९ (स)र्वविक्रमतुग । दण्डिन श्री- ६० रश्रीगोळूगण्ड श्राळण्डनायक
६१ श्रीविजयं ॥(१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-
६३ डिदु पतिगोपिसुवोळ्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीमूमण्डलदोळ् दण्डनायक
६५ श्रीविजय ॥(११) अनुपम- ६६ कविथ सेनयोव गु-
६७ णवर्म बरेद ॥

[यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशंसामें लिखा गया है। अरिविंगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुग ये इसके विरुद थे। यह वलिकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था। इन्द्रराज (तृतीय) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था। लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोडकर सन्यास धारण किया था। यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्माने लिखा था।] [ए० इ० १० पृ० १४७]

९८-९९

चोलवाण्डिपुरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

[यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलके दूसरे वर्षका है। इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशंसा है। उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है। न्यानीर पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोकी पूजाके लिए उसने कुछ दान दिया था। कुण्डिके गुणवीर भटारका भी इसमे उल्लेख है। उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की है। यहीके एक अन्य लेखमे १०वी सदीकी लिपिमे कहा है कि इन मूर्तियो (तेवारम्) का निर्माण वेलि कोगरैयर् पुत्तडिगळने किया था।]

[रि० सा० ए० १९३६–३७ क्र०२५१–५२ पृ०३४]

१००

मसुलिपट्टम ताम्रपत्र (आन्ध्र)

१०वी सदी, संस्कृत–तेलुगु

१ व्याकृष्टरत्नखचितायतशार्ङ्गचापो यस्सेन्द्रकार्मुकविनीलपयोद-वृन्दम्। निर्मर्म्मयन्निव विभा—

२ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुर्शिवन्दिशतु वोवघननिलोक ॥ (१) स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमा—

३ नव्यसगोत्राणां हारीतिपुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानां मातृगणपरिपालितानां स्वामि—

४ महासेनपादानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवरवराह-लाञ्छनेक्ष—

५ णवशीकृताराति मण्डलानामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां चालुक्यानां कु—

६ लमलंकरिष्णोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धननृप-तिरष्टादशवर्षाणि—

७ वेगीदेशमपालयत्। तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम्। तदनुजे-न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—

८ व। तत्सूनुर्मंगियुवराजः पंचविंशतिम्। तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयो-दश। तदवर—

९ जः कोक्किलिष्षण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तत्सुखाव्य् सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो —वि

दूसरा पत्र पहला भाग

१० जयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनष्षट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजा (ख्यो) मृ—

११ गराज (पराक्रम ।) विजयादित्य (भूपाल) श्चत्वारिं (शत्समा)- ॥(२) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो (ध्यर्धवर्षम् । तत्सु)तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम्। तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ (मसुतो) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यभीमस्सकलनृपगु (णो- त्कृ) ष्टचारित्रपात्र । दानी

१४ ' 'स्तकर सार्वभौमप्रतापो राज्य कृत्वा प्र (या) तः त्रिद- शपतिपद

१५ (त्रिंशदब्दसमा) ण ॥ (३) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य- ष्षण्मासान् । तत्सूनुरम्मराजस्स—

१६ (स) वर्षाणि । तत्सुत विजयादित्य कण्ठिकाक्रमायातपट्टाभि- षेक बालसुखाव्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ (मे) क । चालुक्यभीमसुतो विक्रमादित्यस्त हत्वा एकादश- मासान् । विजयादित्यो वेंगीन ८ कलियत्ति—

१८ गण्डनामा भीमा (नृ ।) प्स्य सर्वो मेलावा तत्त्वश्रीराजभीम- नृपतिरत्वेव ॥ (४) तस्यत्यागाभिमानाद्यखि—

दूसरा पत्र दूसरा भाग

१९ लगुणयुतो राजमार्ताण्डनामा । जित्वोग्रम्मल्लपाख्य तत्सुतमभि- चल द्रोहि (णो) प्यन्तकामो । द्विकभीमो राष्ट्र

२० कूटप्रवलबलसमस्तसहरो द्वादशाब्द । राज्य कृत्वागमत्स प्रणिहित (सुयशो) धर्मसन्तानवर्गा ॥ (५) वि—

२१ ष्णो· पद्मेव शमोऽग्वि गिरितनया यस्य देवी सपट्टा। मनुद्दा (हंह) नान्निजकु (लवि) पये पुण्यला (व)—

२२ ष्यगण्या। लोकांवानत्सुतोभूद्द विजितपरवलोत्रगिनाथोम्मराजो। राजराजाधिराजो (जितरिपु) म—

२३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ (६) वेगी (राज्याभिषिक्तो) निजरिपु-विजयादित्यमुग्रस्समर्थं। जित्वा (नेकाजिरग)—

२४ प्रजितपरवलं (कण्ठिकाव्रामकण्ठ।) दायादद्रोहिवर्गानपि सकर-बलः क्षत्रि (या) दित्यदे—

२५ वो। ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलम्बितकमलस्स्मप्रतापो विभाति ॥ (७) यन्निर्मातुन्निमित्त कृतमिदमखिलं विष्टप हि

२६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह मकलगुणैं (राजमी)-मोद्वहो-भूत् तेजोराशि· प्रजानां पतिरधिकव—

२७ (ल) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्मोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन (न्य) राजाग्रचिन्ह ॥ (८) स्वर्याता पूर्वं—

तीमरा पत्र . पहला भाग

२८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुर-चला स्वैरिदानीं—

२९ मदृष्टा। यस्योच्चैं कीर्तिरा (शिर्म) गण इव जगत्यद्वितीयो-त्रयोस्मिन्। राजराजाधिराजस्य अ—

३० यति विजयादित्यदेवोम्मराज ॥ (९) गद्यम्। स जगतीपतिरम्म-राजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—

३१ स्रभोगोपहासिदीर्घदक्षिणैकबाहुमान्द्रितविश्वविश्वमराभार । नारायण

३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पद्.। विधुरिव सुर्खविराजित । पिता-मह इव कम—

३३ लासन । गिरिविश इव धराधरसुताराधित । रत्नाकर इव समस्त—

३४ शरणागतभूभृदाश्रय. । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदय. । हिमाचल

३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानकोल. ॥ स सम—

३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र दूसरा भाग

३७ भट्टारक । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बिनस्समस्त—

३८ सामन्ता(न्त) पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण - धर्माध्यक्ष—

३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्थमाज्ञापयति विदितमस्तु व· । श्रीमानुवपा—

४० टि महान्त्रिणयनकुलसाधु श्रेष्याख्यो । गोत्र सिंहासनतो

४१ त्रिदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १०) श्रीकरणगुरुर्गुरुरिव विबुधगुरु—

४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञ) । नरवाहन इत्यासीन्न्यवकृतनरवाह- (न)प्रकाशित—

४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो दानी । मानी मा—

४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्माकि. ॥(१२) तस्य सती मेण्डावा सीतेव पति—

४५ व्रता जिनव्रतचरिता। सत्यवती (वि)नयवती सततहारप्रदायिनी धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जो

चौथा पत्र पहला भाग

४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ । भीमनरवाह-
नाम्नौ विख्यातौ रा—

४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बलयुतबलदेव-
वासुदेव(समा)नौ । (न)—

४८ कुलसहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत-
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—

४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रीढक्कागर्तबरढौवनपटहविलस(च्चा)मरच्छत्र-
(लीलौ ।)

५० • रिकस्थौ शिशिरुहपटलच्छायसत्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-
(चूलौ)

५१ • 'कन्हियौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६)जैनाचार्यो यदीयौ गुरुरसि—

५२ तगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नायसेनो मुनिनुतजयसेनो
मुनिर्दीक्षितात्मा । मि—

५३ द्धान्तज्ञः कलाज्ञः परमनयपटु मज्ञनोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्रः श्रावकाणां
क्षपणकसु(ज)—

५४ नक्षुल्लकार्य्यार्जिकानां ॥(१७) तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्यां
विजयवाटिकायां

चौथा पत्र • दूसरा भाग

५५ जिनभवनयुगळनिर्म्मितं तद्धर्म्मायमस्माभिस्सर्वकरपरिहारं देव-
भोगी—

५६ कृत्य पेदगालिडिपरु नाम ग्रामो दत्तः । अस्यावधय । पूर्वत
सण्ड्य—

५७ रिपोलगस्तुन यिसु कट्टचेरवुन नडिमि द्रूव । आग्नेयत आल-
पर्तियुं जू डुरि—

५८ यु मुख्यल्कुट्टु (न) चूरुव पट्टुव । दक्षिणतः चूंट्टूरि प्रान्त(पर्ति) युत्तरंबुन कुण्ढि—

५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यत चूट्टूरियम्मपोटयब्वगुडि । (पश्चिमत) रेटि(प)ड्डुमटिद्दरि । वा—

६० यव्यतः वलिवेरिपोलगल्सुन गारुगुण्ठ । उत्तरतः तप्पराल प(ड्डु)व । ई—

६१ शानतः कोडगाळिडिपर्तियु (वलिवेरियु मु)ख्यल्कुट्टुन नड्डुपनि-गुण्ठ ॥ तस्य (स्ये)यादल—

६२ ध्यं सुचिरमुत्तर (शास)न राजकोक्त । सत्कीर्तेर्वेंगिपस्य प्रकट-गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्य ।

६३ तत्रेद शा(स)न (पालित)जिननिगम शौर्यमीतान्यनाथव्रातो(च्चै)-मौंळिमालामणिकमकरिकोमळि—

पाँचवाँ पत्र

६४ कोल्लासिताङ्‌घ्रे ॥(१७) अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या य करोति स पचमहापातकस—

६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्त व्यासेन ॥ (नित्यके शापात्मक श्लोक)

७० आज्ञप्ति कटकराज जयन्ताचा—

७१ र्येण लिखितम् ॥

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बुरु लेखोंके समान पूर्वीय चालुक्यो-की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज (द्वितीय) विजया-दित्य तक दी गयी है। अम्मराजके पिता चालुक्य भीम (द्वितीय) का एक सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय था। उसका पुत्र मेलपराज था। इसकी पत्नी मेण्डाम्बाको दो पुत्र हुए — राजभीम तथा नरवाहन (द्वितीय)। जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

(जयसेनके गुरु) इन दोनोंके गुरु थे। इनने विजयवाटिकामें दो जिनमन्दिर बनवाये थे। उनके लिए अम्मराजने वेङ्गनाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्रु नामक ग्राम दान दिया था।] [ए० इ० २४ पृ० २६८]

१०१

वरुण (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ श्री ˙ श्रीमद्पर ˙ यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य वियमकरर् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु ला—

३ मक्करु वारुणद सांथिनाथस्वामिय माडिसिदरु आवर प्रिय डुणडुचल—

४ ढाचार्य मक्कळु विजय-अण वमण माडिदरु—

[इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है। यह मूर्ति विजयण्ण और वमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १७१]

१०२

मण्णे (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारब्बेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगब्बे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।] [ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०३
उम्मत्तूर (मैसूर)
१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०४
बूवनहल्लि (मैसूर)
१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभटारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु द्वारा की गयी थी। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०५
अंकनाथपुर (मैसूर)
१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख अकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है। प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियब्बेके समाधिमरणका यह स्मारक है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०६–१०७
अंकनाथपुर (मैसूर)
१०वीं सदी, कन्नड

[यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं। एकमें दड्डिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकब्बेका उल्लेख है। दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अब्बसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण श्रमणसंघका सहायक था। लिपि १०वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०८

होलेनरसीपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमें कदम्ब वंशीय वासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है। यह लेख बलदेवने स्थापित किया था।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२]

११०

कोडिहल्लि (माण्डया, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ ' म–
२ स्य सन्य–
३ सम गेट्टु
४ पुरड नॉ–
५ तु मुडिपि–
६ दनू आतन
७ मगलप्य
८ विडक्क कल्लु
९ निक्कमिद्(ल्)

[इस निसिधि-लेखमे किसी मय्यके समाधिमरणका निर्देश है। उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी। लेखकी लिपि १०वी सदीकी प्रतीत होती है।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १८०]

१११

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाडीपर एक पाषाणपर खुदा है। यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है। इसकी लिपि १०वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें १०वी सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२७ पृ० ७७]

११३

कोलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

समणरमके पहाडीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा न्द्रप्रभका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४२]

११४

बैखर (मन्दसौर, मध्यप्रदेश)

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें नन्दियडसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है। लिपि १०वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० २०३ पृ० ४५]

११५

कमलापुरम् (बेल्लारी, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दिमुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २२२ पृ० ४८]

११६

काशिवल (बिजनौर, उत्तरप्रदेश)

संवत् १०६(१) = सन् १००५, संस्कृत–नागरी

[यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें भरतका उल्लेख है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है। सम्भवतः संवत्का अन्तिम अंक लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ४३६ पृ० ७१]

११७

लक्कुण्डि (मैसूर)

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल (जो यहाँ सत्याश्रयका उपनाम होना चाहिए) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है। इसकी पत्नी अत्तियव्वेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ भूमि दान दी थी। यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरूरगच्छके अर्हणन्दि पण्डितको दिया गया था। दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९, प्लवग संवत्सर ऐसी दी है। उस समय अत्तियव्वेका पुत्र पडेवल तैल मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ३९]

११८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १ = सन् १००८, कन्नड,

[यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५के राज्यवर्ष १का है। इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इंगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १९९ पृ० ३७]

११९

उक्काल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् (राजराज १) के २४वें वर्षका है। जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गाँवोंके अधिकारी है वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी जमीन जब्त करानेका इसमें आदेश दिया है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ३०८]

१२०

वेचारक बोमलापुर (मैसूर)

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

१ सकवर्ष ९३५ २ नेय प्रमादीच ३ संवत्सरद आ-
४ षाढ सु दसमि ५ सोमवारदोल् ६ माकब्बेगंतिय
७ मादवट बोचग- ८ वुड परोक्षवि- ९ नयं निसिधिगे-
१० य कल्लनिरि- ११ सिदं

[यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है

जो वीचगवुडने स्थापित किया था। तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७]

१२१

तोण्डूर (द० अर्काट, मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् (सम्भवत राजेन्द्र १) के राज्यवर्ष ३का है। विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासक-द्वारा वज्रसिंग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमगलम् अपरनाम वलुवामोलि आरान्दमंगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४–३५ क्र० ८३ पृ० १६]

१२२

उदयपुर (राजस्थान)

संवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति। यह मूर्ति संवत् १०७६ में वाहिल सोडक-द्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६]

१२३

मरोल (मैसूर)

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रक्ताक्षि संवत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था। इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयककार-द्वारा मरवोलल्की बसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग (सत्याश्रय) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५०]

१२४

हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है।]

[एन्वाण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५]

१२५

होसूर (मैसूर)

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है। वावणरस-की पत्नी रेवकब्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आय्चगावुण्डने पोस्वूरमें अपनी पत्नी कंचिकब्बेके स्मरणार्थ एक बसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आय्चगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५५]

१२६

मस्की (रायचूर, मैसूर)

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है। अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था। स्थान राजधानि पिरियमोसगि यह था।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२]

१२७

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ (शक ९५४) वर्षमें लिखा गया था। इसमें जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है। इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२०]

१२८

रायबाग (मैसूर)

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है। तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम सवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नही है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४]

१२६
तिरुनिडुंकोण्डै (मद्रास)
११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दबा है। इसके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है। तिरुमणजेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इसमें उल्लेख है। यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके बरामदेके बाजूमें खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५]

१३०
हूलि (जि० बेलगाँव, म्हैसूर)
शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१—२ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-मेश्वर परमभट्टार-

४ क सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ मले-

६ दं पगेवरं निर्मूलिसि जसम निमिर्चि दिग्भित्तिवरं काल्डिय योलगाडि तळे पालिसिद तोनना-

७ रुम भुजमकदि ॥ (२) आतन पुत्र विनयोपेत पायिम्म-नृपति-गोप्युव सति

८ विख्यातियुते डम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि मागेणब्बे लच्छलेयोगे-
दळु ॥(३) इष्टज-
९ नक्के चट्टमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगेंयलिदायव-
१० मक्के सकंन्यकालिकाग्निष्टगेगेय्दे नाल्कुम्मयक्कनुरागदे वेगवि-
११ तु सतुष्टतें लच्छियब्बरमिगार् मरियर् सचराचरोर्विंयोलु ॥(४)
१२ सकलधरित्रियोल् नेगर्द वंदिजन सले स्तुपिनेल्गेय प्रकटतेवेत्त दा-
१३ नगुणम कुलदुनतिय जिनाग्रिगल्गकुटिलचित्तम पोगल्दुतिर्पु-
१४ दु कूडिय लिंकदकपालकन कुलोत्तमागनेयनयियें लच्छलदेविय
१५ जग ॥ (५) शरनिधिमेखलावृतवसुधरेयेंब विलासिनीमुखाब्जम्ह-
डवोल् विराजि-
१६ सुव बेल्वलनाल्के पोदल्द शोभेगागरमेनि(सि)र्प पूलि तिलका-
कृतियिंदेसेदिर्पुदा पुरं सुरपु-
१७ रम कुबेरनलकापुरम नगुगुं विलासदिं ॥ (६) अल्लि ॥ सकल-
व्याकरणार्थशा-
१८ स्त्रचयदोलु काव्यंगलोलु सद् नाटकदोलु वर्णकविस्तदोल्नेगर्द
वेदांतंगलोलु
१९ पारमार्थि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वार्गीशनिंद
यशोधि-
२० कराद्र् पोगल्वल्लिगारलवे पेलु मासिर्वर ख्यातिय ॥ (७) स्वस्ति
शकनृपकालातीतसंवत्सर-
२१ शतगलु ९६६ नेय तारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध १० आदिवार-
मुत्तरायण-
२२ संक्रान्तियंदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्म-
निरतरुं श्री-
२३ (म)च्चालुक्यचक्रवर्त्तिब्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्पदरक्षणा-

२४ थंकोविदरुं विदग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-
विशिष्ट-
२५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-
२६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपमागानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
२७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवाणरुं सप्तसोमसंस्थावभृथावगाहन-
पवित्रीकृ-
२८ तगात्ररु कांचनक(ल)शमितपट्टछत्रचामरपञ्चमहाशब्दघटिकाभेरी-
रवानि-
२९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालातकरुमेकवाक्यरुं
३० शरणागतवज्रपंज(रुं च)तुस्समयसमुद्धरणरु श्रीकेशवादित्यदेव-
३१ लब्धवरप्रसादरुमप्प श्रीमन्महाग्रहार पूलियूरोडेयप्रभु-
३२ प्र सासिर्वर्महाजनगल दिव्यश्रीपादपद्मंगल (क)च्छियव्वरसि-
यरु स-
३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु बसदिर्य माडिसि सं-
३४ डस्फु(टि)तजीर्णोद्धरणक्के पल्लवण पोलदलु शिवेयगेरियाल्रमत्तर्व-
३५ सुगेयं मत्तरिंगडुचिन्नलेक्कदिडरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुव-
३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रभ-
३७ ट्टारकदेवर काल कर्चि बिट्टलु ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
३८ राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालु-
क्याभरणं
३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
४० राभिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंबर सलुत्तमिरे । शकव-
४१ र्ष १०६७ नेय क्रोधनसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रान्तियदु यमनि-
४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरप्प

४३ श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुख मासिर्वमहाजनंग(ल)
४४ दिव्यश्रीपादपद्मंगलं पेर्गडे नेमणं महिरण्यपूर्वकमाराधिसि(वा)
४५ (रा)पूर्वकं माडिमि कॊ(ट्टु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियब्बेर्गॆयरु माडिसिद बस-
४६ दियलिर्प ऋषियराहारदाननिमित्तमल्लियाचार्यरु रामचंद्र-
४७ देवर कालं कर्चियवरु मुन्नवालुव पट्टणपोलद शिवेयगेरियाल्मत्त-
४८ वंसुगेयिं पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-
गारु मत्तरॆय्यं
४९ मत्तरिंगड्डुचिन्न(लेक्कदिंदर)वणमं मूरु पणमं तेत्तुवंतागि बिट्टरु ॥
५० पतिभक्ते धेमा सति पायिम्मरसनप्रसुते सकलजनस्तुते मा-
५१ गियब्बेराणिगे सुत दो (नेम)य्यनौदार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं तनगाहन-
५२ (थिं)जनताकल्पद्रुमं व्यने तम्मय्यननूनदानि कलिदेवं साक्षरा-
५३ ग्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिर्द नेमंगेनल्कनवद्याच(रण)-
५४ गॆ भूवलयदोलु पेल् ॥ (९)

[इस लेखके दो भाग हैं। पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण संक्रान्तिके समयका है। इनका सामन्त कालडिय वोलगडि था। इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकब्बेसे विवाह किया। उसे मागिणब्बे तथा लच्छियब्बे ये दो कन्याएँ हुई। लच्छियब्बेका विवाह कूंडि प्रदेशके शासकसे हुआ था। इसने पूलि नगरमें – जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे – कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय संघ-पुन्नागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (द्वितीय) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसंक्रान्तिके समयका है। इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूलि नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियव्वेका प्रपौत्र था।]

[ए० इ० १८ पृ० १७२]

१३१
मुगद (मैसूर)
शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (सोमेश्वर १) के समय शक ९६९, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नाड्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्यक्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मातण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोंकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ६८]

१३२
जोन्नगिरि (कुर्नूल, आन्ध्र)
११ वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय बेगंडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६०]

१३३

तिंगकूर (कोइम्बतूर-मद्रास)

शक ९६७ = सन् १०४०, तमिल

१ स्वस्तिश्री	२ को नाट्टन् वि—
३ क्किरमशोल—	४ देवर्कु शो—
५ ल्लानिण्ड—	६ याण्डु ना—
७ र्पदावदु	८ अरत्तुला—
९ न्देवन्	१० पेरन् आण ना—
११ ण् कणित मा—	१२ णिक्कण्चेट्
१३ टि चन्दिरवश—	१४ तियिल् मुक—
१५ मण्डगम्	१६ एडुपित्ते—
१७ न् (॥) शकर या	१८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥)
१९ शिंगला (न्तक) न्	२० पुण् पुडु मुक—
२१ मण्डगम् (॥)	

[यह लेख शक ९६७ का है। इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिक्क सेट्टि-द्वारा किया गया था।]

[ए० इं० ३० पृ० २४३]

१३४

अरसोवीडि (जि० विजापुर, म्हैसूर)

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-परमेश्वर प—

२ रमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यम–
३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कता-
४ रंबर सलुत्तमिरे। स्वस्ति अरिनृपमकुटघटितचरणारविंदर् गंगास्नान-
५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद वेडंगियरप्प श्रीमद-
६ क्कादेवि (य) र् गोकागेय कोटेय मुत्तित्तिर्द्द वीडिनलु विक्रमपुरद गोणदवेडंगिय
७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्क गन्धधूपदीपक्क मतृषिग मूलसंघ-
८ द (र) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितगं अल्लिपं ऋषियर्गं अजिय-
९ र्गं आहारदानक्क अजियर कप्पडक्क कडुव भूमि सकवर्ष ९६९ नेय
१० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रमास्य आदित्यवारददिन सूर्यग्र-
११ हणनिमित्त धारापूर्वक माडि नगरदजुभवने मुख्यमागि किसु-
१२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि पिट्ट बाड गाणद हाल्गोंद
१३ विक्रमपुरद यीशान्यद टेसेयिं तोंट मत्तरोंदु कर्रि तंक मुरुथदिन पा-
१४ क नैरित्यद टेसेयिं पण्डितनागदेवगे सर्वनमस्य मत्तर् पनेरडु अल्लि तंक
१५ परंकार कंतोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिपं*नाल्कु कर्रि यदग रायगट्टेयिं
१६ मूड परंकार कंतोजगे तोंट मत्तरोंदु अल्लि पडुव कल्कुटिग सूरोजगे स-
१७ र्वनमस्य मत्तर् पनेरडु तोंट मत्तरोंदु दडिगरसन कय्यलु माल्गोण्डु देवर्गे कोट्ट

१८ भूमि कप्पादिय केरेयिं तँक मन्नेयवोलडलु मर्वनमस्य मत्तरु ५० ॥

१९ ई धर्ममं स्वधर्मदिं रक्षिसिदवर् वारणासियलु ओन्दु कोटि कविलेयु-

२० मं वेदपालनर्प ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ (ल) म पडेवर् ई धर्ममन-लिदव

२१ रा स्थानदोलनिनु कविलेयुमननिर्प (तु) ब्राह्मणर—

२२ मा ॥ नामा—

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था। इस समय अक्कादेवी गोकाग क़िलेके समीप शिविरमें थी। उसने विक्रमपुरके गोणद वेडंगि जिनमन्दिरके लिए मूलसंघ-सेनगण-होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था।]

[ए० इं० १७ पृ० १२१]

१३५

नन्दवाडिगे (मैसूर)

११वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है। उनकी रानी मैलल्देवी थी। उनके एक सामन्त भावनगन्धवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाव आदि वनवाये थे जो निम्न स्थानोंपर थे – कल्याण, अण्णिगेरे, मुलुगुन्द, (कोल्नु) रे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, वेल्गलि, वनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेरूर। उसने पोन्नुगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमन्त वसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था। उसके द्वारा दिये गये

कई दानोंका उल्लेख लेखमें किया है। इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है। वर्ष निश्चित नही है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ९९]

१३६

कल्याण (नासिक, महाराष्ट्र)

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र परमारवंशीय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है। श्वेतपद देशमें स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशवुद्धिक स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियाँ, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८]

१३७

हेब्बैलु (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
२ वल्लभ महाराजाधिराज परमे-
३ श्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-
४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
६ रोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-
७ द्राकंतार सलुत्तमिरे स्वस्ति स-
८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
९ ण्डलेश्वर पट्टिपोम्बुर्चपुरवरेश्वरं पद्मा-

१० वत्तीलब्धवरप्रसादं मृगमदामोदं
११ कन्दुकाचार्यं मन्दरधैर्यं सुभटसंस्तु-
१२ त्यं सान्तरादित्यं रिपुकरींद्रकंठीरव रण-
१३ रंगभैरवं कोर्तिनारायणं सौर्यंपा-
१४ रायणं रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-
१५ दण्ड विरुद्भेरुड महोग्रान्वयनभस्त-
१६ लगभस्तिमालियतुलबलसौर्यं-
१७ शालि वन्दिसन्दोहानन्दीकृतसुन्दरकल्पल-
१८ तांकुरनरिमंडलिकपतंगदीपांकु-
१९ रं विसिसनविजयविपुलीकृतकृत-
२० प्रतिज्ञं विरुदसर्वज्ञ नामाद्यनेकां-
२१ क्नाकासमलकृतर् श्रीमत्

दूसरी ओर

२२ वीरसान्तरदेवर् सान्तलिगे-
२३ सासिरमुमं निष्कंटकमा-
२४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-
२५ थाविनोददिं राज्यं गेय्युत्त-
२६ मिरे तत्पादपद्मोपजीवि
२७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-
२८ तीभकुंभस्थलविदारुणदा-
२९ रुणकरासिधारासक्तमुक्ता-
३० फलमालालंकार वीरनारीम-
३१ णिहारायितभुजादण्डनहि-
३२ समहावाहिनीमहीधरव-
३३ ज्रदण्डं जिनधर्मप्राकारं
३४ निजगोत्रनिस्तारं धर्मरत्ना-
३५ करं सुभटारिभीकरं पत्ति-
३६ हिताजनेयं सौर्यंगां-
३७ गेयं स्वामिद्रोहदिशाप-
३८ ट्टं वैरिकोटिघरट्टं रण-
३९ रंगक्षेत्रपालं मच्चरिसु-
४० वरेल्ड्रेयसूल ठलदिं
४१ मुन्निरिव आयुमं मे-
४२ रेवं सुकविकोकिलसह-
४३ कारनेकांगवीरं विलासवि-
४४ द्याधरं धैर्यमहीधरन्
४५ उपायनारायणं नीतिपा-
४६ रायणं वीरुगनगरुड-
४७ नामाद्विसमस्तप्रशस्तिस-

४८ हित श्रीमन् नकुलरसर्
४९ स्मररूपरन्नतर् नकुलर-
५० सन तनयर् जनवके रा
५१ मन् लक्ष्मीधरन्दं-
५२ न्डहे चावुण्डराय-
५३ नु नागनमंनुं कर-
५४ मेसेदरे ॥ मंगल

तीसरी ओर

५५ वृत्त ॥ केडेयद पे (म्) महामहिमराज-
५६ सुतप्रतिपत्तियेंनिवं तडेयदे वीरसान्त-
५७ रमहीपति ता ध्येयेगेय्दु कोण्डोड वि-
५८ डे निजपुत्र नीं परिसेनिपी नेगल्तॆयनेय्दॆ
५९ कोट्टनेन्दडे दोर्प्यापरार् नगुलभूप-
६० नोल्ली वसुधातलाग्रदोलु । परम-
६१ श्रीजिननिष्टदैवमॆनेपोर् शास्त्राग-
६२ मामोधिगल् गुरुगल् मायिमे पु-
६३ ण्णडेतनुनिपर तृप्तिप्रिय वीरमा-
६४ न्तर भूमिपति तन्दे ता पडियर
६५ श्रीकाटि ताय् पॆंपल्करिसुत्तिल्दरे-
६६ ग्रुण्ये ये (ने) नगुलभूपाल महा-
६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तप्रिये
६८ श्रुगलोल्लने दण्डनायकोट्टम्मन
६९ पेट्ट मन्दिन सासि-
७० वर्कण्डु काप-
७१ रके ह्वनलिन कु-
७२ चिकेयनलिदं
७३ त्रिज्ञारिकेतोजन मग वहु
७४ गि आय्वोज ई शासनद
७५ रोव्दं
कल्लं

चौथी ओर

७६ पुत्रि गुणान्विते चट-
७७ ब्बरसिगे दोरॆयार् दान-
७८ धर्मशीलोन्नतियोल
७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

८० मंतिसंवत्सरं प्रवर्तिसे ८१ वैशाखमासदकृष्णप
८२ क्षदेकादशि आदित्य ८३ वारदद्दु श्रीमन्महा-
८४ मण्डलेश्वर वीरमान्तर ८५ नगुलरसगे पेर्वय-
८६ ल् पन्नेरडर किरुडेरे ८७ बिट्टियुम कादु परिहा-
८८ रं बिट्टंकेगेड्डु क्लनाडिन्ती ८९ मर्यादियनलिद था-
९० रणासियोल् कुरुक्षे ९१ त्रदोल् साम्मिरकविलेयुं
९२ पार्वरुमनलिद पातकन- ९३ क्कुं । स्वदत्तां परदत्ता वा यो
९४ हरेत वसुधरां षष्टिवर्षन- ९५ हस्राणि विष्ठायां जायते क्रि-
९६ मि° । विप्रकुलाम्बरचंद्र ९७ श्रीप्रतिमेय मारसिंग-
९८ तनय विद्वद्विप्र गगननृपनि- ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभ गो
१०० विन्दं १०१ पेर्वयल् पन्नेरडु
१०२ पॉन्नुर्चनाडोले १०३ मत्तगावे हडिगा-
१०४ ल कडगोड मैसेपन्नेर- १०५ डुम नेक्किवयलुं पा-
१०६ लिगार । वीरसिनु नगुल- १०७ रसनुमेय्दिवेत सासिर-
१०८ गद्याण ॥ मंगलं

[यह लेख एक स्तम्भके चारो बाजुओपर लिखा है। चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपोबुर्चके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है। इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था। ये दोनो जैन कहे गये है। इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे। नगुलरसके पिता पडियर काटि, माता अरेयव्वे तथा पत्नी चट्टरसि थी। इनके दो पुत्र चावुण्डराय और नागवर्म थे। लेखमें वीरसान्तर-द्वारा अंकेगेडु ग्राम और पेर्वयल् विभागके कुछ करोका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गगराजाओके समयमे कवियोमे प्रिय था। लेखको चित्तारि केतोजके पुत्र आयवोजने उकेरा था। लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है (यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था)।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १९०]

१३८

मुलगुन्द (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

१-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटाग्र्यरत्नप्रभाजालालीढपदारविन्दयुगल: कन्दर्पदर्पापह:। त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभ: सुप्रभो भव्याना निवहं निराकुलमलं पायादपायाज्जिन ॥ १

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्या-

४ श्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रव-

५ र्द्धमानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे। तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं वेंगी-

६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्ड कुमरमार्तण्ड परकरिमदनिवारणनव्मन गन्धवारण परिवारनिधानं

७ दानकानीनं हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेल्ल भुवनैकमल्लं मण्डलिकशिरो-

८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसहार कटकप्राकारं श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्लदेवपादपकनम्र-

९ मर श्रीसोमेश्वरदेवं बेलुवोकमूनूरुं पुलिगेरेमूनूरुम सुखसंकथाविनोददिनाळुत्तमि-

१० रे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ वृत्तं । विनयक्काधारभूतं पतिहितचरित-
क्काश्रयं सद्विवेकक्के निवास—

११ संपत्तिगे, कुलभवनं सन्ततानूनदानक्के निधानं मान्तनक्कागर-
मेने नेगल्द् सद्वचोभूषण भूविजु (तं) (बे-)

१२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तदिक्चक्रवाल ॥२ ईव गुणं गुणं
पतिहिताचरित चरितं परोप (का-)

१३ रावसथार्थमर्थमघमिज्जिनतत्त्वमे तत्त्वमेब सद्भावने तम्मोळेन्दि
नेलेवेत्तिरे कीर्तिगे नोन्तरिन्तु

१४ बेल्देवनुमोल्पनाव्द बल्देवनुमंकद शान्तिवमंनुं ॥(३) वचनं ॥
अन्तु सकलगुणगणोत्तुगरु जिनधर्म-

१५ निर्मलरुं निखिलजनोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्तिकलानिकेतनरुम-
ग्गलदेवप्रियतनूभवरं गोज्जि-

१६ काम्बिकाकुशोदरनिविडनिवद्धपट्टरुमागि पोगल्तेवेत्त तत्सहोदर-
त्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिविग्र-

१७ हाधिकारि ॥ वृत्तं । जिनपादांबुजभृंगनगजनिस गम्भार्थरत्नाकरं
मनुमार्गं विनयार्णवं कलिमलप्रध्वंस-

१८ कं केशिराजन वर्टि नयसेनसूरिपदपद्माराधनारक्तचित्तनुदात्तं
नेगल्द् विवेक—महीभाग-

१९ दोल् ॥ ४ आ महानुभाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥
कन्दं । सिन्द—कनवलानन्दनकररु-

२० पनसमसाहसनिलयं सिन्दनृपनन्दनं लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-
कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मलं सत्यनिधा-

२१ ननतूलदान—अनन्दिन कंचरसं पंचेषुनिभं मुलगुन्दसिन्ददेश-
ललामं ॥ ६ एंब पेंर्पिंग जसक्कमागरमा—

२२ द् कंचरसं तन्न सीवटदोळगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं
कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंघवारा-
२३ शौ मणीनामिव सार्चिषा । महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयो-
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ठ-
२४ रजितसेनभट्टारकर् तदन्तेवासिगळ् कनकसेनभट्टारकरवर शिष्यर्॥
कन्द । चान्द्र कातन्त्र जैनेन्द्रं श- . .. ।.
२५ ब्दानुशासनं पाणिनि मत्तेन्द्र नरेन्द्रसेनमुनीन्द्र गेकाक्षरं पेरगिवु
मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर
२६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेयेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने
शब्दानुशासनदोळ् पाणिनि पाणिनीयदोळे चन्द्रं चा-
२७ न्द्रदोळ् तजिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोळा कुमारने गड कौमारदोळ्
पोल्वरेन्तेने पोळर् नयसेनपण्डितरोळन्यर् वार्धि-
२८ वीतोर्वियोळ् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन
पण्डितदेवर पादप्रक्षालनगे-
२९ य्दु । शकवर्षमोवयनूरेल्पत्यदनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-
सक्रान्तियंदु तीर्थद व-
३० सदिगाहारदाननिमित्त निजाग्निकेयप्प गोजिकब्बेगे परोक्षविनय
नगरमहाजनमु पचमठस्था-
३१ नमुमरियें नगरेश्वरद् गर्डिंवद् कोलोलळेदु क्रिरुगेरेय केय्योळगे
सर्वबाधापरिहारमा-
३२ गे बिट्ट केय्मत्तर् पन्नेरडु । आ केय्गे गुड्डे ईशान्यदोळ् कविलेय
कल् आग्नेयदोळादित्यन कल् नैऋ-
३३ त्यदोळ् चन्द्रन कल् वायव्यदोळ् पद्मावतिय कल् असगगेरेय
वंक सासिर बळ्ळिय तोंटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

२४ (परदत्तां वा) यो हरेत वसुन्धरां। षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥१०

[यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर (प्रथम) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-में शक ९७५ में लिखा गया था। उस समय वेल्वोल तथा पुलिगेरे प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर (द्वितीय) शासन कर रहा था। वहाँके सन्धिविग्रहाधिकारी वेल्देव थे। ये अग्गलदेव तथा गोज्जिकब्बेके पुत्र थे। बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे। वेल्देवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके सरदार कंचरसने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी। नयसेनकी गुरु-परम्परा इस प्रकार थी — मूलसंघ-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन। नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके विशेषज्ञ थे।

[ए० इं० १६ पृ० ५३]

१३९–१४०

नन्दिवेवूरु (बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण संक्रान्ति, रविवार, जय संवत्सरका है। इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मानडिके राज्यकालमें देसिगगणके अष्टोपवासि भटारको रेञ्चूरुके महाजनो-द्वारा भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है। इस लेखके पीछेकी ओर प्राय ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वैंहुरुमें दिये हुए दानका वर्णन है। इसमें वीरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६]

१४१

कोगलि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७७ = सन् १०५५

जैन मन्दिरके आगे एक पोडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है। इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था। लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था। इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहच्चरणसरसिरुहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमण्डन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसद सरसिकलहंस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० बेल्लारी १९६]

१४२

डम्बल (मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव (सोमेश्वर १) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें धर्मवोललके नगरजिनालयके लिए बाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ८९]

१४३
मोरब (धारवाड, मैसूर)
शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि संवत्सरका है। इसमें यापनीय संघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह बिरुद दिया है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६]

१४४
छब्बि (जि० धारवाड, मैसूर)
शक ९८२ = सन् १०६०, कन्नड

[इस लेखमें सब्बि नगरके बोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियव्वे-द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी संवत्सर ऐसी थी।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६]

१४५
तोललु (मैसूर)
शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पंक्तियाँ घिस गयी हैं।

९ ˙कम्बुकन्धरे केलेयब्बरिसि वीरगग पोयिसलनं
१० पेम्पनवधु ˙˙विनयार्क पो-
११ यिसलजनप˙ ˙माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

१२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलिं भद्रबाहुस्वामि-
गलिवलि

१३ पुष्पदन्तभट्टारकरि मेघचन्द्र

१४ ···श्रीमूलसंघ-

१५ द बेलवेय अभयचन्द्रपण्डितरगें विनयादित्यहोयिसलदेवर् शक-
वर्षं ९८३ शुभकृत्संवत्सरद

१६ उत्तरायणसंक्रमणद् दानार्थदेमण्ण धारापूर्वक कोट्ट भत्तर्कें तेरे इ

१७ णर्वत्तु हणवारमत्तडि देवर चरुविगे यिप्पत्तयरडु सलगेय
धारापूर्वक माडि

१८ बिट्ट दत्ति तोलकलहल्लिय मुद्दगोडनु तिप्पगोडनु युरतकलु
यिरभुगाम्ब होर-

१९ गेरिय मूरणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अभयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-

२० र्वक माडि बिट्टरु ई धर्मवनू अवनोव्वनु ··

[इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरायणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी, भद्रबाहुस्वामी, पुष्पदन्तभट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है। मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनो तोललहल्लिके निवासी थे।] [ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३]

१४६

पालियड (गुजरात)

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत—नागरी

१ सिद्ध विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्येह आकाशिका-
ग्रामावासे समस्त-

२ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीभीमदेव ॥ वायडाधिष्ठानप्रति—
३ वद्धवो (पो) डशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुरुषान् ब्रा(ह्म) णोत्त (रान्) ज-
४ नपदांश्च वोधयस्यस्तु व मर्विदितं यथा अद्य सोमग्रहणपर्वणि चराचर-
५ गुरुं मर्वज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकायै अत्रैव वायडा- (धि)ष्ठाने
६ (च) रीक्षेत्रान्तरितया गुडहुलापाकिसंकन्नयाचणिकमाताकभूमी- सं (बध्य)-
७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव माडाकस्य सत्का हलद्वयस्य २
८ भूः शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभि प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्या दिशि कल्प
९ पाल्केमरिसत्कं क्षेत्रं दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा
१० यां च वाणिय (ज) कमामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड- ग्राममा-
११ र्गं इति चतुराघाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य एतन्निवासि- जनपदै-
१२ र्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै-
१३ र्भूत्वास्यै वसतिकायै समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत् पुण्यफल मत्वास्म-
१४ द्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः
१५ — १६ नित्य-के शापात्मकश्लोक
१९ लिखितमिदं कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण। दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीसोगाङ्गिय
इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[इस ताम्रपत्रमें चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) द्वारा वायड अधिष्ठानकी एक बसतिका (जिनमन्दिर) के लिए चैत्र शु० १५ संवत् १११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० इ० ३३ पृ० २३५]

१४७

मोटे येन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है। इसमें महामण्डलेश्वर लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान बेन्नेवुरमें आयचिमय्य नायक-द्वारा निर्मित बसदिके लिए था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९]

१४८

चांदकवटे (विजापुर, मैसूर)

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवग संवत्सरके दिन सूरस्त गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है। सिन्दिगे निवासी जाकिमय्येने यह निसिधि स्थापित की थी।]

[रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२]

१४९

मत्तिकट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[यह लेख टूटा हुआ है । मत्तिकट्ट ग्रामकी कुछ जमीन पेर्गडे कालिमय्यने मत्तिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है । (यह नाम मतिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है) । यह दान कालिमय्य-द्वारा निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था । कालिमय्यको (चालुक्य) सम्राट् त्रैलोक्य (मल्लदेव) का पादपद्मोपजीवी कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२]

१५०-१५१

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १०६८, तमिळ

[इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है । यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ बकरियोंके दानका उल्लेख है । इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुगर् देवर् वीरराजेन्द्रपेरुम्पल्लि आल्वार् ऐसा किया है । यह दान कालियूर प्रदेशके परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२९-१३०]

१५२

मत्तावार (मैसूर)

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-

२ न । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-
३ नशासन ॥
४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
५ र द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुला-
६ म्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मळ-
७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्प श्री-
८ मत्त्रैं (लो) क्यमल्ल विनयादित्य होय्सळ-
९ देवर् गगवाडितोंभत्तर्सासिरमनाळुत्तु
१० सुखदिं पृथ्वीराज्यं गेय्ये सकवर्ष १०.१ नें-
११ य पिंगळसंवत्सरद वैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-
१२ वारदल् पिंडु देवर्म हाक्यळदेवर् मत्तवुरके
१३ कालं तिर्वितट्टु भिजयगेयत्तट्टु चमढिगे बदि
१४ देवर कटि येट्टदोके कल्वरव विल्लियकं माडि-
१५ मिदल्लोकरो माडिसिवंदडे माणिकसेट्टि
१६ यिन्तॅदु बिन्नपगेय्दम् डेयर् नीधूरोळोडु
१७ यमडिर्य माडिसि भूमिय पिट्ट मा-
१८ नमहिमेगळ कोट्टडं मडवल्यर् निर्मड-
१९ दर्यंकके प्रमाणुदे देवरर्थमं मळेय-
२० रसुगल हडद मत्तयु समानमदर
२१ माणिकसेट्टिय मार्ति मेचि मक्कु करवोलितॅ-
२२ डु यमद्वियनुरोलगे माडिसि मामिय
२३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुदग्गवुण्डरिं बे-
२४ मायिदॅन्नूर (?) मत्तक्के बिडिमि ॥ तेरेयोल् प-
२५ ड नाडलियलि सिद्दायदबिळ मत्तनूळ नेळ वि-
२६ नयायितन् पर्मंत्तेरेगळ मत्तवूर च-
२७ सदिगे बिट्टं ॥ अतु बिट्टु यमद्वियवसदलिपळच-

२८ मनेगल माडिसि रिपिहल्लिऊर्येंटु पेसरनिट्टु
२९ मनेदेरे माडुवेडेरे ऊरट्टिगे तौंडे सु-
३० रंटु कवर्ते सेसे ओसगे मनकरे कूट क-
३१ कन्ति वीरवण कोडतिवण कत्तरिवण अडेकलु-
३२ वण हुडवलेय हडियराय कुवर वि-
३३ ट्टि कंमर विट्टि यिवोल्गागि हलवु महिमे-
३४ गलं विनयादित्यहोय्सलदेवर् आचन्द्राकं-
३५ तारंवरं सल्गो ॥ इन्ती धर्मदोलावनानुं तप्पिद-
३६ वं गगेयलु गंगेयं कोंटु तिन्दं लिंगालि-
३७ पं गेय्द्वनिस्यानवे कट्टेगल स्थानं लागवल्ल
३८ मत्तावुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे–
३९ न्दे नित्तुदक्के देवगृह
४० वह नानवक—होलंड्डा-वागिपं ॥ ४०००००

[यह लेख होयसल वशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, बृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल संवत्सरके दिन लिखा गया था। मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे। इस ग्रामकी वसदि ग्रामके बाहर एक पहाडीपर थी। उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममें वसदि क्यो नही है ? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें वसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब है। तब राजाने ग्राममें वसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोका उत्पन्न उसे दान दिया। माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७१]

१५३

सोरटूर (मैसूर)

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव (सोमेश्वर २) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था (यहाँ माघ स्पष्टत गलत है जो पौष होना चाहिए ।) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेगंडे दण्डनायक बलदेवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवय्यके पिता गंग कुलके अग्गलदेव थे, माता गोज्जिकब्बे थी तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेल्देव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियब्बाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणंदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोने भी कुछ भूमि, तेलघानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है -चंदणंदि - दावणंदि - सकलचन्द्र - कनकनंदि - सिरिणंदि ।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १०७]

१५४

शावरवाड (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वर परमभट्टारक स-

३ त्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाच-

४ द्राकॅतारं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंचमहाशब्द महामंडलेश्वरनुदारमहेश्वरं चलके बलुगंड (शौर्यमार्तंड) पवित्रे-

५ कद्राड संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविख्यातं गोत्रमाणिक्यं विवेकचाणाक्यं परनारीसहोदरं वीरवृकोदरं को-

६ दंडपार्थं सौजन्यतीर्थं मंडलीककंठीरव परचक्रभैरवं शरणंडगोपालं मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-

७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेश्वरं लक्ष्मरसरु बेलुवोलमूनूरुमं पुलिगेरेमूनूरुमन्तेरडरुमं-

८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाळ् कार्यद शौर्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्यराज्यक्के कार-

९ णमादाळ् तुलिकाळ्तनक्के नेरेदाळ् कट्टायदाळ् भिक्कमन्ननणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगल्तेवडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेलवाळ् रणदाळा-ळ्दनेन-

१० थुवावेडेयोळं विश्वासदोळु लक्ष्मणा ॥ कलितनमिल्ल चागिगे बदाक्यते सेयुगलिगिल्ल चागि मेयगलियेनिपंगे शौचगुणमि-

११ ल्ल कर कलि चागि शौचिगं निळे तुडिवोजेयिल्ल कलि चागि महाशुचिसत्यवादि मंडलिकरोळीतनेन्दु पोगलगुं बुधमद-

१२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुडुरेय मेले बिल् परसु तोरिगे सूलिगे पिंडि-वालमेत्तिद करवालवादिंडुव ककंडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-

१३ दरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरम्बुवरेन्तु निल्परेन्तोदलवरेन्तु लक्ष्मण-नोळान्तु बर्दुकुवरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-

१४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमल्लदेवादेशं तनगेसदिरे नाडि-सिदं [जिनशा-]सनवृद्धियं प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याल-

१५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन याव रेवकनिर्मडिय वल्लभं बूतुगनात्मावगतमकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति

१६ गगमडलनाथ ॥ वृ ॥ कुडिगे कुडिवेत्तेसेद बेल्वलदेशमनाल्द गगपेर्माडिगलिन्दमण्णिगेरे नालकेरेवट्टेनिमित्त नाड नाडा-

१७ डिगलुंधर्ममेंचिनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्तु बूतुग-नरेंद्रनिनल्कि जि-

१८ नेंद्रमन्दिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि गुम्मुंगोल्लनादियागे नेगल्दिट्ट-

१९ मेँ नावरिवाडमेँय बाडगल शासनं बेरसु मर्यनमस्यमिबँट्टु मिट्ट कोट्ट गुणकीर्तिपडितगें भक्ति-

२० यिनुत्तमदानशक्तिवर्यि ॥क॥ उदितोदितमेने विभवास्पदमेने भुवन-यूकवन्द्यमेने संचलमागदे गगा-

२१ न्वयमुद्धिनमिदु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-श्रीजिनशासनक्के मोदलाद मूलसघं

२२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंघवेमरिंदाद्न्वय पेपुवेत्तिरे सन्दर् वलगारमुख्यगणदोलु गगान्वयक्कि-

२३ न्तिवर्गुरुगलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥ श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यातिय

२४ ताल्दिदर् सज्ज्ञानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगलुजर् तार्किका-

२५ कांभिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपतिगलवर शासनोदात्त-हस्तर ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपडितर् अवर् तच्छास-

२६ नत्व्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पादाम्भोजषट्-
पदर् उद्यद्गुणचंद्ररन्तवर शिष्यर नोडिशास्त्रा-
२७ थंदोलु विदितरु गण्डविमुक्तरिन्नमयनन्याचार्यरार्योत्तमरु ॥
वृ ॥ पोले चोल नेलेगेट्टु तन्न कुल-
२८ धर्माचारमं बिट्टु बेलवलदेशक्ककडियिट्ट देवगृहसंदोहगलं
सुट्टु कट्यले पापं बेलेदेत्ते-
२९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लगे पदलेयं कोट्टसुवं बिट्टु निज-
वंशोच्छित्तियं माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगल पोलेवडिदों पाण्डयचोलनॆंब
महापातकतिबुलनलिदधोगतिगिलि-
३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेल्वलदेशमं पडेदु दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्
धर्मद् वट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मनं-
३२ गोले कालीयगुणेतर कृतयुगाचारान्वितं लक्ष्ममंडलिकं निर्मल-
धर्मवत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-
३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगल्तेय पोगल्तेय वाल्तेय पुण्यतीर्थ-
मन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि संदुद्दु दक्षिणगंगे तुंगभ-
३४ द्रानदि तन्नदीतटदोलोप्पुव कक्करगोण्डमॆंबधिष्ठानदोलुचराधिपति
चक्रधरं नेलसिर्द वीडिनोलु ॥
३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरंध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदब्दं
बरे चैत्रमागे विपुवत्सक्रान्तियोलु पु-
३६ ण्यतारके पूर्णागिरमागे चक्रधरदत्तादेशदिं देशपालकचूडामणि
धर्मवत्तलेयनत्युत्साहिर्दि

३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररनभिवंदिसि भक्तियिंदं
काल्गर्चि जगत्प्रभुवनि चेसर्दि लक्ष्मणविभु

३८ कोटं हस्तधारेयिं शासनम ॥ वृ ॥ पुरडनूर् बाडदोलगी जिन-
गेहवे पूज्यमेंदक्करसर कां-

३९ के विल्दुबियर्तुंबलसुबलिदायमा त्रियागेरडलवत्तु पोन्नस्वण
म्मकटेले माडि शासन ।

४० बरंथिसि कोट्टु धर्मगुणम मेरेद नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-
वासमं वासधरित्रिनिभम कट्ट-

४१ कालेयदुर्मावनेयिं चांडालचोल सुडिसि किडिसे विच्छित्तियागि-
दुर्दे नेडने नष्टोद्धारम शाश्वतमतिशय-

४२ मायूतेंबिन माडि तच्छासनमाचन्द्राकंतार निलें निलिसिदनें
धन्यनी लक्ष्मभूप ॥ अरसगं सेसेयेन्द-

४३ रसर कोणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दस्वणंदिन्गलमेन्दरेवीनम-
नविक कोंडवर् चांडालद ॥

४४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्त भुजबलोपार्जित-
विजयलक्ष्मीकान्त समस्तारिविजय-

४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्ड कत्तलेकुलकमलमार्तण्ड मयूरावर्तापुरवराधीश्वरं
ज्वालिनीलब्धवरप्रसाद क-

४६ पूरवपं जिनधर्मनिर्मल मेरुकटियककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-
सहित श्रीमन्महासामन्त बे-

४७ लूवलाधिपति भुजबलकाटमरु ॥क॥ जगमेल्लं टेसेगे कय्मुगि-
वेम कोट्टरियनोन्दु कागिणियुम-

४८ ना गगनदोलिर्पादित्य बगेदुदनित्तपने बेलूवलादित्यन चोलु ॥
इन्तेनिसिद बेलूवलादित्य मकवर्षं ९९४ ने

४९ य परिधाविसंवत्सरद पुष्यसुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदढ अण्णि-
गेरेय गंगपेर्माडिय बस-

५० दिय दानमालेगल्लिगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-
य्वत्तुमन् अण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-

५१ दिं यल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं
माडि बिट्टु कोट्टरु ॥

५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटवन्तिशोणमाणिक्यमौक्तिक-
मयूखकुंकुमलयजाभ्यर्चि-

५३ तश्रीमदर्हत्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविशारदरनवरतपरमागमो -
पदेशप्रसंगरुमप्प श्रीमदु-

५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर शिष्यश्रीपादपद्माराधकरुं श्रीमत्बलात्कारग-
णांबुजसरोवरराजहंसरुमप्प श्री-

५५ मत्सकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीवरणमण्णिगेरेय महास्थानं
श्रीमद्गंगपेर्माडिय बस-

५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यरु बवुडगावुडमुख्यवागि
हेग्गडे महित मूवत्तु मनुष्य-

५७ देवपुत्रर्गे कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चंदव्वेय मर्ग हेग्गडे मल्लय्यनु
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा-

५८ रियर्गे बेसकेय्दुंव वृत्ति मत्तर् (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यर्गे पाद-
पूजेयं कोट्टु

५९ तम्म सेनगणद बसदिगे हूलिगोलद सीमेयिट्टु कुलुपल्लदिं
पडुवलु मत्तरेंटु यरुवणं गद्याणं

६० नाल्करिंदधिक कोंडवर् चांडालरु ॥ एम्मेय केत्ति सेट्टिय साम्यके
मत्तरेंटु मने वोंदु मोगवाडगे गद्याणं ना-

६१ ल्कु कणविय सेट्टिय बम्मि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेंटु मने वोंटु
मोगवाडगे गद्याण नाल्कु कत्ते-

६२ य दारि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेंटु मने वोंटु मोगवाडगे गद्याण
नाल्कु हव्वेय देवि सेट्टिय

६३ साम्यक्के मत्तरेंटु मने वोंटु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु गोलिय
चवुडि सेट्टिय साम्यक्के मत्त-

६४ रेंटु मने वोंटु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु रुद्रुलिय लंकि सेट्टिय
साम्यक्के मत्तरेंटु मने

६५ वोंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कडल मल्लि सेट्टिय साम्यक्के
मत्तरेंटु मने वोंटु मोगवाडगे गद्याण

६६ नाल्कु मवलव्वेय पुत्रु चण्डि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेंटु मने
वोंटु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु माध-

६७ वसेट्टिय साम्यक्के मत्तरेंटु मने वोंटु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[इसी तरह ८३वीं पंक्ति तक बयसर बोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर बम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर बोसि सेट्टि, चदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि सेट्टि, होय्सर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालबम्मि सेट्टि, कडवर देवि सेट्टि, मंचल बोसि सेट्टि, बेणिल मल्लि सेट्टि, बेण्णेय नालि सेट्टि, दोड्डर केति सेट्टि, मजडिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, बयिसर बसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके बारेमें निर्देश है ।]

८३ नाल्कु चिक्कि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेंटु मने वोंटु मोगवाडगे
गद्याण नाल्कु यिन्तो देवपुत्रिकरोलगे याव-

८४ नोर्वंनु धर्म्मक्क याचार्य्यरं विरोधियागि राजगामिरव माडिदन-
प्पडे वृत्तिच्छेदसमयवाह्य ॥

८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महाप्रधान वसुधैकबान्धवं
श्रीरेचिदेवदण्डनाथ बरकेरे-

८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्चनेगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित यष्टविधार्चनेगे

८७ कोड केयियरकेरेयिं मूढलु मत्तर् पन्नेरडुम याचार्यरुं देवपुत्रि-करुं सर्वाबाधप-

८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण ऐयावोलेयुमप्प ग्रामादिं वाडक्के श्रीगंगपेर्माडि-

८९ य बसदिय पुरद मर्यादेय बले मूवत्तेडु गेणु हस्त बेगोल्लदंगे वृत्ति सल्लदु ॥ वर्धतां जिनशा-

९० सनं ॥

९१ गंगासागरयमुनासंगमदोलु वाणारसि गयेयेम्बी तीर्थगलोलात्म-कुलद्विजपुंगवगोकुलमनकिडरिन्तिदनलि-

९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमि. ॥

९३ याचार्यर येकटिगनागि बेसकेय्दुव वृत्ति कुरिवर केते

९४ न्दु ॥ याचार्यरु चवुड गवुडन हेसरिडुवक्के मूगवाड रन'"

९५ लद सीमेयलु कोड वृत्ति मत्तरु वोंदु यदु हॊलगेरं ॥

[इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं। पहले भागमें (पंक्ति१–४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है। यह मन्दिर रेवकनि-र्मडिके पति बूतुगके स्मरणार्थ बेल्वल प्रदेशके शासक गंगपेर्माडिने[1] बन-वाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टगे और गावरिवाड ये चार गाँव दान दिये थे। यह दान मूलसंघनंदिसंघ–वलगार गणके गुणकीर्ति पण्डितको दिया गया था। गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गंग

१ रेवकनिर्मडि राष्ट्रकूट सम्राट् कृष्ण (तृतीय) की बहन थी जो गंग राजा बूतुगको ब्याही गयी थी। गंग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिंह (तृतीय) (सन् ९६०–७४) अथवा पौत्र राजमल्ल (चतुर्थ) होंगे।

वंशके गुरु वर्धमान – विद्यानन्द स्वामी – उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि – गुणकीर्ति – विमलचद्र – गुणचन्द्र – गण्टविमुक्त – उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि। कालान्तरसे चोल राजाने बेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया[1] तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजाको अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल सोमेश्वर (प्रथम) द्वारा वह युद्धमें मारा गया।[2] तदनन्तर बेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर (द्वितीय) के समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया। उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया।[3] इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोटके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९२ वर्ष चल रहा था।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें बेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था। तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था। इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया। यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है। इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोंको सौंपी थी।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है।

---

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा। (सन् १०१८–५२)
२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था।
३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के क़रीब लिखा गया होगा।]

[ए० इ० १५ पृ० ३३७]

१५५
अण्णिगेरि (मैसूर)
शक ९९३–९४ = सन् १०७१–७२, कन्नड

[यह लेख अक्षरश: गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिर्फ़ चार श्लोक इसमें अधिक हैं। यथा— (१) मंगलाचरणमें—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने। नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यंतो (ट्ट) ल्तुलिदं मलेयोल् मार्मलेव मलेपरं मग्गिसिदं मलेयेलु कोर्पिर्दुमनलेद जलनिधियोलें प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३–४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररल्ते बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि – सकलचन्द्र – गण्डविमुक्त – त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है। इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं। अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा।]

[ए० इं० १५ पृ० ३४७]

१५६
हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)
सं० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवांगना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है। समय संवत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३]

१५७

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ९९६ – सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। सगर कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिबसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बलात्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३]

१५८

हुनगुन्द (मैसूर)

शक ९९६ – सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नुगुन्दकी अरसर बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित काटिमय्यने सर्व प्रधानों-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १११]

१५९

सोमापुर (धारवाड, मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमे किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन वसदिको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६]

१६०

लक्ष्मेश्वर (मिरज, मैसूर)

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[इस निपिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर (लक्ष्मेश्वर) के आनेसेज्जेवसदिमें इन्होने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमश- आषाढ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त संवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई ६ पृ० १६१]

१६१

अक्कलकोट (सोलापुर, महाराष्ट्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १०७८, कन्नड

[इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, सिद्धार्थि संवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। (वस्तुत उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था।) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है।] [रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५]

१६२

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुष्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसवत्सरका है। इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी ताविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५]

१६३

अलनावर (धारवाड, मैसूर)

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन बसदिके लिए नरसिंगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८]

१६४

बनवासि (मैसूर)

सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण – पुस्तक-गच्छ – कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२]

१६५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-

३ भरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ धरेयं वाराशिपर्यन्त-मनवयदिं दुर्विनीतावनीपाकर वेरं कित्तुं नीरोल् गलगलनलेदो-

४ वादि मुन्निन्तु चक्रेश्वररार् निष्कंटकं माडिदरेंने महि निष्कंटकं माडि चक्रेश्वररत्नं सन्ततं पालिसिदनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥ अन्तु श्रीम-

५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान को-

६ कविख्यातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वरं वीरमहेश्वरं विक्रमाभरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि चालु-

७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगराजं सहज-मनोजं रिपुरायसूरेकारनष्णनककारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल

८ वीरनोलंब पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्रं नलनहुषनृगाद्यादिभूपालकालोचरितं चालुक्य-चूडामणि सहजमनोजं नतारा-

९ तिभूर्मीश्वरसंघातोत्तमागाभरणमणिगणज्योतिरत्तंसमास्यचरणं सामान्यलें भूपरोलपगतविद्विट्कटच नोलम्ब ॥ ३ वचन ॥ पुनिविद पोगल्तेग नेगल्तेग नंलेय-

१० निसि ॥क॥ अरसुगुणगल मेयूवेत्तिरे पगे मिगदिरे जनानुराग पिरिदागिरे कीर्तिल्लतिके निमिरुत्तिरे धीरनोलम्बन-वनतारिकदम्ब ॥४ व॥ पुरड्डु[मू]नूल्म वनवासेपनिर्छामिरमु-

११ म सान्तलिगेमासिरमुम कडूर् मासिरमुमं सुरासंकथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्ताधिपतिं महाप्र-

१२ चण्डदण्डनायक रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजग सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्त.करण । सरस्वतीकर्णाभरणं

१३ श्रीमन्महाप्रधान मनेवेगडे दण्डनायकनेरेयमय्य ॥कंद॥ सकल-कलाग्रह्म ब्रह्मकुलाकं वत्सगोत्ररत्नाकरशीतकरं क्रियिसे भुवन-प्रकरदोक-

१४ रिम्ब्रुसुभूपनेरेगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु साहस्यमप्पदेरेगविभुगे चिण्पिंगे गुण्पिंगे तिण्पिंगले पारावारमिद्राचलमचसुरणि रामनिं कृष्णनिं सचलम—

१५ श्लिष्टगंभीरसुमगुरुत्वुयागिलदुवारय्ये वेरोंदेले बेरोन्दविं बेरोन्द-निमिपनगमेंत्तानुसुंटप्पो दवकुं ॥ ६ कद ॥ परिकिपोडे हस्ति-मशकान्तरमेनिपुडु तन्न

१६ गुणद नेगल्दर गुणदन्तरमेनें गुणेपु को मत्सर पुव सुधोक्त एरेग-विभुगें सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिवल्करि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं

१७ ' नमिट्टुदु विण्पेपमाणवाह्यमाडुदु चरितं शिखापदमनेय्दिदु- दार्पिन सूनु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्तुटाय्तेरिगनुन्नतियं पोगलल् समर्थरार् ॥ ८

१८ एनिसिल्दी ख्याति विख्यातिगे सलुतिरे मन्तं बसन्तं तदीया- वनिगेवुदानि पेर्चुत्तिरे पुलिगेरेमूलूरुमं स्वामिसंपत्तिन पेंपं ताल्दि कैकोण्डनुमवि—

१९ त्तमांदायेर्दि सत्यर्दि कर्णनुमं मिक्कुत्सवंपेत्तिरल्लेरेगचमूपं चलीन्द्रराज्यस्स्थरूपं ॥ ९ कंद ॥ तन्नुजनपरिमित गुणास्पदनेसेदं भुवनतुंमुकं सुरप—

२० तिमंपदनतुलभुजवलं परसुदतीप्रकरप्रसूनबाणं डोणं ॥१०॥ कलितनदोल् कुरुकुलसंकुलमथनन तम्मननुपमानाकृतियोल् बलदेवन तम्मं भुजवल—

२१ दोल् यमसुतन तम्मनेरेगन तम्म ॥ ११ ॥ एरेगनडिमोदलो- लरिनृपरेरगिदोडदनरियेनेरगदिरलेंबोदागेरगिसुगुं गृध्रादि गलेरे- गल् पतिकार्यं—

२२ मरधुरीणं डोणं ॥ १२ वृत्त ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सज्जन- वृत्तियोलेंगु शीलदोल् काणले बारदेदोडे पेरर् समनप्परे मार्त्य- लोकदोल् डोणनो

२३ लंगनाकुसुमबाणनोलिष्टविशिष्टसकुलत्राणनोल् अब्जसंभव- समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमाप्तस्वामीदेय्वं पशुपति जितविद्विट्कदंबं नोलंबं

२४ पोरेदाल्दं तद्दे शुंभत्तरगुणगणदिं मिक्क तिक्कं विभास्वच्चरिता- लंकारे कल्बविके जननि तद्रीयाग्रजं दण्डनाथोत्कररत्नं रूढियें- त्तिल्देरकपनेने दोण जसक्किकेंदा-

२५ ण ॥१४ (हूं) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उब्बटेयायतु धर्म-
रत्नाकरनेविंतं पलवु कालदिंनीक्षिसलादुदितु कोल्पोकुमे धर्म-
मेन्दोसेदु तन्नन कौतुकमागे मे-

२६ दिनीलोकमशेषमोंदे कोरलोल् पोगल्दल् पडिच्चदमप्पिनं ॥१५
कमनीयक्रमविक्रमाब्दगतसिषट्क दुर्मतिप्राब्द पुष्यमशुक्ल
मृगुषष्टियोप्पळवरोळ् कूडलु

२७ व्यतीपातमेंब महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तियुं मानवो-
त्तमनन्दुज्वलकीर्ति दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदि ॥१६ कंद॥ परम-
जिनसमयरत्ना-

२८ करहिमकरमूलसघसंभवशोभाकरसेनगणनभ स्थल- सरसिजबान्ध-
वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवद्यर
नरेंद्रसेन-

२९ त्रैविद्यर पादप्रक्षालनपुरसर विब्यपुरदोळी पुरिकरदोल् ॥१८
चांद्रं कातंत्रं जैनेंद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मसैंद्र' नरेंद्रसेनमु-

३० नींद्रगेकाक्षरं पेरंगिवु मोग्गे ॥१९ अवरग्रशिष्यं॥ जिनगेनेंबेनो
शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोळ् पाणिनि पाणिनीय-
दोळु चांद्र चांद्रदोळु तज्जिनेंद्र-

३१ ने जैनेंद्रदोळा कुमारने गर्द कातन्त्रदोल् पोल्परेन्तेने पोकर्
नयसेनपण्डितरोळन्यर् वार्धिवीतोर्वियोळ् ॥२० सरसतिय
मनोमुदद ताल्दिदनेकमवञ्जेगेय्दनानिरेनचलिकें चि-

३२ सवतियोल् पुदुवाल्दुदु कष्टमेन्दु निष्ठुरवचनंगळं नुडिदु
डिकरिय परिदेरि कीर्ति तां पुरुडिसि दूरिपल् वरतपोनिधिय
नयसेनसूरिय ॥२१ अवरग्रशिष्यर् ॥ नतमू-

३३ पेंद्रकिरीटताडितपदाभोजद्वयं नूतनप्रतिमामारवि नारहार-

इरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रभवाननाब्जमुकुरं हा बाप्पु सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेंद्र-

२४ सेनमुनिपं त्रैविद्यचक्रेश्वरं ॥२२ जितविद्विष्टप्रतापान्वितधिनधिक-शौर्यस्वदाटोपदिंदूर्जितमास्वजैनधर्मार्पितदृढमतियिं विप्रवंशां-वराहर्पतियेंबोंदुद्भवतेजस्तवधिनतु-

२५ लवलेश्वर्यादिं त्यागदोंदुन्नतियिंदं सत्यदिंदं धिनकरनतिशोभाकरं पुण्यपुंज ॥२३ धिनकरनोदयदोल् तममनितुं तूल्दोडुवन्ते मिथ्यात्वतमं धिनकरनुदयिसे निजकुल-

२६ वनदि तूल्दोडि किडुवुदें विस्मयमे ॥२४ आतन तनयर् जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृंगर् विनयान्वितरंने नेगल्दर-खिलक्ष्मातलदोल् राजिमय्यनुं दूडमनु ॥२५ वृत्त॥

२७ जिनपादांभोजभृंगं सुजनजनमनोरंजन विश्वधात्रीविनुतं दिव्य-न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिजं सत्पात्रदाना-धिकनेनुते मनोरागदिं कूर्तु विद्वज्जनमे-

२८ ल्लं वणिक्कु राजननमलल्लसत्तेजन निच्चनिच्च॥ २६ मनुमुनि-मार्गनेम जिनपूजेयोलर्तिगनेंदु दानियेंदनुपमतेजनेंदु शुचियेंदु दयापरनेंदु निच्चलुं मनमो(से)-

२९ दक्कर्रि विडदे वणिसुगुं सगमेय्दे कूडे राजनिनतेजनं पसुगे गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यदलवं पेल्वडे ॥ कड़ुपिन्द

३० घर्णाञ्चर वेमने चौरासीगनं बन्दियं पिडिदं साहसदिन्दमं मुगेयनिन्द्रोर्वांगनं कोपदि पिडिदुग्दा संरयिट्ट सोमननत्याश्चर्यदिं बन्दियं पिडि

३१ दं तानेने शोर्यदोन्दलवदे सामान्यमे दूडन॥ २८ निजपतियं

सेरेंविडिदोडे भुजबलदिं बन्दिविडिदु विडिसिदनेन्दी त्रिजग यण्णिसुगु सद्विजकुलन शौर्यं-

४२ शालिय दूडमन ॥ २९ इन्तेनिमिद दूडन वरकान्ते मनोभवन कान्तेग रूपिनोलस्यन्त मिगिलेने पोगलल्केन्तु नेरेयरियर् पुचिकब्बेय रूप ॥ ३० अन्तवरर्गे पुट्टिदल् सुरका-

४३ न्तोपमं चिचकद्लिकुलालके विलसम्मान्तनसमेते बुधजनचिन्तामणि हम्मिकब्बे ललनारत्न ॥ २१ आ नेगल्द हम्मिकब्बेगनूल-प्रियवल्लभ मनोभवरूप दानदेडे-

४४ गन्दिना कानीनन वोल् नेगल्दनरसिमय्य जगदोल् ॥ २२ अनुपमदानशीलगुणभूषणभूषितेयाद हम्मिकावनितेगमत्युदार-हरसय्यमहाविभुग विनी-

४५ तनोल्पिन कणि वैद्यशास्त्रकुशल सुजनाग्रणि वैद्यकल्पं तनय-नेनल्के नोन्तनेन कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ २३ जिनपद-पकजभ्रमरनिन्द्यनुद्यगुणाब्धियीश्वरं वि-

४६ नयविलासि राजि सुजन कलिदेवनगण्यपुण्यवर्धनकरनादिनाथ-नधिक शुचि शान्ति नेगर्तेवेत्त पार्श्वनुमिवरात्मजातरेने कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ २४

[यह लेख चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) त्रिभुवनमल्लके छठवें वर्षमें अर्थात् सन् १०८१ में लिखा गया था। उस समय बेल्वोल, पुलिगेरे, वनवासि, सान्तलिगे, तथा कण्डूर प्रदेशोंपर सम्राट्के पुत्र जयसिंह शासन कर रहे थे। इन्हें त्रैलोक्यमल्ल, वीरनोलम्ब, पल्लवपेर्मानडि ये उपाधियाँ दी हैं। इनके अधीन महासामन्त एरेमय्य पुलिगेरे प्रदेशका अधिकारी था। इसे एरेग या एरेंकप भी कहा है। इसका बन्धु दोण था जिसकी लेखमें बहुत प्रशंसा की है। इसने मूलसंघ-सेनगणके नरेन्द्रसेनके प्रशिष्य

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया। इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकब्बे तथा पुत्री हम्मिकब्बे, हम्मिकब्बेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एव कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, गजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एव पार्श्वका वर्णन है। सभवत. इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था।]

[ए० इ० १९ पृ० ५८]

१६६

अरसीबीडि (विजापुर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, क्रोधन सवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है। इस समय मुकवेगंडे मन्तर वर्मणने विक्रमपुर (वर्तमान अरसीबीडि) स्थित गोणद वेडगि जिनालयके ऋषि-अजिकाओंको आहारदान देनेके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया था। सिन्द वंशके सिन्दरसके पुत्र वर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुंकवेगंडे नियुक्त था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० २३९]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि (तंजोर, मद्रास)

तमिल, सन् १०८६

[यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है। त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंग चोलदेव, जिसने मदुरा जीतकर पाण्डय

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था। इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्क पेरुम्बल्लि तथा गगरुलसुदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख है।]

[इ० म० तंजोर १००३]

१६८

दोणि (धारवाड, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था। सम्राट् त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका यह लेख है। इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १६९]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि (मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

१ श्रीमदेरेयंगदेवर असवज्वर(सि)माडिसिद बसदि मंगल महा श्री

२ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-
जिनेन्द्रशासन-

३ मस्तु चिरं सकलभव्यचन्द्रजनाना ॥(१) भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्भवतां प्रति-

४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-
यसे ॥(२)

५ जयवर्म सुडदिन्दं इल्दु नियतं पट्टलिगेय राज्यलीलेयिनाल्-
दुन्नतियिं मनं-

६ गोलिसि विद्विष्टव्रजक्कंयदे भीतियनित्तायमनप्पुकंयूदु चलमं
कैकोण्डु लोकप्रमि-

७ द्धियुतं मांडलनावगन् जिले कडम्बाम्नायविख्यातिय ॥(३)
श्रीमत्कडम्बवंशललामा-

८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिप भीमपराक्रमनेनिसिदनां महियोल्
अरातिनृपजयोद-

९ यदिंद ॥(४) आतन मगनमलगुणोपेतनतिप्रबलजलदवनपवन-
नेनिप्पानतय-

१० शोविलासचिनूतवेगेडेयागि नेगल्द कलि हडुवनृप ॥(५) तत्त-
नेयनतुलबलनुद्वृत्तरिपु-

११ क्षितिपकुधरवज्रं वीरोदात्तनेनं नेगल्दनकुटिलचित्त पोचापिनृत-
पूतं नृप ॥(६)

१२ आतंगे पुट्टि दलबदरातिमहाभुजरनिरिदु गेल्दर्मिनोलुर्वीतलमे
पोगले तोरिदनान-

१३ तमितकीर्ति नोम्मलकण्णं चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिगं
अनवद्यलतांगि सुग्गियब्बरसिग-

१४ सुर्विनदोम्मगे पुट्टे पुट्टिद तनेयननिप्रकटविशदयशनेरेयग अक्कर
नेगल्द नृ-

१५ पल्ननाल्वरनेवंट्टे भीतियिं बन्दु पोगले तन्ननवर पट्टियोडेयनं
पेरगिक्कि काद्दुनिन्दाल्वरनं वगेयद्-

१६ आन्तरिसेनेयनोडिमि गेल्दर्मिनेसकदिं सिन्धुजंगं मिगिलुदग्र-
बलावलेपनं भुजादण्डनां नन्निमार्तण्डदेव ॥(८)

१७ मलेदिटिरनान्त चोलिकदलमंत्तदोद्दान्तुमदिरदेरेयंगन दोर्वल-
दलवनेबोगलवुदो जक्कलदेवननेयदे

१८ काडुकलिपिद चलम ॥(९) अन्तु नेगळ्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य- दृयेनिप्प येचाब्बिकेग कन्तुवेनिप्प

१९ न्विण्णं कान्त पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ॥(१०) पुट्टलोड निम्नये पेसरिट्टपरी जगद मनुजरेन्दोडे पेसरों-

२० ढिट्टलमाद्दे कोल्लु पट्टलिगेय चिण्णनेम्ब मयरसर्दिद ॥(११) आतनो बुद्दिद विख्यातितगितकीर्-

२१ तिं नेगळ्द गण्डतरण्ड भूतलकं कल्पवृक्षसमोपेतनेनिप्प दानि येरेगमहीश ॥ (१२)

२१ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं बनवासिपुर- वराधीश्वरं कादम्ब-

२३ चक्रेश्वर लुलारमहेश्वर लुमयवकगण्ड नळिमार्तंड तनगिल्कदीव कर्णसहादे-

२४ व मानिनीमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोर्त्तंस सरस्वतीक-

२५ र्णावतसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुसता-

२६ घार्थं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं चिजातिराजता- रागणतरुणादि-

२७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा- निनीमदहरिषपु-

२८ कक लाटवधूटीमालळीलातिलकं विरुदत्रिनेत्रं हयशालिहोत्रं तुगितु-

२९ त्तिहुव विळरपेण्डिरगण्ड गण्डतरण्ड अरिविरुदरवायोले सुरि- गेर्य किरिपु

३० व दोड्डकवडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे- यगदे-

३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडल्गाल नोरेतं तिंगळ बेल्- पिंगमोदवलडकिल्वेल्पि

३२ संगलिसि तीविदत्तेरेयंगन जसमखिलभुवनांतरदोळु । नटनिट-
लेक्षणा-
३३ ग्नि नृगणंगणं उज्ज्वलकीर्तिपाण्डुरमू कुरुळु नडेयागे जगक्के
३४ देवनाडरिविल्डत्रिनेत्रनेमगी ' कोण्डकुन्दान्वयो-
३५ त्पन्ने विख्याते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यसै' यमनियम-
३६ स्वाध्यायपराणेयरप्प माचवेगन्तिय तावरेयकेरेय केळग-
३७ ण आहणमण्णं धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने
धातुसवत्सरद कार्तिक न-
३८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मंगलमहाश्री स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
वसुन्धरां षष्ठिवंर्ष-
३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है। यह वसदि एरेयंगदेवकी रानी असवब्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी। लेखमें एरेयगका वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र हडुव—तत्पुत्र बूत—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयंग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २। इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र सै(द्धान्तदेव)के उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी। लेखकी तिथि कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी (शुक्ल ८), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु संवत्सर इस प्रकार दी है।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वी सदीकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—

वस(दिगे) वासवुरदे विद् ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस वसदिके लिए वासबुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण (मुद्राएँ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये है।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १४५–१५२]

१७१

हुनगुन्द (बिजापुर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) का उल्लेख है। तिथि शक ९ दी है। मूलसंघ–देशीय गण–पुस्तक गच्छ–कुन्दकुन्दान्वयके (इन्द्र)णदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १४१]

१७२

तोलल्लु (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

१ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर '' त्रिभुवनमल्ल तक्का-
२ कमाडि विट्टन्दु ३ नडसुविरि
४–७ (ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं)
८ स्वस्तिश्रीमत् तोलल बसदिगेनाडु ९ '' '
१० हिरिय मुद गनुण्ड ' गनुण्ड बिलग
११ कु'ड बूलुवनड ''बुण्ड बूएल्वर् ओक्कल
१२ ''उत्तराण संक्रान्तियन्दु नविलू-
१३ रं नेमिचन्द्रपण्डितरों धारापूर्वकं माडि कोट्टरु आ-
१४ नविल्लरोलगे आवनागि-वदुकुववनु ''हण
१५ वेन्दु हिडिसिदव''''इन्नोन्दु
१६ सलेयं नरकदहिलिकिवक गोयतडियकि कविले-

१७ यं ब्राह्मणर नोय्सिद फलमन् एय्दुवरु
१८ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां प-
१९ ष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि. ॥

[इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान हिरियमुद्दगौण्ड, विलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियो द्वारा दिया गया था। लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ)के किसी माण्डलिकका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४]

१७३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल (प्रथम)की ऐतिहासिक प्रशस्ति है। राजेन्द्रचोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है। उडैयार् मल्लिषेणका उल्लेख है जो स्पष्टत. कोई जैन आचार्य थे। लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५]

१७४

ऊन (मध्यप्रदेश)

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष है। इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है। अत यह मन्दिर ११वी सदीका बना है यह स्पष्ट होता है।]

[रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७]

१७५

सागरकट्टे (मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्द्राविळस	२ घद् आरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगळ शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होय्सळ-	१० काराळियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ र्मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदर्

[इस लेखमें द्राविल संघ—अरुगल अन्वय—नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है। वर्धमानदेवके गुरुबन्धु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी। वर्धमानदेवको होयसल राज्यमें प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था। लेखकी लिपि ११वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८]

१७६

वेणगि (जि० बेलगाव, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

[इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है। लेखके समय (रट्ट वंशके) कार्तवीर्य (द्वितीय)का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था। इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेनर्नासिंग कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमे हनसोगेके तीर्थ-बसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है। प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस बसदिका जीर्णोद्धार किया था। इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा बसदिके निर्माणका उल्लेख है। इन लेखोंका समय ११वी सदी प्रतीत होता है। ये आचार्य मूलसघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५०]

१७९

चिकमगलूर (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमत्तु बूचब्बे-

२ गन्तियर सिप्य नेचटिम-

३ ताय निसिधिगेय नि-

४ लि ' मज वरेद ॥

[यह निषिधि लेख बूचब्बेके समाधिमरणका स्मारक है जो उनके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था। इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२]

१८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलधारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है। एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७]

१८१

मद्‌विलगम् (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है। किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७]

१८२

बेलूर (हासन, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रुतं जिनेन्द्रगुणि-
२ द दर्प····सले महे-
३ ··
४ नेयदिव नँ ·
५ पूर्वाक्रमन् एरवं माणद ··य
६ महीतलकति सुदद्दि ···
७ त्रिलोक वुध बोध ··माव्य····

८ ल्नं द्विविजधिनवमं मन्ड मामावि वर्म्म ॥ पतिहितवृत्तियो-
९ ल्विन् अप्रतिमन् एनल् द्विविज पद्मं महीपतियोडने
१० कूडि पोक्कं चतुरं मामावि वर्म्मन 'आ नेगल्द भूमि-
११ य मुन्नाल्दगं मले काशियं माध्य डेनेंताल्दनोडने सगम-
१२ नू आल्द ... ध्यन्दु वर्म्म

[इस लेखमें मामावि वर्म्म नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है। अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवत देहत्याग किया था। यह प्रथा होयसल राजाओंके समय रूढ थी। लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९४३ पृ० ५९]

१८३

हदण (मैसूर)

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा बल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९१८ पृ० ४५]

१८४

चिकमगलूर (मैसूर)

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

१ स्वस्ति स्कवर्ष १०२२ नेय
२ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
३ सोमवारदंदु द-विन ..

४ सलंगेळ्डु दिवक्के सुन्दरव(र)सद

५ र्मि मालेयव्वगन्तियप्परो ''वि(ने)

६ यमं माडि निसिदिगेय माडि

७ अवर गुड्ड जगमणचारि ब-

८ रेंद

[यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था। एक व्यक्तिके (जिसका नाम लुप्त हुआ है) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयव्वेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है। उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१]

१८५

टोंक (राजस्थान)

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है। तिथि वै (शाख) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७७ पृ० ६९]

१८६

होसूर (जि० बेलगाँव, मैसूर)

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। (रट्ट वंशके) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी वेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१]

१८७

मुडिगोण्डम् (मैसूर)

शक १०३ (१)=सन् ११०९, कन्नड

[इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हृदिनाडुका एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है। यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी। तिथि शक १०३ (१)]

[रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४]

१८८

श्रवणनहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन स्वस्ति
३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तल-
४ काडुगोण्ड भुजबलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्सल-
५ लदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
६ 'तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
७ द देवर अगभोगक्कं रिपियराहारदानक्कं त-
८ म्म बप्प पृथ्वीकोंगाल्व देवर वग वलिवलि चि-
९ ट्ट सन्दगेरेय श्रतियोलगे कावनहल्लिय तम्म
१० तम्म दुदमल्लदेवनु तावुं इस्दु श्रीमूलसंघ
११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ-
१२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यरु प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
१३ र कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि स(र्वबाधा-)
१४ परिहारं माडि बिट्ट दत्ति सं(गल महा-

१५ श्री ॥ दुह्न् आवन् ओर्व प्रतिपालिसिद

१६ (क) विलेय कोट्टु कोळगम

१७ गगेय ˙

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा वीरकोगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघ-देसिगगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३]

१८६

अंकनाथपुर (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुद्दमल्ल-द्वारा हेण्णेगडग नगरसे अम्ववल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान प्रभाचन्द्रदेवको दिया गया था। लिपि ११वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९०

कण्णूर (मैसूर)

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ (सन् १११२) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है। मूलसंघ-देशिगण-पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिबेट्टदेवको यह दान दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२]

१९१

जक्कलि (विजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १२१६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण संक्रान्तिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७]

१९२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

१ स्वस्ति । जयत्याविष्कृत विष्णोर्वाराह क्षोभितार्णवं (।) दक्षि-
णोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रा-

२ न्तभुवनं वपु ॥ (१) जयति जगति रूढो राजलक्ष्मीनिवासः
प्रविजितरिपु–

३ वर्गस्त्रीकृतोत्कृष्टदुर्ग (·) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो
जनितसुजन-

४ राग श्रीशिलाहारवंशः (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवंशे श्री-
कीर्तिकान्ताः कमनी-

५ यरूपा· (।) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्राः सपालयामासुरिमां
धरि-

६ त्री (॥३) तद्वंशे नृपतिर्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो नाम·
श्रीवनितापतिस्सु-

७ चरितो गगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनय प्रतापनिलय ( ) श्री-
नायिमां-

८ को नृप· कर्णाटीकुचकुंकुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४) तस्यात्म-
९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मी प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्ज (।)
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तस्त्यागार्णवो बुधनुतो नयनामि-
११ राम (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जात प्रवीरो गज-यूथनाथ (।) तस्या-
१२ त्मजौ गोंकलगूवलाख्यौ जातावुभौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-गोंकलस्य तनुजो रिपुदन्ति-
१३ सिंह श्रीमारसिंहनृपतिर्मरुवक्कसर्प· (।) प्रादुर्बभूव समरां-गणसूत्र-
१४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजात (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-देकवीरो वी-
१५ रागनाबाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाक-
१६ वरो नरेन्द्र (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाक-तिलको भुवि भोज-
१७ देव· (।) प्रोत्तुगवीरवनिताश्रयबाहुदण्डश्चण्डारि-मण्डकशिरोगिरि-वज्रदंड· (॥९)

दूसरा पत्र पहला भाग

१८ श्रीमत्कदवांवरतिग्मरश्मेश्शिरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (।) पूजां प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
१९ मादित्यनृपेंद्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतर· प्रसिद्धः कोपात्तु कोंगजनृपोपि-
२० पपात यस्य (।) सूर्यान्वयांवररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं सुरपतेर्भुवि य-
२१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलश्शलभायितः (।) पलायिता न गण्यन्ते सोय

२२ भोजनृपालकः (॥१२) वेणुग्रामदवानलो विजयते वैरीभकण्ठीरवो गोविंदप्रलयान्त-
२३ क शिखरिणो वज्र कुरंजस्य च (।) भोज स्वीकृतकोंकणो भुजबलात् तद्भिल्लमोद्बन्ध-
२४ कृत सोय कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहर· (॥१३) तस्यानुजातो गुणराशि-
२५ रासीत् बल्लालदेवो जितवैरिभूप· (।) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो गंभीर-
२६ मूर्तिर्भुवि शौर्यशाली (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-प्रतापो दिविजयतिवि-
२७ भूतिस्सर्वलक्ष्मीनिवास (।) कृतरिपुमदभगो राजविद्याप्रसगो भुवनवि-
२८ नुतमूर्तिर्गण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-दित्यवल्लभ (।) निश्शं-
२९ कमल्ल इत्याख्यां गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मान-वास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-
३० य (।) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्-खड्गाद्भुततीव्रघा-
३१ तचकितस्तत्कुण्डिदेशाधिपो दण्डब्रह्मनृपो जगाम सदनं ससेव्य-मान सुरै-
३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मी भुजोपार्जिता सोय गण्डर-देवम-
३३ ण्डलपतिस्संशोभते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै रत्नाक-
३४ रो भगभयाज्जडात्मा (।) आपूर्य सम्यक् सततं वहित्रं सूक्ष्माणि

३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुभिरुक्तैरल्पगर्मैवं-
चोभिर्भुवन-
दूसरा पत्र • दूसरा भाग
३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामघोर. (।) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं
यदि स कुपितचित्तः
३७ कारयत्यात्मकोशं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः
तगरपुरवरा-
३८ धीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेंद्र । जीमूतवाहनान्वयप्रसूत सुव-
र्णगरुड-
३९ ध्वजः । मयक्कशसर्प । अय्यनसिंह. (।) रिपुमण्डलिकभैरवः
(।) विद्विष्टगजकण्ठी-
४० रव । गणिकामनोजः । हयवत्सराज । शौचगांगेय । सत्यराधेयः ।
४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवार-
४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंघन· श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-
समस्तराजाव-
४३ लीविराजित· श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेव श्रीम-
द्वलय-
४४ वाडशिबिरे सुखसंकथाविनोदेन राज्य कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदु-
त्तरसह-
४५ स्रेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे
शुक्लपक्षे ।
४६ अष्टम्यां बुधवारे मिरिंजदेशे । मिरिंजेगम्पणमध्ये । अंकुलगे चोप्पे-
४७ यवाड इति ग्रामद्वय आढगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-
४८ मारुवण त्यक्त्वा तत्रत्यनार्गावुण्डा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां
शरी-

४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेत्र निगुंब-
तीसरा पत्र
५१ वशे जातः पुमान् होरिमनामधेय॰ (।) कीर्तिप्रिय॰ पुण्यधनः प्रसिद्ध॰ श्री-
५२ जैनसंघांबुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-स्यानुजोभू-
५३ दरिकेसरीति (।) तद्वीरणस्यापि तनूभवोयं बभूव कुंदातिरिति प्रसिद्ध॰ (॥२२)
५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितवन्धुवर्ग॰ श्रीनायिमो जिनमतांबुधिच-
५५ न्द्र एषः (।) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रख्यातकीर्ति-रिह धर्मप-
५६ र प्रसिद्ध॰ (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलंबनामा तनयो बभूव (।)
५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिंह॰ (॥२४) तस्मै
५८ समस्तगुणालंकृताय निगुंबकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
५९ स्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-लब्धवर-
६० प्रसादाय नोलंबसामन्ताय सर्वनमस्यं सर्ववाधापरिहारं पुत्र-
६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[यह ताम्रपत्र चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ)के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था। निगुंब वंशके सामन्त नोलंबको मिरिंज

प्रदेशके मकुलगे तथा बोप्पेयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है। नोलवकी वंशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुदाति — उसका बन्धु नायिम-नोलव। नोलवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं।]

[ए० इ० २७ पृ० १७६]

१९३

होले नरसिपुर (मैसूर)

१२वीं सदी : पूर्वार्ध (सन् १११५), कन्नड

[इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कोंगाल्वदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है। (समय लगभग सन् १११५।)]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९४

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १११५, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्‌के ४५वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है।

इसमे तिरुप्परुत्तिकुण्डुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटबसदिके छतमे लगा है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७]

१९६

पुदुप्पट्टु (चिंगलपेट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२]

१९७

अनमकोंडा स्तम्भ लेख (वरंगलके समीप, आन्ध्र)

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड

पूर्वकी ओर

१ श्रीमज्जिनेंद्रपदपद्मम-
२ शेषमध्यानध्यात् त्रिलोकनृ-
३ पतींद्रमुनींद्रवंद्यं नि -
४ शेषदोषपरिखंडनचडका-
५ ण्डं रत्नत्रयप्रभवसुद्भव-
६ गुणैकतान॥(१)स्वस्ति समस्त-
७ भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ-
८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-
९ परमभट्टारक सत्याश्रयकु-
१० लतिलक चालुक्याभरण श्रीम-
११ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयरा-
१२ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध-
१३ मानमाचंद्राकंतारं सलुत्त-
१४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि
१५ गतपंचमहाशब्द महामं(ड)
१६ लेश्वरनन्मकुडापुरवरेश्वरं
१७ परममाहेश्वरं पतिहितच-
१८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम-

१९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(मू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-

२१ ज्यभरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोन्नत प्र-

२३ सुमन्त्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दि)

२५ मान्तनद महियेयिं चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ळ्पिन तेळ्पिं सत्क-

२७ ळदिनो)दविदाश्चर्यं(सौं)- लाकौश-

उत्तरको ओर

२८ दर्यदिंद(र्थि)निकायप्रार्थितार्थ-

२९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- नादं धरित्री

३० (वि)नुत श्रीकाकतीवेतरसन मचि-

३१ व बैज दण्डाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-

३२ दिं नेगळद काकतियेतनरेन्द्रन अग

३३ पोगळे चलुक्यचक्रिचरण सले का-

३४ णिसि तत्प्रसाददिं बगेगोळे मडिवमा-

३५ थिरमनालिसि(दु)दूधयशो- ३६ धिनाथन पोगळदरारो मंड(लि)

३७ ककाकतियेतन मन्त्रि बैजन ॥-(३)आ- ३८ तगं विकसितकजातानने या-

३९ कमव्वेगं जनियिसिद ख्यातं ४० धरेयोळु पेगंडे बेत म-

४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मा(धा)तरामोपम-

४३ नेनिसिद श्रीकाकतीभोलमू- ४४ पख्यातामात्य विवेकाग्रणि

४५ सकलकलाकोविद सच्चरित्र- ४६ प्रीतं माहित्यविद्यानिधि बु-

४७ धचित्तधोर्वीरुह सत्यधर्मो- ४८ पेत स्वग्रामदोळ् माडिदनतिसु

४९ दर्दिं हत्तु देवालयगळु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-

५१ शासनदेवि भारतोसति शगिर्विवव(क्त्र)-

५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुम्भसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म या-)
५४ कमांबिकासुततडमात्यबेनह्-
५५ दयेश्वरि निश्चललक्ष्मि माविसलु ॥(६)

पश्चिमकी ओर

५६ पडर्डिडालुलिताल्कं बेरेग (मं) गो-
५७ पांगमं पचरत्नडिनांगोचितमागे ५८ निर्मिसि सुरस्त्रीभाग्यसौभाग्य-
५९ सम्म (ड) सौंदर्यमनाध्दु तीवि ६० पडेदं कंजातसंजातनी सु(दती)-
६१ रत्नमनेंदु नैलमननारार् बण्णिस-६२ लोकदोल् ॥(७) नुतरूपवति कला (व)-
६३ ति रतिरति श्रीमतिबटान्तकी- ६४ णीसतियेंडमात्यबेतन सतियं सति या-
६५ क्षितियेल्लमेय्दे नुतियिसुनिर्कुं- ६६ मुडर्डिडेने नेगल्द रमास्पदे मै- ॥(८)
६७ लम मक्तियिंदे माडिम्नि तन- ६८ यकरमागिरलु बेट्टद (मं) गण गम्भुन-
६९ कडालयवमदिय्यनेमेयलु ॥(९)७० अडके निस्यपूजेगं धूपदीप (नि) वेद्य-
७१ क्कं पूजारिगाहा (र) वस्त्राडि- ७२ श्रीमत्रिभुवमल्लमंडलिकभू- (पा)-
७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरमन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध मानमा-
७५ गमम्मकुन्देयलाचंद्रार्कतारं स- ७६ लुत्तमिरं श्रीमच्चालुक्य- विक्रमवर्ष-

७७ द नाल्वत्तेरडेनेय हेमलम्बि(सं)- ७८ वत्सर पौष्यबहुल १५ सोमवा-
७९ रटदिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्त धारापूर्वकमागि तन्न वल्लभनप्प
८१ चेतन-पेर्गडे तन्न पेसरिंद माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केलगनेरड्ड
८३ हासरेगल्लुगल नड्डुवण गर्दे(य) ८४ मत्तरेरड्डं मत्तमा केरेय प-
८५ ड्डुवण नेल टोणेय तेंकलेरंय ८६ मत्तर्नालुकुं करंबं मत्तरा-
८७ म कोट्टु निरिसिदलीशासनगंभ ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तमी धर्मक्के तेलुटियागे ॥
८९ अ(ष्टौ) वन्तिसहस्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्त पारसं-
९१ ख्यातमित्येते माधववर्म- ९२ वशोद्भवरप्प श्रीमन्महा-
९३ मण्डलेश्वरलुम्मना (हि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-
९५ योलगल्ल कृचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय
९७ मोदल गर्देय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करयं मत्त-
९९ र हत्तुमित्त ॥ निरुतसि- १०० टनलिदवं सासिरकवि (ले)-
१०१ यनलि (द) पापमं (पो) र्दु- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-
१०३ सिरयज्ञद फलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-
१०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरा । षष्टिवर्षसहस्रा-
१०७ णि विष्ठाया जायते क्रमिः ॥ (११) १०८ बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्स-
१०९ गरादिभि । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१२)
१११ अदिक्र वसदिय कसं गलेव वो- ११२ यपडगे पाग वोंड्डु ॥

[यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ (सन् १११७) में पौष अमावस्याको उत्तरायण सक्रान्तिके समय स्थापित किया था। उस समय

चालुक्यचक्रवर्ति त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (षष्ठ) के माण्डलिक भाकनीय बेबरस एक गोमुण्ड (गौड) मल्लि प्रदेशपर शासन कर रहा था। बेबरस महामण्डलेश्वर था। बेबरसकी पत्नी चामलदेवी थी तथा एक बेट चैत्य था। बेट चैत्य प्रोन्नत नहीं था। इसकी पत्नी चैत्रल थी। उसने ग्रामकूट महादेवीका कल्याण...देवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे इस तिथिको कुछ जमीन दान दी। इसी मन्दिरको उत्तराधिकारी ...ने भी महामण्डलेश्वर इसके उत्तर हुआ था—भी कुछ जमीन दान दी। कदम्बरायदेवी मण्डलेश पत्नीका नाम है। इस समय यह मन्दिर ग्रामके अधिकारमें है तथा वे उसे ग्रामदेवी कहकर पूजा करते हैं।]

[ए० इं० ५, पृ० २५६]

१९८

कोविलंगुलम् (रामनाड, मद्रास)

सन् ११५८, तमिल

[एक जैन मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंगचोलदेवके ४८वें वर्षका है। कुम्बनूरके ... वैश्यों द्वारा ...के लिए एक ... तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमें निर्देश है। कुम्बनूर गाँव ... प्रदेशके ... विभागमें था। इसी लेखमें त्रिभुवनविजय ... तथा एक ... ताँबेकी मूर्तियोंकी स्थापनाका भी उल्लेख है। इस मन्दिरके लिए जमीन और ...के लिए भी दान दिया गया था। इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है।]

[इ० म० रामनाड ९३]

१९९

पेह्लोले (विजापुर, मैसूर)

चालुक्य विक्रमवर्ष ४८ = सन् ११२०, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य षष्ठके समय वैशाख शु० ३,

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४८ के दिन लिखा गया था। इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर बसदियाँ, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [गा० ह० ह० ११ पृ० २११]

२००
कुमारचीलु (मैसूर)
शक १०४४=सन् ११२२,कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छन (।) जीयात्
२ त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥) स्वस्ति समधिग (त) पंच-
३ महाशब्द महामण्डलेश्वर कुलात्तु गचोलभुजब-
४ लवीरगंगहोय्सलदेवरु गंगवाडि तोंमत्तरु-
५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाडलिद्दु सुखमकताथि-
६ नांददिं राज्य गेय्युत्तमिरे शकवर्ष १०४४ ने-
७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-
८ दन्दु महाप्रधान दण्डनायक गंगपय्य-
९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंग हादरिवागिल-
१० बीडिनलु परोक्षविनयक्कं माडिसिद बसदिगे
११ बिट्ट दत्ति सैमेनाड चन्दवनहल्लियु बीडिन
१२ मुढण कम्माढिय केरेय गद्दे ३० सलगेयु
१३ आ केरेयिं बडगलु एरिय बेद्दले कोलि २
१४ आ केरेय इडुवण कट्ट केलगे तोंट
१५ ५०० गुलियु बीडिन २ गाणद एण्णेयु

१६ सोडरिगे सलुवुदु ॥ बसदिगे बिट्टीधर्मम-
१७ नोसदु कर मल्लिसुतिर्द्दर्गंक्कु पुण्य असव-
१८ मन्ति केडिसिदवर्गलु पसुवु ब्राह्मण-
१९ न कोंद वधे ममनिसुगु ॥ स्वदत्तां पर-
२० दत्ता वा यो हरेत वसुंधरा षष्टिर्व्वर्षस-
२१ हस्राणि विष्टाया जायते क्रिमि ( )

[यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मार्गशिर शु० ५, सोमवार, शक १०४४, प्लव संवत्सरके दिन लिखा गया था। दण्डनायक गंगपय्य-द्वारा मोवणदण्डनायककी स्मृतिमें हादरवागिलु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है।]

[ए० रि० मैं० १९३८ पृ० १६६]

२०१

बेलूर (मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ पुणिसचमूपनेम्बेसेव शासनवाचकचक्रवर्त्तिगिन्तेनिसलोड्ड पोगर्त्ते तनगागिरे पुट्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-
२ र्त्तिगे पुत्रनोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोर्ज्जितचामचमूपसमव (।) नमः सिद्धेभ्यः (॥)

[यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था। वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया। इसमें सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है। यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है। पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था।]

[ए० रि० मैं० १९३४ पृ० ८३]

२०२

अरताल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है। उस समय बनवासि तथा पानुगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था। मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य सगर बम्मिसेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमें एक मन्दिर बनवाया। बम्मिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था। इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १]

२०३

हिरेसिंगनगुत्ति (विजापुर, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका है। देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है। किसी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २६२]

२०४

तोगरकुण्ट (अनन्तपुर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है। इसमें तोगरकुण्टेके चन्द्रप्रभदेवबसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्य-द्वारा कुमारतैलपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२५–२६ क्र० ३४४ पृ० ६६]

२०५

उगरगोल (बेलगांव, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७]

२०६

सिरसंगि (जि० बेलगांव, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृंगीके छह गावुण्डोंका इसमें उल्लेख है। वाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी बसदिको ज़मीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि (मुक्त) सिद्धान्तदेव, अत्तिमब्बे, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६]

२०७

हूलि (जि० बेलगांव, मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ (श्रीमत्परमगंभी)रस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्य-

नाथस्य शासनं जिनशासन ॥(१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोभूत् सुधर्मनामा प्रविभूत ॰
२ यापनीय सं(घे) पुनस्तत्र च चारुमार्गं ॥(२) कण्डूरविख्यातगणे बभूवु पुरा मुनींद्रा बहवो महा ॰
३ देकसिंहो मुनीश्वरो बाहुबली बभूव ॥(३) जयतु शुभचन्द्रदेव॰ कण्डूरगणपुंडरीकवनमार्तंडश्चंडत्रिदंड ॰
४ पारगो बुधविनुत ॥(४) नुतयापनीयसघप्रतीतकण्डूरगणाब्धि-चन्द्रमरेंदी क्षितिबकय पोगल्वेंनमुनतिवेत्तर् मौनि (ऍ-
५ वन्द्यमुनीद्र) रु ॥(५) श्रीमाघनन्दिव्रतिनाथमोडें कामारिमोभो (र) गर्वनतेय । नम्रावनीपालकयिन्द्कीर्तिं सि(द्धां)त त(त्वा) र्णवपूर्णच(न्द्र) ॥(६)
६ (स्वस्ति । समस्तभुव) नाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधि-राज परमेश्वरं परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-
७ (देवर विजय) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्राकंतार-बर सलुत्तमिरं । क्षितिगेल्ल तन्न तेज तालगि बेळगे तन्नाज्ञे चोका (वनी)-
८ लु नलिसुत्तिरं मले तन्नापुं लोकक्के कल्पक्षितिजात फूंडे पण्नतिरं कलियुगदोलु पुट्टिदु राघवादिक्षितिपालानीकरोलु प ।
९ (विक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलधिपरीतभूतलव भूटगे कुतलदद्दि मनगोंकिसुद्धदत्तु नोपडम कुतलदेशमदक्के चिन्नपूगल तेरटत रजि॰
१० द मौक्तिकावलिय पोल्द हारद चोलिपुंतु नोपंडे पूलि लोलेयिं ॥(८) मत्त । पोंगलसंगकिंदेसेव देवगृहगलिनोप्पुवेत्त वारांग-नेयकंल्

११ 'पोद) लूद् वेढंगले मूर्तिगोंड्डु देनिपंदद्दलोप्पुव विप्ररिदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेदिर्दुदु नोपंडे पूलि लीलेयिं ॥(९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमेये (न्तेंदोडे)।

१२ पोंठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदि तम सहस्रमप्प पेसरं रूपागिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयम तीविट्टु पुलीमहापुर

१३ (एसेदर्) साम्निवंरिंतुर्वियोलु ॥(१०) उपमातीतमेनिप्प पेंपु गुणमोदार्यं चल साहसं जपहोम नियम महोन्नतिकसत्य शौचम।

१४ ·· शास्त्रदोदवि श्रीकेशवादित्यदेवपादांभोजवरप्रसादरंसेदर् सासिवंरितुवियोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिवद्वोट्टि

१५ ककेंडु निराकरिपुडु सासिवंरुचितदे चलितवचन ॥(१२) स्वस्त्यनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेंद्रचरणारविंदम—

१६ ·· (चल) दुत्तरग। वीरविद्विष्टसंहरणप्रतापकार्तिकेय। गगगांगेय। चपलवैरिवाहिनीसंहननप्रतापलकेश्वरं। कोलालपु(रवराधीश्वरं।)

१७ ··· (एतें) दोडे। मंडलिकजगदल मार्कोडर जवनाथिजनके कल्पमहीज गंडर तीर्थ सितगर गड मार्कोल भैरवं पिट्टनृपं ॥(१३) मत्त

१८ · पुट्टिदरोप्पे पेर्मनृप विज्जमहीपति कीर्तिभूपनु जेट्टिग गोमंनुं नेगदं (ल्द) मैललदेवियुमते रूपिनिधिट्टलवागि ·

१९ ॥(१४) लिकदंकदरिभूभुजरं तवे कोड्डु गूर्जराष्ट्र जयसिंहदेव धरणीश्वरनं निजराज्यलक्ष्मियोलु पट्टु

२० पोगल्तुतिर्पुडु विज्जलभूमिपालन ॥(१५) मत्तं। रेवकनिमंडि कन्हरदेवंगोंतक्कनंते मूनुते सिरिया (देवि)

२१ '॥(१६) हु बल्तायूवनेयॆंदु बिज्जलनृपं चटगीमतीर्थंर्कर्ळं मुददि माडिसि कल्वेमं ममसि

२२ दिं पिट्ट—वेल्वळदोलिंतोप्पिप्प पेर्गुम्मिय ॥(१७) हरलार-याडकसि

२३ चालुक्यचक्रवर्ति पेर्माडिरायन् कय्योळ् '

२४ माडिसिद माणिक्यतीर्थं

[यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यकालका है। इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परपरामे यापनीय सघ—कण्डूर् गणके बाहुबली, शुभचद्र, मौनिदेव तथा माघनदि इन आचार्योंका उल्लेख है। इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नही है। अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गगवशमें उत्पन्न हुआ था। इसके चार पुत्र थे—पेर्म, बिज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैललदेवी। बिज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नही क्योंकि यहाँके कई अक्षर घिस गये है। इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नही है। अनन्तर कहा है कि बिज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया। लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है। इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नही है।]

[ए० इ० १८ पृ० २०१]

२०८

बेलवत्ति (धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें सवणूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है। इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने बेलवत्तिके ३०० महाजनो-

को कई दान दिये थे। इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं। तिथि आषाढ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसक्रान्ति, शोभकृत् सवत्सर ऐसी दी हैं। उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६]

२०९

बैल होंगल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं - १२वी सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है। शक वर्षके अक अस्पष्ट हुए है। इसमें रट्टवंशीय महासामन्त अंक, शान्तियक्क तथा कूण्डि प्रदेशका उल्लेख है। अनन्तर यापनीयसघ- मैलाप अन्वय-कारेयगणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है। यह सम्भवत किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२]

२१०

गोलिहल्लि (जि० बेलगाँव)

सिद्धेश्वरमन्दिरके समीप शिलापर

१२वी सदी, कन्नड

[मैललदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है। अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमे बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है। मूलसघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया। वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है। लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ सवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५]

२११

वरांग (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख आलुप राजा कुलशेखरके समयका है। इसमें माघवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७]

२१२

दुड्ड (माण्ड्या, मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (।) जी-
२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)
३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगळ वोलु पलरं लोकोपकारपरिणतर् एकीकृ-
४ तसकलराजगुणरु सकलजनक्कि यादवकुलदोलु पुट्टि पाये
५ सलेयिं पुलिय पोय् सल येने पायुदुदरिं पोय्सणवेंसरवनित बाहुद-
६ रिंदं.....नयं प्रतापन ननां..युरात्रि जग-
७ नयनिमि पोरेद विनयादित्य समस्तभुवनस्तुत्य आतंगतिमहिम-
८ समारव्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-
नादन् एरेयंग-
९ नृपं ॥ व धर्मार्थकामसिद्धिवोल् अवनीवल्लभर् आतन तन-
१० यर् बल्लाळ विट्टिदेवन् उदयादित्य ॥ मूवर् तनयरोल तां माचिसं म

११ स्यलनागिर्दुं मलगुणत्रूमावदिन उचमनार्दं त्रिभुनविमवदमून-
त्रिग्गु वि-

१२ ष्णुवर्द्धनं । स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामंडले-

१३ श्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलांबरद्युमणि सं-

१४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोळुगण्डं गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास

१५ वासंतिकादेवीलब्धवरप्रसाद दानमल्लान्संपादितविभ्रमगामोत्र

१६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहितं तलकाडु कोंगु नंगलि गंगवाडि नो-

१७ ळंबवाडि बनवासे हानुंगल्लु गोंड भुजबलवीरगंग प्रताप

१८ होय्सळदेवर् पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळप्प ॥
श्रीम त्र-

१९ टुंकलकुलगों माल्केयब्बेयल् अंते पुट्टिदे नेम्कर् श्रीमत्गंगराजं-

२० युं उद्दामगुण सगणगडनवहदिपन ॥ कलिगलि सिंहमल्लं कव-

२१ मस्नलि दोम्लतलपुरवाधिं मिथ्यविक्रमाळे वलिगुसि वेग्गहि

२२ गेळविलमिल्लस्त्रि नामुदे सुमनोविनिमाने गुणाव्रतचांडागि को-

२३ निगोपनि स्थिरमन्दे दक्षिणचक्रदोळ पोल्वर् आर् अमलकान्त
नन्तुवं ॥

२४ वर्णेजनवांगं चरित्रार्थं चेतन्द नन्दे मागदर् ॥ नदम्मजिन-
देव्यमन्दि

२५ दृश्यिदेयम्डरदे दोम्न कलेवणर्न ॥ श्रीमूलसंघ कुण्डकुंदान्व-

२६ य काणूरगण तिंत्रिणिगच्छद सवणिनय मुनिमेघचंद्रसिद्धान्तदेवर
शिष्य

२७ मेघचन्द्रसिद्धान्तदेवरों श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक गंगरा-

२८ जेयुं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक नागविमयणगळुं दनिग-

२९ नकेरेय पंचवसदिगळोळगे बाहुबलिकूटम बाराह्व-

३० कं माडि कोट्टर् लग्गेयानेमसुदद दयलुनं

३१ मलेहल्लिय मुंडण क्रिकरंय अत्तिलय गोलगुत्त-
३२ गेयु कोट्टियहल्लिय मुडण क्रिकंरय आचेदलेय
३३ त्तिरियकरंय केल्लगण अडकेय नांटयु ॥ यिन्तु मर्यांय मुद्धत्रागि
देशियगणद वसदि २ कक्र काणूर्गणद व-
३४ सदि योन्दक्क अन्तु पत्र वसदिगे ममानवागे उल्लि हुट्टि-
३५ द माचिर्गाद्दनु कमवर्गाद्दनु ॥
३६ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधरा षष्टिवर्ष सह-
३७ स्राणि विष्टाया जायते क्रिमि

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरियाने तथा भरतिमय्य-द्वारा दडिगनकेरे स्थानकी पाँच वसतियोंमें बाहुबलिकूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है। यह दान काणूरगण-तिंत्रिणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया गया था।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६]

२१३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी—पूर्वार्ध (सन् ११३०), कन्नड

१ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गंगराजन मग बोप्पदेवरिगे रूवारि
२ द्रोहघरट्टाचारि कत्तेवसदिय माडिद ॥ मंगल महाश्री

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर वसदिके भग्नावशेषोंमें है। यह वसदि दण्डनायक गंगराजके पुत्र बोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकारने बनवायी ऐसा लेखमें कहा गया है। यह कत्तेवसदि अर्थात् निर्माता-द्वारा बनवायी पहली वसदि थी। अतः इसका समय लगभग सन् ११३० है क्योंकि बोप्प-द्वारा सन् ११३३ में हलेबिडमें निर्मित पार्श्वेश्वरवसदि विद्यमान है।]

(ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३]

२१४

सालूर (मैसूर)

सन् ११३०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्य-
२ (नाथस्य शासनं जिन) शासनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
३ · · (म)हाराजाधिराज परमेश्वर पर-
४ · (सत्या)श्रयकुलतिलक चालुक्याभरणं
५ श्रीम(द्भूलोकमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृ-
६ (द्धिप्रवर्धमान) माचंद्रार्कतार सलुत्तमिरे । समधिगतपञ्च-
७ (महाशब्द महामं)डलेश्वरं बनवासिपुरवराधीश्वर त्रिक्षयक्ष्मा-
८ (समव चतुराशीतिनग)राधिष्ठितल(लाटलोचन)चतुर्भुज
९ श्रीजयन्तीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसादं नामादि-
१० समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं मयू-
११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वर
१२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेसाथिरमुमं दुष्टनि-
१३ ग्रहविशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसंघको-
१४ (ण्ट) कुन्दान्वय काणूर्गणद मेष(पा)पाणगच्छद श्रीप्रभाच-
१५ न्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्य कुलचन्द्रपं(डित)देवर गुड्ड(म)-
१६ द्दरायिसेट्टि श्रीमद्नाडियग्रहार सालियूर सामिवं-
१७ र ब्रह्मजिनालयद बसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्पद
१८ ५ नेय साधारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद वृत्त

[यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था। उस समय कदम्बवंशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्माके शासनान्तर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था। उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय बसदिको भद्र-

रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था। मूलसंघ-काणूरगण-मेषपाषाणगच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५]

२१५
तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)
राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है। इसमें विलगारकी ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको बेची जानेका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७]

२१६
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
सन् ११३२, कन्नड

[इस लेखमें गोग्गियबसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है। उन्होंने तथा पेर्गडे मरिलय्यण्ण आदिने बसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे। हेमदेव-द्वारा बसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष (चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष) ७, बुधवार इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४]

२१७

बहुरीबंद (जि० जबलपुर, मध्यप्रदेश)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति ' 'वदि १, सोमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्भवमहासामंताधिपतिश्रीमद्गोल्हणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोल्लापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकायामुरुकृताम्नाये तर्कतार्किकचूडामणिश्रीमन्माधवनन्दिनानुगृहीतः साधुश्रीसर्वधरः तस्य पुत्रः महाभोजः धर्मदानाध्ययनरतः । तेनेदं कारितं रम्यं शान्तिनाथस्य मंदिरं ॥ स्वल्हाग्यसमतकसूत्रधारः श्रेष्ठिनामा वितानं च महाश्वेतं निर्मितमतिसुंदरं ॥ श्रीचन्द्रकराचार्याम्नायदेशीगणान्वये समस्तविद्याविनयानंदितविद्वज्जनाः प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत्सुभद्राश्चिरं जयंतु ॥

[यह लेख कल्चुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है। वेल्लप्रभाटिका गांवमें गोल्लापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था। इसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याम्नाय-देशीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी।]

[इन्स्क्रिप्शन्स आफ दि कल्चुरि-चेदि एरा पृ० ३०९]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११८९ = सन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पंचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-
महाराजाधिराज (रायपा) ल

२ देव तस्य पुत्रौ रूद्रपालअमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) ल्हदेवी तया (नद्दू) ल (डा) गिका-

३ यां सता परजतीना (रा)ज कुलपल (म) ध्यात पलिकाद्वय धाण (क) प्रति धर्माय प्रदत्त। म० वार्गादि-

४ धप्रमुखसमस्तग्रामीणाक। रा० तिमटा त्रि० गिरिया षणिक पोसरि। लक्ष्मण घतं मा।

५ खिं कृत्वा दत्त। लोपकस्य यत्तु पापं गोहत्यासहस्रेण। ब्रह्म-हत्यासतेन च। तेन

६ पापेन लिप्यते स ॥ श्री ॥

[यह लेख संवत् ११८९ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल। इनकी माता मानल्हदेवीने नद्दूलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था।]

[ए० इं० ११ पृ० ३४]

२१६

तिरुनिड्कोण्डै (मद्रास)

सन् ११३४, तमिल

[यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें वैगाधि मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलैयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६]

२२०

शेरगढ़ (कोटा, राजस्थान)

संवत ११९१=सन् ११३५, संस्कृत-नागरी

१ माहिश्वजमार्यान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमं प (त्त) ने । श्रीपालो गुणपालकश्च विपु-

२ ले खण्डि (लवा) ले कुले सूय (र्यो) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तौ क्रमान्मालवे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि(ः) शा-

३ (न्तेः श्री) गुणपालठक्कुरसुताद् रूपेण कामोपमात् । पूर्नासर्थ-जनेल्हुकप्रभृतय पुत्राश्च येषा नव तैः सर्वैरपि कोशवर्धनत-

४ ले रत्नत्रय कारित( ) ॥२॥ वर्षै रुद्रशतैर्गतै शुभतमैरेकानव-त्याधिकैर्वैशाग्व(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-

५ पितान् । वन्दन्ते नतदेवपालतनया माल्हूसधान्वादय पूर्नाशान्तिसुतश्च नेमिसरता श्रीशान्तिसत्कुन्थ्वरान् ।

६ ।३॥ दादिसूत्रधारोत्तमः शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्थ्वरनामानो जयन्तु घटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-

७ तेल्हुक गोष्ठित्रीसलल्लुक सोक हरिश्चन्द्रादि गागासुपुत्र ( ) श्रल्लक ॥५॥ संवत ११९१ वैसाप सुदि २ (म)-

८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[यह लेख वैशाख शु० २, मंगलवार, संवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोंने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्थु तथा अर इन तीन तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ स्थापित की थीं । इनका निर्माण सूत्रवार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था ।]

[ए० इ० ३१ पृ० ८३]

२२१

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महाम-

२ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिलाहारनरेन्द्र । जीमूतवाहनान्वयप्रसूत । सुवर्णगरुडध्वज मरुवोक्कदर्प । अय्यन

३ सिंग । रिपुमण्डलिकभैरव । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्य । रूपनारायण । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवारसिद्धि गिरिदु-

४ र्गलंघन । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजावलीविराजितरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यदेवरु वळवाडद ने-

५ लेवीडिनल् सुखसंकथाविनोददिं राज्यगेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्त । विजयल-

६ क्ष्मीकान्त । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसामन्तभंग । वीरवरांगनाप्रियभुजंग । वैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय गन्धवा-

७ रण विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसामन्ततारासुरवीरकुमार । सामन्तकेदार । तोण्डसामन्तपुण्डरीक-

८ चण्डप्रचण्डमत्तवेदण्ड । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्ड । याचकजनमनोभिकल्पितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिनचरणसरसिरु-

९ द्दमधुकरं मन्यक्त्वरत्नाकरनाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदं पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्री-मन्महा ।

१० मामन्त । निंबदेवरसरु । कवडेगोल्लद वलिय सन्तेय मुद्गोंडे-यल् माडिसिद वसदिय पार्श्वनाथदेवराष्टविधार्चनक्कमा वसदिय जीर्णोद्धारक्क-

११ नल्लिप्प ऋषियराहारदानक्कं । स्वस्ति । समस्तभुवनविख्यात-पञ्चशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सत्यशौचाचारचारु-चारित्रनयविनय-

१२ विज्ञान वीरबलञ्जधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुड्डुध्वजविराजमानानून-साहसोत्तुग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपार्जितविजयलक्ष्मी-निवासवक्षस्थलरुं

१३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलभद्रवशोद्भवरुं । भगवती-लब्धवरप्रसादरं । ताबु काडि सोलदरुं । मरुवक्कमारिगलु परस्त्रीपर

१४ धनवर्जितरुं चतुष्पष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनन्नरं । चक्रमुल्लुदरिं नारायणनन्नरं । दृष्टियोल् नोडि कोल्वुदरिं । कालाग्निरुद्रनन्नर । को-

१५ न्दुन्नरमि कोल्वुदरिं । परशुरामनन्नरुं । तुलिदु कोल्वुदरिं । मदान्धगन्धसिन्धुरदन्नरं । गिरिदुर्गमं मरेवोक्करं तेगेदु कोल्वे-डेयोल् सिंहदन्नर ।

१६ पातालम पोक्करं कोल्वेडेयोल् वासुगियन्नरं । आकाशदोलिदंर कोल्वेडेयोल् गरुडनन्नरुं । पेंपिनल् पृथ्वियन्नरुं । बिण्पिनल् कुलगि-

१७ रियन्नरुं । गुण्पिनल् महासमुद्रदन्नरुं । उद्योगदल् रामनन्नरुं ।

पराक्रमदोल् पार्थनन्नरु। शौचदोल् गांगेयनन्नरु। साहसदोल् भामनन्न-
१८ रु। धर्मदोल धर्मपुत्रनन्नरु। ज्ञानदल् सहदेवनन्नरु। भोगदलि-
न्द्रनन्नरु। त्यागदल् कर्णनन्नरु। तेजदलादित्यनन्नरु। अहिच्छत्र-
मेनिसुवय्यवोलेपुरप-
१९ रमेश्वररुमप्पय्नूर्वर्स्वामिगलु गवरेयरु। गात्रियरु। सेट्टियरु।
सेट्टिगुत्तरु। गामण्डरु। गामण्डस्वामिगलु। वीर
२० रु। वीरवणिगरु। कोल्लापुरद् बिल्पाणसेट्टियु। गोविन्दसेट्टियुं।
कोमर अण्णमय्यनु। मिरिंजेय बिज्जसेट्टियु। बोप्पिसे-
२१ ट्टियु। गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेसपय्यसेट्टियरु। आ मण्ड-
लेश्वरन बीडिन बम्मिसेट्टियु। कूडिपट्टनदादित्यगृह-
२२ द सासनिग हेग्गडे रावसेट्टियु। चौधोरे बोप्पिसेट्टियु। तोर-
वगेय प्रभु कन्नपय्यसेट्टियु। मयिसिगेय काजगार चौधो-
२३ रे गोरविसेट्टियु। बलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियु। अय्यवोलेयय्-
नूर्वर सिंगं हालियसेट्टियु। कवडेगोल्लद प्रभु रुप्परय्यना-
२४ डियागि समस्तदेश नेरेदु। शकवर्षद सासिरदय्वत्तेंटेनेय
राक्षससंवत्सरद कार्तिकबहुल पञ्चमि सोमवारदन्दु श्रीमूलसंघ-
२५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणबसदिया-
चार्यरप्प श्रीश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवर् काल कर्चि। धारापू-
२६ र्वकमागि कोट्टायमेन्तेन्दोडे अडके हेरिंगे अय्वत्तु। जवलक्किपंत्तु
हसरकरय्दु। एले हेरिंगे नूरु। तलेवोरेगय्वत्तु। हसरकिपं-
२७ त्तय्दु। तुप्पमेण्णेयेंबिवु कोडक्के सोल्लगे सिद्दिगेगरवाण सगडि-
गोर्माण दूसिगवसरक्कमक्कसालेग होंगे हण। हत्ति मळवेग-
२८ य्वल। मण्डिय कल्लेय मळवेगेरड्डु बीसिगे। जवलक्कं पल

पत्तु। लंकरोक्कलल्लि श्रात् तिगलुं मणेतिविगं मरवियेविवो-
न्दक्कु । वर्पक्कं म-

२९ चक्रोन्दक्कुं । अल्लवरिमिन शुण्ठि वेल्लुटिल वजे भत्रमुत्तेयेंबिवु
मोडलागि तूगि मास्त मण्डगलुं हेरिगयूवलं जवलक्किप्पल
हम-

३० रकोप्पलं जीरगे मेल्सु मामविथेयिवु हेरिंगोम्मान जवलक्क-
रवन हमरक्के मोल्लगं । उप्पु मोडलागि हडिनेंटु ध्यान-

३१ गल्गं मडिगे कोलगवोंदु हेरिंगे मानवेरडु तलेवोरंगोमानं यादु
कायेविवु भडिगे हत्तु तलेवोरंगे नाल्ककक्कु । भण्डिगे दण्डिगे
वोंदु ।

३२ मेवेयप्दु हूटेयेरडक दण्डिगे वोंदु मेवेयेरडु हूविन हेडस्गिगे
माले वोन्दु कुवररलिल हसरक्के मडके वोन्दु ॥ इन्तीया-

३३ यमनक्किडातांने याणराशिकुरुक्षेत्रादिगलोल् पंचमहापातकमं
माडिड फलमक्कुं ॥

[इस लेखका साराश द्वितीय भागमे क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नही हुआ था। यह लेख शिलाहार वशके महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ मे लिखा गया था। इस-का सामन्त निम्बदेव था जिसने तोण्डमण्डलके युद्धमें शूरता प्रदर्शित की थी। निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर वनवाया था। इस-के बाद वीरवलज लोगोंके संघका विस्तृत वर्णन है। उसके प्रतिनिधियोने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलसघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति त्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करो-का उत्पन्न दान दिया।]

[ए० इ० १९ पृ० ३०]

२२२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड
महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है। इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था। नाकिराजकी कन्या कर्णादेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी। कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)
सन् ११३७, तमिळ

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था। आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुंगचोलकाडवरायन्-द्वारा कम्बिनायनार् (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् (नापका प्रकार) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३११ पृ० ६६]

२२४

गणपवरम् (गुण्टूर, आन्ध्र)
११वीं–१२वीं सदी, तेलुगु

[यह लेख श्रावण शु० ३ का है – शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं। कुलोत्तुंग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८]

२२५-२२७

तिरक्कोल (उ० अर्काट, मद्रास)

११वी–१२वी सदी, तमिल

[इस लेखमे तण्डपुरम्‌की पल्लि (जैनवसति) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोंग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमे सम्मिलित था। यहीके एक अन्य लेखमे शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर शित्तडिगल्‌को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्‌के १२वे वर्षका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोपर है। ये स्तम्भ अरुमोलिदेवपुरम्‌के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६–२८० पृ०९१]

२२८-२३०

वस्तिहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[यहाँ तीन लेख है। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसघ-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसिगणके दिनकरजिनालयमें हेग्गडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमे इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४]

२३१

नाडलाई (जि देसूरी, राजस्थान)

सवत् ११९५ = सन् ११३९, सस्कृत-नागरी

१ ओं नम सर्वज्ञाय॥ संवत ११

२ ९५ आसढज वदि १५ कुजे।
३ अद्येह श्रीन (ह्र) लडर (गि) काया महा–
४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । विज –
५ यी राज्य कुर्वतीत्येतस्मिन् काले
६ श्रीमदुजिततीर्थं श्री (ने)मिनाथदेव-
७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थं गू –
८ हिलान्वय राउ० ऊधरणसूनु
९ ना मोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-
१० ण्यार्थं स्वीयादानमध्यात् मार्गे[ग]
११ च्छतानामागतानां वृषभानांलोकं (पु)
१२ यदाभाव्य भवति तन्मध्यात् विं(श)
१३ तिमो भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य
१४ प्रदत्त. ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा
१५ केनापि परिपथा न करणीया
१६ अस्मद्दत्तं न केनापि लोप(नी)य ॥
१७ स्वहस्ते परहस्ते वा य कोपि लाप –
१८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो
१९ न लोप्य मम शासनमिद । लि०–
२० (पा)सिलेन ॥ स्वहस्तोय सामि –
२१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-
२२ न मतु दत्त ॥ अत्राह साक्षि-(णा)-
२३ ज्योतिपिक (दूद्)पासूनुना गूगि-
२४ ना । तथा पला० पाला० । पृथि
२५ वा १ मागु(ला) ॥ देपसा । रा
२६ पसा ॥ मगल महा (श्रीः) ॥

[उक्त लेख संवत् ११९५ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था। इसमें नड्डूलडागिकाके नेमिनाथमंदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है]

[ए० इ० ११ पृ० ३६]

२३२

नाडलाई, (जि देसूरी, राजस्थान)

संवत १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

१ ओं संव(त्)। १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराजश्रीरायपालदेवराज्ये—हाल –

२ समये रथयात्रायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-गाइलासध्यात् (सर्वसाउलपुत्र) विंसो–

३ पको दत्त । आत्मीयवाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं पलिकाद्वय। पली २ दत्त ॥ म-

४ हाजनप्रमीण। जनपदसमक्षाय। धर्माय निमित्तं विंसोपको १ पलिकाद्वयं दत्त ॥ गोह –

५ त्यानां सहस्रेण ब्रह्महत्याशतेन च। स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च अनु पाप तेन पापेन लिप्यते स ॥

[यह लेख संवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था। यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[ए० इं० ११ पृ० ४१]

२३३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

सन् ११४५, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरबसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसंवत्सरका है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे।]

[ए० रि० मैं० १९१५ पृ० ५१]

२३४

बालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन संवत्सरमें फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसेट्टिने बालेयहल्लिमें पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, (कोण्डकुन्द) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोंका भी इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२]

२३५

नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)

२ श्रीनदूलडागिकायां रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहावीरचैत्ये साधुत-

३ पोधननि(ष्ठार्थे) श्रीअभिनवपुरीय बदार्यां अ(त्रे)षु स(म)स्तवणजारकेषु दंमी मिलित्वा वृ--

४ (प) म (म) रिन जनु पाइलालगमाने वतु वीस प्रति रूआ २ किराडउआ गाड प्रति रू १ वण –

५ जारके धर्मार्थ प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जनु पापं गोहत्याम्हत्तेण ब्रह्महत्यासत्तेन पापेन लिप्यते स ॥

[यह लेख सवत् १२०२ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नड्डूलडागिकाके महावीर मन्दिरमे आये हुए नावुओं-के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है।]

[ए० इं० ११ पृ० ४२]

२३६

कुण्टन होसल्लि (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

बसवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय दसवें वर्ष, प्रभव संवत्सरमे यह लिखा गया था। नागिसेट्टि-द्वारा किसी जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। कदम्ब-वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है।]

(रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६८)

२३७

नीरलगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० मे पुष्य शु० १३, गुरुवार, उत्तरायण संक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिलगेके नालप्रभु मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसघ-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है। मल्लगावुण्ड चतुर्थजातिका व्यक्ति था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ ए० ई० ६१ पृ० १२४]

२३८

करगुदरि (जि० धारवाड, मैसूर)

सन् ११५८, कन्नड

[यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था। महावड्डव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमें विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ ज़मीन दान देनेका इसमें निर्देश है। यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वासुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था। उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था। इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७]

२३९

हुलगूर (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी – मध्य, कन्नड

[यह लेख अधूरा है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा बेल्वोल प्रदेशोंपर महाप्रचण्डदण्डनायक बावणरस शासन कर रहा था। इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था। इसके समयकी एक जैन श्राविका नौलिकब्वेका इस लेखमें निर्देश है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२)

२४०

शृंगेरी (मैसूर)

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
३ स्वस्ति श्री(स)नु सकवर्षगलु १०७१ ने प्रमोदू-
४ तसंवत्सरद वयिसाखमासद शुद्ध सप्तमि
५ स दन्दु श्रीकाणूर्गण मूलसंघ
६ पुस्तकगच्छद···हरिय
७ मंगल

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है। वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत संवत्सर इस तिथिका तथा मूलसंघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है। लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० ११३]

२४१

अरसीबीडि (बिजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाउण्डरस तथा उसकी पत्नी देमलदेवी-द्वारा पौष ब०-७, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसंघ-देशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३]

२४२-२४३

छतरपुर (मध्यप्रदेश)

सं० १२०८ = सन् ११५१, संस्कृत-नागरी

[ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोके पादपीठोपर हैं। ये मूर्तिया छतरपुरसे प्राप्त हुई थी। सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोकी स्थापनातिथि आषाढ शु० ५, गुरुवार, स० १२०८ थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १४]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर (राजस्थान)

सं० ११०९ = सन् १०५३, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, संवत् ११०९ के दिन पार्श्व-नाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१]

२४५

शेडवाल (बेलगांव, मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[यह लेख बसवण्णमन्दिरमें लगा हुआ है। इसमे सेणिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है। तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख संवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है। किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६]

२४६

बेलूर (मैसूर)

शक १०६१ = सन् ११३९, कन्नड

१ निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र –

२ भद्रबाहुभट्टारकरिंदं । भूतबलिपुष्पदंतस्वामिगलिंद । एकसंधि-सु(मतिगलिंदं अ) –

३ कलकदेवरिंदं । वक्रग्रीवाचार्यरिंद । वज्रणंदिभट्टारकरिंद सिंहणं(दि कनक-)

४ सेन वादिराजदेवरिंदं । श्रीविजयदेवरिंदं । शांतिदेवरिंदं पुष्प-सेन(देवरिंदं ।)

५ अजितसेनपंडितदेवरिंद् । कुमारसेनदेवरिंदं । मल्लिषेण मलधा-रिदे(वरिंद)

६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपाल वरवाणिश्रीपालं विरुदवादिमदविस्फालं ॥ तमगे –

७ (अ)मर्दत्ति धरेगेय्दे तम्म सुखदोल् पट्तर्कवाराशिविभ्रमसापो

८ स्म कीलपडिसित्तु पेंपिनेसकं श्रीपालयोगींद्रर ॥ आवन त्रिपथगो

९ (ग)द्यपद्यवचोविन्यास निसर्गविजयविलासं । कश्चिद् वाद-विनोदकोविद ·

१० दक्ष कश्चन कश्चनापि गमको वाग्मी पर कश्चन । पांडित्ये सुघनुविधेपि निपुण श्रीपालदेव पुनस्तर्कव्याकरणागम-

११ प्रवणधीस्त्रैविद्यविद्यानिधि । अवर मधर्मर् । वर्गत्यागद सूचितमार्गोपन्यासदलम मार्तुंडियल्कामर्गगवरिदे-

१२ नल्के निरर्गलमादत्तनन्तर्चार्यत्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

१३ घनालब्धबुद्धि· सिद्धांतांभोनिधानप्रविसरदमृतास्वादपुष्टप्रमोद । दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-

१४ ण सन्तत भव्यसेव्य सोय दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते वासुपूज्यव्रतीद्र ॥ सत्यशौचकरुणागुणोत्करैरस्य-

१५ कृतलोभमदमानरोपणै । शुद्धवृत्तियुतवाधरोंर्न्नवादिराज मुनिराज राजसे ॥ श्रीपालत्रैविद्यश्रीपादप-

१६ मान्तरंगसंगतभृंग श्रीपरिपूर्ण होय्सलभूपालकमंत्रि माचदण्डा-धीश॥ जिननाथ पोरेंड नृपालतिलक श्री-

१७ विष्णु (भूपा)लक जनक स पुरंयगवेग्गडे जगद्विख्याते राजव्वे ताय् सर्न्नाळम्मडिदण्डनायकनें ता माव महामन्त्रि

१८ येन्दंनला माचिणदण्डनाथनें वल धन्य पेर धन्यनं ॥ सुरगुर-मन्त्रक्रमदोळ् धुरदोळ् सिंहप्रतापनप्र-

१९ तिमतेज सुरतरु वितरणगुणदि नरसिंहमहीशमंत्रि माचचमूप ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहित श्री-

२० मन्महाप्रधान माचियणदण्डनायक तमगे व्रवगुरुगळु श्रुतगुरु-गळुमेनिसिद परवादिमल्ल-

२१ वादीभसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-दाडिदेवर वसदिय केलसद कोरतेग देवर्

२२ अष्टविधार्चनेग ऋदियराहारदानक्कवागि शकवर्ष १०७६ नेय श्रीमुखसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रमण-

२३ दन्दु महादानगळ माडु तिर्पा समयदोळे माचिणदण्डनायक विज्ञप गेय्यल् होय्सलश्रीनारसिं-

२४ हदेवर् कब्बुणाड नागरहाळ सर्व्वबाधापरिहारवागियादिदेवगें धारापूर्वकं माडि कोट्ट दत्तिय-

२५ तु देवदानवादा नागरहाळ चतु.सीमेयप्पुदु मूडलु क्वल दोणे सचरिवल्ल । आग्नेयदलु कडवडको

२६ लद होरेयणिं मागवागि बन्द हेब्बट्टे । तेंकल् जालदहल्ल नळि हडुवलु केदलिरहल्ल । नैऋत्यदलु हुलियक-

२७ एळाल हडुवलु हुलियहल्ल । वायव्यदलु सूलद हिरियकणि । वडगल् मागेडेगे होह हेद्दारियव-

२८ डगण मोरडि । ईशान्यदोल् कोडेयालवळ्ळि तेवलु नह कल्लु । इतो चतुःर्सीमे वेरसु नागरहाल वल्लजिना (ळ)य-

२९ क्के सर्वनमस्यवागि पडिसलिसुववर्गे गगेय तडियल् सासिर कविलेयं कोडुं कोलगुमं होन्नलु कट्टिसि चतु-

३० र्गुत्तरायणसंक्रमणग्रहणव्यतीपातदहु दान माडिद फलवी धर्ममं कि-

३१ · यदा कविलेयुमना ब्राह्मणरुमना तिथिवारदलु-

३२ र्मम प्रतिपाळिसुवुदु ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत

३३ ··· जायते क्रिमि ॥ मंगल महा श्री श्री पालित

३४ जालोलं विशदयशोलील गुणसेनपंडित बुधर्नि

३५ · पुरंदर गुणसेनपंडित · ·

[यह लेख केशवमन्दिरके छतमें लगा पाया गया । इसमे पहले वर्ध-मानस्वामी (महावीर) से प्रारम्भ कर कई आचार्योकी परम्परामे श्रीपाल त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी वसदिके लिए होयसल राजा नरसिंहके सेनापति माचियणने नागरहाल ग्राम दान दिया था । दानकी तिथि शक १०७६ की उत्तरायणसक्रान्ति थी । लेखमें श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुबन्धु अनन्तवीर्य तथा शिष्य वासुपूज्य एव वादिगज-का भी वर्णन है । अन्तमें गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० १०२]

२४७

बलगेरि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके विज्जल (द्वितीय) तकके सामन्तोंकी वंशावली दी हैं। विज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका शासन बेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चमूपने पार्श्वनाथतीर्थकी यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया। इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), धातु संवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-सक्रान्ति ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५]

२४८

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था। इस मन्दिरमें सन्ध्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१]

२४९–२५०

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६-५७ तमिल

[इस लेखमें जयगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊरुक्काडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गायें दान दी जानेका उल्लेख है। यह चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था। राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यहीं है। इसमें पर्नैयूरुनाडु प्रदेशके अम्मोलिदेवपुरम् स्थानके नगरत्तार् लोगोंद्वारा तिरुप्परम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रबोधन समारोहके अवसरपर दिये गये दीपदानोंका विवरण दिया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२]

२५१

करडकल (रायचूर, मैसूर)

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर बिज्जलके राज्यकालमें आषाढ, दक्षिणायन संक्रान्ति, शक १०८१, प्रमाथि संवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था। इसमें एक सेनापति तथा पद्मलदेवीका उल्लेख है तथा मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके किसी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१]

२५२

केरेसन्ते (कडूर, मैसूर)

१२वीं सदी (सन् ११७९), कन्नड

१ बहुधान्यसंवत्सरद माघ सु १५ गुरु
२ श्रीमत प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
३ वीर नारसिंहदेवरसर अडकेय पा-
४ रिसदेवन मग चिक्कमलणणंगे कोंयमंये-
५ य द्रविलसंघद आदिनाथदेवर पार्श्वदेवर
६ बसदिगलिगे आ केरेयसंघेय हियंकोय

७ केलगुलतह स्थलवृत्तिय तोट गद्दे बेद्दलु म-
८ ने आ देवरुगलिगुलंतह समस्ततेजस्वा-
९ म्यवनु आ श्रीवीरनारसिंहदेवरम्गरु आ मह्ल-
१० ण्णगे दानवागि धारापूर्वक माडि आचन्द्रार्क-
११ तारवर सल्वतागि काट्टरु मगल महा श्री श्री

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयमथे स्थित द्रविलसघकी आदिनाथ-पार्श्वनाथ वसदिके लिए चिक्कमल्लणणको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। लिपि १२वी सदीकी है तदनुसार यह लेख वहुधान्य मवत्सर = सन् ११५९ का होगा। तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था। इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२]

२५३
हुलियार (मैसूर)
१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमें लाया जाता है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

२५४
हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)
स० १२१६ = सन् ११५९, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पीतलकी चौवीसी-मूर्तिके पीठपर है। इसमें मूर्तिकी स्थापनातिथि आषाढ ९, स० १२१६ दी है। मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममें है।]

[मै० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १५]

२५५

शृंगेरी (मैसूर)

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (।)
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)
३ स्वस्ति श्रीमत् सकवर्षं द १०८२
४ विक्रमसंवत्सरद कुम्भ शु-
५ द्ध दशमि बृहवारदन्दु श्रीमन्निडुगोड
६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र वा-
७ सिसेट्टियर अक्क सिरियवेग्गेट्टियर म-
८ गलु नागवेसेट्टियिर मगलु सिरिय-
९ ळेसेट्टितिग हेम्माडिसेट्टिगं सुपुत्रन-
१० प्प मारिसेट्टिगे परोक्षविनयक्के मा-
११ डिसिद बसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केलग-
१२ ण हिरिय गद्देय बमदिय बडगण होम-
१३ यु मड्डियु होलेयुं नडुवण हुदुविन होरद
१४ मण्णु कण्डुग तुलिगोड अरुगण्डुग मण्णु
१५ 　　बणजसु नानदेसियु बिट्टय
१६ 　　मलवेगे हाग हज हात्तिय मल
१७ · 'ले मेलम्पिन माग्क्के हागसु
१८ मत्तं पोत्तोब्बलुप्पु हेरिगयूवत्तेके अरिसिनद मलवेगे वीसक्के बिट्टं
　　नपिदडे तप्पिदवनु गगेय-
१९ लु माडर कविलेय कोण्ड पातक

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है। इसकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसवत्सर, कुम्भ माम शु० १० गुरुवार ऐमी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियो-द्वारा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी मिरियबेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नम ।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १२२, १२५]

२५६

बावानगर (विजापूर, मैसूर)

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम सवत्सरका है। इसमें मूलसघ-देसिगणके मगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन वसदिको कुछ दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२०]

२५७

गुत्तल (धारवाड, मैसूर)

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[यह लेख गुत्त वशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलधारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६]

२५८

हालुगुड्डे (मैसूर)

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

१ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तम्भाय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द

२ अशेषमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुचपुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-

३ सकलजनस्तुत्य नीतिशास्त्रज्ञ-विरदसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापभुजबल

४ शान्तरदेवरु सान्तलिगेसासिरम सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंच-

५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-षडाननं अरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमतु-

६ होम्बुगुन्दद वीररमर मेलुसान्तलिगेयुमं अग्रहारमुम सुखदिं-नालुत्तमिरं शकवर्ष १०८४ नेय चित्रभानुसंवत्सरद

७ वैशाख सुद १० बड्डवारदन्दु कटद दण्डु अलिय बम्मणेयनुं पाण्ड्यरसनुम्मलिगारनु ममस्तमावन बेरसि बन्दु बिट्ट

८ नत्ति बहल्लि नेल्लिवडेयलु जिनपादशेखर मन्त्रिचिम्महि माचि-राजन ॥ कं० तलपारिनायकगे पुलेयल् थोप्पेयब्वे नायकित्ति

९ मगं भूवलयदोल् अधिकं पुट्टिद कलिगल मुखतिलकं गोग्गि-मण्डलदेव । रूपिनालु काममसिम कूर्पिनोला भरतनूज अभिमन्यु

१० तां वेपं ननकोवेडेयोलु नोर्पडे कलि गोग्गि कल्पवृक्ष जगदोल् धुरदोल् अरातिभूभुजरन्तवर्टिदम्मकगाल वीर

११ नल्कंर्थि वेसमे गोग्गणन्तिरिवह्लि बिर्द वीरर नोरंनेत्तरिं नेणन रणदट दिण्डेगरल्गलिं सयकरं एने विक्रमं कलिग --

१२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदडुणद वीररनान्तिसुतिर्प त्रिल्ल वल्लणिय तुरग साधनसनान्तिरिवल्लि महामय

१३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्मुरमन्डु नोपेडिनणकमो गोग्गियान्तिरिद विक्रममाहवरगमूसियो (ल्)

१४ कलहदोलान्त वीरचतुरगवलगलनान्तु गोग्गि तोल्वालघट्टिन्दे तूल्दिरिंय धिदरिसेनेय लाहितान्बुर्धि पल्वु मिरंगल ·

१५ रवड़ बोकोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलवोलगन्दु तल्तिरिव मग्नम सगररगमूलियोल्

१६ णमय लोहितवारि नेणद कंसलगल कुणिवट्टेगल् पुन्डढिडेन-णकमो विक्रमव

१७ वागलोन्दु तिरुर्वि विल्लुवागल्लु नूरु परिय सायिरवरिय नेल्लुवल्लि कोटियेने पोर्डावियोल

१८ ह ॥ तरिसन्दोड्डिदरातिय मरुवकमनान्तु गोग्गि यिरियल् धुरदोलु परिलकेयोलु मह

१९ दलव ॥ नायकतन मुन्बरिसिद नायकरिट्टिरागि गोग्गियोलु तागुदडु सायकटिनेच्चु तू

२० देवरदंन पेल्लवे ॥ मामलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरमूधुज नूमडि वाडवानल

२१ नोर्पुदु कूर्मनरात्तमेम्बुरिय नालगेगल् विडेयट्टिबेन्दु मुम्म-लियायतु वैरिव

२२ कृताकनो ॥ धुरदोलदिसेनेय निर्मरसिरियल् गोग्गि वैरिवि-क्रान्तसरल् मरदिन् तनुवनुचा

२३ दोला सिन्धुसुतन पोल्त ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवलाल्गल-नान्तिरिवाल्ल वैरिविक्रान्तसरालिगल् तनुवनुचा

२४ प्रदोल् ॥ सन्वनसूनुवेन्तु सरसैयेयोलोप्पिदनन्ते गोग्गि विक्रान्तमनासेवड्डु सरकोट्टिदनाह ·

२५ ···योळ् ॥ मगरवोलिरिद वीरमं श्रृगारममेक्केवत्त गोग्गिय तम्मुत्संगदोळ् इट्टयूद्रि निलिपागनेयर्

२६ ··(अ)मरावतियं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोग्गिय-नायक कटकमनान्तिरिद्दु तुमुल

२७ ···ममान्तरनेनिसिद श्रीवल्लभदेवनग्रपुत्र प्रतापभुजवल मान्तर-मेनिन्सिद तैलपदेवर् विडियम्मग्मन पुत्र श्रीमतु

२८ रु तम्मरसर हेम्मरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिभोगा-भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्टु कारुण्यं गेय्दु कोट्ट होस

२९ ·वंर मने वडि (?) डविन कैयोलगे हाड कैय मक्कि (?) सहितमागि कोट्टरु ॥ मगल महा श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु संवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके मान्तरवशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है। तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोग्गिकी पाण्ड्यरसके विरुद्ध लडते हुए मृत्यु हुई थी । गोग्गिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोग्गिको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन सेलु-सान्तलिगे प्रदेशके शासक वीररसका भी उल्लेख किया गया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७४]

२५९

एकसम्बि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०८७ = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इसकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है – मारगोंट – आचगौड – हौल्लिगौड – जिन्नण, कालण तथा मदुवण। इनमें जिन्नण गण्टगादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका। कालणकी पत्नी लच्छले थीं तथा उसे तीन पुत्र थे – जिन्नण, आचण तथा रामण। कालणने एककसम्बुगेमें नेमिनाथबसदि बनवायी, तथा उसके लिए यापनीय संघ – पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी। विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी – मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति (प्रस्तुत)। इस मन्दिरकी कीर्ति सुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मैं० १९१६ पृ० ४८]

२६०

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव संवत्सरमें (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था। पान्थिपुर (वर्तमान हानगल) के कल्लिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थंकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है। इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था। हानुगल नगर तथा कल्लिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५]

२६१

अरसीबीडि (बिजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमें पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके बिट्टरसके पुत्र होलरस द्वारा गुणवेडगिय बसदिके लिए कुछ करोंके उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४१]

२६२

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा बिज्जलदेवके समय शक १०९० सर्वधारि संवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५७]

२६३

हलसंगि (विजापूर, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें शक १०९० में चन्द्रग्रहणके समय पार्श्वजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० ३५ पृ० २०१]

२६४

हिरेमसूर (धारवाड, मैसूर)

शक १०९१ = सन् ११७०, कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार शक १०९१ विरोधि संवत्सरका है। इसमें सिन्द कुलके महामाण्डलेश्वर चावुण्डरस-द्वारा सिरियमसिरके जैनशालाके अधिष्ठायक दासवोजकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० ८०]

२६५

विजोलिया (राजस्थान)

संवत् १२२६ = सन् ११७०, संस्कृत-नागरी

१ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूप महज्जोतित निरवधि ज्ञानैकनिष्ठापित नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकल स्याद्वादविस्फारितं । सुव्यक्तं परमाद्भुत शिवसुखानन्दास्पदं शास्वत नौमि स्तौमि जपामि यामि शरण तज्ज्योतिरात्मो(स्थि)तं ॥ ॥ नाम्न गत कुग्रहमग्रहो न नो तीर्थतेजा

२ नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविरस्तात् स मुदे वृषो व ॥२॥ [स] भूषाच्छीशांति शुभविभवसंगीभवभृतां विमोर्यस्यामाति स्फुरितनखरोचि करयुग । विलग्नाणामेषामखिलकृतिनां मंगलमयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जु व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरित पाञ्चजन्य

३ वरदलमलि(नोपात्)पद्माग्रदेशं । हस्तांगुष्ठेन शार्ङ्गं धनुरतुलबल कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्या दोलितोयं हलभृदवनित तस्य नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्रांशुप्राकारबातात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धावकाशां वाचाला केतुकोटि(क्व)णदनणुमणीकिंकिणीभि समंतात् । यस्य व्याख्यानभूमावहह किमिदमित्याकुला कौतुकेन प्रेक्षते प्राणभाज

४ (स भुवि) विजयतां तीर्थकृत् पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमानमहोदय । वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमान-(महो)दय ॥६॥ भारती सारदा स्तौमि सारदानविशारदा । भारतीं भारती भक्तमुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ नि प्रत्यूहमुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिन श्रीनाभेयपुर सरान् परकृपापीयूषपायोनिधीन् । ये ज्योति परमागमाज-

५ ननया सुक्त स्मनामा(भि)ना श्रीमन्मुक्तिनिनविर्नास्तनतटे
हार्गश्चिद विश्रांति ॥८॥ मन्दाना हृदयाभिरामवस्मनि मद्धर्म-
(र्मसं)स्थिति कर्मोन्मन्तनमंगानि शुमनति. निर्वात्र(र्वा)वो-
दूर्शन. । जीवानानुग्रहाग्रागणगरि श्रेय श्रिया सन्तति.
देयान्ते सवस्मृति शिव(म)नि जैने चनुर्विंशनि ॥ ९ ॥
श्रीचाहमानक्षितिगजवंश: पोवोंप्यपूर्वो न जडावनद्ध । सिन्धो
म चा-
६ (गो न च) रंश्रयुक्तो नो नि फर मारयुनो ननो नो ॥१०॥
लावण्यनिर्मलमहोज्वलितांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपय परिधानभा-
(श्री । दर्तु)गपर्वतपयोधरमाग्भुवना शाकम्भराजनि जनीव
तनोपि विष्णो. ॥११॥ विप्र श्रीवत्सगोत्रेभूदहिच्छत्रपुरे पुरा ।
सामंतोनंतसामन्त. पूर्णतल्लो नृपस्तत ॥१२॥ तस्माच्छ्री-
जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रको तस्माद्दु(र्ल)मगूवको गशि-
७ नृपो गूवाकसचंदनो । श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिंह-
राड्विग्रहो । श्रीमद्दुर्लभगुण्डुवाक्पतिनृपा श्रीवीर्यरामोऽनुजः
॥१३॥ (चामुंडो) वनिपोऽतिठच गणक्वर श्रीसिंघटो दूस-
लस्तभ्राताथ ततोऽपि वीसलनृप श्रीराजदेवीप्रिय । पृथ्वीराज-
नृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिप
सोमल्लदेवीपति ॥१४॥ हत्वा चाचिगसिंघलामिधयसोराजाद्रि-
वीरत्रयं ।
८ क्षिप्रं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्गान्वित । श्रीमत्सो(ल्ल)ण-
दण्डनायकवर· सत्रामरगागणे जीवन्नेव नियंत्रित करमके
येन · (क्षि)मान ॥१५॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्हृतहृदयहरि मत्व-
वांशिष्टर्मासो गांभीर्योदार्यवर्यं ममसवद(चि)रालब्धनम्यो न
दीन । तच्चित्रं जं न जाड्यस्थितिरवृत महापकहेतुर्न मध्या न
श्रीमुक्तो न दोषाकरगचितरतिर्न द्विजिह्वाविसंव्य ॥१६॥

९ यद्वाज्य कुशवारणं प्रतिकृतं राजाकुशेन स्वय येनात्रैव नु चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे त प्रति । तच्चित्र प्रतिभासते सुकृतिना निर्वाणनारायणन्यक्काराचरणेन भंगकरण श्रीदेवराज प्रति ॥१७॥ कुवलयविकासकर्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्र । तत्तनयस्त-च्चित्र य(च्च) अद्धक्षीणसकलक ॥१८॥ मादानस्व चक्रे मादान-पत्रे परस्य मादान. । यस्य दृष्टकरवाल करतलाकलित

१० करतलाकलित ॥१९॥ कृतातपथमज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो भुव । वैकुत कुतपालोगा(यत) वै कु(त)पालक ॥२०॥ जावालिपुर ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लीव । नड्डूल-तुल्य रोपाद्मदूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्या च वलभ्या च येन विश्रामितं यश. । दिल्लिकाग्रहणश्रातमाशिकालामलभित ॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराज पृथूपम । तस्माद-जितहेमाशो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पार्श्वनाथस्वयभुवे । दत्त मोराझरीग्राम भुक्तिमुक्तिश्च हेतुना ॥२४॥ स्वर्णाद्रिदाननिवर्हदगमिमहदूमिस्तोलानरंनगर-दानचयैश्च विप्रा. । येनार्चिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य चारुमनसिद्धिकरी गृहीत ॥२५॥ सोमेश्वरा ब्धराज्यस्तत सोमेस्वरो नृप । सोमेश्वरनतो यस्माज्जनः सोमेस्वरोभवत् ॥२६॥ प्रतापलङ्केस्वर इत्यभिख्या यः प्राप्तवान् प्रौढपृथुप्रताप । यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्या केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥ येन श्रा-

१२ पार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयभुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्त स्वर्गाय काक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवशानुक्रम. ॥ तीर्थे श्रीनेमि-नाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अंभोधिमथनाद्देवब्राह्मिविर्वंक-शालिभि. ॥२९॥ निर्गत प्रवरो वंशा देववृंदे समाश्रित । श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापित शतमन्युना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूल पूर्वोत्तरमत्वगुर सुवृत ।प्राग्वाटवशोस्ति बभूव तस्मिन् मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधान ॥३१॥ तडागपत्तने येन कारित
१३ जिनमंदिर । (नीत्वा) आत्वा यशस्तस्वमेकत्र स्थिरतां गत ॥३२॥ यांचोक्रचडसुचिप्रमाणि व्याघ्रेरकाडौ जिनमदिराणि । कीर्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विमाति कडा इव यान्यमडा ॥३३॥ कल्लोलमांमलिनकीतिसुधासमुद्र॰ मद्बुद्धिवद्गुरवधूधरणे ध(रेशः) । ॰॰ पाकारकरणप्रगुणान्तरात्मा श्रीचच्चुलस्वतनय पदेभूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य सुतोजनिष्ट शिष्टैर्महिष्ठैः परिकीर्त्यकीर्ति । श्रीजासटोसून तटगजन्मा यटगजन्मा खलु पुण्यराशि ॥३५॥ मदिर वर्ध-
१४ मानस्य श्रीनाराणकसस्थित । भाति यत्कारित स्वीयपुण्यस्कंधमिवोज्वल ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचारा पुत्रा॰ पात्र शुभश्रिय॰ । अमुष्यामुष्यधर्माणोवभूवुर्भार्ययोर्द्वयो ॥३७॥ एकस्या द्वावजायेता श्रीसडाम्बटपम्रटो । अपरस्या (सुतौ जातौ श्रामह्ल)-क्ष्मटतेमलो ॥३८॥ पाकाणा नरवरे वीरवेश्मकारणपाटव । प्रकाटेत स्वीयवित्तेन धातुनेव महीतल ॥३८॥ पुत्रौ पवित्रा गुणरत्नपात्री विशुद्धगात्रौ ममशीलसत्यौ । बभूवतुर्लक्ष्मटकस्य जैत्रौ मुनींद्रुरामेद्वभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥
१५ पट्खडागमवद्धसौहृदमरा पड्जीवरक्षेश्वराः षड्मेदेप्रियबद्ध्यतापरिकरा पट्कर्मक्लृप्तादराः । पट्खडावनिकीर्तिपालनपरा षाड्गुण्यचिंताकरा पढदृष्टयबुजभास्करा ममभव पट् देशलस्यागजा॰ ॥४१॥ श्रेष्ठी दुचकनाथक प्रथमक श्रीमोमलो वीगडिर्दैवम्पर्श इतोपि सीयकवर श्रीराहको नामतः एते तु क्रमतो जिनक्रमयुगांभोजैकभृगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो राजति जंबूलसवा ॥४२॥ हर्म्यं श्रीवर्धमानस्याजयमेरोर्विभूषणं कारितं यैर्महाभागैर्वि-

१६ मानमिव नाकिना ॥४३॥ तेषामत· श्रियः पात्रं (मीथ)कः श्रेष्टिभूषण । मडलकरमहादुर्गं भूषयामास भूतिना ॥४४॥ यो न्यायांकुरसेचनैकजलद कोर्तेनिंधान पर सौजन्याम्बुजिनो विकामनरवि पापाद्रिभेदे पवि । कारुण्यामृतवारिधेर्विलसने राकाशशाङ्कोपमो नित्य साधुजनोपकारकरणव्यापारवद्धादरः ॥४५॥ येनाकारि जितारिनेमिभवन देवाद्रिश्रृंगोद्धुर चंचत्काचन-चारुदडकलसश्रेणीप्रभाभास्वरं । खेलत्-खेचरसुन्दरीश्रममरं भजद् ध्वजोद्वीजनैर्थचेष्टापदशैलश्रृंगजिनभृतप्रोद्दामसद्मश्रियं ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे

१७ सोनागश्रीमामटाभिधे । आद्यायास्तु त्रयः पुत्रा द्वितीयायाः सुतद्वय ॥४७॥ पचाचारपरायणात्ममतयः पचागमश्रीज्वका पचज्ञानविचारणासुचतुराः पचेन्द्रियार्थोंजयाः । श्रीमत्पचगुरु-प्रणाममनस पचाणुशुद्धव्रताः पचैते तनया गृही(तवि)नया श्रीसीयकश्रेष्ठिन ॥४८॥ आद्य. श्रीनागदेवोऽमूल्लोकाकश्रोज्ज्व-लस्तथा । महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्वल-स्यागजन्मानौ श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ । अमूतांभुवनोद्भासियशो दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गाभीर्य जलधे स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ स्विनो भास्वत सौम्य चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनीत परं । एकैक परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा सादर मन्ये बीजकृते कृत सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्टिन ॥५१॥ अथागमन्म (दिरमे) पकीर्तौ श्रीवि(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं । तत्रालु(लोके भ्रमितल्प-सुप्त) कश्चिन्नरंश पुरत स्थित स ॥५२॥ उवाच कस्त्व किमिहाभ्युपेत कुन स त प्राह फणीश्वरोह । पातालमूलात्तव देशनाय (श्री) पार्श्वनाथ स्वयमेष्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन समुत्थाय न किंचन विवेचित । स्वप्नस्यांतर्मनोभावा यतो धातादिदूषिता ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनस प्रिया । ललिता कमलश्रीश्च
लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनामय ॥५५॥ तत स भक्तां ललिता बभाषे
गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुप्तां । शृणुष्व भद्रे धरणोहमेहि
श्री (पार्श्वनाथ खलु द)र्शयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो
(यत्त्व न हि) सत्यमेतत् । श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं स
प्रासादमर्चां च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लौलिकमेवमूचे
भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । देवे वने धर्मविधो जिनोष्टौ श्री-
रेवतीर्तारमिहाप पार्श्व. ॥५८॥ समुद्धरेन कुरु धर्मकार्यं त्व
कारय श्रीजिनचै-
२० त्यगेहं । येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरसतान-सुखादिवृद्धिं
॥५९॥ त(देतद्धी) मारण्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त पूते
प्रावाण. शठकमठमुक्ता गगनतः । सदारा(म) (शश्वत्त)
दुपचयत कुडसरितोस्तदत्रैतत् स्थान.. (नि)गमं प्रायपरम ॥६०॥
अत्रास्त्युत्तमसुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवर-
लाइकात्र परमं देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र वटेश्वर
सुरनतो देव कुमारेश्वरः सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंड-
रिच्छेश्वरौ ॥६१॥ सत्योंवरेश्वरो देवो ब्रह्ममहेश्वरावपि कुटि-
२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वर ॥६२॥ महानाल-महा
का(लम)रयेश्वरसंज्ञका. श्रीत्रिपुष्करता प्राप्ता(संति) त्रिभुवना-
र्चिताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिन. । संगमेश
पुटीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-
गयेश्वरा. । (गगाभेदश्च) सोमेश. गगानाथत्रिपुरातका. ॥६५॥
सस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो
देव सम कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न
दुर्भिक्षमवर्षणं । यत्र देवप्रभावेन कलि-
२२ पंकप्रधर्षणं ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं ' '
कृत्वावतारक्रिया । कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोथाद्य वासः
पतेः शक्तेर्वैक्रियिक. श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोध प्रभुः ॥ ६९॥ इत्या-
कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य
पार्श्वमभित क्षाणीं विदार्य क्षणात् । तावत्तत्र विभुं ददर्श
सहसा नि.प्राकृताकारिण कुडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायंभुव
श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमन नो धर्मकर्मार्जनं (न स्नानं) न
विलेपन न च तपो ध्यानं न दानार्चनं । नो वा सन्मुनिदर्शनं
(न) ' ॥७१॥ तत्कुडमध्यादथ निर्जगाम श्रीमीयकस्यागमनेन
पद्मा । श्रीक्षेत्रपालस्तदथाम्बिका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-
गेंद्र ॥७२॥ यदावतारमकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वरः । तत्रा नागहृदे
यक्षगिरिस्तत्र पपात स ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं
लक्ष्मणब्रह्मचारिण । तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम
॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत् । सा पुत्रं भर्तृसौभाग्य (लक्ष्मीं
च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र
एव वा । रेवतीस्नानकर्ता य. स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥
धन धान्य धरा धाम धैर्यं धीरयतां श्रियं । धराधिपतिसन्मान
लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्चर्यमिद जनेन विदित
यद्गायते सांप्रत कुष्टप्रेतपिशाच-कुज्वररुजाहीनागगंडापह ,
संन्यास च चकार निर्गतभय घूकसृगालीद्वय काली नाकमवाप
देवकलया किं किं न संपद्यते ॥७८॥ श्लाघ्यं जन्म कृत धन
च सफलं नीता प्रसिद्धिं सतिः ।

२५ सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुदस्वप्नोर्पितः सत्यता स 'दृष्टिदूषित-
मना सद्दृष्टिमार्गे कृतो जै(नें) ' ना श्रीलोलकश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरोः शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकाड किं वा कैलासकूटं क्विमथ सुरपते स्वर्विमानं विमान। इत्थ यत्तर्क्यते स्म प्रतिदिनममरैर्मर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवन-भरणादुच्छ्रितं कीर्तिपुंजं ॥८०॥ पवनधुनपताकापाणिनो भव्य-सुरयां पटुपटहनिनादाह्वयत्येष जैनः। कलिकलुषमथोच्चैर्दूर-मुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव-

२६ (मुला) मान्नृत्यतोचालयोय ॥८१॥ (काश्चित स्था) नकमावर नि बधते काश्चिच्च गीतोत्सवं काश्चिद् बिभ्रति तालक सुललित कुर्वति नृत्यं च का.। काश्चिद् वाद्यमुपानयति निभृत वीणास्वर काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः कैषा श्रुते नामवत् ॥८२॥ यः सद्वृत्तयुत सुर्डासिकलितस्त्रास्यादिदोषोज्झितश्चिताख्यात-पदार्थदानचतुरश्चितामणेः सोदर। सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुर-स्तत्पादपंकेरुहं यो भृंगायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः ॥८३॥ रेवत्या सरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयते भृश

२७ शाखाबाहुकतोत्करैर्न (रसु) रान् पुंस्कोकिलाना रुतैः। सत्पुष्पो-च्चयपत्रसत्फलचयैरानि(र्मले)र्वारिभिर्भो सोभ्यर्चयत्ताभिषेकयत वा श्रीपार्श्वनाथ विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थमैकनकुल यावच्च गंगाजल यावत्तारकचंद्रभास्करकरा यावच्च दिक्कुंजरा। याव-च्छ्रीजिनचंद्रशासनमद यावन्म(हें) द्र पदं तावत्तिष्ठतु तत् प्रशस्तिसहितं जैन स्थिर मंदिर ॥८५॥ पूर्वतो रेवती सिंधुर्देव-स्यापि पुर तथा। दक्षिणस्या मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तम ॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानावृक्षैरलकृता। कारितं

२८ लोलिकेनैतत् सप्तायतनसयुत ॥८७॥ श्रीमन्मा(थु) रसंघेभूद् गुणभद्रो महामुनि। कृता प्रशस्तिरेषा च कवि (क) ठ (त्रि) भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्थछीतगस्य च सूनुना। लिखिता केशवेनेद मुक्ताफलमिवोज्ज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिंगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेनाहडेनापि निर्मापित जिनमंदिरं ॥६०॥ नागिग. पुत्रगोविंदपाल्हणसुतदेल्हणौ । उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भ प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमद्दैव काले विक्रमभास्वत षड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२९ (तृ)तीयायां तिथौ वारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (स) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३ कांवारेवणाग्रामयोरतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं वणसीहाभ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ सहुवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायतााग्रामीय महंतमलींबडिपोपलिम्या दत्त क्षेत्र डोहलिका कछुवोझोलिग्राम सगुहिलपुत्र राध्याहडमहतममाहवा—

३० (भ्या द) त क्षे (त्र) डोहलिका १ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादिभि । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फल ॥छ॥

[इस लेखका निर्देश जै० शि० स० के तृतीय भाग मे क्र० ३७४ पर हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नही दिया गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोमें साभरके चौहान राजाओकी वशावली चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओके नाम है । इनमें अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये थे—पृथ्वीराज (द्वितीय) ने मोराझरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वशावली विस्तारसे ५१वें श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है —

प्राग्वाटवशीय वैश्रवण (इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोमें मन्दिर बनवाये) — उसका पुत्र चच्चुल — उसका पुत्र शुभकर—उसका पुत्र जामट (इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया)—उसकी दो स्त्रियोसे दो दो पुत्र हुए — आम्बट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल (इनने

नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया) – लक्ष्मटके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु – देमलके पुत्र दुद्यक, मोमल, वीगडि, देवस्पर्श, सीत्रक तथा राहुक– मीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया – उसकी स्त्रियां नागश्री तथा मामटा – नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल – मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर – उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण। इनमें मीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया। मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है। कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विन्ध्यवल्ली नगरमें थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया। तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया। इस स्थानको वरलाडका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है। यहाँके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है। लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे। इस लेखकी रचना माथुर संघके महामुनि गुणभद्रने की। इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया। यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ संवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ। अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोंका विवरण दिया है।]

(ए० इ० २६ पृ० १०२)

२६६

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संवत् १२२७ = सन् ११७१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें शंख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा। इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है। समय संवत् १२२ (७)।]

[रि० इ० ए० क्र० (१९५०-५१) १६१]

२६७

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९(४) = सन् ११७३, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन संवत्सरका है। इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोंने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया। उस समय बनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था।]

[रि० सा० ए० १९३४–३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२]

२६८

बोगाडि (माड्या, मैसूर)

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलचक्र यदुवंशवार्धिवर्धनचन्द्र सोमसुजं ललना-जनकामाभिरामन् बल्लाल ॥ दिग्गिभंगल्लु मदविहृलगल मल्लंकल्लु कूर्मनिन्तोर्मेयुं भोगभीयं भुजगाधिपं बहुमुख सारल्कु पार्सग-मेन्दुगुणोदग्रन्यसप्रलक्ष्मालसद्दोर्दण्डदोळ् संतोष मिरो भूकामिनि यिर्दल् आपदुलदि बल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं मानसरूपादुर्दविन भुवनजन मान्तोन्नतकनकाचलन् आनतरक्षैक-दक्षरत्ननिधानं ॥ महागमन्त्रकमनीयालंवितसुरराजपूज्यचरणा-क्यन् एनल्तु सचितकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् एनिसि

२ माचिराज नेगल्दं ॥ चतुर्विं कामन(न)र्थिगोव गुणदिं कल्पाद्रिय हेमाचलम चारुचरित्रदिंदुदधिय गाम्भीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मनिंदनं विभवदिं गेल्दिदंना माचिराजनन् आर्भंण्णि (सल्लापंर् ई) विश्वंभरामागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मावं बल्लय्यन् अय्यन् ई धरेगेल्ल काव गुणदिन् आतन् अदाव गुणगणदिन् आतन् पुणेयप्पनं ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-मार्थनं कविबुधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगलल्के बल्लर् आर् बल्लय्यनं विरिदवन् ईयलु बल्लं सरणेंदडे करुणदिंदे कायलु बल्लं पुरुषांतरमं बल्ल परिकिपदन्तल्ते·

३ ल नाढं बल्ल ॥ परकान्ताऊकजालकक्के पर···दाराहरलक्के पानतरोत्तुगस्तनद्वन्द्वसुंदरमंगक्के परांगनाभुजलतासंश्लेषणक्री-डिसं निरत श्री · बलदेव निदं परिहृतपरदार दीनांधनाथ··· विदितविशदकीतिविश्रुतोदारमूर्ति स जयतु बलदेव श्रीजिने-न्द्रांघ्रिसेव· ॥ अन्ता बल्लाकमहीकांतन वरमन्त्रिवल्लभं बल्लय्य सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकम ओ(ग)बदिय बसदिगे बिह ॥

नीचेकी ओर

४ होरवार ओकवाक मग्गदेरे काकबोवनहल्लिय थिनितर मत्तंतु मनेसुक नेरे मलवत्तियसुंक विनित ॥ ··॥ वनपालम सुक-वनितं मनुभार्ग मदनमूर्ति विभु बल्लय्यं मनमोसदु भोगवम्मदि-योलु जिनपूजेगे भक्तियिंदिदा

५ दिदिन्तिदनेय्दे काव पुरुषंगायुं जयश्री टं कायदे काव्य पापिगे बारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाध्यरं कोन्दुर्गोदयशं पोर्दुगुसँदु सारिदपुदीशैलाक्षरं घात्रियोल् ॥ विषं न विषमित्याहु· देव—

६ स्वं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा· षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमिः ॥ मंगल

७ सामान्योय धर्मसेतुर्नृपाणां काले-काले पालनीयो भवद्भिः सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥ स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वर त्रिभुवनमल्ल वीरगंग बल्लालदेवरु दोरसमुद्रदल्लु सुखसंकथाविनोददिं राज्य गेयुत्त विरलु तत्पाद-पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लय्य शककालं सासिरद् तोभत्तैदनेय विजयसंवत्सरद कार्तिक शुद्ध पंचमि सोमवारदंदु कालवोवनहल्लिसहितवागि बोगवदियल्लुल्ल समस्त-सुकृत श्रीकरणजिनालयद श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु श्रीमदकलंकदेव(सिंहा-)

८ हासनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रभस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु

(इस लेखमे होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लय्य-द्वारा भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलंकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है। यह दान कार्तिक शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सर,के दिन दिया गया था। हेग्गडे वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका भाव (ससुर या चाचा था)

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १५०]

२६९

सोगि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

१२वी सदी, कन्नड (बोरप्पके घरके आगे एक शिलाखण्डपर)

[इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक कृ० ५, गुरुवारको किसी जैन संस्थाको भूमिदान दिये जानेका निर्देश है।]

[इ० म० बेल्लारी २३७]

२७०

चिक्कहन्दिगोल (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयसंवत्सरमें शान्ति-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है। इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदास' हित्तिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई० १५० पृ० १२]

२७१

कलसापुर (कडूर, मैसूर)

शक १०९८ = सन् ११७६, कन्नड

१ (घिस गयी है)

२ कैवल्यबोधेन्दिराधाम षोडशतत्त्व(तीर्थ)कर्तृं विमलज्ञानाहिय मरसुखारामं माळ्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-

३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसळवंशाय प्रतापार्जितकीर्तये। यदुवंशनृपान भूभृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्दोडे ॥ सरसीजोदरनाभिपद्मजनज तत्पुत्रनन्तत्रियत्रिरुहांदूभूनबु-

५ धं पुरूरवने तज्ज तत्तनूजायुवायुरपत्य नहुष ययातिमहिप तत्सन्मनं नरेश्वरना-

६ तं। यदु तत्कुल सळनृपं लोकोत्तमं पुट्टिद। (३) यादवरोळे होयिसळवेसराद्दु सळनिन्दे हुलि-

७ य सेळेयुण्डिगेयाद्दु चिह्न वग्मन्नाद्दु सळे शशकपुरद वासन्तिकेयिं ॥ (४) सळनृपनि व-

८ लियिं यदुकुलदोल् पलम्बरोगेदर् अवरन्वयदोल् । यलवद्-
विरोधिकुलिश जलिधिमिदनेसेयेवि-

९ नयादित्य ॥ (५) घनमार्गानुगत जगतप्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-
प्रतापनियुक्त रिपुभूपमन्तम-

१० समेत सज्जन नसन्तोषकर स्वयन्भुजनचक्राह्लादक पुट्टिद
विनयादित्यनृपाल-

११ क यदुकुलोत्तुगोदयाद्रीन्द्रदि ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुक-
वधुवेनिसि सिरियोल्-

१२ वाणियोल तनगे केलॅयोलन्दु युवजनवेने केलियव्वरसि
सरसिजाननेयेसेदल् ॥ (७) मति केलियव्वरसिगमा-

१३ विनयादित्यनृपनिग पुट्टिदनुद्धतवैरित्रपदलनोद्यतमयनयशौर्य-
शालियेरेयंगनृप ॥ (८)

१४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगर्वित भू ''निरल्यं
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-

१५ हैकरक्षावनधिप्रिय समस्ताश्रितनटनटोसिन्वमू कलनिव निजत-
सत्यवाणिमुखमणि मा-

१६ पुरनिर्मलावोधसुतं हिमरुचियन्ते सेवादरविय ‘'ालयं सरसिजम
मनोरमकुसुमंगलं कव-

१७ नयं मदन विदियागि ताने तोयदस्मृतादिनेदर्श निर्मिसिदनेवदे
केलदेय भूरमणन कान्तेय पेरत-

१८ नेव्वदिर् एचलदेविराणिय ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे
जनियिसिदरेसेव बल्लालमहीकान्त विष्णुमहिपननन्तगुण

१९ नृपवलामनुदयादित्य । (१०) अवरोधद्रुमनागियु बुधनिकाय-
स्तूयमानि श्री विशेषोन्नतियिन्दमु –

२० समनेनिप्पं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदप्ततारिदर्पापहं
भुव 'विभव' दा –

२१ श्रीविष्णुभूपालकं ॥ (११) जनियिसिदं विष्णुमहीशन ल॰
विदनुपम नरसिंहावनिप नतरिपुभूपाल-निकायलला —
२२ टतटविघटितचरण देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदोलरेत्तु पट्टमहि-
षियेँ देचलदेवा लसल्लतागि
२३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिभाधरे पाटलकण्ठि कोकिलारावे॰ राजीव-
नल॰॰ य । यनेये तालूदिदल् ॥ (१२) कालनिभप्रत्त —
२४ जनरसिंहमहीपतिग मदमलालसयानेकम्बुनिभकन्धरे येचल-
देविग॰ श्रीलक्लनेशन्नानेने पुट्टिदनूर्जित —
२५ पुण्यमूर्ति वल्लालनृपाल समदवैरिमहीभुजदर्पभंजन ॥ (१३)
क्रा॰॰॰वादिधरावनितेय चातुर्यदि नोढी (?)
२६ निरमणि रमणीशकुलम श्रीयोलायशनुरत्यागदिं वन्दिवृन्द-
मनित्यानतसत्यदि चरितदि सन्ततमु तन्नोल् क्रमदिं निश्चल —
२७ मपूर्वं तलेद वल्लालभूपालक ॥ (१४) निजपादानत दित-
लक्ष्मीवल्लभ - ला॰॰मूर्ति विबुधाराध्य
२८ जगन्नेत्र मीरजमित्र स॰॰ दे कान्तनेनिप प्रतापदेवं समस्त-
जगद्वन्द्यपदारविन्द॰॰ रारा॰ नल ॥ (१५) पुरहू (त)
२९ ख्यातभोगं शिखिनिभवनतेज यमावार्यशौर्य नरवाहातोप॰॰वायु-
सत्रं धनाधीश्वरसं —
३० घर महेशप्रकटितमहिम लोकपालप्रभावान्तरनादं दिग्वधूमण्डन-
विशदयशं वीरवल्लालदेव ॥ (१६) भृगुगोत्रं व॰सराज
३१ हयदिनिभसमारूढप्रौढियिन्दं मगदत्तं येपदिन्दं द्विजपति कं
सत्वगुण प्रभूति
३२ राघवन् इनतनय त्यागदिं वादिभूपाल नदिदतप्रतिमनेनिमिद
वीरवल्लालदेवं ॥ (१७) स्वस्ति समधिगतपच —
३३ महामण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-
द्युमणि मम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकोंगुणिव —

३४ नवामिवुच्छगिहानुंगळगोण्ड भुजबलवीरगंगनमहायद्धर् निश्श-
कप्रताप होय्सलवीरबल्लाळदेवरमर् ह्रारमसु –

३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिर तत्पादपद्मोपजीविगळ् गुनिमिद
श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडेमय्य नति

३६ द्वचर गुरुकुलान्वय क्रममेन्तेन्दोडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मक्रमल-
सोऽविनन्तोप्पुगु मूलसंघ कमर्नायं

३७ कोण्डकुन्दान्वयम नरगण देशि' गच्छ क्रमदि सत' "वर्धं '
गेसेये श्रीवधूटीरम –

३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेद महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्य
नादं विधृतगुण वृपनन्दि मुनि कायो –

३९ त्सर्गोण्डुपवासदिन्द चतुर्मुखाख्येयनान्दम् । (१९) अवरम-
शिष्यरोळश्रन्सर्टि द्विजराजिकुमनवाङमददर्पद –

४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनु श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-
यशश्चन्द्र जिनागमाम्भोनिधिप्रवर्धनचन्द्र जिनमुनिकु –

४१ वलयचन्द्र' जिनचन्द्र विबुधनिकरराकाचन्द्र' ॥ (२१) निरवद्य-
यशोधनदर्शनचरणयुतर् माघनन्दिसैद्धान्तिकदेवरशि –

४२ ष्यरार् धामाश्रितनिरुपमधर्मेन्द्र श्श्वनन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)
सत्यधर्मर संहितावर्णिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसशुद्धि –

४३ र्यि क सैद्धान्तिकतत्त्वनिर्णयवचोविन्यासर्द श्रुतिसस्वन्द '
तयनार्थशास्त्रमरतालङ्कारसाहित्यदिरुद्दानूह

४४ बालचन्द्रमुनिर्य विद्याधर (२३) चक्रे श्रीमूलसंघ' पद्माकर-
- राजहंसो' 'निपुणप्रवरावतंस' जीया –

४५ जिनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः कुधा. । (२४) यन्तेनिसिद
श्री इलाचार्यर गुरु देशी –

४६ उज्यान्वयवारिधिचन्द्रमनु ' ग् यहंन्य ' चरितनुं वरजैनसमय-
कुमुदेन्दु धन्यायार्जितधनम –

४७ नेयरे कवडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित कवडेमय्य तन्न " पूज्यपशःमङ्गुणि केतिसेट्टियुमुदात्त –
४८ प्रणयरोचिसेट्टिगमन्ता पूणुमसेट्टिगामिलासंस्तुत्य टेकव्वेग प्रियपुत्र प्रभु दाम" सम्पूर्णमव्योदय
४९ अनुपम " सेट्टि " यटा कान्ते " अनूनशौर्य निधि
५० " नामादि" अपूर्व " जनविनुत लक्किसेट्टिय वनिते सु –
५१ " डासे" निय तलेडल् ॥ (२७) अवरात्मीयांन्यपुण्योदय
५२ " निखिलगुणव्कास्थान वमन पुण्य कुलवधु टेक-
५३ "ट्टितोडावलङ्गोनिचामं ॥ (२८) नीतिलता दानधर्मपयो-
५४ धिचन्द्रम राहिमनु " बंड्डानकल्पभूज विरो-
५५ तनुजोव्वत णिमेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर भुजबलवीरगंगनम्हायशूर नि शंकप्र-
५६ ताप होय्सलदेवरमह शकवर्ष १०६८ नेय दुर्मुखिसंवत्सरद उत्तरायणसङ्क्रमणदोल् अमरदानव-
५७ मानुवल्लि " श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय तां माडिसिद श्रीवीरवल्लालजिनाल-
५८ यद यकंलाहारदानक्क खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु विश्वपं गेय्यलबर
५९ " गणद " तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य वालचन्द्रसिद्धान्त-देवर्गे धारा-
६० पूर्वक वालचन्द्र " होसनाडोलगण कोरटिकेरेयनदर कालत्ता-ल्चिगलो-
६१ कनादि "नाचहल्लि मडनड मरियहल्लियोलगाद हल्लिगल सीमासम्बन्धमेन्तेन्दोडे मू-
६२ वनाल " प्पडु - रि - क्कय हलेयिलेय मोरडि तॅकलारडिगेरे नेरिल्य-

६३ ° यन्तोल् वायव्यदोल् नेरिलकेरेयोलगण माविनमर ईंवर अरगल्ला °
६४ वडसु नगर गुन्ता वायव्य
६५ लाल तिगुल तेलुग कर्णाटग देश मुख्यमाद सु-
६६ ° द्रद नेरंपुलिय चिकहरिनय केतलदेविय गद्दिय वाचलेश्वरदे सम-
६७ स्तनख श्रीशान्तिनाथदेवर 'कर कैंकर्यक्के विद्वायमेन्तेन्दोडे होरमल नाडोल
६८ त्ति हेरिंगे हागवेरडु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्दु कुदुरे
६९ कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्दु श्रीगन्धद माळवेगे
७० हणनख वडिय मळवेगे हण नाल्कु येत्तिन मळवेगे हण वोण्
७१ हसुबेगे हाग वोन्दु पडसालेय गद्दिगे वरिसके हण वोन्दु आविडिव
७२ रल देविय गद्दिगे वरिसक्के हाग वोन्दु निच्च सेडिवत्त ववसद हेरिंगे मान वोन्दु
७३ मेलसु वड हेरिंगे मान वोन्दु गणदोल् धारयर
७४ गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणर्गलंकारसमन्वित शतसहस्र-कपिलेगलं
७५ क्षेत्रदोलनिवर् ब्राह्मणरुमननितुकपिलेगल कोन्द महापताक-नक्कु परिपाकिपु
७६ गन्ते वर ' निरिरं धरेगे शिलाशासनाक्षरावलियेसंगु ' ॥ स्वदत्ता
७७ हरत वसुन्धरा षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टाया जायते क्रिमि ॥ सामान्योयं धर्मसे –

७८ ' 'कनीयो मवङ्कि । सर्वानेतान् मात्रिन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते राम –

७९ य स्थलद चतुर्स्सीमेय निर्वेगनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय राजवीढि मोडल्

८० 'य पलेयलु पश्चिमक्के नालविप्पत्तु वडगण मोडलोल तेंकलु अ '

[यह विस्तृत लेख दुर्मुखि सवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था। इसके प्रारम्भमें होयसल वशके राजाओका कुलवर्णन वीरवल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है। इनके समय देविसेट्टि नामक वनिकने वीरवल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया। मूलसंघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ। इस मन्दिरके लिए राजा वीरवल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोका उत्पन्न अर्पण किया था। बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र सैद्धान्तिक – वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु बालचन्द्र इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६]

२७२

कुब्बंगि (तुकूर, मैसूर)

१२वी सदी (सन् ११८०) कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-देशीगण-पनसोगे शाखाके नयकीर्तिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने बेलूरमें की थी। (समय लगभग ११८० ई०)।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३]

२७३

पाटशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विश्वावसु सवत्सरका है। इसमे राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका उल्लेख है। [रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२]

२७४

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु सवत्सरमें पुष्य शु० २ बुधवारका है। इसमें कुछ सेट्टियो द्वारा अष्टविधार्चनके लिए नोम्पियबसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है। कुछ शिल्पकारो द्वारा शान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५]

२७५–२७६

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वी सदी, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमे चैत्र ब० १, मगलवार, श्रीमुख सवत्सरके दिन लिखा गया था। चन्द्रकीर्ति भट्टारकके शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेद्दके समाधिमरणका इसमे उल्लेख है। यहीके एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७]

२७७-२७८

बम्बई (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख भायखलाके जैन मन्दिरमें है। कदम्ब राजा कावदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर संवत्सरमें भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागय्य-के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य समाधिलेखमें दी हुई तिथि इस प्रकार है – भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम संवत्सर।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७]

२७९

नागपुर म्युजियम (महाराष्ट्र)

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है। माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा वाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवतः जैन आचार्य थे। तिथि संवत् १२४५ दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५०]

२८०

चिलिगिरि रंगनबेट्ट (मैसूर)

शक ११**१२** = सन् ११९०, कन्नड

१ शुभमस्तु श्रीमत्परमगंभी-
२ रस्याद्वादामोघलाञ्छनं जी-
३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं
४ जिनशासनं स्वस्ति श्रीप्र-
५ तापचक्रवर्ति होयिसल श्रीवी-
६ रबल्लाळदेवरसरु पृथुविरा-
७ ज्यं गेय्युत्तिरलु सकवरुष
८ १११२ साधारण संवरछ चै-
९ त्रसुद्ध पंचमि बिहि
१० ...

[यह लेख ग्सनवेट्टके समीप जंगलमें श्रवणनअरे नामक पाषाणपर खुदा है। होयसल राजा वीरबल्लाल (द्वितीय) के राज्यमें वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक ११११, साधारण संवत्सरके दिन यह लिखा गया था। लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नहीं हो सकता। किन्तु प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निषिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है।]

[ए० रि० मैं० १९३८ पृ० १९३]

२८१

होसनगर (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं

२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं

३ स्वस्ति श्रीमत्कालदेवरमर-

४ .

५ जेय उत्तरोत्तराभिरद्धमिरलु सक वरुष

६ १११२ नेय सर्वधारिसंवत्सरद

७ ज्येष्ठ सुध एकादशि वड्डवारदलु गु-

८ णसपन्नरप्प पुष्पसेनदेवर गुड्डि श्री-

९ मनु सर्वाधिकारि बम्माचारिय हेण्डति ह-

१० व्वककलु सुरलोकप्राप्तेयादलु

[इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि संवत्सर है (यह तिथि अनियमित है क्योंकि शक १११२ साधारण संवत्सर था)। उक्त समय होयसल राजा बल्लाल (द्वितीय) का राज्य था। सर्वाधिकारी बम्माचारिकी पत्नी हव्वकाके समाधिमरणका इस लेखमें निर्देश है। इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२]

२८२

सोमपुर (मैसूर)

शक १११४ = सन् ११९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासनं जिनशासनं ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता –
२ रत्नपीठं हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देव (।) जयति तदनु
शास्त्रं तस्य यत् सर्वमिथ्यासमयतिमिरघातिज्योतिरेकं
नराणां (॥२)
३ 　धात्रिंगे सलनेम्बनाग पुलियं पोय्दा सल पोय्सल यांगं
४ 　पेंलम्बरु राज्य गेयुत्तिर्पिनं । (३) विनयप्रतापसम्पद्वी जननाथो-
चितचरित्रयुगदिं जगम जननयनदेनिसि नेगल्दं विनया-
५ दित्य समस्तभुवनस्तुत्य । (४) आतगतिमहिमं हिमसेतुसमा-
६ ख्यातकीर्ति मन्मृतिमनोजातं मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने-
रेयंगनृपं । (५) बल्लिदरवनीपतिसम्पादितधर्मार्थ-
७ कामसिद्धियोलवनीवल्लभरातन तनयर् बल्लाळ विष्टिदेवमुदया-
दित्य । (६) भूवररनुगलोलं तां माविसे मध्यमनदागियु
८ नृगुणभद्मावडिनुत्तमनाद माविसवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपाल ।
(७) मलेयं माधिसि माणदने तलवनं काचीपुर कोयतू –
९ र् मलेनाटा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमार्कोंगु नन्गल्यिु-
चळगि विराटराजनगरं बल्लूरिवेल्ल दुर्वारदोर्बलदिं
१० लीलेयिं माध्यमादुवेणेयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८) येन-
लाल्द चूडामणि • हारमेने
११ किन्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुंग •फणि • गुणमणि
१२ मम्यक्तचूडामणिः आ विष्णुवर्धनंग • येनिसिद लक्ष्मादेविगमुद्-
भविसिदनी भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

१३ सिंहं ॥ (९) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वदिं गण्ट-
वातं जुडिवातंगेननेम्बै प्रलयसमयदोल् मेरेय मीरि वर्पा
कडलन्-

१४ न कालन्नन्न मुलिद कुलिकनन्न युगान्ताग्नियन्नं मिडिलन्नं
सिगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनन्नर्नो नारसिंह । (१०) रिपुसर्पदर्प-
दावानलवहलशि-

१५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंझासमीरं
रिपुनागानीकताक्ष्यं रिपुनृपलिनी-

१६ षण्डवेतण्डरूप रिपुभूभृद्भूरिवज्र रिपुनृपमदमातङ्गसिंहं नृसिंहं ॥
(११) " पोगल्द तीव्रप्रताप" गिदु पोगल्दुद मा–

१७ ण्डोड शत्रुगात्रप्रगलद्रक्तप्रवाहप्रवलगुरुस्नानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-
सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमु निचिक–

१८ वर्प पोगल्तिर्कुं नृसिंहप्रबल भुजबकाटोपम भाविगेल्कं ॥ (१२)
आ त्रिभुवन पट्टमहादेविगं सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-

१९ गिलादेचलदेविगे बल्लालदेवनुदयगेय्द ॥ (१३) कलिकाल-
क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोलें पोर्न्ह्न् पेसि बेसत्तलव-

२० लिद महाकान्तेय रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने बन्दिन्तवतरिसि-
दवोल् वीरबल्लालदेवं कुलजात्याचारसार नृपवरनुदयगेय्द-

२१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधिय विवेकनिधियं ब्रह्मण्यन
पूर्णपुण्यननुदामयशोथियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-

२२ नसस्तुत्यनन्नुद्भवद्वितरणश्रीविक्रमादित्यन मनुजेश्वर् मलेराज-
राजननदं बल्लालन पोल्वरं । (१५) डरिगण्नि वेन्द चण्डा
तिपुर-

२३ मुरिदवोल् सुत्तुरिल्दासागां रि दन्दर भगिक धन्धग भग
चेटे चेल्चेल्चिटिकगट्टु पोर्टेम्ब रव कैगण्मे दिक्पालकर् अलवलिय-

२४ ल् वीरवल्लालनिं (डिं) दुरिकनुच्छगियोडे रिपुनृपति पेल-
लुण्टे ॥ (१६ रणरंगागणशूद्रक नडेदोडिन्तुच्छंगि नुचंलिच
२५ मनूक्षणदि नोडे विराटराजपुर वोत्तुत्तायनु नुन्नाम संवुणशापोग-
नमान्नक नेरेदरिल्लेन्दन्तु वल्लालदोर्गुणव वाण्णिसलण्ण
२६ वल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ (१७) विलयाद्रि येनिप मेवुण-
वलन 'निचयाविल मकराकुलवी यदुकुलपरितरग-
२७ तवायतु बन्दु" " ॥ (१८) कन्दनदप्तारिरकन कूडे हयखुर-
ध्रिन्दा ' गेल्गिरोत्तगद या दोल् मुम्पेण पेणन वेत्ति-
२८ 'भूनालि पुण्यराशीकृतविपुलतल वीरवल्लालदेवं ॥ (१९)
२९ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ राजाधिराजपरमेश्वर
परमभट्टारक द्वारवतीपुरवराधीश्वर वामन्तिकादेवीलब्ध-
३० वरप्रसाद रिपुसम्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-
चूडामणि मत्रुक्षत्रिय-
३१ मानमर्दन वीररिपुदर्पशपंसज्ञानिल श्रीमद्वीर्य पराक्रमैक-
प्रभाव । निरुपमात-
३२ स्वंप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनमस्याशीर्वाद । सुद्गर-
समरकेलिमम-
३३ क्त रिपुविजितादित्यप्रताप । मप्तांग विलास सरस्वती
' स्तम्बेरम राज-
३४ कण्ठीरव । पाण्ड्यकुल ' दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।
'''सिंहलसपालकुरगकुलपलायनकार-
३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड'' । सकलरिपुनृपकुल इत्यादि-
नामादि-
३६ समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत्सार्वभौम सग्रामराम मिल्लमदिशा-
पट्ट ' धरित्रीपट्ट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड

३७ तलकाडु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-बनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरे-हल-
सिगे-बेल्वल-तकवलि-तळियूगगोण्ड भुजबलवीरगं-
३८ गनेकागर्वार सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदङ्करामनसहाय-
शूर निश्शंकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरबल्लाळदेवनसंख्यातनिजचतु-
रंगबलं
३९ बेरसु सेवुणबलमेल्लमं वीरविलासनेम्म पट्टमानदिं तोल्दुळदुलियं ।
सेवुणबलजलधि-वडवानलनेकागदि सप्तागसा-
४० म्राज्यमनळवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-
मागि सुखसकथाविनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे
४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दोरसमुद्रदोळु श्रीमद्वादीभसिंह
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरसवर गुड्डगळ् मा-
४२ रिसेट्टियु कव्विसेट्टियु भरतिसेट्टियुमिन्तो नाल्वरु नानादेसियुं
नगरमु श्रीमदभिनवशान्तिनाथदेवर भव्यजिनालयमेनि-
४३ प नगरजिनालयम माडिसिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यंचलियु-
मेन्तेन्दोडे(।)श्रीमद्द्रमिलसंघेस्मिन् नन्दिसंघोस्त्य-
४४ रुगल(।)अन्वयो भाति निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगै·(॥)श्रीवर्ध-
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुत्तिह्लि गौतमस्वामिगळिं भद्रबा-
४५ हुस्वामिगळिं भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगळिं·· सुमतिभटारकरिं-
कलंकदेवरिन्द वक्रग्रीवाचार्यरिं वज्रनन्दिगळिं सिंहनन्दिगळिं
परवादिमल्लरिं
४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-
४७ वर्ति श्रीवादिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिषेणमलधारिस्वामिगलिं
४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्ग विजयविलास । तद-
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति-पद्मम-

४९ लाराधनालब्धबुद्धि सिद्धान्ताम्भोनिधान मृतास्वाद···दीक्षा-
शिक्षासुरक्षा' ''कचाक्पातिनिपुण सन्तत मव्यसेव्य सोयं
५० दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (॥) तदनन्तर
सुरराजेन्द्रमदेभदन्तचयदोल् दिग्गामि ' मन्दिरदोल् म-
५१ गंकराल वि लतमो हिमाद्रिकूटंगलोल् धरणीन्द्रोदग्रकिरीटकूट-
तलदोल् वाग्देवि येन्दरिवल् श्रीमुनि वज्र-
५२ नन्दिय गभीरोदार वलसित ज-
५३ गल कोडिनोल् पोदल्देसेदु मन्दरमनेय्दे ' यशोलतेये मुनि
वज्रनन्दिय
५४ द्रुगडलम्ररुवलि वज्रनन्दिव्रतिया । ततस-
५५ मयदोल् कुमारनन्दु ममस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु प्रताप-
चक्रवर्ति वीरबल्लाल
५६ देवनं काणल्वेडि बन्दिदंह्लि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव ममष्ट-
विधार्चनेयुम पूजेयुमं ऋषियराहारदानमुमं
५७ कण्डु पिरिदुं सन्तस मादि देवर श्रीकार्यक्के नाडगौण्डुगल्
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
५८ वर्ति वीरबल्लालदेव बन्दु शान्तिदेवरष्ट-विधार्चनेगं खण्डस्फु-
टितजीर्णोद्धारक्क ऋषियराहारदानक्कवागि
५९ शकवर्ष १११४ नेय विरोधिकृत्संवत्सरद उत्तरायणसंक्रमण-
दन्दु वज्रनन्दिसैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं नाड मैसेनाड
६० गुम्मनवृत्तियोलु मुम्पण्डियं कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-
न्यद तारेना-
६१ ड सन्तेनाडा गण्णिनाड नडदु येलुवलद सीमेय नट्ट कल्लु
अह्लि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो —
६२ रडि मोरडि चचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदलुरिद-
वालिकेय लविनहल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गद य मोरडि चचरिवलु मत्तवी कडलेयहल्लिय नैरुत्यद वलुरेय कणि--

६४ यकलु खंडेय 'कोल्वूरमल्ल मत्तिय मरन 'गल्लुतट्टु मत्तवी कलेयहल्लिय वायव्य--

६५ द वोरेनाड हल्लियबीडिन त्रिसन्धियोलु ' 'कर्गलमोरडि अलि चंचरिवल्ल तेन्तट्टु वटवृक्ष अ

६६ लि मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय नट्टुगणेय कुडिसु इन्तिदु सीमाक्रम। मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् पर दान ॥ स्वदत्ता परदत्तां वा यो

६८ हरत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि'

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओंकी वंशावली वीरवल्लाल (द्वितीय) तक दी है। वीरवल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे। इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी। यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोंने मिलकर बनाया था। मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था। वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे। इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतबलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिषेण, श्रीपाल (द्वितीय)। श्रीपाल त्रैविद्यके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे। वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नजेंदेवरगुड्ड नामक पहाड़ीपर है। वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७]

२८३

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

शक ११२७ = सन् ११६०, कन्नड

[इस लेखमे तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है। शक ११२७ का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५]

२८४

ताडपत्री (जि० अनतपुर, आन्ध्र)

शक ११२० = सन् ११९८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[इस लेखमें सोमिदेव तथा काचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताटिपर ताडपत्रीमे रहता था।]

[इ० म० अनन्तपुर २०३]

२८५

वेलगामि (मैसूर)

सन् ११९९, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लिमण दण्डनायकके अधीन हेग्गडे सिरियण्ण-द्वारा मल्लिकामोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६]

२८६

कान्तराजपुर (मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघ-
२ लांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
३ सन जिनशासन ॥
४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदङ्कराम होयसलवी-
६ रवल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददिं पृ(थ्वी) राज्य गेय्युत्तु-
७ त्तमिरे ॥ तत्श्रीपादसेवकरु कव्वहिनवृत्तिय प्रधिष्ठा-
८ यकरु महापसायतरु परमविश्वासिगल् सामिसन्-
९ तोषकरु सेवुणकटक सूरेकाररु शरणागतवज्रपंजर-
१० रुमप्प बेहूरमोतल सुग्गियनहल्लिय अरकेरेय बां-
११ केयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
१२ चाचिहल्लिय बोकयनायक बेल्लूर माचयनायक मोन्-
१३ गलाचार्य केसवेयनायक चलुवन माचयनाय-
१४ क अरसयनायक बरजियन माचयनायक मसणेय-
१५ नायक कोलेयादिनायक बचन मारेयनायक कोलेयत-
१६ न माचयनायक बलेयन मारेयनायक हुलवनाय-
१७ कन मचेयनायक बोम्मेर कयिदालद बयक कसविय-
१८ नायक हेग्गडेनायक मलेयनायक मारदेव चालना-

१९ यक काचिनायक पम्मणनायक माचियनाय (क)
२० माबुकनायक चिकयनायक माडियनायक बडचर बिज-
२१ पनायक बङ्कुगेयनायक मनियमनायक हं-
२२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
२३ क जबनेयनायक मैलयनायक बैजयणनायक मा-
२४ केयनाय (क) बमेय नायबेयनायक गुंडयनायक
२५ मारलमनायक मल्लेयनायक हरियबूर माचगौड मि-
२६ गगौड मोमगौड बडियगौडन माडिगौड उत्तगौड बयचिगौट
२७ मारगौट माडिगौट अबिगौड हलुवाडिगट्टन कुडंय के-
२८ चगौड मकरनायकर नायक मल्लिगौड कंसिय-हल्लिय बा-
२९ हुबलिसेट्टि पारिसेट्टि त्रिजसेट्टि अवर पुत्रक बल्लगौड ब-
३० सवगौड माचेय भरतय माडय आलिय माचयडत्त-
३१ गौडन मारय पापय चिक्कम्म बिरिगेट्टिय मग आकगौ-
३२ ड चिकगौड मांमगौड चिण्णयगौड मारगौड कसवगौड श्रीमन्महा(मं)ण्-
३३ डलाचार्यरु राजगुरुगलु नयकीर्तिसिद्धान्तदेवर शिष्यर नेमि-
३४ चन्द्रपण्डितदेवरु बालचन्द्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड्ड-
३५ गलु बाहुबलिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एक्कोटिजिनालय-
३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनेगे बूर मुन्दे आरिय मार-
३७ यनायक कट्टिसिद केरे आ कीलेरिय गद्दे आ मूडलु सुत्तलु नट्ट
३८ बेद्दलेय हिरियकेरेय मोडलेरि-
३९ गद्देय श्रीमुरासबल्लगड बयि

४० बोम्म नातिवेय सा सेनबोव सामन्त

४१ पूर्वक माडि विट्ट दत्ति यिधर्मव प्रतिपाळिसिद् गगे

४२

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसवत्सरमे लिखा गया था। बाहुबलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाब तथा अन्य कई नायको, गौडो तथा सेट्टियो-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इनमे नयकीर्तिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा बालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे।]

[ए०रि० मैं० १९२७ पृ० ४५]

२८७

वेरावल (सौराष्ट्र, गुजरात)

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

१ प्लवम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयाद्भमीष्टससिद्ध्यै मु-

२ पाटकाख्यं पत्तन तद्विराजते ॥ ३ मन्ये वेधा विधायैतद्विधित्सु पुनरीदृश-

३ ॑रैद्रैश्चंयमत्रजैर्यत्र लक्ष्मी स्थिरीकृता ॥५ तन्निःशेषमहीपाल-मौलिघृष्टाह्रि

४ र्मो नृप.। तेनोत्खातासुहृन्मूलो मूलराज स उच्यते ॥७ एकैकाधिकभूपाला सम --

५ जिव्रजखुरादत। श्रतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥९ पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--

६ ' रन्यूनविक्रम । श्रीभीमभूपतिस्तेषा राज्य प्राज्य करोत्ययं ॥११ मालाक्षराण्यनम्राणा यो बभञ्ज म--

७ न्नंदिमघे गणेश्वरा । बभूवु कुंडकुंदाद्या साक्षात्कृत-जगत्त्रयाः ॥१३ येषामाकाशगामित्व स्या--

८ '' तपंचकमुज्वलं । रचयित्वाथ जल्पंति येऽन्यन्नियमपूर्वकं ॥१५ कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--

९ ' रीणास्तत्त्ववर्त्मनि तेषां चारित्रिणा वंशे भूरय सूरयोऽभवन् ॥१७ सद्वेषा अपि निर्द्वेषाः सकला अक-

१० भावस्यारुरोह तत् । श्रीकीर्ति प्राप्य सत्कीर्ति सूरि सूरिगुणं तत. ॥१९ यद्वीर्य देशनावारि सम्यग्वि-

११ कश्चिन्नकूटाच्चचाल स । श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्तत. ॥२१ अणहिल्लपुर रम्यमाजगाम-

१२ ' नींद्राय ददौ नृपः । विरुद मंडलाचार्य. सछत्रं ससुखासनं ॥२३ ॥२३ श्रीमूलवसतिकाख्य जिनभवनं तत्र

१३ ' सज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचंद्रो यस्ततोभूत्स गणीश्वर ॥२५ चारुकीर्तियश कीर्तौ ध-

१४ मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-स्ततो गणी ॥२७ ददौ स्म लसज्ज्योति

१५ ' लेपि वासिते हेमसूरिणा । वस्त्रप्रावरणाय-

१६ कीर्तियंत्कीर्तिर्नर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरंगे वासुकिनूपुरशशि-तिलकनेपथ्या ॥३१ तं

१७ ' ति ॥ ३२ समुद्धृतसमुच्छलशीर्णजीर्णजिनालय. । य कृतारभनिर्वाहसमुत्साहगिरोम (णि ॥३३)

१८ च यद्देवगणयनं ॥३५ चान्द्रिनो यस्यटङ्कनखचट्टेपु विचिता । कुर्वते रिगनश्रीका कलक-

१९ ट तीर्थभूतमनाह्निक ॥३६ मीताया स्थापना यत्र सोमेश- पक्षपातकृत् । ग्रामत्रैलोक्य-

२० गदुद्धृत तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिद ध्वजमिपतो निजभुजमुद्धृत्य सक--

२१ पतो मडलगणिललितकीर्तिसत्कीर्ति॰ । चतुरधिकविंशतिकम- द्ध्वजपटपट्टहस्तक-

२२ ॰ मंतर्दीयमद्गोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य इनानपयो- नुलिसमखिल कुष्ट हर्ता-

२३ चन्द्रप्रभ स प्रभुर्नीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासन ॥४२ जिनपनिगृह-

२४ चार्यवर्यो मतविनयममेतं॰ शिष्यवर्गैश्च मार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम- भूपस्य नपाणां द्वात (श)-

२५ कर्णालिघुयशुः । चक्रे प्रशस्ति मनघा (मतिनिष्या) प्रवरकांति- रिमा ॥४५ म १२

२८९

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी।

[इस लेखमें किसी होयसल राजाके सेवक पेर्गडे वासुदेवके पुत्र त्रिभुवन उदयादित्यका वर्णन है। इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वासुदेवजिनबसतिका निर्माण किया था। यह लेख इस समय ईश्वरमन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मैं० १९१७ पृ० ४४]

२९०

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी।

[इस लेखमें शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भव्यों-द्वारा देसिगगण-[illegible] आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारककी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९१७ पृ० ६०]

२९१

कुप्पटूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। [illegible]-पर्वतमुनिका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९११ पृ० ८०]

२९२

माविनकेरे (कडूर, मैसूर)

संस्कृत-कन्नड १२वीं सदी

१ श्रीमूलसंघपनसोगवतीप्रसिद्धदेशीयविदितपु-
२ स्तकचाख्याच्छे । य कुण्डकुंदमुनिवं-
३ शललामभूलूललितकीर्तिमहा-
४ मुनींद्र॰ ॥ तत्पादयुगलांभोजशेखरी-
५ भूतमस्तक जिनदत्तान्वयः स्वामी योभूत…
६ नन्दन॰ ॥ स्वस्तिश्रीशकवत्सरे…
७ पृथ्वीपतिः सो-
८ यं श्रीकलगा-
९ ल्यचाल्नगरे श्रीचं-
१० द्रनाथप्रभो(ः)प्रि(प्री)-
११ त्या साधयदुत्त-
१२ वेन महता विंव-
१३ प्रतिष्ठापितं ॥ श्री
१४ श्रीदेवचं-
१५ द्रदेवरु गे
१६ यि सोहु

[यह लेख स्थानीय बसदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है। मूलसंघ-देशीयगण-पनसोगा शाखाके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। जिनदत्तके वंशके किसी राजाका इसमें उल्लेख है। शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं। लिपि १२वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६]

२९३-२९४

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख शान्तीश्वरबसदिके द्वारपर है। मालवेके पुत्र मलेय-द्वारा यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है। लिपि १२वी सदीकी है। यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१]

२९५

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख रसासिद्धलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। इसमें गुम्मिसेट्टिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है। लिपि १२वीं सदी-की है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० २२६]

२९६

हुलि (जि० बेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती-के शिष्य नविलूरके गोवरिय कल्लिगावुण्ड, तावरे महादेविसेट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२]

२९७

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद बम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी बसदिके लिए पाँच खण्डुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है। मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है।]

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४]

२९८-३००

मनोली (जि० बेलगाँव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वी सदीकी है। यापनीय संघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गंगेवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित वसदिके आचार्य थे।

इसी समयके दूसरे लेखमे मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(र्ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साधा(रण) संवत्सर, ऐसी है।

यहाँके तीसरे लेखमे इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५]

३०१

कोलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाडीपर पाषाणके दीपस्तम्भके समीप

[इस लेखमें आरियदेव, बेलगुलके मूलसंघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४४]

३०२

चेहार (नरसिंहगढ, मध्यप्रदेश)

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

१ ' अं घणोमम सुंदरं
२ सि··· ····· ·······
३ । तिहुअणतिलअ सो-
४ री- शावडस्स अमराल-
५ अ रम्मं ॥ श्रीआण-
६ देवेन गाथा वि-
७ रचिता

[यह लेख सोलखम नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमें एक स्तम्भपर है। इसमें श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ (त्रिभुवनतिलक) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है। इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं। गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४]

३०३

सवणूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधि लेख मलधारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३]

३०४

अग्गिनभावि (धारवाड, मैसूर)

[यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है। बहुत अस्पष्ट हुआ है। लिपि १२वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३८]

३०५-६

मण्डूर (धारवाड, मैसूर)

[यहाँ १२वी सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोंसे सम्बन्धित प्रतीत होते हैं।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६]

३०७

सालिग्राम (मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है। मूलसंघ-बलात्कारगणके माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्बुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त-व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १२वी सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६]

३०८

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमत् परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्य-
नाथस्य शासन जिनशासनं(॥)

२ ओं मेलेनिसिपुंदी मलेगे धात्रियोल किसुवल्लियन्ताद पालिसि सततं मुग्गटिन् द्दविंनेग सिरि
३ पुट्टे पुट्टिद हेरियत्रामेवेंग्गडेगवारन चलमें निजिकब्बेग लोकेयोल् एट्टे चण्णिपुदु पं-
४ गंडे सत्यमनं जगजन ॥ स्थिरने वाप्पमरात्रियिंदधिकगंभीरने वाप्पु सागरदिंदग्गलद-
५ म्तु दानिय सुरोर्वीजकं मारण्दलं सुरराजंगेणेयण्टे कीर्तिपुदु कैकोण्डकरिं सततं
६ धरेयेटलं सले सत्यवेगंडेयोल् औदार्यमं सौयमं ॥ कोट्टपेनंदाद् ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

७ सरणंबु चदर नेट्टने ' डे वज्रि 'पूण्डु कोडिट्ट विरो' '
८ तरिवन् गुन्डोडे ताने कृतान्त यि'' पेगंडे' '
९ आतन मात्र सकल मही 'अवसिल बेनिसि नेगल्दं भूतल
१० ढोलगंसंयं कच्छवेगंडेय' वपु ' य श्रिप्पु
११ नाडे कंसरिय पोदपुं ''भनो''''यनि
१२ सिदं वीरनोल् अवंदु करं नलि' तरिपुदु क' ले पलरं निरन्तरं

तीसरा भाग

१३ पुनं नेगल्द कच्छवेगडेगनुपम कुल' गे ध॥४
१४ यलु विनुत त वंगं
१५ रेनिप्परु' मणिय-
१६ न्तवरीवरीमन य' 'मन्तन जम''''
१७ यल् अखिल भूमण्डलदे 'रयातंग मले नेगल्द गंगेगे गौरिग वेग्म
१८ नो वीरंयनिप्पर् भूतलदोलु' 'यं ॥'''गत्यंतंग्ररि-
१९ य समर समयदोल वस ''मन पोललितर''''आ विसुचिन

२० कुलवधु ता भूविनुत श्रींने नेलेयेनिप्प गनेयर् पलरुं पेण्डिरिनेनेने वर्परे

२१ योलु ॥ आतन किरिय पेण्टति रतियं पोल्वलु तुपिपति-व्वरियोल् अतियव्वे

२२ प्रोल्वलनिधि तत यशोवल्लरिय मतिहीनर् अठेनु वण्णिपर् वाचवेय ॥ अवरींवरं गु-

२३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यगण्डिल्गुणगणनिलयर् कवि•••वर नयकीर्ति-

२४ देवसिद्धान्तेशर ॥ आ महानुभावनघांगियरवमान कालदोलु ॥ बोविसुत जिनपदनं वा-

२५ • व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं बाचवे वेग्गडि-तियर् सुरगतिय

२६ •••परम जिनेश्वर पदपकरहमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदॉनु भक्तियिं

२७ तियं बाचियक्कन् एय्दिदल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोल् आदं मविनयदि केल

२८ यिन्ति कल्ल भुवनजन्वरियें निरिसिदल् अविचलमप्पन्तु चंद्रतारंबरं ॥

[इस लेखमें किनुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेग्गडेका उल्लेख है। यह हेरियवासेवेग्गडे तथा उनकी पत्नी निजिकव्वेका पुत्र था। इस सत्य-वेग्गडेकी पत्नी बाचवे थी। वह कच्छवेगंडेकी पुत्री थी। इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे। लेखमें बाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवत. सत्यवेग्गडेकी मृत्युके कारण किया गया था। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७१]

३०९

हलेबीड (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धांतचंद्रयतिश्वरगें कवडेयर जकव्वेयरु माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(ने)ग खडस्फुटितजीर्णोद्धारक ...

२ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचन्द्रपंडितदेवरु जीवगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट डोलगरेय हुणसेय

३ ल्लगे मूरु गगवुरद उत्तमवागि ? मूलूरु येदकेयं सर्वबाधपरिहारवागि चंद्रार्कतारयरं सल्ववागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर शिष्यसंतानगलु नडेसुवरु

[यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमें है। कवडेयर जकव्वे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालावके समीप और गगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमें निर्देश है। यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था। जकव्वेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे।]

[ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५]

३१०

अथनी (बेलगाव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें बम्मण-द्वारा देसिगण-इगलेश्वरबलिके सामन्तण बसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४]

३११

मरसे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमद्द्रविलसंघेस्मिन् नन्दिसंघेस्त्यरुंगलः अ-
२ न्वयो भाति योगेपशास्त्रवा-
३ राशिपारगैः

[यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वलकी प्रशंसा है। यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है। लेखकी लिपि १२वी सदीकी है। मूर्तिके बारेमें अन्य कुछ विवरण नही दिया है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६]

३१२

मावलि (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(द्रा)-
२ मोघलाछन जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री (मू)-
४ लसंग कुण्डकुन्दान्वयद
५ काणूर्गण माधवचन्द्रदेव(र गु)-
६ ड्डि नागव्वे गोकवेय मगलु म(मा)-
७ धिविधियिंद मुडिपि स्वर्ग-
८ स्तेयादलु मगल जहा
९ श्री श्री

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माघवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२]

३१३

हम्पी (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, १२वी सदी

[यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वी सदीकी लिपिमें है। इसमें गोरलाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३२५ पृ० ५०]

३१४

कलकत्ता (नाहर म्यूजियम)

कन्नड, १२वी सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोपि निमित्त-

२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[यह लेख पीतलकी चौवीस तीर्थंकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिने अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वी सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

३१५

हुलि (बिजापुर, मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७१ पृ० १८८]

३१६

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

संस्कृत-नागरी, १२वीं सदी

[इस लेखमें आचार्य वीरसेन तथा नागरसेन पण्डितका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७०]

३१७

रायबाग (बेलगाव, मैसूर)

कन्नड, शक ११२४=सन् १२०१

[यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है। इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३]

३१८

बेलगाँव (क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूज़ियम)

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवाम्बुधि राजिसुतिकंमथनोर्ज्जितामृतरत्न-श्रीजननगृह सत्वदयाजीवनमपरिमितगम्भीरमपार ॥ नवमौक्तिकहारं

३ श्रीयुवतिगिदेनिसिदं कृष्णनृपवंशलपार्थिववमदोल् सेनरस भुवनस्तुत मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकुं-

४ डिमण्डलाधीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनाद कुधरवैरिभूप-भीकरपराक्रम कार्त्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-

५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधाभिमतपद्मावति वज्रा-युधगे पौलोमिय वोल् ॥ अवरिवंर्गं पुट्टिदनवनीश्वरमौ-

६ लिमणिन लक्ष्मनृप परिमलमुक्ताफलमोसेव वार्धिगं ताम्रपर्णेगं पुट्टुववोल् ॥ एलेवं लक्ष्मिदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्धा-त्रीनाथर् संले-

७ गेप मदपदहतियिंदाद कॅम्बूलियंदालीनाम्रन्नानम तांनयतुरग-खुरोद्घोषमॆंदलि नानास्थानस्थायिस्वम केल्पडेयदे विदद्दो-

८ डुत्तमिर्दपरिन्तुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुदु नृपालकरदंडनीति वाप्पु घनाज्ञाभिपनागे लक्ष्ममूविभुवपराध दंडमॆवि-विलॆं कृतियो ॥

९ अमृतामोराशियोल् पुट्टिद सिरियमणं वप्पु धात्रं स्वमायाक्रमदिं वेरोर्वलं निर्म्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विम-

१० कोधद्भाग्येयं सुस्थिरेयनोसेदु कोट्टं महाभूभिकायोत्तमनप्पी लक्ष्मिदेवगेने मिगे तलेदल् चन्द्रिकादेवि चेल्व ॥ प्रणुतश्रीनिधि चंद्रिका-

११ सतिय शीलख्यातमं कूडे धारिणियोल् वण्णिसलारुमार्तपरं लक्ष्मीर्वाशन क्षत्रियाग्रणियं शीलक्के मेच्चिमल् फणिपनं पूण्डे-

१२ से सा तन्न कयूगुणम कहुडरिंव पोगळलार्पं विश्वजिह्वालियि ॥ नरपतिलक्ष्मिदेवसति चळलदेवि निजोद्वहस्तदि धर्मगेसेयल्के

१३ संक्रमणदोल् कुडे काचनम बेरल्गळोल् बेरसेद हेमकालिकेय कर्पं- सेदिपुंदु वाहुकल्पवरळरिय तलप्रवालद नखप्र-

१४ सवक्केलसिदं तुंबिवोल् ॥ श्रीवसुदेवनंतेस्व लक्ष्मनृपंगवनिय- देवकीदेविगोलोप्पुवो विनुतचळलदेविगमादरात्मजर् भूवलय-

१५ प्रवद्धवलकेशवरेंदेने कार्तवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकरुजित- शोर्यशालिगळ् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्य तळ-

१६ रे वल्युतं दिग्जयवन्यधात्रोपतिगळ् वेन्नित्तु नीर पुगळवर शरी- रोण्णदि वत्ति चित्तोद्गतमात्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणविभरद्व-

१७ मंतोयोर्मिर्यि विस्तृतमागळ हानियुं वृद्धियुमहु निजमंभोधिगेव- र्विमूढर् ॥ ई कमनं यवाजिवयसी क-

१८ रिमकुलमी विलासिनीलोकमिवेस्मवा कविय कालेगदोल् वयला- जियोल् पुराणीकद युद्धदोळ् पिडिदर्निंतिवनी कलिकार्तवीर्यनेंदा-

१९ कुलमागि नोडुवुदु वन्धनशालेयोल् इदरियरजम् ॥ श्रीरट्टवंशमेंव सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजननमनलें राराजि-

२० पुदुदो विबुधाधारं श्रीमत्कुलं प्रमोदनिवासं ॥ आ महनीय- कुलक्के शिरोमणि मव्यांबुजक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे

२१ चिंतामणि वेल्पगॅनल्के रंजिपनुदयं ॥ कलितगुणौघं लक्ष्मीनिलय संश्रितमधुव्रत तळेद निर्मलमप्पुदयसरोवरदोल् वदयमं पुरुप-पुंडरीक वी-

२२ च ॥ प्रकटश्रानिधि बीचणं कुलगृह श्रीलक्के लीकाश्रयं सुकृत-क्कुद्भवमंदिर सिरिगे सेवास्थानकं सद्गुणक्के कलाभ्यासपद सरस्वतिगे संचारालय

२३ धर्मकार्यकलापकसिवृद्धिगेहममलाचारक्केनल् रंजिपं ॥ बीचगे सुकवि सस्तुतवाचगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनर्सनिमराल्महिवा-

२४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपदमर्क सुपात्रसकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मगे पेर्मण तवमनेयाद ॥

२५ स्थिरपद्मोदयमद्भुतक्के कमल पद्माकरक्कनुजाकरसुधा वनक्के पूर्ण-फलितारामं पुरक्कोप्पुवंतिरे लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्य-

२६ गोप्पुव मद्गुणाभरण श्रीकरणाग्रणयचेनिसिर्दप्प जगं वाप्पेनल् ॥ अनवद्योक्ति विनुतवाणिगुणलेश चागमस्वप्नभुजनिकायक्कविविस्म-

२७ यस्थितिकर जैनक्षमामोजपूजनमैद्मध्वजचित्रग्र श्रुतिलसत्संमाहिर्ये-दंदुनिधनय श्रीकरणाप्पणगे दाँरेयारी धात्रियं-

२८ क् धार्मिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरच्चतुर्मुखनेनिसुवप्पण वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते चागलेयिर्यंव पेसरिंदेसेवळ् ॥ यरवा-

२९ गुडेविगमप्पणप्रभुगमादर् नदवर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासन-प्रविलसद्रत्नत्रयंगळ् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंदे निरुतं मेच्चेल्स-वॅयते-

३० सुस्थिरलक्ष्मीपतिवीचवेजवल्देवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुतोद्यत्-
पात्रदान व्रतगुणचरित मज्जिनावासनिर्मापणवात्मोर्वी-
३१ शराज्याभ्युदयनयचय तम्मोलोप्पुत्तिरल् धारिणियोल् विख्याति-
वेत्तिर्दरे मोगयिपरा गङ्गादित्यमेनाग्रणी निंत्र कार्तवीर्यक्षि-
३२ तिपतिसचिवोत्तंसनी वीचिराजं ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-
वशीकारं सुहृन्मोहन कुजनोच्चाटनमन्यमन्त्रिचयमानस्तंभनं
दुर्णयव-
३३ जविद्वेषणमेंब्रिवागे निजमन्त्रागर्गालें रजिप विजयश्रीनिधि-
कार्तवीर्यसचिवं लक्ष्मीचण वीचण ॥ परवधुगनुमतियं जैनरीय-
लागदु परम-
३४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिक वीचं तळरिनृपमुखविजयलक्ष्मिय
पतिगीव ॥ हृदयाह्लादकनादनुविंगिवनोवं सर्वंमपद्गुणास्पद-
वीचानुजर्वजणं वि-
३५ भूतंयोल् धर्मात्मज मूर्तियोल् मदन चागदोल् चावनतनूज
जैनपूजाभिषेकदोलिंद्र नयदोल् बृहस्पति रणोद्यत्क्रीडेयोल
राघवं ॥ विदि-
३६ तजिनागमाम्बुनिधिवर्धनदोल् निजवंशवारिजाभ्युदयविधानदोल्
बुधमनोभिमतार्पणदोल् कलंकमिल्लद हिमरोचि तापकृतियिल्लद
भानुविभ्र-
३७ दवृत्तियिल्लिद सुरभूरुहं धरयोलप्पसुत वल्लदेवनोप्पुवं ॥ स्वस्ति
समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं कार्तवीर्यदेव निजानु-
३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेव वेरसु वेणुग्रामस्कन्धावारदोल्
साम्राज्यसुखमनुभविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्र-
३९ गण्यनुमखिलमन्त्रिजनवरेण्यनुमप्प वीचिराज माडिसिद

रद्दजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजाभिषेकं मोदलाद धर्मकार्यनिमित्त-
४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचन्द्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुष्यसुद्धबिदिगे वड्डवारदोल् आद सक्रमण-
४१ समयदोल् नाल्कानिर्बं महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वक माडि वेणुग्रामेयोल् कोट्ट स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय वजंय ख्यारिगेयिं प-
४२ डुवल् कोडगेय्य हूपत्तनाल्कनेय हत्तियहिल हरिसिल्गट्ट सहित मत्तरस्टु ॥ आ वेणुग्रामेयहिल हिरिय मूडगेरिय पडुवण यरियो-
४३ क् दुगियर तीक्ष्णत मनेयिं वडगल् मनेयोंदु । पडुवगेरिय पडुवण हरियोल् मनेयोंदु । पडुवण गवनियहिल मनेयोंदु । साक बसदियिं मूडण-
४४ कपिलेश्वरदेवर बचकारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरेगे होव बट्टेयिं वडगल् हूदोट आ वेणुग्रामद कोळि मत्तरेरडु कम्मविन्नूरेल्पत्तारु । वणबुरिगे-
४५ याल्लरिं पडुवण हेगेरेयिं पडुवल् केय्मत्तर् हनेरडु । पडुवण हट्टियहिल तेंकगेरियोल् अय्गय्यगलदिप्पत्तोंदु कयूनीलद मनेयोंदु ॥ मत्त स्वस्त्य-
४६ नेकगुणगणालङ्कृतसत्यशौचाचारनयविनयसपन्नरुमाश्रितजन-प्रसन्नरुं मधपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुरुशास्त्र क्रमप-
४७ रिपालितवीरवणजुधर्मरुं समाचरितपुण्यकर्मरुं । पद्मावतीदेवी-लब्धवरप्रसादरुं विहितसकलजनाह्लादरु । न्यायोपार्जनव्यवहार-प्रशस्तरुं

४८ मल्लुंकिडंढहस्तरुमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्मुरिदंडंगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोदलाडु-

४९ भयनानादेशिमुम्मुरिदडंगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुखरप्प समस्तव्यालव्यवहारिगलुं पडप नायक कों-

५० ड नंबि सेट्टि पोरेयच सेट्टि मोदलादेल्ला मलेयालव्यवहारिगलु मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकडवरं दूसिगरं मुख्यमागुलिव परदरु । तेलिगरुं । टिंक-

५१ सालिगरुमितिवरेल्ल नेरेदा शान्तिनाथदेवर बसदिगे विट्टायवॆतॆ-दोडे बडगणिं बंद कुदुरेगे नेलमेट्टु हागवोंदु । तेकल् नडेववकें सुंक हागवोंदु । मलेयालर

५२ कुदुरेगे हागवोंदु । अरुवत्तयदॆत्तु कोनंगलोलेनं पेरिदोदं सर्वाबाध-परिहारं । चिन्नगेयिकड चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गंधवण-

५३ वसरक्के गंधवणिगर गडिगे । अक्कसालेगमटक्के बेरेबेरे बरिसदेरे बरिसदेरे हिरिय हागवोंदु । होरगणिं बंद सीरेय कडगेगे बीम्बवोंदु । होरगणिं बंद गंधवणके । कक्षमंडक्के । आ मं-

५४ डं गद्याणं तूकवप्पु । हत्तिय मंडिगे तारं मूरु आ पेरिंगे काणियोंदु । मत्तद मंडिगे मत्तवोंवल्लं आ पेरिंगे मत्तवोमानं । अंकणथ मत्तं मारिवडा मत्तमोवंल्लं । मत्त-

५५ वसरदंगडिगे मत्तं निच्चसोल्लगे । अक्किवसरके अक्कियद । मेलसिण हेरिंगे मेलसोमानं आ जवक्के अरेवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याणं तूकवारु अरलुअरिसिनद जवलक्के आ म-

५६ पडुपलवस्तु आ हेरिंगे अल्लयरिसिन पल हत्तु । गाणक्के
णिच्चत्वेण्णेयहं । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्क
अडके हनेरडु । एलेय हेरिंगले नूरु हो

५७ रंगलेययवत्तु । तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे
ओलेय सूडेरडु आ होरेगे सूडोंदु । होरगणि बन्द बेल्लद
मडिगे बेल्लदच्चु हदिनय्दु आ

५८ होरंगे अच्चोंदु । यालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे कायमूरु ।
नेल्लिय काय हेरिंगा कायवल्लवोंदु । कविन हगरक्के ओंदु
कर्तुं । बकहद हेरिं-

५९ गे बकहवोपंल मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्त्तवीर्य-
देव कोट्ट अगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पडुवण कडेयोल्
राजवीथियिं मूडल् नाल्कु ॥

६० बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभि. सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल ॥ अपि गगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा
द्विज निष्कृति. स्यान्न देवस्व-

६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणा ॥ ओदर्विदी धात्रियेल्ल मिगे पोगले चिर
वर्तिसुत्तिर्के नित्याभ्युदयश्रीकार्त्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-
सन्तानमुर्व्वीविदि-

६२ तश्रीवीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-
न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्त ॥ दोपव्यतीतमर्थविशेषमिदंने
पेळ्दनोरदु शासनम पीयू-

६३ षसमसूक्ति चातुर्भाषाकविचक्रवर्त्ति कविकन्दर्प ॥ श्रीमन्माधवचद्र-
त्रैविधचक्रवर्त्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमराल
बालचद्रदेव पेव्र शासनं

[इस लेखका साराश जै० शि० सं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नही हुआ था। पाठकोंकी सुविधाके लिए साराशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं। इस लेखमें रट्ट वशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एव उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोसहित परिचय दिया है। बीचणने बेलगाँवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था। इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगाँवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था। इस शिलालेखके पाठकी रचना माघवचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्प-ने की थी।]

[ए० इ० १३ पृ० १५]

३१९

बेलगांव (क्रमांक २) (ब्रिटिश म्यूजियम)

शक ११२७ = सन् १२०५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवाम्बुधि राजिसुतिकंमथनूर्जितामूनरत्नश्रीजननगृहं सत्त्वदयाजीवनमपरिमितगभीरम-

३ पारं ॥ जंबूद्वीपद भरतदोल्वुजभवसारचष्टि कूडिमहीचक्र धरे-गोलिपुदु सकलजनावकधनसुकृ-

४ तफलविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवंशसरोरुहवनराजहंसनाद-नावनं विस्तारियशोनिधि सेनमहीरमण

५ संभृतामलोभयपक्षं ॥ सिरिय निजानुजेयनाडरादि शशियित्तु राजनाद नणपं धरियिसि सिकृता सेनराजनो-

६ ल् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरिथिसिदा सेननृपवरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
७ नेने कार्तवीर्यरविपुदयिसिदं ॥ विनतारिपुप्रतिविंबालि नितांतं कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिक्कु पूर्वपदाग्नि-
८ तरनलिदु तन्मंत्रकृतिगे पडेदप्पुववोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-
९ र्गोन्नतिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवळ् ॥ जनियिसिद समस्त-गुणसकुलसस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
१० विभुग सतिपद्मलदेविग सुतं जनिथिपवोल् अयन्तनमरप्रभुगं शचिगं मयूरवाहनमवंगवद्रिजेगमगमव हरिगं
११ रमाक्येग ॥ वनितेयर मल्लनुव समाकृतियि सुमनोभिवृद्धिय जनियिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मम्मेयि जन-
१२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चद्रमनो दिटक्के पेळेने विभु लक्ष्मी-देवनेसेव कविसंकुलकल्पमहीरुह ॥ विजितरिपुराजराजास्म-
१३ जे चदलदेवि लक्ष्मनृपसतियेसेवळ् विजितघटसर्पमदे विश्वजन-स्तुतचारुचरितेयेने भारिणियोळ् ॥ अवरिवर्गं कलिकार्तवी-
१४ र्यंनु मल्लिकार्जुननुमाळर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-कुमारराल्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्ल पेळ्वे न्तळ
१५ पेंगवरुरद सेल्लं जयश्रीगे नल्ल मनुमार्गं सत्रिवर्गं तनगेसेये निसर्गं गृहीतारिदुर्गं सनयालापं
१६ सुरूप नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्यं क्षत्रवर्यं सुरकुजसदृशौदार्यनो कार्तवीर्यं ॥
१७ श्रीमत्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयचिभुविनात्मजनत्युद्दामयशो-निधि बीच भूमहितं सौम्यवृत्तिय तलेदेसेव ॥ बीचं-
१८ गे सुकविसस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसन्निभरात्म-हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनग

१९ ब्रह्मंगमुद्यच्चतुरने तनग वार्धिन गुण्पु चागं तनगं कर्णगमल्युन्नति
मरि तनग मेन्ग भूप्रियन्व तनग चंद्रगभर्हन्मतन-
२० चि ननग वारिषेणगमेंदेतनिश मव्यालि वणिण्पुदु गुणियेनि-
मिर्द्प्पणं प्रीतियिंद ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पगाकलितल्म-
२१ चरित्रे प्रथितेयलंकाराकीर्णें विनुते वरवर्णाकृति वागदेवियुचिन-
नामदिनेसेवल् ॥ घनलक्ष्मीपतिपाडुगं नेगल्द कु-
२२ न्तीदेविगं धर्मनदनभीमार्जुनरादवोल् तनुजरादर् विश्रुतर्
कार्तवीर्यनृपश्रीकरणाग्रणगमेमेंवी वागदेविग सारशो-
२३ र्यनिधानर् विभुवीचर्वजयलदेवर् निर्जितारातिगल् ॥ अनुपम-
विद्येगुद्दवविनय मिरिगोप्पुव चागडेल्गे जीवनके विनिर्मला-
२४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे कृतोक्ति तनेसकवि
मले मंदनमार्गे वर्तिप जनपतिकार्तवीर्यसचिवैकशिरो-
२५ मणि वीचनुर्वियोल् ॥ इद्दु तां श्रीकरणप्पणाप्रमुतसनपुण्यप्रभा-
जालमिन्तिदु रट्टक्षितिपालमंत्रिय रमाम्मेरावलोकाशु-
२६ मन्तिदु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाब्धिवीचिसमभ्युदयं
तानेने वीचिराजन यश पर्विर्त्तु भूलोकम ॥ विनुतनिज-
२७ प्रभुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-
जयास्त्रं विनोददोल् नर्मसचिवनेनिपं वैज ॥ मरदिं तनं नो-
२८ डिद तरुणीजनवेरेद वदिवृद मत्तोर्वरनीक्षिसदेरेयदेनल् सुरूपन-
नतिशयवितरणं बळदेव ॥ श्रीकार्तवीर्यनृपति-
२९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचारित्रविवेकर्
मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिष्यर् भूमीश्वर-
३० वंद्यरमलतरसिद्धांतश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द
नेमिचंद्रमुनींद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-

३१ शिलालिखितपदरेडुरुमुद्रडि कीर्तिपुदुर्वरं चिशुशुभचद्रदेवभट्टारकरं ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहामड-

३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेव निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेव वेरसु वेणुग्रामस्कधावारदोल् साम्राज्यसुखमनु-

३३ भविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमप्प बीचिराज माडिसिद रट्टजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर अगभोग-

३४ रगभोगनित्याभिषेकार्चनतदावासखडस्फुटितजीर्णोद्धरणाहारादि-दाननिमित्त श्रीमूलसंघकोंडकुदान्वयदेशीयगणपु-

३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिबद्धतजिनालयाचार्यश्रीशुभचद्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसवत्सरद पु-

३६ ष्यशुद्धबिदिगे बड्डवारदोलाद संक्रमणसमयदोल् कूडिमूनासिर-दोळगण कोरवल्लिर्गपदण उत्तरवाणियंब ग्रा-

३७ मम सर्वाबाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाम्यसहितं निधिनिक्षेप-जलपाषाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयमा-

३८ म्राज्यसतानयशोभिवृद्धयर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतिय कोट्टनदक्के सीमे ऐशानियकोणोळ् नरवल मोनेय-

३९ ल्लि नट्ट कल्लुर्क्कि तेक मोगदे मूडणा दिक्किनोल् नट्ट कल्लुळि मुंते नट्ट कल्लळि मुडे नगरकेरेयाल्कि मुंदे आग्नेय्यकोणोळ् मू-

४० रुवल्लिवेळगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लळि पड्डव मोगदे तेंकण दिक्किनोल् बम्मणवाडकट्टुकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-

४१ य केलगे नट्ट कल्लळि मुडे कुनिकिल्गल्लळि नट्ट कल्लळि मुटे निरुतियकोणोळ् कट्टकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लळि बडग मो-

४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लळि मुडे केंदरिय मोक्किनोल् नट्ट कल्लळि मुते वायुविन-

४३ कोणोल् मेल्गुंडिय नाविदिगेय मुग्गुडेय गॉयट्टे गट्टिनल्लि नट्ट कल्लुल्लि मूड मोगदे वडगण डिक्किनोल् सुण्णद कोडिय मेगणो-ट्टुगल-

४४ ल्लि मुडे मिंडिकेवेट्टद पनुवण नोनेयल्लि नट्ट कल्लुल्लि मुते हेरहिनकोडिय क्लहुळिकेय मेल् नट्ट कल्लुल्लि मुदे मालद मेल् नट्ट कल् ॥

४५ मत्तं नाडोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कर्त्तर काल्वल्लि मूलवल्लियोलरि मूडल् येलकव्येय केय्यि तेकल् केयक्कमवेट्टु नूरु माकर्त्तरो-

४६ ल् मदि गावुडन मनेयि पड्डवलरगय्यगलडिप्पत्तोंदु कयनीलद मनेयॉंदु ॥ कुलियवाळिगेयोलरिंगोशान्य-

४७ दल्लि केनेश्वरदेवर केय्यि मूडल् कूडिय कोल मत्तरोंदु बसदियि तेकल् हन्निकेय्यगलडिपत्तोंदु कयनीलद मनेयॉंदु ॥

४८ हरिगब्बेयाल्लगोलरिं पड्डवल् हिंगळजेय वट्टेयिं बडगला कोल मत्तरोंदु बडगण केरियल्लि हन्निकेय्यगलविपत्तु

४९ कयनीलद मनेयोंदु ॥ चच्छांकियल्लि मूडण प्रभुमान्यदोलगे बोच्चुलगेरेयिं मूडल् मुट्टुगोळेय बट्टेयिं तेंकल् हारुव-

५० गोल मत्तर् मूवत्तु मेट्टिगुत्त नागणन मनेयिं वडगल् हन्निके-य्यगलडिपत्तु कयनीळद मनेयोंदु ॥ बेलगलेय हल्लि हट्टिगु-

५१ तियोलरिं मूडणोत्ति पड्डवल् कम्म नाल्नूरय्वत्तु ॥ उच्चुगावेय हल्लि निट्टूरोलरिं नैऋत्यदोल् महाजनगल् कोट्ट-

५२ गोडगेय अप्पेय सावन्तनुयल्लियल्लि कोट केयं सीमे कडेय केरेयिं बडगल् डुलगन गुत्तियिं मूडल् मावन्तन कोडगे-

५३ यिय तेंकल् सेल्लमरलि पड्डवल् नट्ट कल् मूडगेरियल्लि टनगर मनेय स्थलदोल् हडिना (लकु) गय्यडगलने मुतरडु गोहिगे ॥ कण्णगावेया-

५४ ल्लरि नैर्ऋत्यदल्लि एलेदोंटं हास्वगोल मत्तरोंदु कम्मवेल्नूरस्वर्त्तेदु तेंकणिं वड मुगुलिय हल्लवडके तेंकण हेले प-

५५ ळुवला हल्ल बडगरूल्लवबाविय वोंटं । मूडल् मूलस्थानदेवर तोंट । आग्नेयकोणोरूल नडुवण देवाकयद् वोंट । आ पु-

५६ लेय तोटदिं तेकला हल्लदिं मूडल् हूदोटं कम्म नाल्नूर ॥ ई सासेगकोलेल्ल नट्ट कल्गल् ॥ ओसेदी शासनमार्गदिं नृपरदार् पालिप्परी

५७ धर्ममं निसद तत्सुकृतात्मरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध्यदोळोंदि विश्वधरेयं निष्कंटक माडि सतोसदिं राज्यमनप्पुकेय्दु पडेव-

५८ दीर्घायुस श्रीयुमं ॥ एनिसुं कोमदे शासनक्रममनावों मीरिद तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वित पलिगे पैशुन्यकके पापकके भाजननप्पा-

५९ यु रुजाविल रिपुक्षतात्मोर्वीतल दुर्व्वल धनदुःखास्पदनागलुं नरकदोळोल् काडुगु मूडुगु ॥ सामान्योय धर्मसे-

६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भि.। सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेंद्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ स्वदत्ता परदत्तां

६१ वा यो हरेत वसुन्धरा षष्ठिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमि ॥ प्रहतारिव्रजरातवीर्यसचिवं श्रीचीम्चिराजं यशोमहि-

६२ त पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचद्रं गुणाग्रहि विद्वज्जनसमतस्फुटपदार्थालक्रियासकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कविकन्दर्पं बुधाधीश्वरं ॥

[इस लेखका साराश जै० शि० स० भाग ३ मे क्रमांक ४५४ में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नही हो सका था। यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था। इसमें भी रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है। बेलगांवमें बीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे। ये मूलसंघ – कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे। इन्हें कूण्डि प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था।]

[ए० इ० १३ पृ० २७]

२२०

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, राज्यवर्ष १६=सन् १२०५

[इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन संवत्सरमें आषाढ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९]

२२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है। 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४]

३२२
बेलगामे (मैसूर)
कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरबल्लालदेववर्षद १६ नेय क्षयसंव-
२ त्सरद भाद्रपद ब ११ बृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-
३ देवर शिष्यि अक्कोब्बे समाधिविधियिं मुडिपि सुगति-
४ य प्राप्तेयादलु ॥ श्रीवीतरागाय नमः

[इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या अक्कोब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

३२३
हंचि (मैसूर)
सन् १२०७, कन्नड

[यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके बान्धवनगरमें कदम्बवंशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्दने मागुण्डिमें एक बसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तिन्त्रिणीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है – गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त – मुनिचन्द्र सैद्धान्त – भानुकीर्ति सैद्धान्त – अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्दकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है ।]

[ए रि मै १९११ पृ० ४६]

३२४

आनन्दमंगलम (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६ तमिल

[इस लेखमें विडियाप्पूर् कुन्दडिगल्के शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा तिरुगिरिसरिकलमें एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलजु (सुवर्णमुद्रा) अर्पण करनेका उल्लेख है। यह लेख चोल राजा (कुलोत्तुंग ३) मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन्के ३८वें वर्षका है।]

[रि. सा. ए. १९२२–२३ क्र. ४३० पृ. २५]

३२५

मनगुन्दि (धारवाड-मैसूर)

शक ११३८-४० = सन् १२१६–१८, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र व. ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु. ८, शक ११४० इन तिथियोंका है। इसमें मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है।]

[रि. सा. ए. १९२५–२६ क्र. ४३९ पृ. ७५]

३२६

कंदगल (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम संवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है। इसमें मूलसंघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियक्के-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है।]

[रि. सा. ए. १९२८-२९ क्र. ई ५० पृ. ४५]

३२७

हलेबीड (मैसूर)

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद्देवासुराहीन्द्रपूजित श्रीगजन्मजिद् देव. श्री-
२ वीरतीर्थेशः पायाद् भव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-
३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
४ ग्रणी ॥ (२) श्रावीरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान् श्रीमद्वा-
५ हुबली नाम मुनि सिद्धान्तपारग ॥ (३) सकलज्ञ-प्रतिपादितोभयनया-
६ भिज्ञानसपन्नको मदनोद्यद्गवदावतोयदविभु सद्धर्मरक्षामणि. दकिता-
७ ष्टादशसत्पदार्थनिपुण. पड्द्रव्यवेदी जयत्यखिलोर्वीनुतचारु बाहुबलिसिद्धान्तीश्वर -
८ सन्मुनि. ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारगम स्वात्म-सुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
९ को विभाति कामाम्बुजेन्दु सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणन्दिमुनी-न्द्राणां चारित्र विस्मयावह ।
१० तेषा प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनय प्रिया ॥ (६) जल्प-वितण्डकथासु च शब्दाग-
११ मजिनमुखोत्थपरमागमयोरुचित्र यच्चित्त स त्रैविद्यारुहोर्हणन्दि-
१२ मुनि ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रते. । तस्य विद्यामहाप्रौढिर्मा-
१३ दृशैर्वर्ण्यते कथ ॥ (८) इत्थभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्द-मध्ये विराजत् षड्विंशत्यर्घि-

१४ तोर्जितचरितपर मप्ततत्त्वप्रवेदी । प्रायश्चित्तादिपट्कद्विगुणित-सुतपाश्चर्य-

१५ वर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशदागमज्ञावनयुतसकलेन्दुव्रतीन्द्रो विभाति ॥ (९) एवं कतिपय-

१६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरखेडेषु तत्रत्यामव्योत्पलविकाशयन् सकलचन्द्रसु-

१७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितविलिचाग्रामचैत्य-गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्य

१८ त्रिदिनाद्यनशनविधिना त्रिविष्टपं स्प्राप्तः ॥ (११) सप्ताग्रबाणे-न्दुशशिप्रमाब्दशकाख्यके म-

१९ न्मथवत्सरे च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारेगमत् श्रीसकलेन्दु-देवः ॥ (१२) अर्हं नम.

२० श्रीमद्वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधर्मरप्प बाहुबलिसिद्धान्ति-देवरं दीक्षा-

२१ गुरुगल् श्रीमदर्हणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्प श्रीस-

२२ कलचन्द्रभट्टारकदेवर्गे श्रीमद्राजधानि दोरसमुद्रद समस्तभव्य-

२३ नगरगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिसिद मंगलमहाश्रीश्री

[यह निषिधिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोंने सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था। वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीके गुरुबन्धु बाहुबलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्दि मुनीन्द्रके पास सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था। उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके विलिचा ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ सवत्सरके दिन हुई थी। वे मूलसघ-कोण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४]

३२८

हुचिनसिगलि (धारवाड़, मैसूर)

शक ११ (६) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत् संवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस बसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके सत्तेय एवं आठ शेट्टिओंने कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६]

३२९

कलकेरि (विजापुर, मैसूर)

शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा सिंघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रोधि संवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, बाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए कल्लुकेरेके महाजनों-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बनवाया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ ई ५३ पृ० १८६]

३३०

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ११६९ = सन् १२४७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवग संवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान बीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१]

३३१–३३२

शिंगिकुलम् (तिन्नेवेली मद्रास)

सन् १२५३, तमिळ

[ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोपर खुदे है। पहलेकी तिथि मारवर्मन् सुन्दर पाण्डयदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वा दिन यह दी है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिण्मैकोण्डान्के राज्यवर्ष १५ का ३८८वां दिन यह दी है। पहलेमें जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है। इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयनकी प्रार्थनापर राजा-द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था। यह भूमि पुगलोकर्नाथनल्लूरनिवासी मदिसागरन् आदिभट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी। मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्बल्लि तथा उसमें स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कुनल्लनायकर् था। मन्दिर जिस पहाडीपर था उसको जिनगिरिमलै यह नाम दिया गया था। वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ क्र० २६९–७० पृ० १०५]

३३३

सहेट महेट (उत्तरप्रदेश)

संवत् ११७७ = सन् १२५५, सस्कृत-नागरी

[तीन चरणपादुकाओंके एक पट्टपर यह लेख है। इसके मध्यमें संवत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है। लेखका अन्त 'प्रणमति नित्य' इन अक्षरोंसे हुआ है। अत यह जैन लेख प्रतीत होता है।]

[रि० आ० स० १९१०–११ पृ० १८]

३३४
विजापूर (मैसूर)
शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया। यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी। इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४]

३३५
बस्तिहल्लि (मैसूर)
सन् १२५७, कन्नड

[यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है। इस समय श्रीकरणद मबुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसंघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था। इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९]

३३६
कलकेरि (विजापूर, मैसूर)
राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें अनन्ततीर्थंकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। करसंग्राहक सर्वदेव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६]

२३७

नेगलूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी सवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था। इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७]

२३८

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सेंबूरके कावय्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की। लेखकी तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति सवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४५–४६ क्र० २१८]

२३९

बालूर (धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल सवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७]

३४०-३४१

हत्तिमत्तूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर अक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है। दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी बसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है। (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८]

३४२

हलेबीड (मैसूर)

सन् १२६५, कन्नड

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है। इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघनन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था। माघनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है — मूलसंघ — नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओंके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — बरुहणदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टोपवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य। श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि। माघनन्दिके चार

ग्रन्थोंका उल्लेख किया है – सिद्धान्तसार, श्रावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय। इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे। अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८]

३४३

अण्णिगेरि (धारवाड, मैसूर)

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या माकलपे अव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३]

३४४

संगूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ९ = सन् १२६९, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गगर सावन्त मोवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२२–२३ क्र० ई १९८ पृ० १०७]

३४५

हुलिकेरे (मैसूर)

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ बि दंदु श्रीमत् प्रतापवीर होय्सल श्रीवीरनारसिं.... .

२ वाद्दुनं सोमेयदण्णायकरु मेय्दुन बाचेयदण्णायकरु होंकुद्द बसदि जीणवा

३ दण्णायकरुं जीर्णोद्धारवं माडिसिकं – य निडिसिदरु

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन होकुदकी बसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई बाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वी सदीकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था।)

[ए० रि० मै १९३७ पृ० १८७]

३४६

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[यह लेख वैशाख व १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथबसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरटूरके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई ९१ पृ० ८]

३४७

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आषाढ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बालेन्दु मलधारिदेवके उपदेशसे संगयन बोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तलगेरेके प्रसन्नपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोके उद्यानके दानका वर्णन है। इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था।]

[रि० सा० ए० १९१६–१७ क्र० ४० पृ० ७४]

३४८

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२७८

[इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है।

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० १२३]

३४९

एटा (उत्तरप्रदेश)

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[मूलसंघके गोलल्तक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा सवत् १३३५ मे तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है।]

[रि० आ० स० १९२३–२४ पृ० ९२]

३५०

कड्कोल (धारवाड, मैसूर)

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[इस लेखमें मूलसघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडो-द्वारा एक वसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि सवत्सर ऐसी है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३]

३५१

सण्णमल्लीपुर (मैसूर)

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति	२ होय्सळ वीर नरसिं-
३ हदेवरसरु पृथिवि-	४ राज्य गेय्युत्तिरलु
५ शक वरिष १२०७ नेय	६ सुभक्रितुसंवत्सरद पाल्गु-
७ ण ' हे-	८ ग्गडे
९ ···गरबेद्दलु	१० ' लवुं
११ ···मतरु····	१२ ····हि आतन तम्म '' आल-
१३ ····कोडगे ···आल	१४ ' 'ल्लु होळलेरडु अन्तु
१५ विद्दने 'सा-	१६ थिर मत्तरु 'बिट्ट
१७ ''लिद सासन ॥	१८ 'दक्षिण तगडूरकि
१९ ·······	२० (ता) यूर गुळियपुर
२१ ···यण्ण अळ	२२ ' ' नागगावुड ॥ बीतराग

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमे लिखा गया था। किसी हेग्गडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुळियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है। अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० १८४]

३५२-३५३

ताडकोड (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु संवत्सरका है। इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यहींके अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६]

३५४

कलकेरी (मैसूर)

राज्यवर्ष १८=सन् १२८९, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, बुधवार, (सर्व)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेयिसेट्टि और मादब्बेके पुत्र मादेय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु समन्तभद्रदेव थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७]

३५५

डम्बल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १२११=सन् १२९०, कन्नड

[यह लेख रामदेव (यादव) के समयका है। धर्मवोललके महानाडुके १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एवं नाल्ववीर चबुण्डके छोटे बन्धु सप्तरस-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्यत्तोक्कलु तथा उगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था। तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सर्वधारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३]

३५६

पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)

राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है। मारवर्मन् विक्रमपाण्ड्यके राज्यवर्ष ७ मे विडालपर्रके नाट्टवर् (ग्रामप्रमुखो)-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागमृमें रहनेवाले लोगोसे प्राप्त करोका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४०]

३५७

हुमच (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
३ नं स्वस्ति श्रीमतु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव बृहस्प-
५ तिवारदंदु श्रीमत्सिद्धान्तयोगीं-
६ द्रपादपंकजभ्रमर बम्मगवुड म-
७ हापुरुषो···गतो सिद्धिं समाधिना।
८ समनाण्णं···गुणसेनमुनिश्वरं
९ ···द्राविडान्वय
१० मौळिना

[इस निसिधिलेखमे श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य बम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था। लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है।]

[ए० रि० मैं० १९३४ पृ० १७७]

३५८

लक्मेश्वर (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२९५, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमे पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३]

३५९

मन्नेर मसलवाड (वेल्लारी, मैसूर)

शक १२१९ = सन् १२९७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि सवत्सरका है। इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसघ-देसिगणके नेमिचन्द्ररावलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणेयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२]

३६०

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव संवत्सरमें कोगलिके चेन्नपार्श्वजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० वेल्लारी १९२]

३६१–३६७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

१३वी सदी, कन्नड

[ये छह लेख है। मूलसघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणंदि भटारके शिष्योके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है। इन शिष्योंके नाम है—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालौवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, वैतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे। लिपिके अनुसार ये लेख १३वी सदीके प्रतीत होते है। इसी समयके एक और लेखमें माघवचद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

(रि० सा० ए० १९४४–४५ ई ६३-७२)

३६८

अद्रगुंचि (जि० धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख लिपिपर-से १३वी सदीका प्रतीत होता है। यापनीय सघ-काडूरगणकी एक बसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है। यह बसदि उच्छगि नगरमें थी। यह दान अदिर्गुण्टेके गौण्ड और स्थानिको-द्वारा दिया गया था।]

(रि० सा० ए० १९४१–४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५)

३६९

बसवपट्टण (हासन, मैसूर)

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसघ देसियगण पोस्तकगच्छ

२ कोंडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद ब-

३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
४ कोग नाड श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-
५ लु नाकण्ण होनण्णगलु माडिसिद श्री-
६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-
७ ल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनो मूलसंघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इंगलेश्वरबलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

(ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२)

३७०

रत्नापुरि (मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यह दो पंक्तियोका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमे किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३-वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७०]

३७१

बेलगोल (माड्या, मैसूर)

१२वा-१३वीं सदी, कन्नड

[इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल संघ-नन्दिसंघ-अरुगल अन्वयके कुछ व्यक्तियो-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७]

३७२
बिदिरूर (शिमोगा, मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एक्कगूडिय सु-
२ भचन्द्र देवरु माडिसिद बसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
३ पंकजविराजितमधुकरन् एनिप्प मल्लि कोट्ट
४ पूजितवेने तीर्थंकरभाजित प्रतिकृतिय-
५ नुचित कडितले गोत्र ॥

[इस लेखमें बिदिरूर ग्रामके बसदिमें मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौबीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है। यह बसदि देसियगण-मैणदान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी। लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४]

३७३
होंगनूर (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राणवद श्रीसकलचंद्रभट्टा-
२ रकदेव सिष्यरु माधवचन्द्रदेवर गुड्डुगलु
३ उभयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
४ न्तिनाथदेवर जोगवट्टिगेय बसदि मगल महा

[यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मीदेवी मन्दिरके एक चबूतरेमें लगी है। इसमें होगनूरकी बसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यो-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। ये मूलसंघ-क्राणव (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे। लिपि १३वी सदी-की है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६]

३७४

तवनन्दी (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ सूर- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद

३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है। मूल-संघ-सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

३७५

वरुण (मैसूर)

१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल-	२ संगस्य नन्दिसं
३ घे ह्यरुगले अ-	४ न्वयेऽशेषशास्त्र-
५ ज्ञ श्रीपाल	६ मुनिराश्रिय
७ तच्छिष्यो विदुषां	८ श्रेष्ठ पद्मप्रभ-
९ मुनीश्वर. तस्य	१० पुत्र तपोत्ती-
११ धर्मसेनमहा	१२ मुनि ॥ सोयं
१३ शुद्ध( ) स्वभावस्तो-	१४ बाह्यां (न)रपरिग्रहा-
१५ त्त्यक्तो जिनपदाग्रे	१६ त्रिदिव गतवान् बुध-
१७ .	

[इस लेखमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२]

३७६

केलगेरे (माड्या, मैसूर)

१२वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादा-
२ मोघलाञ्छन (।) जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
४ भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां
५ शासनायाघनाशिने । कुतीर्थ-
६ ध्वान्तसंघातप्रभिन्नघनभान-
७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
८ ब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपु-
९ रवराधीश्वरं यादवकुलांबर-
१० द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरो-
११ ळुगण्ड नामादिसमाळकृतरप्प
१२ श्रीविनयादित्यपोय्सळन् एरेय-
१३ ग विष्टिदेव नारसिंह वल्लाळ नारसिं-

दक्षिणकी ओर

१४ घ-देव तस्य पुत्रं नारसिं-
१५ हरमरु दोरसमुद्रदोळु पृथ्वीराज्यं गेयु-
१६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंघ बलात्कारं
१७ ॰ यदोळ् अनेकाच र्यरु न-
१८ ॰ प्रवर्तिसल् अवरोळु वर्धमानभटा-
१९ रकर् श्रीधराचार्यरु देवनन्दित्रैवि-

२० धरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-
२१ भट्टारकरु अभयनन्दिभटारकरु अर्हनं-
२२ द्रिसिद्धांतिगलु देवच(न्द्र) सिद्धांतिगलु अष्टोप-
२३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
२४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
२५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तिगलु श्रुत-
२६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणन्दिसिद्धान्तदे-
२७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रभट्टारकदेव

पूर्वकी ओर

२८ (वर्ध)मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-
२९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रसिद्धां-
३० तदेवरु कुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर मा··
३१ घनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपादप-
३२ ग्रगलगे होय्सलभुजबल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशान्तिनाथ
३४ देवर अं(ग)भोग रंगभोग आहारदान सुन्ताद
३५ समस्तधर्मकार्यक्का
३६ चिक्कनेयनहलि
३७ · व येनुल्लंथा अष्टमो-
३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-
३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपाद-
४० पद्मंगलिगे धारापूर्वकं माडि
४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
४२ वसुधरा ··

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह (तृतीय) तक दी है। नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककब्येयनहल्लि ग्राम दान दिया। यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था। लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १६४]

३७७-३७८

मूगूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्री मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कोंडकुंदान्वयक

'हुगेरे-

३ यतीर्थद प्रतिबद्धर भरतपण्डितरिगे ४ जक्कियब्बेय मगलु····

(ब) १ मूलसंघ देसिगण पुस्तकगच्छ कोंडकुन्दान्वय इंगणेश्वर सं(घ)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ डितदेवर शिष्यरप्प कान ' नंदिदेवर गुड्डुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु ' कोडेयर बसदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि ' सिदरु मंगलमहाश्री

[ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथबसदि तथा पार्श्वनाथबसदिके मूर्तियोंके पादपीठोंपर हैं। पहलेमें मूलसंघ-देसियगणके क-हुगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जक्कियब्बेकी कन्या (नाम लुप्त)-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है। लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता। दूसरेमें मूल संघ-देसिगण-इंगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य —नन्दिके शिष्य गावुण्डो द्वारा मूगूरकी कोडेयरबसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३८ पृ० १८२-८३]

३७९

हलेबीड (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

१ जिननात्मीयेष्टदव्यं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीश लसद्भूवि-
२ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकव्वे तायेन्दोडिन्तीवन-
३ धिव्यावृतधात्रीतलदोल् अर्दे पुण्योद्भवव्रातदोल् कूडि नितान्-
४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मिय ताने पेत्त ॥
५ अन्तात व्यवहारदि ˙मत्र विक्रमाक्रान्त
६ लदेव ˙ मान्वात दो
७ कोण्डु स्वान्त विश्रुत ना-
८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यमं ताल्दिदं

[इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है। नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे। लेखकी लिपि १३वी सदीकी प्रतीत होती है। पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत वीरबल्लाल (द्वितीय) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८]

३८०

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तुंग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-न्नगिरि अप्पर् देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है। यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके बराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है। इस मूर्तिकी–जिसे कच्चिनायक्कर कहा है – स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७]

३८२

कोट्टगेरे (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देसियगण-इगलेश्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख यहाँकी पहाड़ीपर चढनेके लिए बनी सीढियोंके पास है। इन सीढियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्‌ने किया ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७]

३८४

हुकेरी (जि० बेलगाँव, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख टूटा है। यापनीय संघके किसी गणके त्रैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१]

३८५-३८६

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख है। एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है। इसकी लिपि १२वीं सदीकी है। सेट्टि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है। दूसरा एक जिनमूर्तिपर है। इसकी लिपि १३वी सदीकी है। इसमें यापनीय संघके (क)डूर गणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४]

३८७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है। तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सौम्य संवत्सर ऐसी दी है। इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९]

३८८-३८९

बनवासि (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वी-१३वी सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं। एकमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८]

३९०

बिजापुर (मैसूर)

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४]

३९१

बेल्गामे (मैसूर)

सन् १३१९, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु यादवचक्रवर्ति भुजबलश्री "बल्लाळ" "

२ पंद्र ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ शु

३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद

४ (श्री)मद् राजधानिपट्टण बळ्ळिग्रामेय हिरियब-

५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-

६ विधार्च(न)गे श्रीमतु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

७ चणदण्डनायकर् नागरखण्ड जिड्डुलिगेयन्तेर-
८ डेप्पत्तुमं दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालन माडुत्तं
९ सु(खमं)कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-
१० कारि हेग्गडे मिरियण्णं तन्नंतरालिकेय मूलेवर्तनु-
११ स्यवागि हेर्जुंकडधिकारि चावुण्डरायनुं सोमय्य-
१२ नुं मन्नेयने कोप(?)विसडधिकारि मालवेग्गडे इन्तिनि-
१३ वरं तंतम्म सुक्रमं येत्तिप्पत्तक्कं सर्वबाधा-
१४ परिहारवागि मिरियण्ण आचार्य
१५ पद्मनन्दिदेवर कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि कोट्टर ई धर्म-
१६ मं प्रतिपालिसिदंगे वारणासिकुरुक्षेत्रदल्लि साविर
१७ कविलेयं वेदपालरप्प ब्राह्मणगें कोट्ट फल-
१८ मक्कु

[यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसंवत्सर-में आषाढ शुक्लपक्षमें संक्रान्तिके दिन लिखा गया था। राजधानि बल्लि-ग्रामेके मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पद्मनन्दि आचार्यको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान हेग्गडे मिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और मालवेग्गडे इन चार अधिकारियोंने दिया था। इस समय नागरखण्ड और जिड्डुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान सेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था। बल्लाल द्वितीय अथवा बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि संवत्सर नहीं था। अतः अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल (तृतीय) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि संवत्सरका उल्लेख होगा। तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष होगा।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० १२८]

३९२

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १२६६=सन् १३४४, कन्नड

[इस लेखमे मूलसघ, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु सवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७]

३९३

रायदुर्ग (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२७७=सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमे रखो हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ सवत्सरमें यह लेख लिखा गया। कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है।]

[इ० म० बेल्लारी ४५८]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२]

३९४

होसाल (द० कनडा, मैसूर)

शक १२७९=सन् १३५७, कन्नड

[यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमे है। इसमे विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति बैचय दण्डनायकका उल्लेख है। तिथि शक १२७९ विलम्बि सवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१]

३९५

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

शक १२८३ = सन् १३६१, तमिल

[इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है। इसमें सेम्बादि विल्लवडरैयन्के पुत्र (नाम लुप्त)-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान गोप्पण्ण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था। लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २०३ पृ० ६५]

३९६

साविकेरि (धारवाड, मैसूर)

शक १(२)९८ = सन् १३७६, कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर ब० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन बाल्लेहल्लिके बेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है। उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७]

३९७

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (१) श्रीमद्देव-

२ जिनेन्द्राय तस्मानंतमहात्मने सर्व्वावधिविशिष्टाय भव्यालि-कुमुदेन्दवे (२) तं वंदे देवदेवं सुरचि-

३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्र नित्य निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मीर-
राग वराग तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-

४ द गुणविकसदनन्तं स्वबोधात्मतत्त्व मांगल्यं भव्यसार्थं निहत-
मनसिज नव्यधर्मस्वरूपं । (३) हुदु

५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पहुव मेरुसिदं'' 'पदपिन्दा मेरुविं
दक्षिणदे तुलु कोंगिन्दवी शुद्ध-

६ द्वीप मुदर्दि '''तेंगु ''बकि पनस नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं
चेल्वागि तोकु

७'' विहार हस्तिसमूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि ' 'वदनमागि
तोर्पुदु नयदिं नीतियुत गेरसोप्पे सोकि-

८ सुतिर्पुदु विभवदिंदायमरावतिय । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-
कधीश्वरनेनिसिद मल्लयरसरन्वयसप्रदायदा-

९ यदिं बन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिदं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने
सान्द्र हेमकुन्दोद्गमकुसुदन-

१० मलमल्लिकाफुल्लपुष्पवृन्दं गंगातरंगतरलहरहास तारनीहारहारं
सन्दिर्दी चारुकीर्ति'' '

११ प्रभवदनुनयवेंविन' 'मालपुदु श्रीहैवेभूपालन निजयशस
वण्णिसल् बल्लना-

१२ व दक्षिणमण्डलिक निजनिवास' सल्लक्षण राजराजकटकगल
सूरेयना-

१३ यन्दे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेलुतिपुंदु-

१४ नलियदे नोल्पड मावनियंककाररतिचक्रद हस्तपराक्रमाकनी
हैवनृपाल चित्रय-

१५ शो' 'निश्चय दुन्दुभिताडनंगलिं जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि
सचरिसुत्तमिर्पुदा'

१६ येसेव राजहडयंगलु मिन्नगलाड वद्भुत। श्रीमद्देव गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपंचा-
१७ स्य ''सन्दिर्द् हामद वेहालि महाडाकिनीनामोपद्रवं पुल्लव ' श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-
१८ वासमं श्रीमदनन्तपालर्गोगे निन्यं दीर्घायुमं श्रीयुम अन्ता नगिरियपुरवराधीश्वरं मामा
१९ धनियकक्कार मावगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहासनचक्रवर्ति परमालुवदकुविभाड कलिगल मुग्गड ''
२० मम्यक्त्वचूडामणि वमन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के हलुव रायरगण्ड हैवेभूपालं सुखमकथाविनो-
२१ दर्दि राज्यं गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्पेय महाजनगल गुण-गलेन्तेन्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-
२२ निपरदरग्रणी मम्यक्त्वराढी जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-मंवर्धितपूर्णचन्द्रर् मुदमं क्रोधादि-
२३ मृ माद्गुड्बपेकुलनिवर् विट्टु रादर् मुख्यमादधिपनखिल-कलावल्लभर् कीर्तिवेत्तर्तता-
२४ मादण्डाधिपरगलु महजात कुलक्षत्रियरादरुगलन्वयमेन्तेन्दोडे स्वस्ति ममधिगतपचमहा-
२५ महिमप्रमिद्धमाद वनवामिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती-मधुकेश्वर-लब्धवरप्रमाद मृगमदामोद गोकर्ण'''
२६ महाबलेश्वरदिव्यश्रीपादपद्माराधकर परबलसाधकरं हरसिवरवर-शूल निगलंकमल्ल चलदंकराम राय-
२७ रगण्ड माहसमल्ल गण्डरडावणि मत्यराधेय माहसोत्तुंग शरणागतवज्रपजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-
२८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस पूर्णचन्द्रनेनिमिद वमवदेवरसर ' देवरसर-

२९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोलु राज्यं गेय्युव कालदोलु आ अरसुगलिगे पट्टवर्धनवाहस्तरनियो-

३० गिगल् जिनसेव्यनुं त्रिशक्तिबलयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजक्षत्रियचतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-

३१ न अन्वयद् कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु भासुर कामण्णदण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-

३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवेत्तनमलचरित्रं श्रीमत्सोमदण्डनायकंगे कामार्थं तावु पुट्टिदर् श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-

३३ सुवेम्बीपुत्रससेव्यक रामं पुट्टिद....दशरथसामर्थ्यदि अपराजितारमणिग साहित्यरत्नाकरमन्ता-

३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामक्कंगे तां पुट्टिद शान्तं योजणनम्बिपुत्रनेनिसल् कुन्तीदेवि समन्तु

३५ आपाण्डुराजगे तां शान्त धर्मजनेन्तु पुट्टिद योला सम्यक्त्वरत्नाकरमन्ता योजणसेट्टिय जननि रामक्कनन्वयसेन्तेन्दोडे-

३६ वसुधेयोलु नेगल्ते....असमैश्वर्यसम्पन्नरु दानगुणसम्पन्नरप्प नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद म-

३७ ल्लिसेट्टि होन्नपसेट्टि गुणाढ्यरुं जैनजनबान्धवरुं आ सेट्टरोलगे महाधननेनिसिद आ होन्नपसेट्टि-

३८

३९ शककाल ..साविरद मुन्नूर

(अवशिष्ट ६ पंक्तियाँ पढ़ी नही जा सकती ।)

[यह लेख शक १३०० में लिखा गया था । गेरसोप्पेके राजा हैवेय भूपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें बसवदेवरस शासन कर रहे थे । उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक्क थी । उनके पुत्रका नाम योजणसेट्टि

था। इनके कुलके होन्नपसेट्टि तथा नम्बिनेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

३९८

हडजन (मैसूर)

शक १३०(६)=सन् , १३८४, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३० संवत्सरद

२ ज्येष्ठ ब १ आ। श्रीमतु मैसुनाड ह-

३ डजनद तडेयर कुलद बम्मय्यनवर सुपुत्र हिरि-

४ य मादण्णनवरु देवरिगे। श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य

५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धांतिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-

६ (वि)यरु आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्गग-

७ तरादरु। अवर निसिडियं माडिसि आ निसिडिय अर्चनेगे बि-

८ ट्ट तद्द क्षेत्र बसदिगे पूर्वदलुलगहेर्यि तेंकण ब

९ त्तिन असरिसदल्लु इसु खडुग गद्देयनु धारापू-

१० र्वकवागि नडव हांगे आ हिरिय मादण्णनवरु बिट्टदत्ति-

[यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बड़ी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी। लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० (चौथा अक लुप्त है) दी है। तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४]

३९९

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

सवत् १४४२=सन् १३८६, सस्कृत-नागरी

[यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें सवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकीर्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९]

४००

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १२१४=सन् १२९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन। जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-

२ खक्के बेमेद्दिर्पो गेरसोप्पेगे वर सेज्जेकार सले दण्डिगेय छत्रसुचामराळिर्गे बगेवुगे तोर्प हैवेनृप रामक 'बलमधु-

३ बनोळ्वण नेगळे सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरवर कलियुगदोळ् महापुरुष योजण तन्न मगल

४ मण समवेन्दु माडिसि नितान्त" स्थानम जिनालयगळं सले माडि गोपुरसुमनोहर विचित्र वलय अनन्तनाथन पति-

५ य' दे कृतार्थनो। अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाद रामक्कन गुणगलेन्तेन्दोडे श्रीमतु सन्

६ तनाथन पदाम्बुभृगनु यो-

७ जणसेट्टि प्र ' लिनिवल

८ लाग "'रम्य" गोत्रचिं-

९ तामणि पार्थिव तपमेने

१० दोळ् सत्यधीरोदात्त *

११ सेव रामकनोप्पिदळी धरित्रियोळु

१२ पतिभक्ते शीलवति भूनुतचारुचरि-

१३ त्रे सकलजीवदयापरे सन्ततचतुर्वि-

१४ धदानदोळ् अतिनिपुणतेयिन्तेसेदळी

१५ रामक्कं । जिनमतवाक्यदोळु

१६ " सले जिनराजपदाब्जभृगे तां जननुत चारु-

१७ शीले गुण सुव्रत दान पूजेयिं

१८ सुखि कामिनीजनशिरोमणि यो-

१९ याग्र निजनामदिं निजकुळोन्नति रामकनोप्पुतिर्दळु । श्रीजिनराजपूजेयोळु श्रीमुनिराजपदाब्जसेवे-

२० योळु नैजगुणंगळि विनयदिं मयदिं निजभावतुष्टियिं पूजिसि भक्तियिदेरगि तां स्तुतिमाडियुं कीर्त्ति-

२१ योळिन्तु वणि "कोण्डी निजनामदि रामकनी धरित्रियोळु कमलदळायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमळ

२२ * विमलकलांगि * रसयुतरी जिनराजपूजेयोळ् समरसभावदोळ् सले माणिकसेट्टिपुत्रि राम-

२३ कं क्रमगुणहस्तिकल्पलतेयं नेरे योप्पुवळी धरित्रियोळु कमला-करदोळु कमलिनि कमलदोळं

२४ कमले पुट्टुवन्तिरं भागमनमलान्वयदोळु रामक विमलगुणाभरणे पुट्टिदळ् कलियुगदोळु

२५ रामक्कन अन्वयमेन्तेन्दोडे । हुलिगेरेय पचवसिन्नय मुन्डण हिरिय अगडिगे मुख्य-

२६ वाद किरिय रामसेट्टि आ मडुवलिगे गगाथि अवर मक्कळु वैचेसेट्टियरु आतन तंगि सोमव्वे

२७ आ सोमव्वेयनु आ हुलिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमाडि अवर मगलु नागव्वे
२८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि ममस्तरू आ येचिसेट्टि हुलिगेरेगल्लि ? न्दिगुलदलि प्र-
२९ ····आ नागव्वेयनू मकलि हिरिय हन्दिगुलद चन्द्रनाथ-स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे
३० मादिकें आकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनू बिट्टु शासनव हाकिसिदरु आ येचरसियु तम्-
३१ म मावे नागवेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुत्तनायि ओजेय मग माणिकसेट्टियनू तानु विवा-
३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुम्मक्किय नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-
३३ त्र माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागव्वेयवरिगू जनिसिद मक्लु हरिसेट्टि कामण-
३४ सेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि मगप चिन्तैवरोलगे रामक्कननू गेरसोप्पेय रामण हेग्गडेय मगराज-
३५ णन ओजणगे विवाहव माडि आ बोजण्णसेट्टियू रामक्कनू सुखसकथाविनोददिं-
३६ दिहल्लिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थकरचैत्यालवनारचिसि महा-प्रतिष्ठेयनू माडिसि
३७ यिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर हन्नेलकनेय प्रजापतिसवत्सर-
३८ द कार्तिक शुद्ध पचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि स्वर्गस्तराद‌रु मद्वक्लिगे
३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदिं नेगळे विक्रमसंवत्सरद आषाढ-

४० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदलु तुगममाधि ··
४१ ···आचन्द्रार्कमागि
४२ मूडे मत्तवन् योजण-
४३ सेट्टि ·· रामक ··
४४ निषधिय कल्लिगे मगल महा श्री

[इस निषिधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति संवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामक्कके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामक्कने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थंकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वंशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामक्कके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आषाढ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसंवत्सरके दिन हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९७]

४०१

लक्कवरपुकोट (विजगापटम्, आन्ध्र)

संवत् १४४८=सन् १३९२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है।]

[रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५०]

४०२

संगूर (धारवाड, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, कन्नड

[इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा मगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७]

४०३

गुटी (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८]

४०४

हम्पी (बेल्लारी, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है। तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसंवत्सर ऐसी दी है। शक वर्षके अंक लुप्त हुए है। मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्मडि बुक्क मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनप्रोलु नगरमें कुन्थुतीर्थंकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है। यह मन्त्री वैचय दण्डनायकके पुत्र थे। संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१]

४०५

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

१४वीं सदी, तमिल

[यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था। पोन्नूरके निवासी अरुवन्दै आण्डाळ् तिरुच्चोलुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै तथा कुछ चावलके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८]

४०६

हिरेचौटि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ नमो वीतरागाय। श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। सागरवारि-वेष्टितसमस्त-
३ धरारमणीवनस्तनाभोगचिदंस्थिनं विदितविस्तृतसारतराग्रहारदिं
४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं अननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माणुदे मनस्सु-
५ खदं बनवासिमण्डल। नागरखण्डं बनवासेगागिकुं भूपण-चोलु
६ ····गिरेवागि मेरेगुं नागलतापूगवनङिनेसेव तवे सॊ
७ ····नागरखण्ड ··सागरमागे तोर्पु
८ सुखकिम्बागि· गे मेरेवुदी··· ननुजना · सेणिसेट्टि
९ ····यसडिय माडिसिदरु-इन्तण्णतम्मंदिरिव्वरु शान्तिजिनेश्वर-
१० वसडिय माडिसि सन्तोषदिं· ·सन्तसदिं पडेदर्द धराचन्द्र
११ ····गुणवार्धिय ·· पडेद्दु बालुत्तिरं पलकालं पुरुषनिधि नाग-

१२ सेट्टि तन्नय पेर्म्पि ढेसेवक्करसियक्कनुमत मत
१३ पडेदु सुखदिं बाळ्वुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-
१४ विभाड अगलि ' भाषेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-
१५ द्राधिपति श्रीवीरबुक्करायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तुमि 'वि-
१६ रोधिसंवत्सर कातिकशुद्धतदिगे वर देवर नि-
१७ चन्द्रगुड्डिगल्लुमप्प सान्तिना-
१८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप
१९ केरेय केळगे गद्दे ख ४ '
२० ''' र्यो धर्मम प्रतिपालिसु ''
२१ वारणासि कुरुक्षेत्र
२२ कविलेय-
२३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरबुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था। वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ८३]

४०७

हले सोरब (मैसूर)

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रै-
२ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । अमरावतियळकावति स-
३ मर्मेनिसुव सोरब तवनिधियुमवेरडं समनागि चि-
४ पाळिसिदं सुमनसतरु सहस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ तिंगलवेन्तिर्द्दंडे नाक··
६ युविल
७ वार्धि

[यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सोरब और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७९]

४०८
तवनन्दी (मैसूर)
१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनरं जिनमुनिगलु मत्तनु-
२ पम प्राणेश हरियन-
३ दन नेनदु वनजाक्षि महा-
४ लक्ष्मुयु वनतर शौर्य-
५ दोलुमग्नियोल् स-
६ ले पायिदल्
७ महालक्ष्मिय सद्गुण-
८ समुद्रोपमान ॥ मं-
९ गलमहा श्री श्री

[इस लेखमे महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

४०९
तलकाड (मैसूर)
१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख द्रविल संघ-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वी सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३]

४१०

मत्तावार (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-

२ गन्ति मत्तवूर बसदि तपसु

३ माडि सिद्धि आदलु अबेय मा-

४ चरन मग मार कल्लु निलिसि-

५ द

[यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमें हुआ था। अबेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १७१]

४११

हुलेकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १४वी सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमे जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमे किसी मठमे आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९]

४१२-४१३

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, कन्नड

[ये दो लेख १४वी सदीकी लिपिमें रसामिद्दुलगुट्ट नामक पहाडीपर पाषाणोंपर खुदे हैं। इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है। अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३]

४१४

उद्दरि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्यना-

३ थस्य शासनं जिनशासनं॥ स्वस्ति श्रीमतु

४ · · · विजयकीर्तिभटारर···

[यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभट्टारक इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२]

४१५

सक्करेपट्टण (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

२ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो भुवि संसाराम्बु-
धितारणैकतरणिः श्रेयोवर्णासारणो। तच्छिष्य प्रचुर-

३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासन पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया ख्यातो मुनिग्रामणी । (१) श्रीमत्पुस्तक-

४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणभद्रदेवयतिप श्रीसूरसेनस्तत (१) शिष्य श्रीकमलादिभद्रगणभृद् दे-

५ वेन्द्रसेनस्तत । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः (२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवाद्य । मा-

६ धुर्यं वाचि कारुण्य हृदि तीव्र तपस्तत । श्रीप्रभाकरसेनाख्य-गुरुश्रेयो विराजते । (।३) तत्पश्चाद्य-

७ शैकतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारगतो भूपालार्चितपादपङ्कजयुग श्रीलक्ष्मिसेनो मुनि (।) लोके सत्त-

८ पमा निधानमनघ कारुण्यवारानिधि· दाने कल्पकुजोपमो विजयते कामेभकण्ठीरव. । (४)

९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णेन्दु. (।) सुदृढतपोगुण-युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-

१० करार्यसुत । (५) द्वीपित्तटाकनामनगरीपति शखजिनेन्द्रचन्द्र-सश्रीपादपङ्कजालिरमलाम-

११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि वलगारसमाह्वयवशपद्म-तारापति रजिप स्वजनक-

१२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं होल्लराजं पितृ गुणवति देवमास्वेतन्नम्वेयु-

१३ सद्गुणरत्न नागराजं परिकिपोडे पितृव्य गुणैकाश्रय माकणन् आत्मीयानुज तानेनिपनयित-

१४ सौभाग्यदिं मागयदि वारिणियोळ् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-सरस्सारस मायणार्यं । (७) मत लोकै-

१५ कमित्र , प्रचुरतरकलावल्लभ वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं बुधनुतचरितं चावपरं

१६ काव्यगोष्टि-मरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरसौडलान्तगल मीन-केतूद्धर रूप मद्गुणोदग्र-

१७ हमयन एनल् आश्चर्यमं मायणार्यं। (८) इन्तु होय्सल-भूविभुलक्ष्मीलपनमुं

१८ श्रीवीरबुक्कराजमाम्राज्यरमारमणीयविलामदर्पणोपमं एनिसि मोनयिनुव होमपट्टणदोलु प्रसिद्धिवडेद वै-

१९ श्य मायण्ण माकप्पगलु न "दवागि माडिद श्रीलक्ष्मीसेन-भट्टारकर निपधिय प्रतिष्ठे शासन मगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[यह निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है। इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — वीरसेन — जिनसेन — गुणभद्र त्रैविद्य-देव — सूरसेन — कमलभद्र — देवेन्द्रसेन — कुमारसेन — हरिसेन — प्रभा-करसेन — लक्ष्मीसेन। लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे। यह निषिधि दलगार वशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यों-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये होसपट्टणके निवासी थे। यह नगर होयसल प्रदेशमें था तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अन्तर्गत था।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१]

४१६

तेरकणांबि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-

२ गच्छ कोंडकुंदान्वय इनसोगेय वलि-

३ य राजगुरु (मठ) लाचार्यरमप्प (मम)-

४ यामण्ण ललितकीर्तिभट्टारकरु माडिसिद

५ (प्रतिमे) मगल महा श्री श्री श्री

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना मूलसघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी। लिपि १४वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९]

४१७

तगड्डूर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ (कों)डकुन्दान्वय २ (मू)लसंघ नागनन्दि

३ (अन)न्तभट्टारकशिष्य ४ नन्दिभट्टारकरशि-

५ 'यन्तगड्डू ६ ' यिल्लेकन्तिय(र्)

७ (स)न्यसनगेय्दु सुर- ८ (लोकक्के) सन्दर्

[इस निसिधिलेखमें मूलसघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या ' यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३]

४१८

चामराजनगर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमूलद सगद का- २ णूर्गणद अन-

३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड ४ बोप्पय सन्य-

५ सनविधियिं ६ (स्व)र्गस्त

[इस लेखमें मूलसघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य बोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२]

४१९

माचिनकेरे (कडूर, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु मन्मथसंवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-
नक्षत्रदल्लु श्रीचंद्रनाथन चैत्यालयदल्लु

२ होलहरवलिय अनतकसेट्टितिय मग आदिसेट्टिय येरगिसिद
चतुर्विंशतितीर्थंकरप्रतुमेयनु यिरिसि कृ-

३ तार्थं माडेनु अत्र शुभं मंगलं भूयात् पुनदर्शनं शुभ मंगल महा
श्री श्री श्री

[इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थंकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। अनतकसेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी। तिथि प्रथम श्रावण शु० (?) मन्मथ संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९४६ पृ० ३७]

४२०

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३२३ = सन् १४०१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन जी-

२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं

३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति राजनिर्जित

४ ला सामन्तर वलियं यिन्ता होन्नभूपनालिय आ साम-

५ न्तन पुत्रनर्थिकामं कोमल " मरसं भरिनृपालनातन "

६ दे " भर चारुकीर्तिपण्डित " सद्गुरुमसु आ कामनृपालन सान

७ योजि राज्यमे नागिरियुमनितुं तनगागे वैचणभूपति म

८ नेगल्दं रिपुसैन्य नवर न पडसरासि जिनमुनिपादांबुजात
नृपाल

९ वैचणसेट्टि परिणतान्तस्करणमन्तप्प हैवेरायन प्रतापवेन्-
१० नेल्गोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर ···· नियमोसरगण्ड प्रताप
११ सूरेकार मिर्यसिंहासनचक्रवर्ति निर्लिपपुरवरा-
१२ धाश्वरनेनिप वैचिराज राज्य गय्यिवलि शकवरुष
१३ १३२३ नेय विक्रमसंवत्सर माग शु १ मन्दवारद
१४ रात्रियाल्लु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-
१५ नराजराजितपदाम्बुजभृग कीर्तियिन्ती जगदोलो-
१६ वलमोप्पुव दानियु हैवेभूपन राजिय पट्टदानेय···
१७ ·गोविजनरह विक्रमस नगिर मगनृपं सुरलोक-
१८ केय्दिद् ··विसुलरप्प मत्त राजं जिनमताब्धिहिमकि-
१९ रण नगिरपुराधीश मगरसग राजसन्नुत
२० रतिपञ्चबाणनस····श्रीमगभूपालक हिमरुक्
२१ · श्री विक्रमसंवत्सरद माघमासद ·
२२ लु ··सुरागनारमण
२३ जीर्यक्लिन
२४ समिमित श्रीविक्रमा
२५ काल्यस्थे हेचप्प सूमे पक्षे वल-
२६ क्षे मन्दवार · २७ सुरपदमं···

[यह लेख गेरमोप्पेके राजा हैवेयरायके जामात नगिरपुरके प्रमुख मगरसकी मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था। इसकी तिथि माघ शु० १, शनिवार, शक १३२३ विक्रम संवत्सर यह थी। लेखका बहुत-सा भाग घिस गया है। इसके पूर्वभागमें होय्सल राजा तथा वैचणसेट्टिका उल्लेख है। उनका मगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० १००]

४२१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

शक १३२८=सन १४०५, कन्नड

१ श्रीमत् परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछन (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)

२ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य पुरविक्रमादित्य सन्याह-

३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरुमप्प श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकरवर शिष्यरु श्रीमानसेनदेवरु निषिधि शकव-

४ र्ष ... १३२८ नेय पार्थिव संवत्सर १० लु

५ श्रीमुत्तल होम्बरु वैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि बोम्मिसेट्टि नागणसेट्टि अवर तम्मक्कलु वैच-

६ सेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कवैचसेट्टि नाडिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसेट्टियरु

[यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधि-का स्मारक है। यह निषिधि मुत्तलहोम्बरके वैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, बोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२८ में स्थापित की थी।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ६२]

४२२

कोरग (द०_कनडा, मैसूर)

शक १३३१=सन १४१०, कन्नड

[यह लेख भैरवंशके राजा भान्तर वंशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-भूपालके समय पुष्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि संवत्सर-का है। इसमें बलात्कारगणके वसन्तकीर्तिरावलकी प्रार्थनापर वारकूरकी बसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४१]

४२३-४२४
भटकल (उत्तर कनडा, मैसूर)
शक १३३२=सन् १४१०, कन्नड

[ये दो लेख हैं। कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है। एकमें संगिराय ओटेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापनाका उल्लेख है। इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४०]

४२५
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
शक १३३४=सन् १४१२, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था। शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सोम्यदेव (शिवमन्दिर) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३]

४२६-४३०
टोंक (राजस्थान)
संवत् १४७०=सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ये ५ मूर्तिलेख हैं। मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डेलवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, संवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९]

४३१

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४२=सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सर-का है। इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य बुलिसेट्टिका समाधिमरण हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८]

४३२

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख चन्द्रनाथवसदिमें है। इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है। इस समय स्वरटौरके तिलकरसके मन्त्री हेग्गडे मदुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८]

४३३

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाछनं। जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासन जिनशासनं॥ श्रीजम्बूद्वी-

२ पमध्यस्थितजनसर'''रमणरवार्म्यकृतश्रीयर्''''सद्दर 'जिनपद-पद्मभृंग स्तमित 'जायात पत्तन स्यक्तपक

३ ·· त्रैविद्यवर्ल्ली मुक सुलभरारम्य · स्थितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-
भृंगा ससा-

४ र · माब्धि तेसेद् दुदुमूबरे-

५ द्रः तदीयवंशोद्भवमगभूपो साहित्यलक्ष्मी · भाभाति लक्ष्मी
जिनमदिरेषु काम कामितदायक कन- ·

६ स्द् कन्दर्पसर्वप्रिय कल्याणकलानन्त ··श्रीमगभूपस्य जिनेन्द्र-
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं

७ तदीयवंशसमूत. केशवाख्य क्षितीश्वर वशीकरोति सहसा
वन्दिगेहेषु सम्पद मुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-

८ मार्द्रीकृत । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरः
तोपाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गगातरगास्पद आश्रयाशो दह-
त्याशु स्वाश्रय स्वतनाथ सा (? स्वीयतेजसा)

९ केशवेन्द्रप्रतापाग्नि नाश्रय तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तु
को वा शक्नोति पण्डित. आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥
वर्धमानान्वयोद्भवे निर्वृताश्रित-

१० चरित्रे निजपतिनियमांतर्धियुते होन्नयरसि विशुद्धात्मिके श्रानं-
वलिगे निलकमेनिक्कुं १ श्रा होन्नयरमियरसं श्रीहंचनृप
जिनक्रमाब्जभृग बाहुबलानिजितरि-

११ पुभूप साहससमुद्रनभिनवकाम । तयोरभून्निर्मलजक्कयरसी
सुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चापयेमे वरमगभूपो जामातृवर्यो
भुवि हे-

१२ वराज. अनिन्दाऽपि निर्गन्तु भीरव खलु योषित मगभूपाल-
कीर्तिस्तु कामिनीवानिलचिनी तयोरभूला जिननायनम्री मात्रा
पुनीतासिलजैनल

१३ धात्रीव हैवणश्री मायलरसी सर्वेर्जिताह्वानयुता सुशीला श्रीमन्नमिजिनेन्द्र – मौलिविलसन्माणिक्य स्पर्श्नुनिपादपद्म - मत्तर श्रीपार्श्वना-

१४ थेन नु कामसगरमात्मजो गुम्गुणश्रीदैवणाख्योभवत् जैनयोगिनिकरर् माहित्यरत्नाकरर् श्रीमद्भानुनिनल्विनीव निनग नृपालकृता भू-

१५ सौ सूरिगुणोजभास्करलसत्प्रन्यत्रभामान्विता कामसगनृपा गुम्दया देवी श्रीमायलाया सुधामृतिध्रुनि प्रत्यहं १ क ।

१६ आ मायलरसियरम भूमीशचिनत्रपाद केशवभूप कामारिसमित-मन्मस्योमद्युतिकीर्ति को सुरलोकद सुरतरुविन गुरुफ-

१७ लमं मेदुदु तृप्तियिरलदे सुरर वरेयाल् भूसुराढरू वरकेशवभूर-करभूजस्पृहेयिं माति कीर्त्या श्रीकेशवक्ष्मापतिरप-

१८ राधुधितारगा जिनपतिश्रीपादपद्मानता भूमौ मायिजिनेन्द्रचन्द्र-धिलसच्चारित्रनु रागोदया संसारसारोदया ।

१९ व्यब्धयत्यैकसमन्विते शककृते श्रीशार्वरीवत्सरे माघे मासित-पंचमीतिथियुते श्रीसोम्यवारे सिते पक्षे आदिराजवनिता धर्माभिधाने पुरे काम कारयति स्म

२० जक्कयरसी पार्श्वप्रतिष्ठा मुदा । अनन्तरं । नगिरद राज ह्रांस्लरसनन्वयवाधिगे चन्द्र सले सा भोगयिप हैवभूपनलिय कलिकालद

२१ कर्णनेम्वरी जगदलु सगभूवरन यान्ववे तगलेदेविनन्दन नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्लभ । क । अन्ता नगिरद राज-

२२ र सन्तानाब्धियोलु लक्ष्मीमाणिकदेवीकान्तनृ पुनिपर्यायाग्रे कन्तुविलनुदयिसिदं सगनृपाल सगविदूर क्षेमपुरतीर्थजिनेन्द्र पाद-

२३ पद्मक शगणजीयनालजनु अम्बमहीशन पुत्र संगमं''''तन्न मनमोल्वन्तीधर्मंव माडि पूर्वंदोल् पिंगिद धर्मंवेल्ल-
२४ वनु पालिसिद रविचन्द्ररुल्लिनं । अन्ताधर्मंप्रतिपालकनेनिप श्रीसगभूपाल सुखर्दि राज्य गेयुत्तिरल्. यिळेयोलु कुन्तलनाडु करं रजि-
२५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरर्नि पनसीले बाळेयिं बाळेयिं बलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदलागिर-लल्लियारवेगल नडवोप्पु
२६ वी पुरवनालुवन् अजनृपालनेम्बव । यिरून्दूरधिपति तां करमोप्पुव अडियरबलियिं करमेसेवनु तम्मरस '' यलियं कीर्ति-
२७ वेत्तना तम्मरस । आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोळ् इरुंदूर भूसुरनुत कल्करसननुजे संगदेविगे वरनेनिप हैवेयरसन वरपुत्र प-
२८ द्मणरस जैनपदभक्त । आ पद्मण्णरसन् आतनग्रजे जक्कल-देविय''''तन्दे हैवण्णरसरु पार्श्वंतीर्थेश्वर'''' माडिद नित्यपूजे-
२९ आहारदानमोदलाद (वु) मेल्कव पुरो''''दिगे सलिसि मुन्निन धर्मवेल्लवं नेरेमाडि बलिक्क तन्नोलु सन्नुतबुद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-नसिणेकनु नित्यपू-
३० जन मुन्नेसेवन्नदानमोदलादवनुं पिरिदागि माडि''''तृप्तियिन्दो-ल्दिदु पद्मरसं मिगे कोट्ट वृत्तिय । श्रीपार्श्वंतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-
३१ वकेयू अंगभोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोहन्ता वृत्तिय विवर हैवण्णरसरु तावु मूलवागि आकुतिदं कोणुवणिय-
३२ लि कुंगन कुळिय इन्नेरडु मूडे सुनिगे सीमे मूडलु अभिन-सेट्टियं हित्तल गदे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर होसगद्देयलु यिक्किद कल्लुगढि
३३ वढगलु हीलेयभागे गडियिन्ती चतुस्सोमेयिदोलगुल्ल कलवेय समस्तवृत्ति पद्मरसरु तावु मूलवागि आलुत्तैद होन्नमन केरेय

२४ ···मेले येत्ति होन्नावरड नाल्कुवरे होन्नन् तम्म अम्म तंगल-
देवियरिगे पुण्यार्थं परिहाग्माने विट्टुडु हैवण्णरसर त-
२५ म्म मन·पूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि तावु
आलुत्तं यिर्दु थडेय मञ्जन वृत्तिगे गद्दि मूडलु होले तेंकलु
होले गद्दि पडुवलु
२६ ·· ··
२७ ···नमस्तवृत्तियन् आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि
२८ धारापूर्वकं माडि कोट्टरु अच्चु आहारदानक्के या विल्यालयड
गृह

[इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थंकरमन्दिरके लिए ४ होन्नु कीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तंगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तंगलदेवी-का बन्धु कल्लरस था जो इक्कुन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा मज्जका जामाता था। मज्जका समकालीन राजा मंग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता सग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी मावलरसि मग राजाकी कन्या थी। मंगकी पत्नी जक्कब्बरसि हैवण और होन्नबरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९३]

४२५

उडिपि (द० कनडा, मैसूर)

शक १३४६=सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा वराग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५]

[इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वराग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९]

४३५

माण्डू (धार, मध्यप्रदेश)

(संवत्) १४८३ = सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि (संवत्) १४८३, वैशाख (चैत्र) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४]

४३६

बसरूर (दक्षिण कनड़, मैसूर)

शक १३५३ = सन् १४३१

[यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था । इसमें जैन मन्दिरके लिए बसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाडीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[इ० म० दक्षिण कनडा २७]

४३७

कुण्णत्तूर (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १३६३=सन् १४४१, तमिल

[यह लेख ऋषभनाथबसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्रै (कुण्णत्तूर) के अर्हत्-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४०]

४३८

बदनोर (भीलवाडा, राजस्थान)

संवत् १(४)९७=सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७]

४३९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संवत् १५०५=सन् १४४९, संस्कृत-नागरी

भग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है।]

[रि० इं० ए० क्र० ८ (१९५०-५१)]

४४०-४४१

बैन्दुरु (द० कनडा, मैसूर)

शक १३(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय बैंदूरके पार्श्वनाथ बसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यही है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक सगिराय ओडेयके पुत्र इगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथबसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५२]

४४२

चितलद्रुग (मैसूर)

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

१ सखवरुस १३८५ सोमकृति स-

२ वछरद कतिकसुध १५ आकिय सं-

३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-

४ सिदगे श्रीवीतराग

[यह एक निसिदिलेख है। आकिय संगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत् संवत्सर इस प्रकार दी है।

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४]

४४३-४४४

चितलद्रुग (मैसूर)

१५वीं सदी (सन् १४७२), कन्नड

१ नंदन सं २ वाचण्णगल ३ निसिदिगे

[यह निसिधिलेख वाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है। १५वी सदीकी लिपिमें नन्दन संवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा। यहींका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है। यथा-

१ सर्वधर – २ आसाडसु ३ (गु) मटदेव

इसमें तिथिके अंक लुप्त हो चुके हैं।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५]

४४५

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४०६=सन् १४८४, कन्नड

[इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह बंग-द्वारा कन्नडिबसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५]

४४६

विद्रिरूर (शिमोगा, मैसूर)

शक १४१०=सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवंग संवत्सर जेष्ट सुद्द

पंचमि आदिवारदलु अदियर् वलिय गण्डलिकेय डरेकॊड राम-
नाथ्कनु विदिरुरल्लि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीश्वरन प्रतिष्टेयन माडिसि-
दनु श्री

[इस लेखमें रामनायक-द्वारा विदिरूर ग्राममें चैत्यालय बनवानेका तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३]

४४७

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संवत् १५४९ = सन् १४९२, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख शु० ३, सवत् १५४९ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१]

४४८

शिवडूंगर (राजस्थान)

सं० १५५६ = सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[यह लेख मूलसंघ-बलात्कारगण – सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्नकीर्तिके समय स० १५५६ में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है।]

[रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२]

४४९

हुमच (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्या-　　२ द्वादामोघलांछनं
३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-　४ सनं जिनशासन
५ विरोधिकृत् संवत्सरद आश्वी-　६ ज बहुल दशमि सोमवा-
७ रदलु । श्री मद्रायराज-　　८ गुरु मंडलाचार्यर
९ महावादवादीश्वर रा-　　१० यवादिपितामह सकल-
११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम-　१२ द्वादीन्द्रविशालकीर्तिस-
१३ -स्वरकुवलकमलमार्तंडरं　　१४ श्रीमदमरकीर्तियतीश्वरप्रि-
१५ याग्रशिष्यरं मूलसंघ ब-　　१६ लात्कारगणाग्रगण्यरुमप्प
१७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे-　　१८ वर प्रियगुड्ड श्रीमदम-
१९ रेंद्रवंदितजिनेंद्रपादार-　　२० विंदमधुकरनुं चतुर्विधदा-
२१ नचिंतामणियु स्वदस्फुटि-　　२२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम
२३ प्प विटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-२४ य निसिधि ॥

[इस लेखमें विटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् संवत्सरके दिन हुआ था। चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक थे जो मूलसंघ-बलात्कारगणके अमरकीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९०४ पृ० १७५]

४५०-४५१

आद्वनी (बेल्लारी, मैसूर)

१५वीं सदी, तेलुगु

[ये लेख पहाडीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थंकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है। ये बहुत घिसे हुए है। मूर्तिके पास एक शकवर्षकी सख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है। दोनो अच्छी तरह पढना सम्भव नही है। लिपि १५वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४–७५ पृ० १३७]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

[यहांके दो मूर्तिलेख १५वी सदीके लिपिके है। इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४५४

हनसोगे (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ हनसोगेय हिरियबसदिय
२ कोण्डिय कल्ल ओरसेय बोम्मि-
३ सेट्टियरु इक्किसिदरु

[यह लेख स्थानीय आदीश्वरबसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है। यह पाषाण (कोण्डियकल्लु) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १५वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४]

४५५

मूडबिद्रुरे (मैसूर)

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदब कुलके शासक लक्ष्मप्परस अपरलाम भैररसने जैनोंके ७२ संस्थानोंके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पंडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये। तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रोधि संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५)

४५६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था। विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोंकी भूमिपर जोडि सलाक कर लगाया था जिससे मन्दिरोंकी हानि हुई थी। कृष्णदेवराय सिंहासनारूढ हुए तब उन्होंने मन्दिरोंकी भूमिको करमुक्त घोषित किया। इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोंको भी हुआ। करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४]

४५७

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वरबसदिके मण्डपमें है। इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेल्तगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५]

४५८

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है। इसमें तुलुराज्यके शासक रत्नप्पोडेयका उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस बसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुन खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अक्कम्म हेग्गिडिति तथा उनके सहयोगियो-द्वारा सम्पन्न हुआ था]

[रि० मा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८]

४५९

चामराजनगर (मैसूर)

सन् १५१८, कन्नड

[इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय (पार्श्व) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१]

४६०

कोह्न नगोरी (जयपुर, राजस्थान)

संवत् १५७७ = सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है। इसमें मूल-संघ-बलात्कारगणके आचार्योकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९]

४६१

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[यह लेख पोंबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र ब० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु संवत्सरका है। इसमें राजा-द्वारा वरांगके नेमिनाथ बसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९]

४६२

सोदे (उ० कनडा, मैसूर)

शक १४४५ = सन् १५२२, संस्कृत-कन्नड

[यह ताम्रपत्र आषाढ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु संवत्सरका है। तौलव प्रदेशके क्षेमपुर (गेरसोप्पे) नगरसे इम्मडि देवराज ओडेयर्ने वप्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शंखजिनवसतिके लिए दान दी थी। यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९]

४६३

मोंड (जि० उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १४४४ = सन १५२२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र [illegible] मठमें प्राप्त हुआ। हरिगोंडी [illegible]-जिनेन्द्र वसतिके लिए [illegible] ग्राम [illegible] देवराज ओडेयरके [illegible] दान दी थी। इसकी प्रेरणा देवकीर्ति विजयकीर्तिके शिष्य चन्द्रप्रभ [illegible] की थी। श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, चित्रभानु संवत्सर यह इसकी तिथि है।]

(रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० ९५ पृ० २२)

४६४-४६५

अंडगोली (मैसूर)

१६वीं सदी (सन १५२३), कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है। चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी। इसका स्थापक हलुसिद्धि निवासी देविसेट्टिका पुत्र देवणसेट्टि था। मूर्तिका वजन १८० तोला कहा गया है। दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है। यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र बोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी। दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं।]

(मूल लेख कन्नडमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२४]

४६६

नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४७=सन् १५२५, कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथबसदिके प्राकारमें है। देवणरस उपनाम कोप्पकी बहन चकरदेवी-द्वारा कोयरबूरकी बसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण संवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९]

४६७

पल्लिच्चन्दल् (द० अर्काट, मद्रास)

शक १४५२=सन् १५३०, तमिल

[यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है। विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शम्बैके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। यह राजाज्ञा वेलूर बोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है। तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१]

४६८

पटना म्युजियम (बिहार)

संवत् १५९२=सन् १५३१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खण्डेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी। प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३]

४६९

हनुमंतगुडि (रामनाड, मद्रास)

शक १४५५=सन १५३३, तमिल

मल्लिनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[इसमें शक १४५५ के लेखके नष्ट है। एकमें जिनेन्द्रमंगलम् अथवा कुरुवडिमिद्दिका निर्देश है जो मुत्तोरु कूग्रम् विभागमें था।]

(इ० म० रामनाड २७१)

४७०

नीलत्तनहल्लि (मैसूर)

सन् १५३४, कन्नड

[इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पद्मणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

४७१

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १४(६१)=सन् १५३९, कन्नड

[इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है। यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था। जैनोंकी ओरसे शंख-वसतिके गवणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विलंबि संवत्सर ऐसी दी है। (शकवर्षकी संख्याके अन्तिम अंक लुप्त हैं जो संवत्सरनामानुसार दिये गये है)।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२]

४७२

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १४६५=सन् १५४३, कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् संवत्सर-का है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्डयप्परस तथा तिरुमलरस चौटरु इनमें अनाक्रमण सन्धिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारकका उल्लेख हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५]

४७३

कुरुगोडु (बेल्लारी, मैसूर)

शक १४६७=सन् १५४५, कन्नड

एक भग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी ११३)

४७४

कारकल (मैसूर)

शक १४६६=सन् १५४५, कन्नड

[यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रोधि सवत्सरका है। चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवशीय पाण्डयप्प वोटेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मटनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२]

४७५

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १४६८=सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें विलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वशावली छह पीढियो तक दी है। बिदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि वसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था। इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था। यह दान वीरप्पके चाचा तिम्मरसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था। इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्मप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्धाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था। कार्त्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु सवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी। प्रथम आषाढ शु० १०, पराभव सवत्सर यह दूसरी तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३]

४७६

काप ताम्रपत्र (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कन्नड

१ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन । जीया-

२ त्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-साम्राज्यपदराजितः । व-

३ र्धमानजिनाधीश स्याद्वादमठभासुर. ॥ तिन्त्रिणीगच्छवाराशे-सुधांशुर्नन्दी-

४ घिति । मद्धर्मसरसीहंस. प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूर्गण-नभोमागे भासति मुनि-

५ कुं (ज) र. । अज्ञानतिमिरोद्धूतिः श्रीमान् भानुमुनी(श्व)र ॥ पञ्चाचारशरध्वस्तपञ्च-

६ बाणशरव्रज । अखण्डश्रीतपोलक्ष्मीनायको भानुसंयमी ॥ श्रीमद्भानुमु-

७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माम्बरे श्रीमद्ज्ञानविनूलदीधिति (श)तध्वस्तान्धका-

८ रव्रज । श्रीमूलामलमंवनीरजमहाषण्डेष्वखण्डश्रियं व्यात (न्व) न् मुनि-

९ कोकचारुनिकर सौख्यार्णवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेव महाप-

१० दकदेशे यंसगं (ने) गु निच्कं । धरेयोलगे कापिन नगरद नेलन-नाल्व भूप महहेग्गडेयंब्य ॥

११ पंगुलबलि अधिपतियनु पोगल्सदे नेरके वानु नृपकुलतिलकं । संगतसमेयोलु

१२ पो (गल्गु) भगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेंबं ॥ भूदेविय मुखकनडि याडँ हेल्व-

१३ गॅ कापुवेनिसिठ नगर । आदरदिन्दरो (ल्गा) मेदिनिसतधर्म-नाथनेन (से) गु जिनपं ॥ आ नगर-

१४ क्कधिपतिगु श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलक। बोमनद कि आतानुं वोतुकर मुक्तिल-

१५ क्ष्मियिगल मनम ॥ येनेम्वे मद्दहेग्गडे ठानचतुर्विधक्के ताने चिंतारत्न । सन्नुतगुणगण-

१६ निलेय उन्नतशीलवनु ताल्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दृढ) चित्तनु निर्मल-

१७ गुरुभक्तियल्लि तिरुमरसनृप । धर्मजिनजैनशासनम बोम्मन्दि तानु माडि क्षिति (य)

१८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १४७१ नेय संद नलसंवत्सर-

१९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-मेश्वर सत्यरत्नाकर

२० शरणागतवज्रपंजर चतुसमुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-प्रताप सदाशिव-

२१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरूमप्प रामराजय्य-नवरु ये-

२२ क (च्छ) त्रदिँ राज्यवनु प्रजिपालिसुतिर्द कालदलु वारकूरु मगलूरलु सदा(शि)वनायकरु

२३ राज्यव गे(यि)तिर्द कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-कायमानानादिसि-

२४ द्धप्रसिद्धकार्पिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरू-अनन्यराजन्यसौ(ज)-

२० न्य (शौं)डार्यवीर्यधैर्य(मा)धुर्यगाम्भीर्यनयविनयसत्यशौचाद्यनन्तगुण-

२६ गणनूत्नरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरताद्रिमकल (पु)राणपुरुपन्नमप्प

२७ तिरुमलरसराद महाहेग्गडेयर अवर नालिनवरु गणपणमावनरु कापिन राज्यव-

२८ नु प्रतिपालिसुतिदं कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मण्डलाचार्य महा-

२९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज्ज)नचक्रवर्तिगलुं इत्याद्यनेकवि-

३० रुदावलीविराजमानर् काणूर्गणाग्रण्यरगलुमप्प श्रीमदभिनव-

३१ देवकीर्तिदेवरुगल शिष्यरु मुनिचन्द्रदेवरगलु (अ)वरगल शिष्यरु देवचन्द्रदे-

३२ वरगलु तम्म गुरु मुनिचन्द्रदेवरुगलिगे स्वर्गापवर्गक्के कारणवागि कापिन-

३३ लु धर्मवनु माडबेकेन्त्र चित्तदिद तिरुमलरसराद महाहेग्गडेयरु कू (डू)-

३४ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णमामतर कूडेयु कापिन हलर महाचर्दि-

३५ द धर्मके योग्ग क्षेत्रवनु कोडबेकु येंदु चित्तैसलागि अवरगलु धर्म-

३६ परिणामस्वरूपवने बुलुवराद कारण गुरुभक्तियिद तम्म सीमेय-

३७ लुम(ल्ला)रम्म (चू)रोलगे पट्टु(व)ण डिक्किनलु कलतोपतिना याल्केयलु अगलि-

३८ द चोलगे येट्टिन गद्देल्क बीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद वत्त मूडे २ मत्तम-

३९ गालिंद होरगो पापिनाडियेंब गद्देयक्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद बीज

४० मूडे ४ मत्त बागिल गद्देयक्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४ गद्दे मू-

पिछला भाग

४१ रक्कं बीज मूडे १० ई भूमिगळिगे बुक्ल करे मुरे मने बावि हळसु भावु सु-

४२ वे निक्षिपिरक्करुदें कडिद जल पाषाण सह मूलधारेयनु एरदु को-

४३ ट्टु येिसिकोंड दोड्डुवराहग ८० अक्षरदलु येमट्टु वराह वी हों-

४४ गिगे येरडु बेलेयलु सह वर्षक्के वह अक्कि अगाडिय होरिगेय

४५ बल्ल पेवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद विवर कापिन बस्ति-

४६ य कंलगण नेलेयलु धर्मतीर्थकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु नित्यद –

४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यवकु (मु) निचंद्रदेवरगल हेस-

४८ रिनलु नड(व) हाळधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिंगलु तिंगलु तप्पदे तिं-

४९ गळलिल १७ होहाग नडव वार १ मत्त हुण्यत्तैदु २५ होहाग नडव

५० वार १ अंतु तिंगळलिल येरडु वार समदाय नडवुदक्कं अक्कि मूडवु

५१ १२ई वारगळलिल मगलत्रयोदशी यहाग आ मगलत्रयोदशी नडव-

५२ (दॆंडु) विशेषवागि यिरिसिद अक्कि मूडे २ अंतु अक्कि मूडे यिप्पत्तनाल्कु
५३ यी धर्मद स्थलदल्लि वक्कारिगे अनाय सनाय सल्लदु इल्ल आ स्थ(क)गदल्लु इह
५४ वोक्कलिगे बिट्टि बिटार सल्लदु काणिके देसे अप्पणे पदद्लि येत्तु सल्लदु येट्टु
५५ सर्वमान्यवागि तिरुमलरसराद महहेग्गडेयरु अवर नालिनवरु ग-
५६ णपणसामतरु सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरुचि-
५७ यिंद गुरुभक्तियिंद बोडवट्टु बरसि कोट्ट तांम्रशासन इंत-
५८ प्पुदक्के साक्षिगलु अधिकारि कातसेट्टि चट विक्रसेट्टि सामणि संकर-
५९ सेट्टि राजसेट्टि वग्गे(से)ट्टिय अलिय केसण मूलूर बेलिले बिरुमाक
६० डुग्ग बंडारि बिरुसामणि यिंतिनवर बुमयान्म(त)दि मं-
६१ गलूरु सकै सेनबोवन बरह। यिती धर्मशास(न)के मगल-
६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुण पुण्य परदत्तानुपालन।
६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्ये
६४ दानाच्छ्रेयोनुपालन। दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
६५ पद ॥ यी धर्मशासनक्के आवनानोब्ब जैननादव तप्पिदरे बेलुगु-
६६ लद गुम्मटनाथ कोपणद चद्रनाथ ऊर्ज्जतगिरिय नेमीश्वर-
६७ मोदलाद जिनबिंबगलनोडद पापके होहरु शैवनादरे प-
६८ र्वतगोकर्णमोदलादवरल्लि कोटिलिंगवनोडद पापक्के होहरु
६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदलादवरल्लि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-
७० द पापक्के होहरु ॥ भद्र भूयाज्जिनशासनस्य ॥ श्री

[यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था। उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे। इस साम्राज्यके बारकूरु तथा मगलूरु प्रदेशपर केलडि सदा-शिव नायककी नियुक्ति की गयी थी। इस प्रदेशमे काप नगरका अधिकारी मद्द हेग्गडे था। इसने धर्म्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लारु गाँवमे कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी (वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी सज्ञा थी)। यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था। इसके पहले मूलसघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशसा की गयी है। देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे। अन्तमे दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये है उनमे श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोका उल्लेख किया है]

[ए० इ० २० पृ० ८९]

४७७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक १४८२=सन् १५६०, कन्नड

[इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावको-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४]

४७८

मूडबिदुरे (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४८५=सन् १५६३, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमे बिदुरे नगरकी चण्डोग्र पार्श्वतीर्थंकर वसतिके लिए शकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोंको सौंपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेष (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रुधिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ पृ० २३ क्र० १ ए]

४७९

प्रिन्स आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५=सन् १५६३, शिलालेख क्र० B B. ३०७, कन्नड

[यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विट्ठप्प नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र सालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हैवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोंपर रानी चेन्न भैरादेवीके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० (१९५०–५१) क्र० २४]

४८०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १४९३=सन् १५७१, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें मीचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन बिद्रेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पट्टुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भंग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ पृ० २३ क्र० ए ३]

४८१

महेश्वर (मध्यप्रदेश)

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था। मालवामें उस समय ख्वाजा अजीज़ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था। इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं। इनमें मण्डलोई देवदास (सुजानरायके बन्धु) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है। इस तरह जैन सज्जनों-द्वारा जैनेतर मन्दिरोंकी सहायताका यह उदाहरण है।]

[इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२]

४८२

कुम्बंगि (तुकूर, मैसूर)

सन् १५७३, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुबागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४८३

चित्तामूर (द० अर्काट मद्रास)

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है। इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवासी वायिसेट्टिके पुत्र बुग्गेट्टिने शक १५००, बहुधान्य संवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है। स्तम्भके दूसरी ओर संस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है। इसमें बुग्गेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है।]

[रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८]

४८४

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है। प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर ' 'आदि श्लोकसे है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२]

४८५

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

शक १५०५ = सन् १५८३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रभानु-संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदंदु करूरु नाड चैपल्लिय तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायकक गौडर जट्टिगौडर मग सेट्टि-गौडरु आ समस्त श्रावकरु सह सुंताणि सेतुविन बसदि श्री आदितीर्थेश्वररिगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनगलिगे मंगल महा श्री श्री श्री चिरपयनु माडिद्दुदु

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी। स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे।]

[ए० रि० मैं० १९४४ पृ० १६७]

४८६

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

१ शुभमस्तु नमस्तुगशिरश्चुबिचंद्रचामर (चार)वे
२ त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल) स्तंभाय शभवे ॥ स्वस्ति श्री-
३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकवरुष १५०६ नेय सद वर्तमान।
४ तारण सं। आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमत्। दानिवा-
५ सद चेन्नरायवडेर। मकलु चिक्कवीरप्पवाडेर मकलु चेन्नवि-
६ रवाडेरु गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु गुणभद्रदेवरु सिष्य-
७ रु। वीरसेनदेवरिगे। कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे आलेपा(क)
८ बन्दप्पन मग लिंगण्णनु। नष्टसन्ततनागि(गि)होद सम्मद। आतन भू-
९ मि नागकपुरद ग्रामद वकगे तेंगिनहितलगाहे ख १ कंबुग वम-
१० तु बीजवरि। आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि बन्द
११ सम्मद। थी वीरसेनदेवरिगे क्रेयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
१२ गे सलुव क्रय द्रव्य। लक्षणलक्षित तत्कालोचित अभ्यस्तपरिकल्पित उ-
१३ भयवादिसप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-
१४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरडु वरहनु। तरविस उकि-
१५ र्थद। सले-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि। आ भूमिगे सलुव चत्तु-
१६ सीमेय विवर। मूडलु। ई गद्देय नीरएरंकल आगलिंद पडुलु

१७ तंकलु केरेयुरियिंदं ब(ड)गलु ॥ पडुवलु गुल्लप्प हेबरुवन तो-
१८ टदिंदं मूडलु । वडगलु हानम्बियिंद तंकलु । यिंतो चतुस्सि-
१९ मेवलगुल्ल । निधि । निक्षेपजल । पाषाण अक्षीणि । आगमि । सिद्धमा-
२० ध्यगलेंब । अष्टाभोग तेजस्वाम्यवन्नु नीउ निम्म शिप्यरु पा-
२१ रम्पर्यवागि सुखदिं बोगिसि बहिरि यन्दं वरसि कोट क्रय शा-
२२ सन पटे यिदक्के अविलासे विटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विर-
२३ हितरू । स्त्रीहत्य । गोहत्यक्क वजिनरहरू । विरपव-
२४ डेर श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण सवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवानके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-वीरप्पके पुत्र चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है । वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे । उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल बन्दप्पके पुत्र लिंगण्णकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गाँवके क्षेत्रमें थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४]

४८७

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

१ सुभमस्तु । नमस्तुगशिरस्तुविचंद्रचामरचा-
२ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तंभाय शंभवे (।) स्व-
३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुष १५०७
४ मंद्र वर्तमान पार्थिवसंवत्सरद चयित्र ब ७ मि आदि-

५ चारदल्लु श्रीमस्तु । हानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
६ क्कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मक्कलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
७ प्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु । गुणभद्रदेवर सिष्य-
८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेंतें-
९ दरे । बालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टसं-
१० तानवागि होद सम्मद आतन भूमि बीचलदाल ग्रामदलि ।
११ एण्टु खण्डुग बिजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
१२ बन्द सम्मंद आ भूमिन् हानिवासद चेन्नरायवोडेय-
१३ र मक्कलु । चिक्कवीरवोडेयर मक्कलु चेन्नवीरवोडेयरु ।
१४ गेरसोप्पेय समतभद्रदेवर शिष्यरु गुणभद्रदेवर शिष्यरु
१५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
१६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-
१७ यवादिसप्रतिपन्न कालपरिवर्तनके सलुव प्रिय-
१८ सूहे । निजगति वरह गद्याण ग २० अक्षरदल्लु मू-
१९ वत्तु वरहंनु वारविस वलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु
२० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुसीमेय विवर मूडल्लु नन्दिगाव ।
२१ तिम्मरसैयन गद्देयिंदल् पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरद-
२२ हलर्ति वलु(?) मूडलु । बडगलु दरेयिंदलु । तेंकलु । तें-
२३ कलु अरमनेगद्देयिंदलु बडगलु । यिंति चतुसीमेयोलगु-
२४ ळ निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगामि सिध साध्यगलेंब
२५ अष्टभोग तेजसाम्यवनु आगुमादिकोण्डु निव्रु निम्म शिष्य-
२६ रु पारम्परेयागि आचंद्रार्कस्तायियागि सुखदिं भोगिसि
२७ बहिरि यॆंदुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदक्के अभिक्ला-
२८ से बटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु । श्रीहत्य
२९ गोहत्यक्के बजनरहरु चेन्नवीरवोडेरु श्री
३० श्री श्री श्री

[यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव सवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह कीमत दी गयी थी। यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्पकी थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। भूमि यीचलदाल ग्रामके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८]

४८८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

सन् १५८५, कन्नड

[यह लेख आदिनाथबसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्रनाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय सन् १५८५ है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१]

४८९

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०९=सन् १५८७, कन्नड

१ शुभमस्तु। नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामर-
२ चारवे त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल)स्तंभाय शंभवे।
३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १५०९
४ नेय सन्द वर्तमान। सर्वजित्तु स। वयिशाक शु ५ मि
५ यु आदिवारदलु श्रीमत्तु। दानिवासद चेन्नरा-

६ यवडेर मकलु । चिक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नविरवा-
७ डेरु । गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर शिष्यरु । गुणभद्रदेव-
८ र सिष्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-
९ वेंतेंदरे नालपुरद ग्रामदोलगे सकण्णन मग मल-
१० यन डॉक्किन कोड्डिगे बिलवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि
११ यु । सलविट्ट नम्म आरमनिगे हरवरियागि मद स-
१२ मद । यी वीरसेनदेवरिगे श्रेयक्के कोटेवागि । आ भूमिगे सलु-
१३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित
१४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्त्तनक्के सलुव प्रियसा-
१५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाल्वत्तु वरहनु । तर
१६ विस उलियदे साक्ष्यवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे सलु-
१७ व चतुसिमेय विवर । मुडलु यिगद्देय नीरेरकलनलि-
१८ द पडुवलु । बडगलु केरेयेरियिंद तेंकलु तेंकलु नं-
१९ म गद्देयिंद बडगलु । यिंती चतुरसीमेयोलगुल नि-
२० धि निक्षेप जल पासण अक्षीणि आगमि सिध साध्यग-
२१ लेंब आष्टभोग तेजसाम्यवनु निडनिम्म शि-
२२ ष्यरु पारम्परियवागि सुखदिं बोगिसि बहिरि
२३ येंदु वरसि कोट क्रयशासनपटे । यिदक्के अविला(पे) बटवरु दे-
२४ वलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्य गोहत्यक्के बजनरह-
२५ रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित संवत्सर उस तिथिका है । दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी यह भूमि ४० वराह कीमत देकर खरीदी गयी थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११०]

४९०

रत्नत्रयबसदि बीलिगि, (उत्तर कनडा, मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५८७)

[इस लेखमे मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणवेलगुल मठके चारुकीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, बल्लालरायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। इनकी परम्परामें श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी–श्रुतकीर्ति–विजयकीर्ति–श्रुतकीर्ति (द्वितीय) – विजयकीर्ति (द्वितीय) अकलंक – विजयकीर्ति (तृतीय) – अकलंक (द्वितीय) – भट्टाकलंक। भट्टाकलंकदेवका समय शक १५१० = सन् १५८७ दिया है। संगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति (प्रथम) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति (द्वितीय) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरकी स्थापना हुई थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

४९१

जि० दक्षिण कनडा (स्थान नाम अज्ञात)

शक १५१३ = सन् १५९१, कन्नड

[यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर संवत्सरमें किन्निग भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा २)

४९२-४९३

रायबाग (मैसूर)

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं – एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है। इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३]

४९४-४९५

मारूरु (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ये दो लेख हैं। मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थंकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवो विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है। पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार शक १५२० का है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५]

४९६-४९७

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है। पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्तभद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है।

यहींके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५]

४९८

हुमच (मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसनु रूपवतिसिदनू

[यह लेख पार्श्वनाथवसदिमे स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वी सदीको लिपिमे है। इसमे मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरस दिया है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

४९९

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मॅय सेट्टियर बसितय श्रीवर्धमानस्वामिय सनिधानदल्लि गणपणसेट्टियर मग सघय्यसेट्टियरु तमगे पुण्यार्तवागि प्रतिष्ठे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थंश्वरनिगे म-

२ गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[इस लेखमें सघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थंकरकी इस प्रतिमाकी स्थापनाका निर्देश है। इस समय गुम्मॅयसेट्टिकी बसतिके वर्धमानस्वामी उपस्थित थे। लिपि १६वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६६]

५००–५०१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१६वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें एक पद्यमे कोण्डॅमलै निवासी गुणवद्दिरमुनिवन् (गुणभद्रमुनि) की प्रशसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और सस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे। लेख १६वी सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है। मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्ही आचार्यको वीरसघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५]

५०२

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

१ श्रा (।) स्वस्ति (।) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-

२ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसवत्सर-

३ द कार्तिक शु १० गुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

४ (राजगुरुम) डलाचार्य महावाद-

५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-

६ (नचक्रवर्ति य) ल्लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

७ लक दक्षिणाग्रगण्य सगीतपुरसिंहा (सन)-

८ पट्टाचार्य श्रीमदकलकदेवरुगलु

९ श्रीपचगुरुचरणस्मरणेयिंद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

१० (दरु) (।) अवर निषिधिमंटपक्के मंगल महाश्री (।)

११ भट्टाकलकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(।)

निषि-

१२ धीमंटपो ह्यव स्थेयादाचंद्रमा (स्क) र (॥)

[इस लेखमें देशिगणके प्रमुख सगीतपुरके पट्टाचार्य अकलकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५३० के दिन हुआ था। उनकी यह निपिधि उनके शिष्य भट्टाकलकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५०३

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १५४१ = सन् १६१९

[यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था। बाल नागम नायक और तलत्तार् लोगों-द्वारा कथिलायप्पुलवर् (नामक जैन विद्वान्) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७]

५०४

मूडबिद्रुरे (मैसूर)

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिद्रुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक वसतिका जीर्णोद्धार कराया। तिथि-वैशाख, शक १५४४, रुधिरोद्गारी सवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४]

५०५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसघ भट्टारक
२ श्रीधर्मचन्द्रोपदेशात् प्रणम
३ श्रीमतिवीर

[यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठ पर है। मूलसघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ मे की गयी थी। लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २४९]

५०६

कोलारस (शिवपुरी, मध्यप्रदेश)

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। तिथि आषाढ शु० ९, गुरुवार, सवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८]

५०७

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि बिदुरेके दो विभाग वेट्टकेरी तथा माडलगडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्योहार मनाते वक्त

एक दूसरोंसे पत्थर, लाठी आदिसे लडते थे। सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अन्य पूजाओंमे यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया। तदनुसार देवण्ण तथा अन्य शिष्योंके प्रभावसे उसका पालन भी कराया। तिथि-दीपावली, आंगिरस संवत्सर, शक १५५४।]

[रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ए० ४ पृ० २३]

५०८

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १५६२=सन् १६४१, कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है। मंगलूर तथा बारकूरके शासक केलडि वीरभद्र नायकके समयका यह लेख है। पुत्तिगे निवासी चौटवंशके चिक्कराय ओडेयद्वारा अभिनव चारुकीर्ति पण्डितदेव तथा मूडबिद्रेके अन्य श्रेष्ठियोंको संरक्षणका आश्वासन दिये जानेका इसमे निर्देश है। इसके पूर्व अधिकारियोंद्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अत यह आश्वासन जरूरी हुआ था।]

[रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८]

५०९-५१०

शिवपुरी (मध्यप्रदेश)

संवत् १७०२=सन् १६४७, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदास-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें गंगादास और गिरधर-

नाम-नाग मालवदेशस्थित शिवपुरी गाममें एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ दी गयी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९]

५११

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५७७ = सन् १६५५, कन्नड

१ स्वस्ति (।) श्रीजयाभ्यु(द)य शालिवाहनसकव(र्ष)
२ १५७७ जय स(वत्सर)द कार्तिक सुध्द दशमि
३ सु(सो)मवाद यरडने घलिगेय-
४ लिङ देसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
५ लाचार्यरु महावादवादीश्वर रा-
६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
७ (क्र) वर्तिग(लु) सत्कालरायजीवरक्षापा-
८ लकरुमप्प श्रीमद् भट्टाकलंकजीय(रु)-
९ पर
१० (श्री)प . . चरणस्मर(णेयिंद)
११ पनुस्व(समक्ष) इल्लि स्व-
१२ र्गस्थरादर (।) श्री-
१३ श्री श्री श्री श्री (॥)

[इस लेखमें संगीतपुर श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक सु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। इनकी समाधि पर यह लेख है।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५१२

टोडा रायसिंह (जयपुर, राजस्थान)

सवत् १७१८=सन् १६६२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमे अम्बावतीके कछवाह वशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, सवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९]

५१३

श्रीरंगपट्टम् (मैसूर)

सन् १६६६, कन्नड

[यहाँके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमे चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६]

५१४

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १५९७=सन् १६७५, कन्नड

[यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस सवत्सर-का है। इसमे नागभूपकी पत्नी बनदाम्बिकेके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुन स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानो-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८]

५१५

वेल्लूर (मैसूर)

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

१ ॥शुभमस्तु॥ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-

२ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-

३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुषंग-

४ लु १६०२ ने रुद्रि स । भाद्रपद ब १० ल्लु दिल्लिकोल्ला-
पुरजि-

५ नकंचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतभद्रस्वामिगल शि-

६ ष्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनभ-

७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगोत्रद आपस्तंभसूत्रद य-

८ जु शाखाध्यायिगलाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-

९ प्पराजरवर पौत्रराद कृष्णप्पराजरवर पुत्रराद राय

१० प्पराजरवरु रत्नगिरिबस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-
स्वामिप्रतिष्ठा-

११ कालदल्लि धारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद धर्मशासनदान-

१२ पट्टे क्रम वॅतॅदरे

(पंक्ति ३ से १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो बार दोहराया है ।)

२७ क्रम वॅतॅदरे यी रत्नगिरि स्थलदल्लि अनादियागियिद्दंथाब-

२८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिद्द-

पिछला भाग

२६ थादरल्लि नीवु मत संरक्षण्यकर्तरागि वुद्‌भविसिदंथा यो—
३० गलिष्ठरादरिंद यी देवस्थानवनू पुनः जीर्णोद्धारव माडि
३१ संप्रोक्षणे प्रतिष्ठेयनू माडि देवता नित्य वैभववु सार्व-
३२ कालवु नडदु आ सुकृत नमगु वुंतागुव रीतिगे नडसिधिरागि
३३ अदु निमित्य आ महोत्सवाकालदल्लि निगमे नम्म सिरेहद सीमे-
३४ योलगण संते दोड्डेरि होबलि गूडिद् वडुवन हल्लिस्य-
३५ लदोलगण आपिनहल्लियनू सहिरण्योदकदानधारा-
३६ गृहीतवागि त्रिवाचवु त्रिकरणयुक्तवागि धारेयने-
३७ रदु कोट्टेवागि आ ग्रामक्के सलुवंता यरेनेल कॅनेलका-
३८ बारम्भ नीरारम्भ अणे अच्चुकट्टु यात कपिले गूडेगू-
३९ यिलु केरे कुटे कालुवे भोदलागि आ ग्रामक्के सलुवता परिस्तरण-
४० दोलगागि वुत्पत्ति आदता सकल सुवर्णादाय सकलमत्ता-
४१ दायवनू निम्म सिध्यपारम्पर्यवु अनुभविसि कोंड्डसु-
४२ खदल्लि यिद्दुदेंदु बरसि कोट दानपट्टे । स्वदत्ताद्द्वि-
४३ गुणं पुण्य परदत्तानुपालन । परदत्तापहारेण
४४ स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ श्रीरामा

[इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि संवत्सर, ऐसी है। इसमें रंगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिबस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। लक्ष्मीसेनको दिल्लो, कोल्लापुर, जिनकचि तथा पेनुगोंडे के सिंहासनाधीश कहा है। वे समंतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे। दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके प्रमुख थे। उन्हें आत्रेय गोत्रके आपस्तंबसूत्रानुयायी कहा है।

[ए. रि मै १९३९ पृ १८७]

५१६
येल्लूर (मैसूर)
कन्नड (सन् १६८०)

[यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हुलिकल निवासी था तथा समन्तभद्राचार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

५१७-५१८
पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)
शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैगाशि २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर—कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहींके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं।]

[रि० सा० ए० १९२८–२९ क्र० ४१६–१८ पृ०४०]

मूललेख

१ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्द १६५५ कल्यब्द. ४८३४ क्कु मेल् चेल्ला निण्रा प्रमवादि ग (श) काब्द वरुष ४६ क्कु प्रमादिच वरुषं वैगाशिमाद १७ (ठ) एलुदिय शासनमावदु (।) स्वस्ति श्रीस्व (र्ण) पु (र) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय सम्बन्दमान वायुमूलैयिलि—

२ रक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपादपूर्वं आदिवारल्न् तोलम् मेर्पाडि आळयत्तिन् श्रीपार्श्वनाथस्वामियु ज्वालामा (लि) नियम्मणैयु मेर्पाडि स्वर्गपुरजैननोल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पडु (।) इन्द शासनमनन्नमेनदेव (नाळे) लुत्पट्टु (॥)

[ए० इ० २९ पृ० २०२]

५१९

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था। मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प नायिनारने किया ऐसा इसमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० १३६]

५२०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १६७९ = सन् १७५७, कन्नड

[विद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदाशिव महाराजके अधीन सोंदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने वेण्णेगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डितदेवको अर्पित की ऐसा इन ताम्रपत्रमें उल्लेख है। तिथि-मार्गशिर शु १ शक १६७९, राक्षस संवत्सर।]

[रि सा ए १९४०–४१ पृ २४ क्र ए ६]

५२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक १(६) ८७ = सन् १७६३, कन्नड

[जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है। देवण्ण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है। तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है।]

[रि इ ए १९४५–४६ क्र २१३]

५२२

तिलिवल्लि (धारवाड, मैसूर)

१८वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें वैशाख शु ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि इ. ए. १९४५–४६ क्र. २५३]

५२३

काकन (जि० मोघीर, बिहार)

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत – नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[इस लेखमें काकन्दीके जैन संघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० ३]

५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर बसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर (नवम) (सन् १७७६–९६) होंगे।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें चार कलशोंपर

[इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२६–५२७

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

सन् १७७८–७९, कन्नड

[यहाँके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं। पहलेमें वियग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निर्घडेवृक्षसघका था –

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

५२८
मैसूर

शक १७३६=सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर बसति—गर्भगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[इस लेखमे दनिकार पर्यंयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९¾ (सेर) वजन-के इस पीतलके गन्धकुटी (द्वार) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२९
मैसूर

(शक १७३६=सन् १८१४) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर बसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छांतिजिनेन्द्रस्य पंचकल्याणसंपद ।
श्रिया मेरुगिरागारं हसतश्चैत्यवेश्मन ॥१॥
पराध्यरचनोपेत कवाटमिदमद्भुतं ।
कारयामास सद्भक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥
नागनामा पितु स्वस्य मरिनागाह्वयस्य च ।
धनिकारपदाढ्यस्य स्वर्मोक्षसुखलब्धये ॥३॥

[इस लेखमे निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण धनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया। इस लेखमें समयनिर्देश नही है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है।]

[ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १०३]

५३०

मैसूर

शक १७७४=सन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थंकरकी मूर्ति – शान्तीश्वर वसति

१ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपदाम्भोजे लसं षट्पद क्षात्रीयोत्तम-देवराजनृपति. सद्धर्म-

२ पत्न्या सह (।) केंपम्मण्यभिधानया प्रणयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं कृत्वानतव्रतं तदा-

३ रचितवान् बिंब सुवृत्तच्छुभ ॥ अब्धीन्द्रियशैलेंदु-प्रमितेस्मिन् शकाब्दके।

४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ। अनतनाथबिंबस्य प्रतिष्ठां जग-

५ द्रुत्तरां (।) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी कॅंपम्मणि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका उल्लेख है। उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन सवत्सर, के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की। इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर (तृतीय) का राज्य चल रहा था। अत लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है।]

(ए० रि० मैं० १९३९ पृ० १०१)

५३१

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १७८४=सन् १८६२, कन्नड

[यह लेख शक १७८४ का है। कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया। यह उस पुराने जगटमे बनवाया था जो यहांके अनन्तनाथवसदिमे पिछले ११०० वर्षोंमे था।]

[रि० मा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७]

५३२

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १७८७=सन् १८६५, सस्कृत-ग्रन्थ

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है। इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन सवत्सर ऐसी दी है। इसी दीवालपर एक अन्य लेखमें जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी (ासाके कुछ श्लोक है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८]

५३३

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमें मरिनागैय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर वसतिमे सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागैय दनिकार पद्मैयका पुत्र था। लिपि १९वी सदीकी है।

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मैं० १९३६ पृ० १००]

४३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[इस लेखमे शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वी सदीकी है।

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[उपर्युक्त पृ० १००]

४३५

मत्तावार (मैसूर)

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर बस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक्के

ऐवर अवणनुव

[यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अवण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वी सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १७५]

५३६

कनुपर्तिपाडु (नेलोर, आन्ध्र)

तमिल

[इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अत इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है।]

(इ० म० नेलोर ५०२)

५३७

तिरुनिडुंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३१४ पृ० ६६]

५३८

गेरसोप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ घनशोकवल्लीसमुत्कृष्टयोगीगणलक्षितकीर्तिर्मुनिसूनो (।) श्रीदेव-चन्द्रसूरेरुपदेशान्नेमिजिनबिम्बं ॥

२ श्लोकः ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुंगव (।) अकारयत् सुतो यस्य मावाम्बागर्भजोजण· ॥

[यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एव मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-पनसोकवलीके आचार्य ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

५३६

गेरसोप्पे (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)

२ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुजरा नमराल नगिरिय राजगिरो-

३ नणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनु तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखा-

४ वुजं हस्तवीरनुं भूजनवन्द्य हाेन्ननृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षनु होन्-

५ नमहीशनाग्रजंयु मालियब्बरसिगे कामराजगं सद्गुतमूर्ति होन्न-नृपनाग्रमनवान्-

६ धव मगराजनु मन्मथरूप हरिहरनृपाकक्कनातन पुत्र हैवणरसगं मन प्रियान्-

७ गनेयु मान्तलदेवि समाधिसाच्चोलु आकेय गुरुगलु लोकख्यातियनान्तिद् अनन्-

८ तवीर्यरु रतिसंकाशसौन्दर्यनेनिसि सन्दिर्दा कान्तेगे हैवणरस वल्लभनादं । स्मररूपं

९ सूळकगी पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणसेट्टिय वरवनिते बोम्मकग नरसुगु-

१० णि सान्तलरसि पुट्टिदळागळ्। अरसप्पोडेयर तनूजे वरगुणि बोम्मकनाकेयात्मजे सान्तकरम्मि-

११ यु परमन पदम स्मरियिसि सुरलोकवेय्दि सुरसदिन्दिदंलु अर्हन्तन पादाम्बुजमं

१२ स्मरयिसुत नम्बि(?) पदम नालगेयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरम्मि शरीरम पत्तेण्टुदिन-

१३ दोलु सन्दलु वरवत्सर तारणदोलु सुरुचिर-फाल्गुणद शुद्ध पाडिवतिथियोलु हरिदइज-

१४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादळ् आकेनिमित्त माडिसिद निषिधिय कल्लिगे मंगळ महाश्री-

[यह निषिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण संवत्सर ऐसी थी। यह देवी बोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी। हैवणरसका पिता मगराज था जो कामराज और मालियव्वरसिका पुत्र था। मालियव्वरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होन्न थे। उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था। सान्तलदेवीकी माता बोम्मक्का अरसोप्पोडेयकी कन्या थी।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९]

५४०

सालूर (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादा-

२ मोघलाञ्छन ।

३ ···शासन जिनशा

४ सन श्री·· चन्द्रनाथदेव-

५ र गुड्डि नादोव्वेय ''
६ '' नागय्यंगलु निलि-
७ सिद् कल्लु ''सालियूर
८ महाजन

[इस निपिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोव्वेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निपिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९]

५४१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीया-
२ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन । श्रीमद् राजगुरु
३ ' मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-
४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निषिधि
५ शार्वरि सवत्सरद ६ आषाढ सुध १४ आदि

[यह निपिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है। तिथि आपाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी संवत्सर, इस प्रकार बतलायी है।]

[ए० रि० मै० १९२७-पृ० ६३]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें अप्पाण्डार (चन्द्रप्रभ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेखकी तिथि पगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३१५ पृ० ६७]

५४३

मुत्तगदहोसूर (मैसूर)

कन्नड

१ सिद्धजिनालय

२ सान्तेयौवेय बसदि

३ यगे माडिसिदनु

[इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३]

५४४

उम्मत्तूर (मैसूर)

१ स्वस्ति श्री ···राज- २ भटारक····नोन्तु

३ सन्यसन गेय्दु मुडि ४ पिदर् कल्ल निलिसिद ज्ञा-

५ न····पण्डितं ··

[इस लेखमें···राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान···पण्डित-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७]

५४५

कम्मनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जि ˙

२ श्रीमति मूलसघ सघोद्भवे शुभे देशीगणे

३ स्याद्वादारिनिगाशनि˙ कैवल्यजन्मावनिः

४ भयचन्द्रकरुणा ˙ कलियुगे

५ बुल्लप शोभते

६ जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु यिन्तु सुख

७ जिनेश्वरनाम मनदोल् ˙बुल्लपं

८ प्रभवसवत्सर ˙ देवाल

९ माडिसि (I) हारदानक्क

[यह लेख बहुत घिस गया है। प्रभवसवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है। मूलसघ-देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७]

५४६

गोणिवीड (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्री- २ मतु अ-

३ नन्तन उ- ४ धापनेय

५ चउवीस तीर्थंक ६ र प्रति-
७ मे मंगल

[यह चौवीसतीर्थंकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय बन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारो-द्वारा इसकी पूजा की जाती है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४]

५४७

कल्लहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगस्स कुण्डकुन्दान्वयार्य श्रीजयदेवभ-
२ ट्टारकदेवर प्रियसिस्यरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुड्डगलु जीय-
३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-
४ गौड माडिसिद आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वररु मगल म-
५ हाश्री श्री श्री रूवारि बूपोजन मग रूवारि नागोज माडिद

[इस लेखमे देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थंकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रूवारि बूपोजके पुत्र रूवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

५४८-५५६

तंगले (मैसूर)

कन्नड

[यहाँ एक शिलाखण्डपर कुछ मुनियोकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण है तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये है – १ नमोर्हते अजितकीर्तिगलु २

देवनन्दिव्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकरु ४ कीर्तिसागरभटाररु ५ अजितसेन-भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवरु ७ विमलगुणव्रतिगलु ८ अजितसेनभटाररु ९ शुभचन्द्ररु ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१]

५५७

कनकरायनगुड्ड (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीकोण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानवसदिय स्था-

३ नक्के ° कन्तियर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु

५ मू-

[इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८]

५५८

हुलदेनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य—

२ रम्पारपुर वूरवेल्लिय—

३ योल्कट्टि किलगणकेरे—

४ नन्दियडिगल् पडेवराताड—

५ रु साक्षि सिडिलवड्ड तोरेदे—

६ पालु अल्गोल केरेय केलग—

७ ण देसे एलु मने तार इदके सा—

८ वत्तरु तेकलूनाड एल्पत्ताक ढ--

[इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है। नेन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९२६ पृ० ८३]

५६१

तोललु (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यना-

३ थस्य शासनं जिनशासन । स्वस्ति यमनि-

४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अभयच-

५ न्द्रदेवरु सर्गगामिगळाद परोक्ष-

६ यममागल् पद्मावतियक्क माडिसिद सास-

७ न ॥ अरेवेसनागिरद बसदिय माडि-

८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गट्टु कट्टि-

९ यिसिदरु मनेय आडि नडुम्मरनुमं नट-

१० द इनिसनक्क यिक्कि पूजिसिद गद्याण ७प्प-

११ त्तु । इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्दगवुण्डनु मास-

१२ गवुण्डनु तम्मडिय रेरु । बिट्टियणनुं ने-

१३ मणनु ईस्तानकोडेयरु ।

[इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होनेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया। इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए। इस मन्दिरके व्यवस्थापक बिट्टियण तथा नेमण थे। मुद्दगवुण्ड तथा मासगवुण्ड इसके साक्षी थे।]

[ए० रि० मैं० १९२६ पृ० ४२]

५६०–५६१

यलवट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यहाँ दो लेख हैं। एकमें मूलसंघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि मार्गशिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द संवत्सर ऐसी दी है।

दूसरे लेखमें मूलसंघ-देशीगण-पोस्तक गच्छ – कोण्डकुन्दान्वयके देवकीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण संवत्सर ऐसी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१)

५६२

शावल (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देशीयगणके बालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। मार्गशिर कृ० ३, व्यय संवत्सर ऐसी तिथि दी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४)

५६३

दानवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी – जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था – निसिधिका उल्लेख है।]

(इ० म० कडप्पा १४९)

५६४

मुल्कि (दक्षिण कनडा, मैसूर)

कन्नड

[जैन बसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर। इसमें तीर्थंकरोंकी प्रशंसामें पाँच श्लोक लिखे गये हैं।]

(इ० म० दक्षिण कनडा १३)

५६५

मद्रास (म्यूजियम)

कन्नड

[यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है। महाप्रधान ब्रह्मदेवणद्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमें यह मूर्ति थी। मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक ब्रह्मदेवणके गुरु थे।]

(इ० म० मद्रास ३२४)

५६६

मद्रास (म्यूजियम)

कन्नड व संस्कृत

[इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्तिनाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है।]

(इ० म० मद्रास ३२५)

५६७

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[चैत्र शु० १८, रविवार, परिधावि संवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओवेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी १९०)

५६८

कीलक्कुडि (मदुरा, मद्रास)

तमिल

[गुहामें जैन मूर्तिके पादपीठपर।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है। यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है।]

[इ० म० मदुरा ३९]

५६९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संस्कृत–गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें वीरेश्वरक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० ९]

५७०

पेनुकोण्ड (जि० अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है ।]

[इ० म० अनन्तपुर १६७]

५७१

कायाम्पट्टि (मद्रास)

तमिल

[यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है। जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेणायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि (जिन-मन्दिर) के आगे फर्श बनवानेका इसमें उल्लेख है ।]

[इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१]

५७२–५७३

मलैयकोविल् (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवादिमिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाण-पर भी है ।]

[इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १]

५७४

तेणिमलै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख एक पाषाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति (तिरुमेणि) श्रिवल्ल उदग नेरुवोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[इ० पु० क्र० १० पृ० १]

५७५

पुण्डि (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

तमिल

पोन्निनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१०]

५७६

मूडविद्रे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंको पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बरको कर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इस रकमके ब्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीधर पडि-

कोदि-द्वारा जमीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुडे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोप्पेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेष १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९]

५७७

मूडबिदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्वरवलिके बर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुम्पि वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७]

५७८

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड

१ चित्रभानु २ संवत्सर ३ द फाल्गुण
४ द शुद्ध ८ ५ यु सोम ६ वार बोम्मण्ण
७ गलु स्वर्गस्त ८ राद निषिधि

[इस निषिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० २५७]

५७९

तललूर (मैसूर)

कन्नड

१ भावसंवत्सरद श्राव- २ ण शुद्ध त्रयोदसि आ-
३ दिवारदंदु स्वस्ति ४ श्रीमद् अजितेश्व-
५ रदेवर महाजनं ‥ ६ ‥ वागि ‥
७ ‥ केशवदेवर बम्म- ८ व्वे तोटदिं
९ ‥‥वागि म्कम२‥ १० कोण्डु
११ ‥ येनुल्क

[यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसंवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनो द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या बम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० ११३]

५८०

अंवले (मैसूर)

कन्नड

१ जिनचंद्रदेवर २ ‥ मुडि(पि) ‥

[इस छोटे-से लेखमे जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० १३३]

५८१-५८४

हैदराबाद (म्युजियम) (आन्ध्र)

संस्कृत-कन्नड

[ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं। एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है। दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शर्वरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है। तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है। चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इन लेखोंका समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४]

५८५

भोसे (सातारा, महाराष्ट्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतीश्वरका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है। समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३]

५८६

बेलगामे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीभृदर्कः श्री-

२ भव्याब्धिवर्धिष्णुशशांकमूर्तिः

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अधूरा हुआ है। इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० १२६]

५८७

कारकल (मैसूर)

संस्कृत

[यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है। लिपि आधुनिक है –
(मूल-) श्रीगणधरपादम्।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२]

५८८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटासिंगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१]

५८९

बादंगट्टि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२]

५९०

वालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् सवत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९९ पृ० २३]

५९१

गुडुगुडि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख सरस्त (सूरस्त) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४]

५९२

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख टूटा है। हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोको दिये गये भूमिदानोका इसमें उल्लेख है। इनमें बंकापुरकी उम्पटाय्यण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५]

५९३

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन – ? – बड्डवार, सर्वधारि संवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५]

५९४

येलवर्गि (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें मूलसंघ, सूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९]

५९५

तिरुप्परंकुण्डम् (मदुरै, मद्रास)

तमिल (?) – ब्राह्मी

[यहाँ पहाडीपर दो गुफाओंमें निम्न पंक्तियाँ खुदी हैं। ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं –

(१) न य   (२) मा ता ये व

(३) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२]

५९६

देवत्तूर (मदुरा, मद्रास)

वट्टेळुत्तु

[यह लेख बहुत अस्पष्ट है। इसमें किसी पल्लि (जैन वसति) तथा तुग पल्लवरैयन्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२]

५९७

अक्कूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है। सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२]

५९८

हावेरी (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरका सीढियाँ बनवाये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१]

५९९-६०२

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[ये चार समाधिलेख हैं। पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है। यह सत्यण्णकी समाधि है। दूसरा लेख मग्गलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है। तिथि आगिर संवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है। तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है। तिथि प्रमादि संवत्सर, ''मास व ६, शुक्रवार यह है। चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है। तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५]

६०३

कागिनोल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। इसमें दानविनोद वैरिनारायण लेक-मनण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेषपाषाण-गच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१]

६०४

माकनूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें खर संवत्सर, कार्तिक शु० (?), शुक्रवारके दिन मूल संघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोम्मगौडके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१]

६०५

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य सेम्मिसेट्टिकी कन्या राजव्वेने की थी।]

[रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ९५ पृ० १५४]

६०६

देवूर (बिजापुर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर बलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पद्मव्वे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३]

६०७

शिरूर (जमखंडी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है ।]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९]

६०८

इडैयालम् (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोंपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं —

(१) मल्लिषेणमुनीश्वर (२) विमलजिनदेव
(३) अप्पाण्डार् नायिनार् (४) इडैयालम्के जिनदेवर्]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२]

६०९

तोरनगल्लु (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलंकदेवके शिष्य बयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

लोकिकेरे (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गदग (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय संघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति संवत्सर ऐसी दी है। यहींके एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

६१३

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[स्थानीय जैन बसदिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है। मूलसघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७]

६१४

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन सवत्सरके दिन क्राणूरगणके गजिय मलधारिदेवकी शिष्या कचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८]

६१५

रायद्रुग (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोके नाम है – मूलसघके चन्द्रभूति, आपनीय सघके चन्द्रेन्द्र, बादय्य तथा तम्मण्ण। एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि सवत्सर यह तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२]

६१६-६१७

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभिषेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३]

६१८

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है। मुस्लिमों-द्वारा पार्श्वनाथबसदिपर आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८]

६१९

कलकेरि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कलिकेरेके अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक बसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४]

६२०

कुम्मरचोडु (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पद्मप्रभमलधारिदेवके प्रियशिष्य महावड्डव्यवहारि रायरसेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है। इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५]

६२१-६२२

कोट्टशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। काणूर गणके पुष्पनन्दि मलधारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इरुगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस बसदिकी रक्षाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२]

६२३-६२६

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यहाँके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्रदेवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसघ-देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेवके शिष्य चिट्टपय तथा मारय (४) मूलसघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि मावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मिसेट्टियर चाचय्य (६) बेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि। यहाँके एक अन्य लेखमें इगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके बालेन्दु मलधारिदेव-द्वारा एक बसदिके निर्माणका उल्लेख है।] [रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४]

६३०

तम्मदहल्लि (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४]

६३१

रामपुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य बेट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४]

६३२

रामतीर्थम् (विजगापटम् आन्ध्र)

तेलुगु

[यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है। ओगेरुमार्गस्थित चनुद (ब्रो) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी ।]

[रि० सा० ए० १९१७–१८ क्र० ८३२ पृ० ८५]

६३३

वेलूर (द० अर्काट, मद्रास)

तमिळ

[इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है ।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ०५९]

६३४
निडुगल (मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें बेल्लुम्बट्टके भव्यों-द्वारा—जो मूलसघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे—पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

६३५-६३६
नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)
संस्कृत-कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमें है । इसके मण्डपका निर्माण भजण कोम्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९]

६३७
मुत्तुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)
तेलुगु

[इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६]

६३८-६३९
लक्ष्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[ये दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ—देवगणके जयदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें बमुवैकवान्ववजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है।]

[रि० मा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३]

६४०

जावूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें बीचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुन दानका उल्लेख है। नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वाला-मालिनीबसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अर्पण किया था।]

[रि० सा० ए० १९२८–२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५]

६४१

कोमरगोप (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेर्गडे बासियण्गकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८–२९ क्र० ई २३० पृ० ५५]

६४२–६५०

गुण्डकेर्जिगि (विजापूर मैसूर)

कन्नड

[यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं। (१) देशियगण-इंगलेश्वर (बलि) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महानमीयक्षी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (शा) न्तनाथस्वामी]

[रि० मा० ए० १९२९–३० क्र० ई १६–१७ पृ० ६६]

६५१

हुलूर (विजापूर)

कन्नड

[इस लेखमें कण्डूर गणकी एक बसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनो-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९–३० पृ० ६७ क्र० ई २९]

६५२

तम्मदड्डि (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस निसिधि लेखमें इगलेश्वरतीर्थकी बसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९]

६५३

तुम्बिगि (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसंवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है। राजाका नाम लुप्त हुआ है। इस समय बोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९]

६५४

हूविन हिप्पर्गि (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है। इगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१]

परिशिष्ट १

श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[पहले संग्रहको पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहटाका बीकानेर जैन-लेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्राय श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी सख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया।]

१ अकोटा (बडोदा, गुजरात) – ८वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० १६–१९

२ अकोटा – ९ वीं–१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २०–३५ तथा ३९–४८

३ बडोदा (गुजरात)–सं०१०९३=सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० १६९–७१

४ भरतपुर (राजस्थान)–सं० ११०९=सन् १०५२

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू (राजस्थान)–सं० ११११९=सन् १०६३

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही (राजस्थान) सं० ११३५=सन् १०७८

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

७ लाडोल (गुजरात) –सं० ११४०=सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए २

८ लाडोल—सं० ११५६=सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए ३

९ उदयपुर (राजस्थान)—सं० ११७६=सन् ११२०

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

१० नाडोल (राजस्थान)—सं० १२१३=सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ (उत्तरप्रदेश)—सं० १२१६= सन् ११६०

रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

१२ जालोर (राजस्थान)—सं० १२२१=सन् ११६५

ए० इ० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा (उत्तरप्रदेश) सं० १२३४=सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२६

१४ मट्टेशर (गुजरात)—सं० १३१५=सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १६९

१५ मट्टेशर—सं० १३२३=सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

१६ जालोर (राजस्थान)—सं० १३३१=सन् १२७५

ए० इ० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण (राज॰ ान)—सं० १३३३=सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चितोड (राजस्थान)—सं० १३३४=सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २३२–२३३

१९ उदयपुर (राजस्थान)—सं० १३३५=सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८५

२० बम्बई—सं० १३५९=सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०१–३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ५०७

२२ खंभात (गुजरात)–सं० १३१०से सं० १३६८=सन् १२५४से सन् १३१२

रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १५९–१९५

२३ आंतरी (राजस्थान) स० १३६८=सन् १३१२

रि० आ० स० १९२९–३० पृ० १८७

२४ मेड़ता (राजस्थान)–सं० १५०७से १६८७ =सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९–१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम–सं०१५१७से १५८३ =सन् १४६१से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ५३०–५३८

२६ सिरोही (राजस्थान)–सं० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

२७ बम्बई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा (राजस्थान)–सं० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९–३० पृ० १८८

३० अलवर (राजस्थान)–सं० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६२१=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३७८

३२ वैराट (राजस्थान)–शक १५०३ = सन् १५८०
रि० आ० स० १९०९–१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९
रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६
रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

३५ भद्रेश्वर (गुजरात)–सं० १६५९ = सन् १६०३
रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६
रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

३७ भद्रेश्वर—सं० १९०५–१९३४ = सन् १८४८–१८७८
रि० इ० ए० १९५४–५५ पृ० ४२

परिशिष्ट २

जैनेतर लेखोमे जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख।

(१) बेलगामे

कन्नड

सन् १२९४

[इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय वल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है। इस मन्दिरके हेग्गडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी। इस भूमिमें प्रथमसेनवसदि (जिनमन्दिर) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४]

(२–६) देवगेरी तथा कोलूर (जि० धारवाड, मैसूर)

(११वीं–१२वीं सदी)–कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालका है। इनके अधीन बामवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्मरस शासन कर रहा था। इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये है। इसने कोलूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था। इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण संक्रान्ति थी।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण सक्रान्ति थी। इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था। इसमें भी कलियम्मरसके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के कांकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक बण्णमय्य द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीयका सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) में किया है जब उसने कोलूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (स० ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोलूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरोंको कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लिदेवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा वनवासि प्रदेशपर बलदेवय्यका शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था।]

[ए० इ० १९ पृ० १७९-१९७]

(७) शिवमन्दिर, नीडूर (जि० तंजोर, मद्रास)

तमिल – सन् १११६

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलके राज्यके ४६वें वर्षमें लिखा गया था। इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार (गणपति) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है। यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर (अमृतसागर) मुनिने कारिगै (याप्परुगलक्कारिगै) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामें लिखा था। इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा (अथवा ससुर) थे।

इस छन्द.शास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शेय्युलियल् एवं ओलिबियल् ये तीन प्रकरण हैं। इसपर गुणसागरने टीका लिखी है।]

[ए० इ० १८ पृ० ६४]

(८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था। लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ (शिव) की स्थापनाका वर्णन है। मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है। यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था। इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, जमीन आदि दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७]

(९) गोकर्ण (उत्तर कनडा)

१५वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें महाबलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्पेकी हिरियवस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७]

(१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र (मैसूर)

शक १४८९ = सन् १५६७, कन्नड

[जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० १३]

■

परिशिष्ट ३

नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोका सकलन दे रहे हैं। इन लेखोका सग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास--देवलगांव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह सग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजीकी स्मृतिमे अर्पित किया था। इस सग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जा इस प्रकार थी -- "जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख सग्रहीत किये जावें -- इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक है -- श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोके लेखोको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यन्त्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोका विवरण प्रकट किया जावे। एक सक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेख-रहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक सवत्‌की इतनी -- जिससे पाठकको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा -- आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व वरारके सर्व स्थानोके लेखोके सग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोको अपने-अपने प्रान्तो-के लेखोको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख सग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० सीतल

९-३-१९३६ नागपुर"

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोसे अबतक नही हो सका था। अत हमने इस परिशिष्टमे इसका पुन सपादन किया है। सग्राहकने मूल लेख मन्दिरोके क्रमसे अलग-अलग सग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमे दिये थे। हमने मन्दिरो तथा मूर्तियोका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये है। इन लेखाके विशेष नामोका समावेश सूचीमे कर दिया है तथा वहाँ लेखाकके साथ (ना०) यह सकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोसला राजा रघूजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्राय भोसला राजाओके राज्यमें ही बने है किन्तु इनमे कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोसे भी लायी गयी है। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर है। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोके घरोमें भी छोटे छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोकी सख्या ३७ है। इन सब स्थानोमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि है जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ है। इन मूर्तियो आदिके ४१ प्रकार है जिनकी सख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपार्श्वनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयास ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौबीसी ३४ (२१) पचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलिकुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा यन्त्र १। इन मूर्तियो आदिमें ५२९ के पादपीठो अथवा किनारोंपर लेख हैं। ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है (जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है।)

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियोंमे इस प्रकार विभक्त हैं — विक्रम तेरहवी सदी ४, पन्द्रहवी सदी ३, सोलहवी सदी २२, सत्रहवी सदी ५१, अठारहवी सदी ७२, उन्नीसवी सदी ६९ तथा बीसवी सदा १००।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है। कुछ लेखोंमें नागपुरकी स्थानीय भाषाओं–हिन्दी तथा मराठीका अंशत. प्रयोग हुआ है (लेख क्र० २०६,२६३,२६७,२६९,२७८,२८५) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें कोई लेख नहीं है। एक लेख (क्र० ७३) कन्नडमें तथा एक (क्र० ३१९) उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानाके सोलह नाम उल्लिखित है — नागपुर (क्र० १५२,१९०-२,२१२ २१५,२१६,२२०-१,२२७,२२९ २३१,२३३, २३५, २४२,२४७,२४९,२५०,२५५-७,२५९,२६१,२७९,२८२,२९५) कारजा (क्र० ८१,१२५,१५७-८,२१०), सिरनग्राम (क्र० २०२,२०४), रामटेक (क्र० ७३,२५३) भीलो (क्र० १४३), तजेगाव (क्र० १०६) उमरावती (क्र० १९९), इंगोली (क्र० २३२), सजालपुर (क्र० ७०) बहादरपुर (क्र० ६५), अवडनगर (क्र० १३०) सिवनी (क्र० २८०) छपारा (क्र० २८४), कामठी (क्र० १५४), सावरगांव (क्र० २९३), सवाई जयनगर (क्र० १९३)।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोकी पन्द्रह जातियोका उल्लेख मिलता है — राइकवाल (क्र० ९), अगरवाल (क्र० ५३), गंगराडा (क्र० १०), गोलसिंघारा (क्र० ७३), पल्लीवाल (क्र० ५१), गुजरपल्लीवाल (क्र० २१), पद्मावती पल्लीवाल (क्र० ११४), उज्जैनीपल्लीवाल

(क्र० १०८,१२०,१४३), ओश्रोमाल (क्र० ४९-५०) हुंवड (क्र० ८, २०,३०,३९,८६), गोलापूव (क्र० ६८,२९१), परवार (क्र० ६९,१८८, १९१-९२,२५०,२५४,२६३,२७२,२८५), खडेलवाल (क्र० १०७,२८२) सैतवाल (क्र० ९५,२७९,२८६,२८७), वघेरवाल (क्र० १४, २९,३८, ४४,४६,५५-६,६६,८०-८२,८८-९०,९२,९४,९६,१२२, १२५, १३०-१, १३५,१५७,१८२,१९८,२०१,२०२,२०४,२२७) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकाश मूलसघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी है। इन उल्लेखोका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' मे किया गया है। उससे इन भट्टारकोके बारेमे अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सवत् १५४८ के दो लेख (क्र० १८,१९) विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोपर है। ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमे सेठ जीवराज पापडीवालने प्रतिष्ठित करवायी थी। इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे। इस समारोहमे प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्राय: प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती है।



मूल लेख

१ संमत १२०१ वैसाख वदी तीन। (विवरण क्र० १४०)

२ सं० १२३४ न तु हा ले (?) (विवरण क्र० १६६)

३ समत १२६२ माल । (विवरण क्र० ११५)

४ समत १२६९ वर्षे आषाढ सुदी ३ । (विवरण क्र० ११४)

५ समत १४५७ वर्षे वैसाख सुदी ६ श्रीमूलसंघ भ० आजिनदेव साह माणिक्यचंद । (विवरण क्र० २३१,२३२)

६ मूलसंघ भ० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।
(विवरण क्र० ३०२)

७ सवत १४८५... । (विवरण क्र० ४०)

८ संवत १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुंबडज्ञातिय सा० तेजु भा० मलाई सुत हरिचंद्र भा० नागाई सुत गोविंद भा० वजाई । (विवरण क्र० १६७)

९ सं० १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवालज्ञातिय भार्या अहिवदे सुत वेणा भार्या वनादे कारितं आचंद्रप्रभचतुर्विंशति नित्यं प्रणमंति ॥ श्रीशुभं ॥ (विवरण क्र० १५७)

१० समत १५२४ मूलसंग सेनगणो माणिकसेनगुरु गगराडा मालसेटा भार्या तानाइ । (विवरण क्र० ८०)

११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । (विवरण क्र० १८८)

१२ संमत १५३५ श्रीमू० भ० भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणस्तदुपदेशात् स० दि० समाज । (विवरण क्र० ११३)

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसघे भ० सकलकीर्तिस्त० भ० श्रीभुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरुपदेशात् चांगा भार्या भूसनदे वढासा भा० तानो जी वासपूज्य।
(विवरण क्र० १६०)

१४ [सक] १४०२ व० श्रीक ' श ज्ञात बघेरवाल ' गोत्र सं० पामधन स० जैनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ स० १५४३ श्रीमूलसंग भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् ''ढिवसी भा० गुणा सुत ''भा० नामकाई।
(विवरण क्र० ३८०)

१६ स. १५४३ ' पदमसी '' टन'''।(विवरण क्र० ४३३)

१७ समत १५४५ का ज्येष्ठ । (विवरण क्र० ३४३)

१८ सवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमंति शहर मुडासा राजा स्योसिंव। (विवरण क्र० १-३,१०-२६,४६-४८,८७,९१-१०२,१४६-१५६,२३८-२६४,३६७-६९)

१९ समत १५४८ वरषे वैसाखसुदी ३ श्रीमूलसघे भट्टारकजी श्रीभानुचन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमंति सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ। (विवरण क्र० २१८,२१९)

२० ॐ नम स० १५९२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसघे भ० भुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हु० श्रे० पर्वत भा० टेकू सु० राजा भा० शलष सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीसुमतिनाथ प्रणमति। (विवरण क्र० १६५)

२१ स० १५२४ मूलसघे सेनगणे भ० माणिकसेन उपदेशात् गुजरपल्लिवालज्ञाति संघवी नेमा'''। (विवरण क्र० १३७)

२२ स० १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० बुधो श्रीमूलसघे भ० श्रीज्ञानभूषण त० भ० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् ब० लाडण स०

क० राजा भा० माणिकी सु० कान्हा भा० रूपी भ्रा० गोईया भा० मरगादि भ्रा० श्रीरत्नत्रय नमति । (विवरण क्र० १६८)

२३ संमत १५६१ वर्ष फागुण सुदी ''। (विवरण क्र० ११७)

२४ स० १५७८ मू० भ० धर्मभूषण । (विवरण क्र० ३८३)

२५ संमत १५८२ '। (विवरण क्र० ४८२)

२६ सं० १५८३ । (विवरण क्र० १२१)

२७ स० १५८३ ती १३ । (विवरण क्र० ४५३)

२८ संमत १५८४ श्री मू. स भ विजयकीर्ति तत्पट्टे भ. शुभचन्द्रदेवोपदेशात् ब्रह्म श्रीशांता येलीबाई-ति प्रणमति । (विवरण क्र २०५)

२९ संमत ६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंगे भट्टारक श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे सा. धाऊजी भार्या वोपाई सुत सा माणिक भार्या पदमाई भ्राता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते श्रीसुपार्श्वनाथं नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र ३०९)

३० संवत १६०७ वर्षे वैसाख वदी २ गुरु श्रीमूलसंघे भ श्रीशुभ-चन्द्रगुरूपदेशात् हूँ ससेस्वरा गोत्रे सा जीना भा भाली सु नाका भा नाकदे भ्रा जगा भा ललितादे भ्रा -गर एते सर्वे नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र ४ ६)

३१ [सं.] १६०८ उपा- । (विवरण क्र. ४८४)

३२ समत १६०९ फालगुण ९ दिन- । (विवरण क्र १२९)

३३ संवत १६११ ते रागविंदे (?) प्रणमति। (विवरण क्र ४६०)

३४ समत १६१४ सेनगण धरमाई वापाई चांगामा । (विवरण क्र २००,३६६)

३५ सं० १६१५ मा० १३ । (विवरण क्र ४६०)

३६ स० १६१६ । (विवरण क्र ४६१)

३७ सके १४८५ मू० स-। (विवरण क्र २२५)

३८ मक १४८७ प्रजापतसवत्सरे श्रीमू. सरस्वती वलात्कार भ. धर्मचन्द्राणाम् उपदेशात ज्ञाति वघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन स भार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । (विवरण क्र ४३४)

३९ स. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसघे ब्रह्म श्रीहस ब्रह्म श्रीराजपालोपदेशात् हुवड ज्ञातौ सा. समराज भा. छोकोई स. आसजा भा बाकाई । (विवरण क्र २६८)

४० श्रीमूलसंघ संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् स कर भार्या सहागदेई स वीरदास भा ताकमई श्रीअजितनाथ जिन प्रणमंति ।
(विवरण क्र. ३०७)

४१ समत १६३६ मरानोजी पु (?) । (विवरण क्र ३०६)

४२ सवत् १६३६ श्रीकाष्ठासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुबड सा. जयवतभार्या तसमादे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र ४०८)

४३ शक १५०१ मा तिथी ८ काष्टासघे भ. श्रीश्रीभूषणमदुपदेशात प० जयवं । (विवरण क्र ४३६)

४४ सक १५०३ वृषा नाम सवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ ब. भ धर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे स पासुमा भार्या भ० रुपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंबाई रामासा भार्या बोपाई एते प्रणमंति । (विवरण क्र ४२१)

४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।
(विवरण क्र ३९१)

४६ समत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये वघेर-

वालज्ञातिये बोरखंडियागोत्रे संगई पुजासा स० घवाई प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४५०)

४७ संमत १६४६ वर्षे श्रीमूलसग भट्टारक श्री…वीर तत्पट्टे भ. श्री सेन तस्य शिष्य पडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी भार्या दामाई तयो पुत्र गकुरमाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुव तुवाजीसाह भार्या लखमाई तेषां नित्यं प्रणमति साव फागुण शुदी १० गुरुवासरे श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ जे पूजता ते भवतु ॥ जयस्तु ॥
(विवरण क्र० ३११)

४८ स. १६४९ फा शु १३ मू बलात्कार. भ पद्मकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ४३०)

४९ [सं०] १६५२ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाक' ''
(विवरण क्र० २६६, २९९)

५० समत १६५२ वैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्य प्रणमतु
(विवरण क्र० ४७५)

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे वैसाख सुदि त्रयोदशीदिने थटापित श्रीमूलसघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. वायासा तस्य भार्या गगाई तयो पुत्र स लखमसी तस्य भार्या द्वौ गोमाई लालाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स मोतासा द्वितीय नेमा प्रणमति । (विवरण क्र० १२४)

५२ श्रीमूलसघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसम्मंतभद्र लक्ष्मीसेनभट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा रवौ सघवी सोमसेठी श्रीमंगक । (विवरण क्र० १३०)

५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी' 'अगरवालज्ञा० । (विवरण क्र० ४८३) ।

५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता। (विवरण क्र० २७१)

५५ संमत १६६० वर्षे फाल्गुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासघे लाडबागडगच्छे भ० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे वघेरवालज्ञातिय-सा भारथा वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु भा परिहाई श्रीपद्मावति प्रणमति श्रीकाष्टासघे नद्रितटगच्छे भट्टारक श्री श्री श्रीभूषण प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४१४)

५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसघे सेनगणे श्रीमनवृषभसेनगणान्वये भ० श्रीलोमसेन तत्पट्टे भ० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे भ० श्रीगुणभद्र तत्पट्टे भ० श्रीगुणसेन उपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खटवडगोत्रे स० श्रीहरकसा भार्या गोजाई तयो सुत स० गणासा भार्या कडताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमति । (विवरण क्र० १९०)

५७ समत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुक्ताबाई श्रीशीतलनाथबिंबका म०-। (विवरण क्र० २७८)

५८ सक १५२६ माहो सुद १३ भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्टित सितलसिंघवी-वाजी सवाल तुरासु (?) रुपा नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० ४३९)

५९ सवत १६६२ वर्षे ''श्रीमूलसंघे भ० जगतकीर्ति सदुपदेशात्'' खंडेलवालान्वये-प्रतिष्टित (विवरण क्र० ४८६)

६० समत १६६४ '''महाराजाधिराज श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वय प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० २७)

६१ समत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसघे कुं० भ० यशोकीर्ति

तत्पट्टे भ० ललितकीर्ति तत्पट्टे भ० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पट्टे-।
(विवरण क्र० २१३)

६२ ॐ नम समत १६७१ वर्षे वैमाख सुद ५ मूलसघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० यशकीर्ति तत्पट्टे भ० धर्मकीर्ति तदुपदेशात् पौरपट्टे सा उदयचंद भार्या-अचित्रारा मूले गोहिलगोत्रे-उदयगीरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं सोनी दामोदर निर्मापित संमवानि म्माहिन प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठित नंदिश्वरजिनबिंब।
(विवरण क्र० २१७)

६३ सवत् १६७२ वर्षे फागुण मित २ तिथौ मेडतानगरे लोढागोत्रे म० वारपान भार्या सकतादेवीभ्या श्रीधर्मनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभि । (विवरण क्र० १७८)

६४ मके १७३७ । (विवरण क्र० ४४१)

६५ संमत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखड्यागोत्रे धर्मतीसा भार्या अबाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पचपुत्र सभार्या सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमति । श्रीकाष्ठासंघे नंदितट-गच्छे भ० श्रीभूषण प्रतिष्ठित बहादरपुर । (विवरण क्र० २९८)

६६ समत १६७६ वर्षे माघवदी ' काष्टासंगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रताप-कीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोचालगोत्रे म० बापु भार्या जमुना (विवरण क्र० १४२)

६७ [म०] १६८१ पार्श्वनाथ मानिक । (विवरण क्र० ४३८)

६८ सवत १६८१ वरषे चैत्र सुदी ५ रवऊ श्रीमूलसघे भट्टारकश्री-ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे आचार्यश्रीचंद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खाग नाम गोत्रे सेठि भाजु भार्या चंदनसिरी तत्पुत्र सेठि कतुर भार्या किसवा तस्य पुत्री जादो नित्यं प्रणमंति (विवरण क्र० २६५)

६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ० धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातो । (विवरण क्र० २२३)

७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने सजालपुरवास्तव्य स० चद्रा श्रीपार्श्वनाथबिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीविजयदेवसू [रिभि]। (विवरण क्र० २०१)

७१ सवत १६८१ माघ सुदी १ दिन ' । (विवरणक्र० १०८)

७२ भवरगोत्र पानासा समत १६८६ । (विवरण क्र० १४४)

७३ सवत १६८६ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मचंद्र तदाम्नीय आ(चार्य)पासकीति तदुपदेशात् संघवि बरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सातिनाथ प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५ शमि तिलक मंगल शुभ भवतु ॥ छ ॥ (विवरण क्र० २७४)

७४ स० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । (विवरण क्र० ३८२)

७५ समत १६९२ मिति वैसाख वदी ११ सोमवासरे भ० धर्मचद्रजी । (विवरण क्र० १२०)

७६ शके १५६१ प्रभवनामसवत्सरे फाल्गुण सुदी द्वितीया मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठित '। (विवरण क्र० १११)

७७ शके १५६१ फाल्गुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसघे पुष्करगच्छे सेनगणे हुयड' । (विवरण क्र० १३४)

७८ शक १५६१ फाल्गुण श्रीमूलसघ सेनगण भ० श्रीसोमसेन तुकसाव गुणासाव' बोपासा नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र० २११)

७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्चरे काष्टासघे लाडवागड वघेरवालगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०''''

ठ० सा० पामादि पु० ठेवासा नि० प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसेन प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २२५)

८० शके १५६१ पार्थिवनामसंवत्सरे श्रीमू० ब० स० भ० धर्मचन्द्रोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खडारियागोत्रे श्रावण सा० गगाई तयोपुत्र भाणिकसा भार्या गोपाई प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३८९)

८१ संमत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदी १० शके श्रीकाष्टासंघे लाडबागडगच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजानगरे प्रतापकीर्तिआम्नाय बघेरवाल ज्ञातीय कावला गोत्र सा श्रीपासा भार्या पद्माई तयो सुत सा वण भार्या मणकाई तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स० श्रीरामा भार्या अवाई द्वितीय पुत्र सा पतसा एते समस्त श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भ० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्रीविश्वसेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे भ० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मी सेनजी प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १३५)

८२ मूलसंघे बलात्कारगणे भ० धर्मभूषणगुरूपदेशात् बघेरवाल पुत्र सा (भिन्न अक्षरमें) संमत १७०६ वर्षे सौ ' माह सु० ५ सो पुजासा । (विवरण क्र० २१०)

८३ शके १५७२ '। (विवरण क्र० ११८)

८४ संमत १७११ भ० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रवते प्रणमंति । (विवरण क्र० ३३६)

८५ ॐनमः सिद्धेभ्य सा स० संवत १७११ श्रीभट्टारक । (विवरण क्र० ४७६)

८६ संवत १७१२ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीशांतिदास तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवादिराज गुरूपदेशात् हुंवड ज्ञातीय वाई

लावाई इति सिद्धयत्रं नित्य प्रणमंति । शुभं भूयात् ।
(विवरण क्र० २७५)

८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० भ० श्रीधर्मभूषण उपदेशात् तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र मूलसा त० देवाई ।
(विवरण क्र० १८४)

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्टासघे नंदितट-गच्छे भ० इन्द्रभूपण प्रतिष्ठित बघेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे "भा० हुलणबाई" प्रणमति । (विवरण क्र० १४१)

८९ संवत १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्टासघे नंदितटगच्छे विद्या-गणे "बघेरवाल ज्ञातीय बोरखंड्यागोत्रे स० खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ प्रणमति । (विवरण क्र० १४२)

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री इन्द्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाती बोरखंडियागोत्रे तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा एते अंबिका नित्य [प्रणमंति] (विवरण क्र० ४४७)

९१ संभत १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासघे नंदितटगच्छे विद्यागणे भट्टारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक लक्ष्मी-सेन तत्पट्टे भ० इन्द्रभूषण प्रतिष्ठितं सघवी खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमति काष्टासघे लोहाचार्यान्वये प्रतापकीर्ति सघवी खाभा भार्या पुतलाई स० धनजी । (विवरण क्र० ४४८)

९२ सवत १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्टासघे लाडवागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ कावरी "।
(विवरण क्र० ५)

९३ शके १५८१ मौ० फा० व० ३ मू० स० भ० पद्मकीर्ति सा० ज्ञा० बुनमेट माव्या आता । (विवरण क्र० ३०२)

९४ शा० १५८१ फ० व० पद्म० भ० जे० का० ज्ञा० बघेरवाल लुगाई श पु ता सा मा वा मा त (?) ग गु °।
(विवरण क्र० ४०६, ४०९)

९५ सक १५८२ स्यार्वरी नाम सवत्सरे तीथ फाल्गुण सुद दसमी १०॥ श्रीशांतीनाथचैत्यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान् भट्टारक श्रीपद्मकीर्ति उपदेशात रामटेक नग्र ज्ञाती भट्टतवाल ° रायाली जाई । (विवरण क्र० २७३)

९६ सके १५८७ फाल्गुण शुद्ध ७ तिलक सेन भट्टारक श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञातौ चवरियागोत्रे सा० ° मार्या °°नित्य प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४४५)

९७ समत १७१८ । (विवरण क्र० १२३)

९८ शके १५८३ प्रभवनामसवत्सरे ज्येष्ठवदी प्रथम य० कु० भ० ° । (विवरण क्र० २२९)

९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनामसवत्सरे तिथी फागुण शुद ५ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० धर्मचंद्र तत्पट्टे भ० धर्मभूषण ,महाराज प० नेमाजी मार्या राजाई पुत्र सोयराजी ता प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २०८)

१०० शक १५८६ ° । (विवरण क्र० ३८८)

१०१ शके १५८९ । (विवरण क्र० ७)

१०२ शके १५९७ वैसाख मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वयं भट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ० अजितकीर्ति त० भ० विशालकीर्ति उपदेशात' सोनोपडित रोडे ।
(विवरण क्र० १८०)

१०३ संमत १७३१ । (विवरण क्र० १२२)

१०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ भ० ''कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू० स० ब० । (विवरण क्र० २२१)

१०५ शके १५९७ मुलसंघ बलात्कारगण भ० धर्मभूषण ॐ हरीसाव पुत्र फकीचद प्रणमति । (विवरण क्र० २२८)

१०६ श० १५९७ मू० सेनगणे भ० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ भा० सिशबाई पु० कृस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमति । (विवरण क्र० ४५७)

१०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीसुरेंद्र-कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र सगहान प्रतिष्ठा कारिता । (विवरण क्र० ३७७)

१०८ शाके १५९७ मू ॥ ब ॥ भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्ली-वालज्ञातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमति । (विवरण क्र० १५९)

१०९ [श०] १५९७ मु० जीनसेन ऊ० लखसेट माहोरकर प्रण-मंति । (विवरण क्र० १६२)

११० शके १५९९पिंग्ल श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९७)

१११ सक १६०१ समत १७३६ । (विवरण क्र० ३५९)

११२ सक १६०" ागशिर्ष । (विवरण क्र० २२०)

११३ १६०१ ० ीमू० । (विवरण क्र० ४९१)

११४ सके १६०१ फालगुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मकीतसद्गुपदेशात्श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ भडनाथ कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई तयोपुत्र वाघुजी प्रणमति । (विवरण क्र० २७२)

११५ सातिनाथ सके १६०४ श्री । (विवरण क्र० ३७५)

११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५ श्रीमूलसघे खडारियागोत्रे स. पी० । (विवरण क्र० १२९)

११७ सातनाथ सके १६०७ ४ माघेर । (विवरण क्र० ४६२)

११८ सके १६०७ ''। (विवरण क्र० ४७४)

११९ सके १७०७ समत १७४२ । (विवरण क्र० ४५२)

१२० शके १६०७ प्रभवनामसंवत्सरे फाल्गुण वद्री १० भ० धर्मचंद्र उपदेशात् मु० नगरे ज्ञाते उज्जेनीपल्लीवार गोटसा भार्या मेमाई य० साह ' भार्या नागाई प्रणमति । (विवरण क्र० १८७)

१२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषण स्वकर्मक्षयार्थं । (विवरण क्र० २६७)

१२२ संवत १७४४ सके १६०९ फाल्गुण सुद १२ श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे सघवी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र संघवी जमनाजी भार्या हासुबाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलाबा भार्या गंगाई भ० पुजाबा भा० देवकु भ० शीतलाबा भा० सकाई इ० पदाजी एते सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्ठासंघे नंदितटगच्छे भ० इन्द्रभूषण भ० सुरेंद्रकीर्ति । (विवरण क्र० १७२, १७४, ४४६)

१२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्टासंघे लाडबागडगच्छे प्रतापकीर्त्याम्नाय भ० सुरेंद्रकीर्ति स० पदाजी भा० तानाई पु० राजबा भा० सोनाई पु० अनतोबा भा० पाभाई जी प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)

१२४ सके १६०९ ' बलात्कार । (विवरण क्र० ४७८)

१२५ सवत १७४५ ज्येष्ट सुदी २ सोमवार श्रीकारजानगरे काष्टासंघे प्रतापकीर्तिआम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखडियागोत्रे सा० मनासा भार्या शकाई तयो पुत्रा श्व सा अर्जुन भा० रगाई शितलसा भार्या सायरा लक्ष्मणसा भा० जीवाई येसोबा पुतलोबा ' नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० ५४९)

१२६ मिती वैसाख सुदी २ संमत १७४५ ··। (विवरण क्र० ६६)

१२७ समत १७४६ । (विवरण क्र० ३२६)

१२८ शके १६११ श्री ··। (विवरण क्र० २६१)

१२९ स० १७४६ । (विवरण क्र० ३८४)

१३० समत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ भ० श्रीइंद्रभूषण त० भ० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित श्रीकाष्टासघे लाडबागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० भ० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे स० बापु पुत्र स० भोज सघवो पदाजी भार्या तानाई पुत्र स० बापु स० जमनाजी स० राजबा अथ सघवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटमपरिवार नित्य प्रणमंति दर्शनयत्र श्रीअबडनगर प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७६)

१३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे भ० श्रीकुदकुदाचार्यान्वय भ० धर्मभूषण त० भ० विशालकीर्ति त० भ० धर्मचन्द्रोपदेशात् बघेरवालज्ञाति सदासो गोत्रे सा० राघुसा सुत कपुसा अंबिका नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३२)

१३२ समत १७५० सवधारी नाम सवत्सरे आषाढ कृष्ण तिथ भार्या श्री ··· । (विवरण क्र० ७३)

१३३ शके १६१७ फा० ५ · । (विवरण क्र० २७८)

१३४ स० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसघ भ० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११)

१३५ संवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ६ सनौ श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र स० तवना भार्या

सिता पुत्र सं० मामा भार्या देगाई संघवी धर्मा भार्या फाकाई तयो पुत्र स० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र भोज द्वितीयभार्या ॰ इत्यादि सपरिवारे नित्य प्रणमति । श्रीकाष्टासंघे नदीतटगच्छे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० इंद्रभूषण तत्पट्टे भ० सु (रेंद्रकीर्ति) । (विवरण क्र० १६९)

१३६ समत १७५२ वरषे मिती वैसाख सुदी ३ ··पापडीवाल प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ५८,६३,६४,८८)

१३७ शाके १६१४ वै० सु० ३ श्रीमूलसंघ सेनगण । (विवरण क्र० १६४,२१६)

१३८ संवत १७५४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ० छत्रसेनोपदेशात्···। (विवरण क्र० ८)

१३९ [सं०] १७५६ श्रीमु० बा० स० श्रीदेवेंद्रकीर्ति भ० प्रतिष्ठित मिती माघ सुद ५ । (विवरण क्र० २०४,४६९)

१४० सके १६२२·· भ० श्री चंद्रगुरूपदेशात् । (विवरण क्र० ३३०)

१४१ शाके १६२४ चित्रभानामसंवत्सरे माघ ।

१४२ सं० १६२६ भ० हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठित सी० स० । (विवरण क्र० ४१२)

१४३ शक १६२६ तारणनामसंवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मुलसंघ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ० विद्याभूषण त० भ० हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनीपल्लीवालज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी सितलसिंगवी सितलसिंगवीप्रतिष्ठित मांसीनगरे चंद्रनाथचैत्यालये गुमास्ता चिंतामणिसा नित्य प्रणमतु (विवरण क्र० २१०)

१४४ शक १६२६ तारण संवत्सरं माह सुद १३ मूलसंघ ब० भ०

हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । (विवरण क्र० १८६)

१४५ शके १६२८ विसवनामसवत्सरे माघ ॱ। (विवरण क्र० २०५, ३३८,४०१)

१४६ सक १६३६ जय० फा० दत्ताजी । (विवरण क्र० ४३५)

१४७ समत १७७२ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद (कुदाचार्यान्वये) । (विवरण क्र० ५७)

१४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ३ श्रीमू० स० । (विवरण क्र० २९)

१४९ स० १७८३ । (विवरण क्र० ४६३)

१५० समत १७९१ मूलसघ । (विवरण क्र० ११९)

१५१ समत १७९३ प्र० श्रीमू० स० ब० भ० श्रीधर्मचन्द्रना उपदेशात् ज्ञान बा० भोजसा भा नाथाई त० पु० फदम्मा (?) नित्य प्रणमति । (विवरण क्र० ४०५)

१५२ सवत १८०० वैसाख शु॥ ३ भौमवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये नागपुरमे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ५१,५६)

१५३ समत १८०० वैसाख सुदी ३ । (विवरण क्र० ५९)

१५४ समत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे भट्टारक श्रीचारुचद्रभूषण तदोपदेशात् नगरे प्रतिष्ठा करापिंता' कामठी सदर "। (विवरण क्र० २०९)

१५५ शके १६७६ । (विवरण क्र० ३३५)

१५६ श्रीमूलसगे सके १६७६' । (विवरण क्र० ४४३)

१५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मुलसंघ पुष्करगच्छे सेनगणेम्नाये भट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनसेनगुरूपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बघेरवालज्ञात

सावलागोत्रे वीरासाह भार्या हिराई तयोपुत्र जिनासाह भार्या गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र नवनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र गिनल्साह भार्या पदाई नित्यं प्रणमति। (विवरण क्र० १७७)

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघ भ० शांतिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं कारंजाग्रामवास्तव्येन बेवाजाति कु० गोत्र पु० चिंतामणसा नित्यं प्रणमंति । (विवरण क्र० २१२)

१५९ संवत १८१४ शके १६७९ । (विवरण क्र० ४४४]

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० व० कुं० भ० धर्मचंद्र पार्श्वनाथबिंब । (विवरण क्र० १३८)

१६१ शक १६८६ म० भ० ब० भ० धर्मचंद्र। (विवरण क्र० २०३)

१६२ शके १६८७ फा० ५ ब्र० । (विवरण क्र० ४३१)

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे भ टा कं (?) फा० सु० २ । (विवरण क्र० ४७०)

१६४ संवत १८२२ चैत्र वदी ८ । (विवरण क्र० ३१६)

१६५ संवत १८२७ सके १६९२ वैसाख सुदी १२" "उपदेशात् " । (विवरण क्र० २९९)

१६६ सके १६९२ मिती धमाख वद ११ श्रीमूलसंघे स० व० भ० धर्मचंद्र प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६)

१६७ शके १६६५ । (विवरण क्र० ४६७)

१६८ सके १६६५ मन्मथनामसंवत्सरे । (विवरण क्र० २३६)

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ ब्र० बाबजि । (विवरण क्र० ८५४)

१७० सके १६९७ म० भ० म०" "भ० अजितकीर्ति" "। (विवरण क्र० ४६५)

१७१ सके १६९७ स० फा० सु० ५ भ० ब्र० मना । (विवरण क्र० ४७३)

१७२ सके १६६७ फा० ५ ब्र० अय ति० । विवरण क्र० ४७७)

१७३ (सके) १६१७ फा० ५ म० व० ल० । (विवरण क्र० ४७१)

१७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । (विवरण क्र० ४८०)

१७५ सके १६१७ मनाजी सेठ म० अ० । (विवरण क्र० ४२३)

१७६ शके १६९७ मि० फा० २ '' नथु । (विवरण क्र० ३१५)

१७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० व० स० कु० म० पद्मकीर्ति म० विद्याभूषण म० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मासे शुद २ पचपरमेष्टी । (विवरण क्र० २२७)

१७८ शक १६१७ नाम सवत्सरे म० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । (विवरण क्र० २०६)

१७९ शके १६९८ सु० (विवरण क्र० ३२४)

१८० श्रीमूलसघी सके १७०५ । (विवरण क्र ४४०)

१८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण । (विवरण क्र० ७१)

१८२ समत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासघे लाडबागड नदितटगच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० सकलकीर्ति तत्पट्टे म० लक्ष्मी सेनजी श्रीबघेलवालजाति जुगिया गोत्रे···काष्टासघ गाडी । (विवरण क्र० १३३)

१८३ सके १७१० श्री कीलनामसम्वत्सरे मिती श्रावण सुद १२ श्रीमूलसघ चिमनाजी सरावगे तथ पुत्र मुरारजी । (विवरण क्र० १२८)

१८४ सा० १७१० काष्टासघी वबांसा जोगी । (विवरण क्र० १७३)

१८५ समत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंघे नदितटगच्छे श्रीलक्ष्मासेनजी प्रतिष्ठित···। (विवरण क्र० १३२)

१८६ समत १८५२ भट्टारक ···उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ४६८)

१८७ सके १७१८ संवत १८५३ मार्गेश्वर । (विवरण क्र० ४६२, ४६६)

१८८ ॐ नम. सिद्धेभ्य समत १८५७ शके १७२२ मादवा सुदी १० सोमवासरे कु दकुंदाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात् गोहिल परवार ज्ञाते ' मगल भूयात् । (विवरण क्र० २१)

१८९ साल १७२३ सवत १८५८ फागवदी २ । (विवरण क्र० ४२५)

१९० संमत १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ३०, ४४, ४५)

१९१ समत १८५९ दुदुभिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये भ० श्रीरत्नकीतिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । (विवरण क्र० ३२)

१९२ समत १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारा-न्वये सेतनागर गोहिल्लगोत्र' भार्या प्रतिष्ठा करापित । (विवरण क्र० ३३, ४३)

१९३ समत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासरं सवाईजयनगरे श्री-सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा ' प्रतिष्ठा कारिता । (विवरण क्र० २४६)

१९४ सवत १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्टित । (विवरण क्र० ३७०, ३७२)

१९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ११०)

१९६ शके १७४३ श्रीमूल '। (विवरण क्र० ४८३)

१९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ । (विवरण क्र० ९०, १७१)

१९८ संवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासघे भ०

सुरेंद्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्ति गजोमान जाति बघेरवाल। (विवरण क्र० १७०) .

१९९ संवत १८८१ शु० भ० श्री० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्… प्रतिष्ठित श्रीटमगवर्गोनगरे । (विवरण क्र० १८०)

२०० संवत १८८९ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्…प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ५२)

२०१ संवत १८८० मार्गशीर्ष वद १० गुरुदिने श्रीमत्काष्ठासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाये नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति गजमान जाति बघेरवाल गोत्र बागड्या सा० गंगाया पु० पूनाया यंत्र प्रणाम्यति । (विवरण क्र० ३०२)

२०२ संवत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्याम्नाये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवास्तदुपदेशात् बघेरवाल पापड्या सरसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा कारापितं । (विवरण क्र० ४२८)

२०३ संवत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ति० ५ आदित्यवासरे बलात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमत भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामीजी श्रीं बिंब प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४७१)

२०४ शके १७५३ संवत १८८८ वैशाख शुद्धी ७ गुरुवार स्वस्ति श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० धर्मचंद्रदेवास्त तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवास्त भ० भ० पद्मनंदिदेवास्त कारंजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत देवेंद्रकीर्तिउपदेशात् वैरागमध्ये निम्बग्रामे माणिकवा बघेरवाल तत्पुत्र पाया गोत्र चवरे प्रतिष्ठा कारापित । (विवरण क्र० १९१)

२०५ समत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसवत्सरे श्रीमू० स० व० कु० भ० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति•• प्रतिष्ठा कराम्वितं । (विवरण क्र० २८)

२०६ संवत् १८८८ वैसाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसघे व० स० श्रीकु० इद प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपचकमेटिके स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठिनिये । (विवरण क्र० ५५)

२०७ संमत १८८८ • । (विवरण क्र० १०६)

२०८ समत १८८६ वैसाख शुक्ल ११ गुरुवासर मलसव व० स० कुदकुदाचार्यान्वय । (विवरण क्र० ८५)

२०६ समत १८८९ वृपभायणे•• । (विवरण क्र० १०३)

२१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसवत्सरे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पराठी मूलसंघे स० व० कारंजानगरे इद पद्मादेवि श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम् । (विवरण क्र० २३७)

२११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मुलसघ कुदकुदाचार्याम्नाय व० स० भट्टारकपद्मनदिदेवात् तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हिला पुत्र नेभुराम भ्राता रामजी भार्या लाडव प्रतिष्ठितं प्रणमंति । (विवरण क्र० १८६)

२१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपार्श्व च० । (विवरण क्र० ३९६)

२१३ श्रीमूलसघ सक १७५९ । (विवरण क्र० ४५४,४५८)

२१४ श्रीसंवत १८६४ साल आषाढ व॥ ६ श्रीमहावीर स्वामीजीका मुख । (विवरण क्र० ४६,५०)

२१५ समत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसवत्सरे वैसाख सुदी ३ बुधवासरे इद श्रीपार्श्वनाथस्वामी श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमद्देवेंद्रकीतिस्वामी

नागपूरे प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २१४)

२१६ सवत १८९८ मिती श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपूरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये इन्द्र अलयात्रायत्र प्रतिष्ठित (विवरण क्र० २७०)

२१७ संवत १८६६ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंग बलात्कार गण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा प्रतिष्ठितं गोपीसाह । (विवरण क्र० ३३२)

२१८ श्रीमूलसंघे शके १७६४ । (विवरण क्र० ११२)

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ र…नाम संवत्सरे । (विवरण क्र० ७७)

२२० समत १९०० सके १७६५ सोवल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागपूर पार्श्वनाथचैत्यालये अथ मेरू देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १८१)

२२१ सवत १९०० शके १७६५ सोमचक नाम सत्वसरे चैत्र सुद ३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीनागपूरे श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशांतिनाथस्वामी देवेंद्रकीर्तिस्वामींना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७८,१७९)

२२२ समत १९०२ माघ सु॥ १३ (विवरण क्र० २८३,३००)

२२३ समत १९०२ माघ सुदी तेरसी भ० देवेंद्रकीर्ति हस्तेन सुखालाल प्यारेलाल… प्रतिष्ठा करायिता । (विवरण क्र० ३२१)

२२४ शके १७६७ । (विवरण क्र० ३३२)

२२५ समत १९०२ शके १७६७ तेरसीदिवसे प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३९)

२२६ सवत १९०४ शके १७६९ मिती वैसाख सुदी १२ बुधवासरे इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेंद्रकीर्तिस्वामी तेन प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६०,६१)

२२७ संवत १९०४ शके १७६९ प्लवगनामसंवत्सरे मिती वैसाख सुदी १३ बुधवासरे इद मुनिसुव्रत स्वामी श्रीमूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति उपदेशात् बघेरवालवंश चवरियागोत्रे रतनसावजी श्रीनागपूरे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० २२४)

२२८ संवत १९०४ मिती वैसाख सुदी १३। (विवरण क्र० २८२)

२२९ संवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावणसुदी ५ सोमवार नागपूरनगरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये इद पद्मावतिदेवि प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० २३४)

२३० संवत १९०७ शके १७७२ मिती श्रावण सुदी ५ सोमवासरे नागपूरनगर मुलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अय पार्श्वनाथप्रतिमा भ० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १९६)

२३१ संवत १९०७ मिती श्रावण सुद ५ मू० स० ब० नागपूरं पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १८५, २८५)

२३२ अथ मेरु डगोलीग्रामे शांतीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित संवत् १९०८ शक १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसंवत्सरे श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपूरनगरे पार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अथ मेरू जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठाप्य डगोलीग्रामे स्थापित (विवरण क्र० १९५)

२३३ संवत १९०८ शक १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार मुलसंग सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अयं श्रीनेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं।

(विवरण क्र० २१७, २३०)

२३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवत्सरे ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणभद्रदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात् तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् बघेरा ज्ञाति माणिकशेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या भरवाई रगसेटी भार्या माकाई इदं प्रतिष्ठा केली द्वितीय साखा भ० गुणभद्रदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं थी धायाजी लखमजी रगो (विवरण क्र० २२६)

२३५ समत १९१२ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनतनाथस्वामी नागपूरे प्रतिष्ठित (विवरण क्र० १८२)

२३६ समत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ मू० स० ब० कु० प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १६८)

२३७ मा थं था म न (?) सवत १९१५ । (विवरण क्र० ११६)

२३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कु० हिरालालसा ठाकूर । (विवरण क्र० २४, ५१)

२३९ समत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री मू० स० ब० कु० लुखुसा [illegible] साव । (विवरण क्र० २५,२६,२२८,२२६)

२४० समत १९१६ फागुण सुद ११ समवांवृतं (?) कुदकुदाम्नाय गणहु गगाराम । (विवरण क्र० २७)

२४१ संवत १९१६ मि० फागण सुदी ११ श० श्रीमू० स० ब० कु० अय श्रीअजितनाथस्वामी सुखोसाव परवार तेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ४१,२८६,२८८–२९०,२६३,३०३,३०८,३२१)

२४२ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुंदाचार्यान्वये अय श्रीमहावीरस्वामीजी भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संभुरामजी तस्य

पुत्र भागचंदजी अजमेरा खंडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठित गुरुवासरे नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय। (विवरण क्र० ६५,६६,७०,७५,७६)

२४३ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरवार। (विवरण क्र० ६७,६८,८२)

२४४ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० सरूपचद अजमेरा तेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ७१)

२४५ संमत १९१६ माघ सुदी १० मूलसंघे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ७८)

२४६ समत १९१६ माघ सुदी १० गुरवारे श्रीमू० स० ब० कु० नेमिनाथस्वामीजिन। (विवरण क्र० ८१,१६९)

२४७ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरवासरे श्रीमू० स० ब० भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठित नागपूरमध्ये। (विवरण क्र० ८४)

२४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० ब० कुद० अथ श्रीआदिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २८७)

२४९ समत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपूरनगरे श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसंघे स० ब० कु० अथ श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २९१)

२५० समत १९१६ मिती फागुणसुदी ११ शनिवासरे श्रीमू० स० ब० कुं० नागपूरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अयं श्रीआदिनाथस्वामी मूलनायक भ० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् ठकुरदास तत्पुत्र मनीलाल परवार वोछल मुर कोछल गोत्र ते प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २६६)

२५१ संवत १६१६ मिती माघ ...। (विवरण क्र० ८६,४२७)

२५२ संमत १९२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे भ० करा...। (विवरण क्र० २८०)

२५३ संमत १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० हेम-कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्टित। (विवरण क्र० २८४)

२५४ संवत १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भट्टारक श्रीहेम-कीर्तिजी तदाम्नाये परवाडान्वये कोछलगोत्रे संघवी तुरसीदास तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा कराप्वितं। (विवरण क्र० ४)

२५५ संवत १९२५ शके १७९० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासर श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपूरमध्ये चोम्नालाल तस्य भार्या चीराबाई ने प्रतिष्ठा कराप्वित।

२५६ श्रीजिनो जयति॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रेभ्यो नमः। संवत १९२५ का शक १७९० का विभवनामसंवत्सरे सिमरन्नता मासोत्तमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ५ पंचमी गुरुवासर उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवा-स्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाय कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे भट्टारकश्री हरषकीर्तिजी तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तराडेण (?) इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरा गोत्रे संघवी कृपारामजी तत्पुत्र कलुपाऊजी भार्या हीराबाई तत्पुत्र भूपपाल मायजी छोटेलाल तेन सपरिवारेण संघवी कलुपाऊ श्रीप्रतिष्ठा करापित॥ श्रीरस्तु॥ श्रेयामस्तु॥ रक्षित-मस्तु॥ (विवरण क्र० २८५)

२५७ श्रीसमत १९२५ शक १७९० विभवनामसंवत्सरे मिती वैसाख-मासे शुक्लपक्षे तीर्थी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन प्रतिमाया श्रीमद् देवेंद्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारे-सावजी भार्या पुनाबाई परवार तेने प्रतिष्ठा करापित ।

(विवरण क्र० २९४)

२५८ समत १९२५ वै० शु ॥७ बु० कु० दे० नागपूरमध्ये गुमान-साव तस्य पुत्र चुडामणसा तस्य पुत्र भोजराज परवार तेन प्रतिष्ठा कराप्वित । (विवरण क्र० २९६)

२५९ समत १९२५ वैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० ब० कु० श्रीपार्श्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३१२-१४)

२६० समत १९२५ वैसाग सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगा-बाई । (विवरण क्र० ३२७)

२६१ समत १९२५ मिता श्रवण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि-नाथजी । (विवरण क्र० ३३६)

२६२ समत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी ।

(विवरण क्र० ३४४)

२६३ समत १९२५ का मिती माघ सुदी ७ सोमवासरे श्री मूलसंघ ब० स० कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ० हेमकीर्तिना तदाम्नायवरती पंडित सवाईरामोपदेशात् परवारान्वये कोछलगोत्रे सघई तुलसीदास तत्पुत्र स० लाल कुंजलाल बिहारीलालेन प्रतिष्ठा की । (विवरण क्र० ३५५)

२६४ समत १९२५ वैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीमद्देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३७१)

२६५ समत १६७५ माघ सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० ३७३-४)

२६६ श्रीमूलसंगचे " समत १६७६ प्रमवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥
(विवरण क्र० ४५१)

२६७ समत १६७८ प्रमवनामसवत्सरे* माघ शुक्ल द्वादर्शातिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत देवेंद्रकीर्तिभट्टारक प्रतिष्ठा करणार ग्यारंसात सनास्याथ। (विवरण क्र० ३१६)

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १६२८। (विवरण क्र० २१७)

२६९ सवत १९७८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार सनालाल सवाईसघवी। (विवरण क्र० ४२)

२७० सवत १६२८ (विवरण क्र० ३८)

२७१ ॐ चंद्रनाथ ग्रेन समत १९३३। (विवरण क्र० ७०)

२७२ समत १९३९ शके १८०४" प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती भट्टारक प्रतिष्ठा कराविणार सुनीयाबाई परवारीन। (विवरण क्र० २०९)

२७३ श्रीपारसनाथजी स० १९४८ (विवरण क्र० ३०४)

२७४ समत १९७२ वैसाख सुदि १३ सोमवासर प्रतिष्ठितं।
(विवरण क्र० ८४)

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पन्नाग्ग ओंजास्याथ।
(विवरण क्र० ४०२)

२७६ संवत १९५८ वैसाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये भट्टारक देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २७६)

२७७ मा० शी० ७ श्री० रा० व० स्व० बा० श्री० श्र० प्र० ना० सं० १९६१। (विवरण क्र० ४१८)

---

* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है।

२७८ संमत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥१० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात् चांगामाव गंगाबावजी चवरे याहांनी प्रतिष्ठा करविली।

(विवरण क्र० १२५)

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० समत १९६१ मार्गशिर्ष व ॥ सप्तम्यां पण्डितवर्य रामचन्द्र ब्रह्मचारिणां पञ्च शेतवाल अनुगया प्रतिष्ठित इद प्रतिमा। (विवरण क्र० १०७)

२८० संमत १९६६ कुं०म्नाय सिवनीनग्र प्रतिष्ठितं।

(विवरण क्र० ३२७)

२८१ वीरसंमत २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ मु० वा० ग० प्रतिष्ठितं।

(विवरण क्र० ४३७)

२८२ समत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरे मुलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कारंजापुरे पट्टाधिकारी भ० देवेन्द्रकीर्तिस्वामी उपदेशात शिखरजीकी पादुका खंडेलवालज्ञातिय पाटणीगोत्र हजारीलाल गेंदालाल येन प्रतिष्ठा करापितं नागपूरनगरे।

(विवरण क्र० १६७, २३३)

२८३ समत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठित कन्हैयालालजी गरीबे यांचे आईचे नन्दिश्वर प्रतोद्यापनार्थ।

(विवरण क्र० २२२)

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसंवत्सरे १९८८ विक्रम मावमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये फणिन्द्रपुरनिवासी परवारज्ञातिय सेलामूर गोहुल्लगोत्रोत्पन्न परमानंदप्रजात्मज परवारभूषण फत्तेचंद्रदिपचन्द्राभ्यां छपारानगरे प्रतिष्ठित।

(विवरण क्र० ३२०-२३)

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसंमत २४६० विक्रम संमत १९९० शके १८५५ फालगुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नायांतोल धासक गोत्रांतील परवारज्ञाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतमचंद सोलापूर यांचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे बिंब प्रतिष्ठित केले असे ॥ (विवरण क्र० ६२)

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज सस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज वीरसंवत २४६१ मिता मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कुर्वति शम् । (विवरण क्र० १०४-५)

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज सस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात नागपूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम दुर्वासार काटोलकरणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन राजगुरुपीठ सस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१ मिता मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कुर्वति शम् ।

(विवरण क्र० १०६)

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीभट्टारकविशालकीर्ति उपदेशात सं० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कुर्वा प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३८६-७, ३९६-४, ४१५-७)

[अनिश्चित समयके लेख]

२८९ संवत १५४ – संघ र नां गा पुत्रा न र नां (?)

(विवरण क्र० ४१०)

२९० सं० १५ सुद १२ सक्ला पुत्र मनसुख भार्या महना।
(विवरण क्र० ४२२)

२९१ संवत १५ – ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मंगलदिने भट्टारकजिन-
चंद्राम्नाये गोलापूर्व संघे इलाम । (विवरण क्र० १६३)

२९२ समत १–६१ वर्षे वैसाख सुदी को जीवराज ।
(विवरण क्र० ७४)

२९३ सकं १–७१ शुभकृत नाम संवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १
बुधवार सावरगावग्राम श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमहिचंद्र
भट्टारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिमाजी पळसापुरे तस्य भार्या
बचाई व गंगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यंत्र।
(विवरणक्र० २७६-२७७)

२९४ ७८ वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती भार्या म ।
(विवरण क्र० ३९७)

[अज्ञात समयके लेख]

२९५ संवत वैसाख मासे शुद्ध ३ सौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे
सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं
नागपूरमध्ये । (विवरण क्र० ५४)

२९६ सौकाजी। (विवरण क्र० ११६)

२९७ मूलसंघ बलात्कारगण पितल्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र
रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुजाई तृतीय
पुत्र तवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी श्रीचंद्रप्रभ प्रतिष्ठा
संवत । (विवरण क्र० १३१)

२९८ श्रीकाष्टासंघ नंदितटगच्छ भ० श्रीरामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मी-
सेनजी प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० १३६)

२९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर। (विवरण क्र० १८२)

३०० ''' महाराजाधिराज''''देवेंद्रकीर्ति बलात्कारगण सरस्वती [गच्छ]' '। (विवरण क्र० ११३)

३०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात् स० प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २०७)

३०२ हेमराज तस्य पुत्र हसराज भार्या वमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी '''। (विवरण क्र० २८१)

३०३ सातनाथ । (विवरण क्र० ३५३)

३०४ श्री आदिसर । (विवरण क्र० ३५८)

३०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन । (विवरण क्र० ३७९)

३०६ श्रीमू० भ० जि० का प सेठ प्र (?) (विवरण क्र० ३८१)

३०७ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्ति । (विवरण क्र० ३९०-४११)

३०८ श्रीमूलसंग । (विवरण क्र० ३९८, ४०३, ४५६, ४८६)

३०९ श्रीमू० स० ब० । (विवरण क्र० ४००)

३१० श्रीधर्मचंद्रउपदेशात् कपरसेट । (विवरण क्र० ४०४)

३११ लखमनसा रूपा । (विवरण क्र० ४०७)

३१२ ब्र० प० नेमीचन्द्रजी । (विवरण क्र० ४२०)

३१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन च्चारित्रमति सेवक देवांचे चंद्राइत्ये । (विवरण क्र० १६४)

३१४ मू० ब० ०० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं ता । (विवरण क्र० ४४२)

३१५ मूलसंघे भ० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४५५)

३१६ मू० भ० जि० पार वा ग३ (?) (विवरण क्र० ४६४)

३१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवंत । (विवरण क्र० ४६६)

३१८ मू० संघ तानसेट वमनीसा । (विवरण क्र० ४७२)

३१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास सा भार्या ससाई । (विवरण क्र० ४८८)

३२० श्रीमूलसंघ सक्राजी पुजारी ना। (विवरण क्र० १२५-६)

३२१ रखबमा ठवली। (विवरण क्र० १२७)

३२२ बाबाजी बढलकार। (विवरण क्र० ४६४)

३२३ मू० भ० जि० गडमेठ स्वहित। (विवरण क्र० ४६५)

३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या भजी सुता सोनाई। (विवरण क्र० १६१)

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[१] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर।

१ अजितनाथ (सफेद पाषाण १½ फुट) लेख क्र० १८
२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
३ „ „ „ लेख क्र० १८
४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २५४
५ चौवीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ९२
६ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इ०) लेख क्र० १६६
७ धर्मनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०१
८ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ – शान्तिनाथ (धातु ७ इ०), चौवीसी (काला पाषाण १½ फुट), पार्श्वनाथ (धातु ३½ इ०), चन्द्रप्रभ (काला पाषाण ९ इ०) पार्श्वनाथ (काला-पाषाण ६ इं०) पार्श्वनाथ (काला पाषाण ८ इ०) यक्षिणी (कृष्ण पाषाण १० इ०)।

[२] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

९ आदिनाथ (सफेद पाषाण २½ फु०) लेख क्र० १८
१० पद्मप्रभ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
११ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८
१२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१३ अजितनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८

१४ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१५ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
१६ सुपार्श्वनाथ (,,) लेख क्र० १८
१७ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१८ वासुपूज्य (सफेद पाषाण ११ इं०) लेख क्र० १८
१९ पार्श्वनाथ (काला पाषाण १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
२० पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
२१ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
२२ अजितनाथ (,,) लेख क्र० १८
२३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८
२४ आदिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२५ नेमिनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
२६ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
२७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० ९०
२८ पार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २०५
२९ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १९८
३० पार्श्वनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० १९०
३१ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० १८८
३२ पार्श्वनाथ (धातु ९ इं०) लेख क्र० १९१
३३ पद्मप्रभ (धातु ११ इं०) लेख क्र० १०२
३४ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३८
३५ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २२९
३६ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३९
३७ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४०
३८ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २७०
३९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २२५

४० मुनिसुव्रत (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ७
४१ अजितनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
४२ धर्मनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
४३ चौवीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १६२
४४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९०
४५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—
पार्श्वनाथ (धातु १ से ४ इं० की दस प्रतिमाएँ)

[३] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

४६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४७ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४८ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
४९ महावीर (काला पा० ४½ फु०) लेख क्र० २१४
५० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१४
५१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० १५२
५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० २००
५३ चौवीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० २२८
५४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १½ फुट) लेख क्र० २९५
५५ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २०६
५६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ७ फु० २ प्रतिमाएँ) लेख १५२
५७ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १४७
५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
५९ सुपार्श्व (पीला पा० ७ इं०) लेख क्र० १५३
६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६१ पार्श्वनाथ (पीला पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६२ महावीर (धातु १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
६४ नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ – पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०), पार्श्वनाथ (धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ), चन्द्रप्रभ (काला पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ), अज्ञातचिह्न मूर्ति (स्फटिक, १½ इ०), यक्षिणी (धातु ४ इ०)

[४] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४२
६६ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १२६
६७ सिद्ध (धातु ५½ इ०) लेख क्र० २४३
६८ नन्दीश्वर (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४३
६९ पंचमेरु (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४२ (दो प्रतिमाएँ)
७० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० २७१
७१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४४
७२ चौबीसी (धातु १ फु०) लेख क्र० २४२
७३ महावीर (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १६२
७४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २६२
७५ शांतिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४२
७६ आदिनाथ (धातु १ फुट २ इ०) लेख क्र० २४२
७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २१६
७८ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४५
७९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १८१
८० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०
८१ नेमिनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४६
८२ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २४३

८३ पार्श्वनाथ (लाल पा० ७ इं०) (लेख कलङ्क है)
८४ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २७४
८५ चन्द्रप्रभ (धातु ५½ इं०) लेख क्र० २०८
८६ वासुपूज्य (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २५१
८७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
८८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
८९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० १ इं०) लेख क्र० २४७
९० यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ — पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०), आदिनाथ (काला पा० ६ इं०), आदिनाथ (काला पा० ३½ इं०), सिद्ध (धातु ५½ इं०, दो मूर्तियाँ), यक्षिणी (धातु ४ इं० दो मूर्तियाँ)

[५] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

९१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९२ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इं०) लेख क्र० १८
९३ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० १८
९४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
९७ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १८
९८ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
९९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०० अजितनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
१०२ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८

१०३ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २०६
१०४ शांतिनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २८६
१०५ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २८६
१०६ पार्श्वनाथ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० २०७
१०७ पार्श्वनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २०३
१०८ नन्दीश्वर (धातु ४ इं०) लेख क्र० ७१
१०९ शांतिनाथ (धातु ११ इं०) लेख क्र० २८७
११० नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९७
१११ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ७६
११२ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २१८
११३ शांतिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२
११४ शांतिनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४
११५ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ३
११६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २९६
११७ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २३
११८ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८३
११९ पार्श्वनाथ (३½ इं० धातु) लेख क्र० १५०
१२० यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ७५
१२१ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६
१२२ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १०३
१२३ यक्षिणी (धातु ८ इं०) लेख क्र० ६७
१२४ रत्नत्रय यंत्र (धातु ९ इं०) लेख क्र० ५१
१२५ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ३२०
१२६ दशलक्षण यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ३३०
१२७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इं० लेख क्र० ३२०
१२८ षोडशकारण यंत्र (धातु १२ इं०) लेख क्र० १८३

१२९ [illegible]वर्णन यंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ — चन्द्रप्रभ (काला पा० ६ इं० दो मूर्तियाँ), चरणपादुका (धातु ३ इं०. दो पादुका) अजितनाथ (काला पा० ४ इं०), बाहुबली (धातु ५ इं० दो मूर्तियाँ) पार्श्वनाथ (धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ) चरणपादुका (धातु ३ इं०. दो पादुका).

[६] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर.

१३० पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० ५२
१३१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २६३
१३२ शान्तिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८५
१३३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८२
१३४ शान्तिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ७७
१३५ बाहुबली (धातु ११ इं०) लेख क्र० ८१ (दो मूर्तियाँ)
१३६ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २६८
१३७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति (धातु ९ इं०) लेख क्र० २१
१३८ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १६०
१३९ बाहुबली (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२
१४० पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १
१४१ पार्श्वनाथ (काला पा० ९ इं०) लेख क्र० ८८
१४२ सुपार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ८९
१४३ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० ६४
१४४ पार्श्वनाथ (धातु १ इं०) लेख क्र० ७२
१४५ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २३८
१४६ चन्द्रप्रभ (भूरे पा० १० इं०) लेख क्र० १८
१४७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८

१४८ अरनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८
१४९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
१५० मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५१ अजितनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
(दो मूर्तियाँ)
१५४ अरनाथ (सफेद पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
१५५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
१५६ आदिनाथ (४ इं० धातु) लेख क्र० १८
१५७ चौबीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० ९
१५८ धर्मनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६२
१५९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख १०८
१६० वासुपूज्य (धातु ५ इं०) लेख क्र० १२
१६१ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २२४
१६२ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इं०) लेख क्र० १०६
१६३ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २६१
१६४ श्रेयान्सनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २१२
१६५ सुमतिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २०
१६६ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २
१६७ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ८
१६८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ६ इ०) लेख क्र० ११
१६९ चौबीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० १३५
१७० सरस्वती (धातु ७ इं०) लेख क्र० १९८
१७१ यक्षिणी (धातु २ इं०) लेख क्र० १६७
१७२ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२

१७३ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८४
१७४ दशलक्षण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२७
१७५ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२३
१७६ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ – चौबीसी (काला पा० १ फुट), सिद्ध (धातु ६ इं०, दो मूर्तियाँ), नन्दीश्वर (धातु ५ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० ३½ फु० चौबीसी के मध्यस्थित), पद्मावती (सफेद पा० २ फु०), पद्मावती (धातु ७ इं०), पद्मावती (धातु ६ इं०), पद्मावती (धातु १० इं०),

[७] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बडा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

१७७ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० १५७
१७८ शान्तिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१७९ आदिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१८० नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०२
१८१ पंचमेरु (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२० (चार मूर्तियाँ)
१८२ वासुपूज्य (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
१८३ अनन्तनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३५
१८४ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८७
१८५ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २३१
१८६ चौबीसी (धातु ८ इं०) लेख क्र० १४४
१८७ चौबीसी (धातु ९ इं०) लेख क्र० १२०
१८८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११
१८९ महावीर (धातु १० इं०) लेख क्र० २११
१९० चौबीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० ५६
१९१ क्षेत्रपाल (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०४

१९२ सरस्वती (धातु ५ इं०) लेख क्र० १६६ (दो मूर्तियाँ)
१९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० ३००
१९४ यक्षिणी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १३७
१९५ पञ्चमेरु (धातु २ फुट ९ इं०) लेख क्र० २३२
१९६ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २३० (दो मूर्तियाँ)
१९७ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २८२
१९८ बाहुबली (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३६ (दो मूर्तियाँ)
१९९ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४६
२०० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४
२०१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ७०
२०२ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ३३
२०३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६१
२०४ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३३
२०५ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २८
२०६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १७८
२०७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०१
२०८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ९९
२०९ पञ्चमेरु (धातु २ फु० ३ इं०) लेख क्र० १५४ (दो मूर्तियाँ)
२१० चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १४३
२११ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ७८
२१२ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १५८
२१३ चन्द्रप्रभ (धातु ४इं०) लेख क्र० ६१
२१४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१५
२१५ नन्दीश्वर (धातु १ फु०) लेख क्र० ६२
२१६ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १३७
२१७ नेमिनाथ (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २२२

२१८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १६
२१९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ०६
२२० चौंसठ ऋद्धि (धातु ५ इ०) लेख क्र० ११२
२२१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १०४
२२२ चौबीसी (धातु ३½ इ०) लेख क्र० २८३
२२३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० ६६
२२४ मुनिसुव्रत (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २२७
२२५ पार्श्वनाथ (धातु ५½ इं०) लेख क्र० २७
२२६ चौबीसी (धातु १० इ०) लेख क्र० २२४
२२७ शांतिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १७७
२२८ श्रेयांस (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० १०५
२२९ चिन्ह रहित मूर्ति (काला पा० १० इ०) लेख क्र० ६८
२३० आदिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २३३
२३१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० २ फु० ३ इ०) लेख क्र० ५
२३२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ३ फु० ३ इं०) लेख क्र० ५
२३३ गिरनारजी पादुका (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २८२
२३४ पद्मावती (धातु ११ इ०) लेख क्र० २२९
२३५ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० ७०
२३६ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १६८
२३७ पद्मावती (धातु ११ इ०) लेख क्र० २१०
२३८ आदिनाथ (सफेद पा० १फु० २इ०) लेख क्र० १८ (दोमूर्तियाँ)
२३९ आदिनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४० शीतलनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
२४१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४५ पद्मप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
२४६ मुनिसुव्रत (साँवला पा० ८ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४७ चन्द्रप्रभ (साँवला पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
२४८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५० सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
२५१ सुमतिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२५२ अरनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५३ नेमिनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५४ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
२५५ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५६ श्रेयांसनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५७ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ४ इं०) लेख क्र० १८
२५९ अजितनाथ (लाल पा० १० इ) लेख क्र० १८
२६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६१ नेमिनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
२६२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १० इ०) लेख क्र० १८
२६३ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ इ०) लेख क्र० १८
२६५ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ६८
२६६ दशलक्षण यन्त्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ४६
२६७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० १२१
२६८ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ५ इ०) लेख क्र० ३६

२६९ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४०
२७० ऋष्यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २१६
२७१ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५४
२७२ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११४
२७३ दशलक्षणयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६५
२७४ कलिकुण्डयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७३
२७५ सिद्धयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ८६
२७६ षोडशकारणयंत्र (धातु १४ इं०) लेख क्र० २६३
२७७ दशलक्षणयंत्र (धातु ११ इं०) लेख क्र० २०३
लेखरहित मूर्तियाँ – सप्तर्षि (धातु ५ से ८ इं०).
पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु० २ इं०), आदिनाथ (पीला बालुकापाषाण २ फु० २ इं०)

[९] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

२७८ शान्तिनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५७
२७९ नेमिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २७२
२८० पुष्पदन्त (धातु ५ इं०) लेख क्र० २७२
२८१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ३०२
२८२ चन्द्रप्रभ (पीला पा० ६ इं०) लेख क्र० २७८
२८३ पार्श्वनाथ (काला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२०
२८४ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५३
२८५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ७½ फु०) लेख क्र० २७६
२८६ पार्श्वनाथ (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
२८७ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २९८
२८८ वासुपूज्य (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२८९ महावीर (धातु ७ इं०) लेख क्र० २९१

२९० अजितनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
२९१ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४६
२९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २६८
२९३ चौबीसी (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२९४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ फु०) लेख क्र० २५७
२९५ नेमिनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इं०) लेख० क्र० २५७
२९६ नेमिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २५८
२९७ पार्श्वनाथ (धातु ८½ इं०) लेख क्र० २५७
२९८ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६५
२९९ अजितनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० १६५
३०० चिह्नरहितमूर्ति (काला पा० ५ इं०) लेख क्र० २२२
३०१ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २५७
३०२ चिह्नरहित मूर्ति (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६
३०३ चौबीसी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २४१
३०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २७३
३०५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १४५
३०६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ४१
३०७ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ४०
३०८ अनन्तनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३०९ सुपार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २६
३१० चिह्नरहितमूर्ति (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ८२
३११ मुनिसुव्रत (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० ४७
३१२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० २५६
३१३ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० २५६
३१४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २०९
३१५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १७६

३१६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६४
३१७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ३ इ०) लेख क्र० २५७
३१८ पार्श्वनाथ (काला पा० २ फु० ४ इ०) लेख क्र० २५७
३१९ नन्दीश्वर (धातु ५ इ०) उर्दू लिपिमें लेख०
३२० आदिनाथ (धातु ६३ इं) लेख क्र० २८४
३२१ शीतलनाथ (लाल पा० १ फु० ४ इ०) लेख क्र० २८४
३२२ महावीर (धातु १ फु० ८ इं०) लेख क्र० २८४
३२३ पुष्पदन्त (धातु १ फु० ९ इं०) लेख क्र० २८४
३२४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १७१
३२५ महावीर (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८०
३२६ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२७
३२७ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६०
३२८ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३९
३२९ यक्षिणी (धातु ८ इं०) लेख क्र० २३९
३३० यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १४०
३३१ यक्षिणी (धातु ८ इं) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
३३२ चन्द्रप्रभ (धातु १ फु० २ इं) लेख क्र० २१७
३३३ चौवीसी (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३४ रत्नत्रयमूर्ति (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १५५
३३६ पार्श्वनाथ (धातु २३ इं) लेख क्र० ८४
३३७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं) लेख क्र० २४१
३३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १४५
३३९ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६१
३४० पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २५७
३४१ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इं०) लेख क्र० २५०

३४२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० २२३ (तीन मूर्तियाँ)
३४३ नेमिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १७
३४४ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २६२
३४५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २५१
३४६ अरनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० १६३
३४७ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३४८ आदिनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २३०
३४९ शीतलनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५० आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५१ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३५२ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३०३
३५४ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५५ चन्द्रप्रभ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५६ अजितनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५७ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३५८ आदिनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ३०४
३५९ नन्दीश्वर (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १११
३६० सुपार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १२५
३६२ महावीर (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३६३ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २६७
३६४ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३६५ महावीर (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३६६ आदिनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० २५०
३६७ पुष्पदन्त (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८

३६८ अरनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
३६९ चन्द्रनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
लेखरहित मूर्तियाँ – वासुपूज्य (काला पा० ५ इं०), पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०), शान्तिनाथ (धातु ४ इं०), १५ मूर्तियाँ लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

३७० पार्श्वनाथ (काला पा० १½ फु०) लेख क्र० १६४
३७१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २६४
३७२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९४
३७३ शान्तिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६५
३७४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६५
३७५ पार्श्वनाथ (धातु ० इं०) लेख क्र० ११५
३७६ चौबीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० २७८
३७७ दशलक्षण यन्त्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० १०७
लेखरहित – पद्मप्रभ (सफेद पा० १ फु०)

[१०] गृहचैत्यालय–श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर, इतवारी, नागपुर

३७८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२३
३७९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०५
३८० रत्नत्रय (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५
३८१ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०६
३८२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ५४
३८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८

३८४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२९
लेखरहित — छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय—श्री०अवादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय—श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर, इतवारी

३८९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय—श्री०रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २१२

३९७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०), आदिनाथ (धातु २½ इं०)

[१४] गृहचैत्यालय-श्री० कन्हयालाल सुन्दरसा गरिवे, इतवारी

३९९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४
यक्षिणी (धातु ६ इं०)-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय-श्री०मवाईसगई मोतीलाल गुलावसा, इतवारी

४०० पार्श्वनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३०९
४०१ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १४५
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, १ इं०)

[१६] गृहचैत्यालय-श्री०हिरामा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २७५
४०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३०८
४०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१०
४०५ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १७१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलावसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० लिगासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७ पार्श्वनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४७

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचंद येमूसा खेडकर, इतवारी

४०९ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ९४
४१० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८६
४११ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४

४१२ चरणपादुका (धातु २ इं०) लेख क्र० १४२
लेखरहित – शान्तिनाथ (धातु २ इं०), पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४
४१४ यक्षिणी (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ५५
लेखरहित – (चौवीसी धातु ३ इं०), महावीर (धातु २½ इं०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४१६ आदिनाथ (चाँदी ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१७ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१८ पार्श्वनाथ (सोना २ इं०) लेख क्र० २७७
४१९ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २२७
४२० चरणपादुका (चाँदी १ इं०) लेख क्र० ११२
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) (दो मूर्तियाँ), बाहुबली (धातु ३ इं०), सरस्वती (धातु १ इं०)

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ४४
४२२ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २९०
४२३ यक्षिणी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १७५
लेखरहित–पार्श्वनाथ (लाल पा० ३ इं०)

[२४] गृहचैत्यालय-श्री०हिरासा जिनदास चवड़े, इतवारी

४२४ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४२५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८६
२९

[२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पामुसा जोहरापुरकर, इतवारी

४२६ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २०
४२७ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २५१
४२८ कलिकुण्ड यन्त्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २०२
४२९ षोडशकारण यन्त्र (धातु० ८ इं०) लेख क्र० २०३

[२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचद बालाजी आगरकर, इतवारी

४३० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ४८
४३१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १६२
४३२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३१

[२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गगासा खेडकर, इतवारी

४३३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १८
४३४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३८
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) चौबीसी (धातु ५ इं०)

[२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी

४३५ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४६
४३६ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इंच) लेख क्र० ४३
लेखरहित-यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल बापुसा खेडकर, इतवारी

४३७ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २८१
४३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ६१

[३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानबा पिंजरकर, इतवारी

४३९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५८
४४० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८०

४४१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ६४
४४२ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३१४
४४३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री०वर्घासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५९
४४५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३६
४४६ षोडशकारण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
४४७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ३०
४४८ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ३१
४४९ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १२५
४५० यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४६
लेखरहित–पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०)

[३२] गृहचैत्यालय-श्री०नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० २६६
४५२ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११९
४५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २७
४५४ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१२ (दो मूर्तियाँ)
४५५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१५
४५६ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३०८ (दो मूर्तियाँ)
४५७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रुखबसा पिंजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोबडे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १९९

४६० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३५
४६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३६
४६२ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११७
४६३ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इं०) लेख क्र० १४६
४६४ पार्श्वनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री बापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

४६५ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७०
४६६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१७
४६७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १६७
४६८ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १८६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु १½ इं०)

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

४६९ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३६
४७० चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६६
४७१ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०३
४७२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१८
४७३ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७१
४७४ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ११८
४७५ दशलक्षणयंत्र (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई बापुजी गाधी, इतवारी

४७६ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८५
४७७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १०२
४७८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४
४७९ चन्द्रप्रभ (धातु १½ इं०) लेख क्र० १७३
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[३८] गृहचैत्यालय-श्री राजाबापू लच्छाबापू ठवली, इतवारी

४८० चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७४

४८१ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १९६,

४८२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २५

[३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारी

४८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ५३

४८४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३१

[४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी

४८५ सिद्ध (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

४८६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बीसाव काटोलकर, इतवारी

४८७ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४३

४८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१९

लेखरहित – चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ४ इं०)

[४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी

४८९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५६

४९० आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३३

४९१ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११३

४९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७

४९३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०७

लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४३] गृहचैत्यालय-श्री रूखबसा विनायकसा, इतवारी

४९४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२२

[४४] गृहचैत्यालय-श्री पाण्डुरंग बापूजी उदापूरकर, इतवारी

४९५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३०३

[४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलनापुरे, इतवारी

४९६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७

[४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गगामा जोहरापुरकर, इतवारी

४९७ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० १९०
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

□

नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं।

MĀṆIKACHANDRA D. J. GRANTHAMĀLĀ

* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print

*1. **Laghīyastraya-ādi-samgrahah :** This vol. contains four small works 1) *Laghīyastrayam* of Akalaṅkadeva (*c* 7th century A D), a small Prakaraṇa dealing with *pramāṇa*, *naya* and *pravacana* Akalaṅka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others His works are very important for a student of Indian logic Here the text is presented with the Sk commentary of Abhayacandrasūri 2) *Svarūpasambodhana* attributed to Akalaṅka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses 3-4) *Laghu-Sarvajña-siddhiḥ* and *Bṛhat-Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti. These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā Edited with some introductory notes in Sk on Akalaṅka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Saṁvata 1972, Crown pp 8-204, Price As 6/-.

*2 **Sāgāra-dharmāmṛtam** of Āśādhara Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A D, with many Sanskrit works on different subjects to his credit This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk. dealing with the duties of a layman Pt NATHURAM PREMI adds an introductory note on

Āśādhara and his works. Ed. by Pt MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp 8-246, Price As 8/-

*3 Vikrāntakauravam or Sulocanānāṭakam of Hastimalla (A.D 13th century) : A Sanskrit drama in six acts Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp 4-164, Price As. 6/-.

*4. Pārśvanātha-caritam of Vādirājasūri. Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A D This is a biography of the 23rd Tīrthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 18-198, Price As 8/-.

*5. Maithilīkalyāṇam or Sītānāṭakam of Hastimalla : A Sk drama in 5 acts, see No 3 above Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 4-96, Price As 4/-.

*6 Ārādhanāsāra of Devasena : A Prākrit work dealing with religio-didactic topics. Prākrit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 128, Price As. 4/6.

*7. Jinadattacaritam of Guṇabhadra : A Sk poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bambay saṁvat 1973, Crown pp 96, Price As 5/-.

8. **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya : A Sk. poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna. It is composed in a dignified style Edited by Pts. MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 230, Price As 8/-

9 **Cāritrasāra** of Cāmuṇḍarāja It deals with the rules of conduct for a house-holder and a monk Edited by Pt INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 103, Price As 6/-.

*10 **Pramāṇanirṇaya** of Vādirāja · A manual of logic discussing specially the nature of Pramānas Edited by Pts INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 80, Price As 5/-

* 11. **Ācārasāra** of Vīranandi : A Sk text dealing with Darśana, Jñāna etc Edited by Pts INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 2-98, Price As 6/-.

* 12 **Trilokasāra** of Nemichandra : An important Prākrit text on Jaina cosmography published here with the Sk. commentary of Mādhavacandra Pt PREMI has written a critical note on Nemicandra and Mādhavacandra in the Introduction Edited with an index of Gāthās by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 10-405-20, Price Rs 1/12/-.

* 13. **Tattvānuśāsana-ādi-samgrahaḥ** : This vol. contains the following works 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena. 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk.

commentary of Āśādhara 3) *Nītisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā.* 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmataraṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Bṛhat-pañca-namaskāra* or *Pātrakesarī stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja 9) *Dvātriṁśikā* of Amitagati 10) *Vairāgyamaṇimālā* of Śrīcandra 11) *Tattvasāra* (in Prākrit) of Devasena. 12) *Śrutaskandha* (in Prākrit) of Brahma Hemacandra. 13) *Dhādasī-gāthā* in Prākrit with Sk chāyā. 14) *Jñānasāra* of Padmasiṁha, Prākrit text and Sk chāyā Pt PREMI has added short critical notes on these authors and their works Edited by Pt MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp 4-176, Price As 14/-

* 14 **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1976, Crown pp 692-35, Price Rs 3/8/-

*15 **Yuktyanusāsana** of Samantabhadra: A logical Stotra which has weilded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc Text published with an equally important commentary of Vidyānanda There is an introductory note on Vidyānanda by Pt PREMI. Ed. by Pts INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 6-182, Price As. 13/-.

*16. **Nayacakra-ādi-saṁgraha** This vol contains the following texts 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākrit text with Sk chāyā 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākrit text and Sk chāyā. 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt PREMI Edited by Pt BANSIDHARA with Indices, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 42-148. Price As 15/-

*17 **Ṣatprābhṛtādi-saṁgraha** : This vol contains the following Prākrit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity 1) *Darśana-prābhṛta*, 2) *Cāritra-prābhṛta*, 3) *Sūtra-prābhṛta*, 4) *Bodha-prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa-prābhṛta*, 7) *Liṅga-prābhṛta*, 8) *Śīla-prābhṛta*, 9) *Rayanasāra* and 10) *Dvādaśānuprekṣā* The first six are published with the Sk commentary of Śrutasāgara and the last four with the Sk. chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasāgara and their works Edited with an Index of verses etc by Pt PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 12-442-32 Price Rs 3/-.

*18 **Prāyaścittādi-saṁgraha** : The following texts are included in this volume 1) *Chedapiṇḍa* of Indranandi Yogīndra, Prākrit text and Sk chāyā 2) *Chedaśāstra* or *Chedanavati*, Prākrit text and Sk chāyā and notes 3) *Prāyaścitta-cūlikā* of Gurudāsa, Sk text with the commentary of Nandiguru. 4) *Prāyaścittagrantha* in Sk verses by Bhaṭṭākalaṅka There is a critical

introductory note in Hindī by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp 16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

*19. **Mūlācāra** of Vattakera, part I: An ancient Prākrit text in Jaina Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākrit and ancient Indian monastic life. Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs. 2/4/-

20 **Bhāvasaṁgraha-ādih**: This vol. contains the following works 1) *Bhāvasaṁgraha* of Devasena, Prākrit text and Sk chāyā. 2) *Bhāvasaṁgraha* in Sk verses of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-tribhaṅgī* or *Bhāvasaṁgraha* of Srutamuni, Prākrit text and Sk. chāyā. 4) *Āsrava-tribhaṅgī* of Śrutamuni, Prākrit text and Sk chāyā. There is a Hindī Introduction with critical remarks on these texts by Pt PREMI. Edited with an Index of verses by Pt PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp 8-284-28, Price Rs 2/4/-

21. **Siddhāntasāra-ādi-Saṁgraha**: This vol contains some twentyfive texts 1) *Siddhāntasāra* of Jinacandra, Prākrit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣana 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṁśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṇāloyaṇā* of Ajitabrahma, Prākrit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāśīti* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit 5) *Ratna-*

mālā of Śivakoti. 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māghanandi, a Sūtra work divided in four lessons 7) *Arhat-pravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five lessons 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature of divinity 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Pomarājasuta) 10) *Samavasaraṇastotra* of Visnusena 11) *Sarvajñastavana* of Jayānandasūri 12) *Pārśvanātha-samasyā-stotra* 13) *Citrabandhastotra* of Gunabhadra 14) *Maharṣi-stotra* (of Āśādhara) 15) *Pārśvanātha-stotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk commentary 16) *Nemi-nātha-stotra* in which are used only two letters viz *n* & *m* 17) *Śaṅkhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti 18) *Nijātmāṣṭaka* of Yogīndradeva in Prākrit 19) *Tattvabhāvana* or *Sāmāyika-pāṭha* of Amitagati 20) *Dharmarasāyaṇa* of Padmanandi, Prākrit text and Sk. chāyā 21) *Sārasamuccaya* of Kulabhadra 22) *Amgapannatti* of Śubhacandra, Prākrit text and Sk chāyā 23) *Śrutāvatāra* of Vibudha Śrīdhara 24) *Śalākāniksepana-niṣkāsana-vivaranam* 25) *Kalyāṇamālā* of Āśādhara. Pt PREMI has added critical notes in the Introduction on some of these authors Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979 Crown pp 32-324, Price Rs 1/8/-

*22 **Nītivākyāmṛtam** of Somadeva. An important text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya-Arthaśāstra*. The Sūtras are published here along with a Sanskrit commentary There is a critical Introduction by PREMI comparing this work with Arthaśāstra Edited by

28 **Jaina-Śilālekha-saṁgraha**: It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed.) with Introduction, Indices etc. by Prof. HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp. 16-164-428-40, Price Rs 2/8/-

29-30-31. **Padmacarita** of Raviṣeṇa · This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature It was finished in A. D. 676, and it has close similarities with *Paümcariu* of Vimala (beginning of the Christian era). Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1985, vol i, pp 8-512; vol ii, pp 8-436; vol. iii, pp 8-446. Thus pp. about 1400 in all Price Rs 4/8/-.

32-33. **Harivaṁśa-purāṇa** of Jinasena I. This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend. These two volumes are very useful to those interested in Indian epics. It was composed in A D 783 by Jinasena of the Punnāṭa-saṁgha There is a Hindī Introduction by Pt PREMIJI Edited by Pt DARBARILAL, Bombay 1930, vol. i and ii pp 48-12-806, Price Rs 3/8/-

34 **Nītivākyāmṛtam**, a supplement to No 22 above: This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Saṁvat 1989, Crown pp 4-76, Price As. 4/-

35 **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma-kamala-mārtaṇḍa** of Rājamalla. See No 26 above Edited with an Introduction in Hindī by Pt. JAGADISH-

CHANDRA, M A, Bombay Saṁvat 1993, Crown pp 18-264-4, Price Rs 1/8/-

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-śāstra** of Āśādhara: Sanskrit text and Marāthī rendering Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp 2-8-166, Price As 8/-

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol I Ādipurāṇa (Saṁdhis 1-37) A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A D Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra A model edition of an Apabhraṁśa text Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P L. VAIDYA, M A, D.Litt, Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs 10/-.

37(a) Rāmāyana portion separately issued Price Rs. 2 50

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghīyastrayam* with Vivṛti (see No 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA There is a learned Hindī Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo pp 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-

39· **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol II See No 38 above Edited by Pt MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author. There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices Bombay 1941. Royal 8vo pp 20+94+403-930. Price Rs. 8/8/-.

40 **Varāngacaritam** of Jatā-Simhanandi A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof. A. N. Upadhye, M A, Bombay 1938, Crown pp 16+56+392, Price Rs 3/-

41 **Mahāpurāna** of Puspadanta, Vol II (Samdhis 38-80): See No 37 above The Apabhramśa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt, Bombay 1940 Royal 8vo pp 24+570 Price Rs 10/-

42 **Mahāpurāna** of Puṣpadanta, Vol III (Saṁdhis 81-102) See No 37 and 40 above The Apabhramśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr P L VAIDYA, M. A, D Litt The Introduction covers a biography of Puṣpadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheta). Pt. PREMI's essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here Bombay 1941. Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-.

42(a). Harivaṁśa portion is separately issued. Price Rs. 2 50.

43. **Ajanāpavanaṁjaya-nāṭakam** and **Subhadrā-nāṭikā** of Hastimalla: Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No 3 above). Critically edited by Prof M V PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied There is an Index of stanzas from all the four plays Bombay 1950. Crown pp 8+68+120+128 Price Rs 3/-.

44 **Syādvādasiddhi** of Vādībhasiṁha: Edited by Pt DARBARILAL with Introductions etc in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work Bombay 1950 Crown pp 26+32+34+80 Price Rs 1-50

45 **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part II (see No. 28 above): The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt VIJAYAMURTI, M A. Bombay 1952 Crown pp 4+520. Price Rs 8/-

46 **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part III (see Nos 28 & 45 above): The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions Bombay 1957. Crown pp 8+178 +592+12. Price Rs 10/-.

47. **Pramānaprameyakalikā** of Narendrasena (A D 18th century) A Nyāya text dealing with Pramāna and Prameya The Sanskrit text critically edited by Pt. DARBARILAL The Hindi Introduction deals with the author and a number of topics connected with the contents of this work Bhāratiya Jñānapītha Kashi, Varanasi 1961 Price Rs 1 50



For copies please write to—

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA
Durgakunda Road,
Varanasi—5 (India)

Or

BHĀRATĪYA JNĀNAPĪTHA
3620/21 Netaji Subhash Marg,
Delhi—6 (India)